सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

स्तर : सवक

अध्ययन पुस्तक क्रमांक : 14

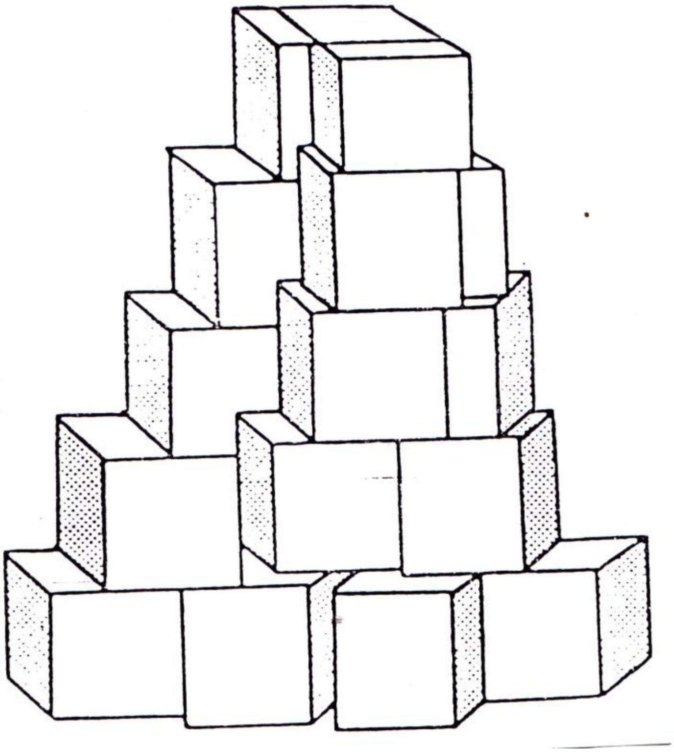

स्तरः

5. सवक

4. अगुवा / पास्टर

3. समूह या सेल अगुवा

2. चेला

1. नौसिखिया

मसीह में हर विश्वासी को एक सेवक बनाते हुए आत्मिक परिपक्वता में विकसित होने और एक प्रभावशाली और कुशल सेवकाई में बढ़ने के लिए बाइबल अध्ययन कोर्स !!!

स्वयं-अध्ययन और दूसरों को सिखाने के लिए सरलता से इस्तेमाल करने योग्य !!!

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

उद्देश्य:

- उसे जानना, जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

(विकसित होना / परिपक्व होना)

- यहोशू 1:8 "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रखना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने को तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"
- 2 पतरस 3:18 "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अभी भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"
- 2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"
- कुलुस्सियों 1:27-28 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है, जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

- और उसके बारे में दूसरों को बताएँ!

(गुणा / पुनरुत्पादन)

- 2 तीमुथियुस 2:2 "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"
- 2 तीमुथियुस 3:16-17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"
- इफिसियों 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"
- 2 पतरस 1:8 "क्योंकि यदि ये तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।"

सिद्धान्त : "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।" (रोमियों 11:36)

(ज्ञान में बढ़ना; चरित्र में परिपक्व होना; आत्मिक वरदान इस्तेमाल करना)

सूची अध्ययन पुस्तक नं.: 14

क्रमाँक | पृष्ठ

- कलीसिया की स्थापना के और अधिक सिद्धान्त (12 अध्याय) 2218
  - कलीसिया से हमारा अर्थ क्या है ?
  - कलीसिया की स्थापना का बाइबल का नमूना
  - नए नियम में सुसमाचार प्रचार के नमूने
  - कलीसिया की स्थापना के सही अभिप्राय
  - प्रारंभिक कलीसिया के नमूने पर एक और नज़र
  - एक कलीसिया की स्थापना का "चक्र"
  - अपनी योजना को कार्य में लाना
  - एक महान संदेश का विश्लेषण करना
  - कलीसिया की स्थापना के कुछ तरीके
  - कलीसिया की स्थापना में सामर्थ्य सुसमाचार प्रचार
  - कलीसिया स्थापित करना
  - वहाँ चलना जहाँ सन्त चले हैं
- स्तुति और आराधनाः एक गहरा अध्ययन और इसके महत्त्व को समझना 2294
- नए नियम में पुराने नियम का उपयोग 2301
- दाऊद की वाचाः इसका महत्त्व क्या है 2306
- दाऊद के तम्बू की तैयारी और कलीसिया के लिए आज शिक्षा 2314
- बाइबल के अनुसार आराधना का ईश्वरीय क्रम 2321
- संगीत का संक्षिप्त इतिहास 2329
- आराधना में गायकों और संगीज्ञों का क्रम 2337
- संगीत का सामर्थ्य और मूल्यांकन 2339
- नाचना और बाइबल 2345

कलीसिया की स्थापना के और अधिक बाइबल के सिद्धान्त

अध्याय 1 - "कलीसिया" से हमारा अर्थ क्या है?

अधिकाँश लोगों के लिए "कलीसिया" का अर्थ तीन में से एक होता है:
- पहला, एक इमारत जिसमें लोग परमेश्वर की आराधना के एकत्र होते हैं।
- दूसरा, लोग मिलकर धार्मिक क्रियाएँ करते हैं।
- तीसरा, एक सम्प्रदाय। जैसे कि मैथडिस्ट कलीसिया।

सच्चाई यह है: कलीसिया एक इमारत नहीं है, परन्तु यह उद्धार पाए हुए लोगों की संगति है!

पहली बात, जहाँ एक कलीसिया को परमेश्वर की आराधना के लिए अर्पित एक इमारत के रूप में देखा जाता है, वहाँ अक्सर तस्वीर में और अनेक आकृतियाँ जुड़ जाती हैं। इनमें से अनेक विचार न तो बाइबल में से होते हैं, और न ही वे प्रारंभिक कलीसिया के हैं, परन्तु पश्चिमी परम्पराओं से लिए गए हैं। मैं एक ऐसी इमारत की बात कर रहा हूँ जो एक ऐसी शैली में बनाई जाती है जो आराधकों को प्रचार करने के लिए लिए उचित होती है। इन पारम्परिक विचारों से जुड़े होते हैं, मंच, चबूतरा, पार्श्ववीथी, वेदी, वाद्यराज, और "एतिहासिक कलीसियाओं" में, मध्यभाग, पद, वस्त्रालय, मोमबत्तियाँ, पापस्वीकार-पीठिया, और मीनार और लाट, और बहुत से दूसरे धार्मिक साज-सामान। दुर्भाग्यवश, इस प्रकार के विचार पश्चिम से स्वेच्छा से लाए गए हैं, और लगभग हर देश में जहाँ सुसमाचार ने जड़ पकड़ी है अपनाए गए हैं। इस प्रतीकात्मक पश्चिमी विचार शैली ने लोगों की इस धारणा को मजबूत किया है जो कहते हैं "मसीहियत एक पश्चिमी धर्म है।" मैं आप महसूस करता हूँ कि यीशु मसीह की कलीसिया को इस प्रकार दिखाना बड़े दुख की बात है। कभी सोचा नहीं गया था कि मसीहियत एक पश्चिमी धर्म कहलाएगा। यह मध्य-पूर्व और एशिया मायनर में आरम्भ हुआ था, और वहाँ से मिशनरी यात्राओं द्वारा सारे यूरोप और पश्चिमी संसार में सुसमाचार लाया गया था। इन सब बातों के बीच, मसीह को भी सफेद नस्ल का व्यक्ति दिखाया गया है, जो सत्य नहीं है। उसका रूप-रंग एक मध्य पूर्व यहूदी जैसा रहा होगा और उसके संदेश यहूदी धर्म के रंग से रंगे हुए थे। फिर भी, सुसमाचार केवल यहूदियों के लिए ही नहीं था। यह परमेश्वर के प्रेम, और सारी मानवजाति के उद्धार का संदेश है। सुसमाचार सब मनुष्यों के लिए शुभ संदेश है। इसका संदेश सारे संसार में सब प्राणियों की गवाही के लिए प्रचार किया जाना चाहिए।

कलीसिया एक इमारत नहीं है।

इस धारणा में पहली गलती यह विचार है कि कलीसिया एक इमारत है। दूसरा है कि यह एक विशेष शैली और प्रकार की इमारत है जो ऊपर लिखी गई धार्मिक क्रियाओं के लिए बनाई गई है। आओ हम इसे बहुत स्पष्ट कर दें कि कलीसिया किसी भी प्रकार की इमारत नहीं है। यीशु मसीह की कलीसिया ईंट और गारा, या लकड़ी या बाँस से नहीं बनी है। सच्ची कलीसिया लोगों से बनी है, जो परमेश्वर के अनुग्रह से यीशु मसीह और उसके प्रायश्चित के कार्य द्वारा उद्धार पाए हैं।

जैसे हम कलीसियाएँ स्थापित करने का काम करते हैं, आओ हम अपने मनों में इसे पक्का कर लें कि हम धार्मिक इमारतें खड़ी करने की बात नहीं कर रहे हैं। यह प्रमुख रुचि की बात नहीं है। एक धार्मिक इमारत के बिना एक "कलीसिया" के लिए कार्य करना बिलकुल सम्भव, शक्य है और यह बाइबल के अनुसार भी है। असल में, अनेक उदाहरणों में एक ऐसे स्थान में से कार्य करना जो धार्मिक या मसीही नहीं है अधिक प्रभावशाली हो सकता है। कुछ संस्कृतियों में लोगों को ऐसे स्थान में आना जो स्पष्ट रूप से मसीही नहीं है सरल होता है। कुछ जगहों में एक इमारत खड़ी करना बहुत महँगा भी हो गया है; जमीन और इमारत की कीमत हद से ज्यादा है। यह भी सत्य है कि धार्मिक प्रकार की इमारत प्रचार और सामूहिक आराधना सभा के अलावा दूसरी क्रियाओं के लिए सहायक नहीं है। मेरा विश्वास है कि समकालीन कलीसिया को इसके कार्य पारम्पारिक प्रचार और आराधना संलक्षण के परे फैलाना अवश्य है। इसे सामाजिक क्रियाओं का केन्द्र भी होना चाहिए, परन्तु जब मैं एक स्थानीय कलीसिया स्थापित करने के विषय से निपटूँगा, तब मैं इसके विषय में और अधिक बात करूँगा।

उस विशाल फसल के साथ काम करने के लिए जो परमेश्वर दे रहा है, हमें "कलीसिया" क्या है के मानसिक साँचे को तोड़ना होगा। बेशक, हमें अपने मन नए परिवर्तनों और विचारों के लिए खोलने होंगे जो पुराने नमूनों का स्थान लेंगे, विशेषकर उन नमूनों का जो प्रकट रूप से पश्चिमी हैं। परमेश्वर के नए कार्य की एक विशेषता ऐसी कलीसिया होगी जो उनकी संस्कृति के रूप

से विश्वसनीय और उपयुक्त होगी। उदाहरण के तौर पर, भारत में कलीसिया भारतीय होनी चाहिए, पश्चिमी नहीं। पाकिस्तान की कलीसिया प्रकट रूप से पाकिस्तानी होनी चाहिए। इसे पश्चिमी साज-समान से आच्छादित नहीं होना है। न ही इन कलीसियाओं को आराधना का पश्चिमी तरीका अपनाना है। काफी समय से मिशनरियों से सोचा था कि जिस देश में वे मिशनरी हैं उन की संस्कृति स्वभाव से बुरी है और इसे सम्पूर्ण रूप से त्याग देना चाहिए। इनके स्थान पर वे उनके अपने सांस्कृतिक साजो-समान को ले आए हैं, यानि, पश्चिमी संसार की संस्कृति, जिन्हें वे अधिक सभ्य मानते हैं, और इसलिए अधिक मसीही मानते हैं। वास्तव में, इसमें से अधिक तो सांसारिक ही है।

पश्चिमी संस्कृति पवित्र नहीं है!

न केवल पश्चिमी संस्कृति पवित्र नहीं है, बल्कि अनेक उदाहरणों में, यह बिलकुल पतित है। पश्चिम देशों के जिन मिशनरी जिन्होंने अपने दत्तक देशों के लोगों पर अपनी पश्चिमी संस्कृति थोपी है, उनके साथ बहुत बड़ा अपकार किया है। बहुत सारे पश्चिमी संस्कृति के विषय में कुछ भी बाइबल का या पवित्र नहीं है, बल्कि जो ऐसा सोचते हैं उनमें प्रकट रूप से एक बुरा ढीठपन और घमण्ड भी है। अनेक मिशनरी जो दृढ़ता से अपने देश की संस्कृति से चिपके रहते हैं, आश्चर्य करते हैं कि वे अपने दत्तक देश के लोगों पर इतना कम प्रभाव क्यों डाल पा रहे हैं। यह ऐसा है कि उनके दत्तक देश की जीवन शैली में अपने आप को ढालने से इन्कार से वे अपनी श्रेष्ठता प्रकट करते हैं, जो उन्हें स्वीकार्य नहीं है जिन्हें वे प्रभावित करने का प्रयास करते हैं।
"पश्चिमी कलीसिया" का नमूनाः

- बाइबल का नहीं,
- सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त नहीं, और
- एक मर रही जाति है।

यह मुख्य रूप से बुद्धिवाद, भौतिकवाद और संदेहवाद पर आधारित है।

तो एक "कलीसिया" क्या है?

यूनानी शब्द जिसे नए नियम में बारंबार "कलीसिया" अनुवाद किया गया है, "Ecclesia" है। इसका लातीनी समानार्थक है "Ex-calleo" जिसका अर्थ हैः "बुलाना"। <u>इसलिए, एक कलीसिया लोगों की एक मण्डली है जिन्हें परमेश्वर ने बुलाया है। संसार के जीने के तरीके में से बुलाया और यीशु मसीह और उनके साथी विश्वासियों के साथ सम्बंध और संगति के लिए बुलाया है। सम्भवतः कलीसिया की सबसे सरल परिभाषा होगीः "समरुचि के विश्वासी जो मसीह के नाम में परमेश्वर की आराधना करने, एक दूसरे की उन्नति करने, और दूसरों को परमेश्वर के राज्य में लाने में प्रयास के लिए एकत्र होते हैं।</u>" सम्भवतः एक स्थानीय कलीसिया का सबसे सरल वर्णन होगा जो प्रभु यीशु ने मत्ती 18:20 में दिया था, "क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्‌ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।"

<u>"मण्डली या सभा", न कि "कलीसिया" जैसा सोचो।</u>

यदि हम अपने आपको कलीसिया के बजाय मण्डली के विचार की आदत डाल दें, तो हम काफी सरलता से अपने मनों को मनुष्य के "कलीसिया" के विचार से मुक्त कर पाएँगे, और बाइबल जिसे कलीसिया कहती है उस पर ध्यान केन्द्रित कर पाएँगे। कलीसिया स्थापित करने के बजाय मण्डलियाँ स्थापित करने के विषय में सोचिए, तब आपका ध्यानः

- लोगों पर, न कि इमारतों पर होगा,
- उद्धार पर, न कि धर्म पर होगा,
- एकान्त में छिपे रहने के बजाय, समाज में फैल जाना होगा, और
- सम्प्रदायों को बढ़ाने के बजाय, परमेश्वर का राज्य बनाना होगा।

दुर्भाग्यवश, बहुक कम कलीसियाएँ एक ऐसे सरल, फिर भी बाइबल के आधार-वाक्य पर कार्य करने के लिए परिपक्व हैं। हालात सिद्धान्तीय दृष्टिकोण, साम्प्रदायिक संबंधनों, धार्मिक परम्परायों, कलीसिया-सम्बंधी पद्धतियों, आदि से जटिल बन गए हैं। आज की बहुत सी कलीसियाओं में सदस्यता की कसौटी सिद्धान्तीय धारणा, पूजन-पद्धति-विषयक की माँगों, और बहुत सारी मानवीय माँगों से जटिल बन गई है। कलीसिया की सदस्यता के लिए शर्तें समय के साथ जटिल होती गई हैं कि हम नए नियम के नमूने से बहुत दूर चले गए हैं। कभी आश्चर्य होता है कि प्रारंभिक कलीसिया के प्रेरित आज की अनेक कलीसियाओं में सदस्यता पा सकेंगे!
जैसे हम कलीसिया की स्थापना के इस अत्यावश्यक विषय पर पहुँचते हैं, मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ कि आप कलीसिया को इसके सबसे सरल, सबसे मूल आकार में देखो। मैं चाहता हूँ कि हम प्रारंभिक कलीसिया के नमूने तक लौट चलें। आओ हम नए नियम की स्थानीय कलीसियाओं की अपने मन में कल्पना करने और अपने सोच-विचार और स्थापना उन पर आधारित करने

का प्रयास करें, और ऐसी कलीसियाओं को स्थापित करने का लक्ष्य बनाएँ जो प्रारंभिक कलीसियाओं के जितनी करीब हो सकती हैं हों। बाद में हम प्रारंभिक बाइबल की कलीसिया की प्रकृति और कसौटी पर विचार करेंगे।

इसे सरल बनाओ, सन्तो।

"Kiss" सिद्धान्त।

यीशु की और आज के अधिकाँश प्रचारकों की शिक्षा की शैली में प्रत्यक्ष अन्तर यह है कि यीशु ने सबसे गूढ़ विषयों को लिया और उन्हें रुचिकर रूप से सरल बना दिया, जबकि आज के प्रचारक सरल से सरल विषयों को लेते हैं और उन्हें गूढ़ रूप से जटिल बना देते हैं।

"Kiss" सिद्धान्त हमें यह याद दिलाने के लिए है कि हम अक्सर चीजों को जितना उन्हें होना चाहिए उससे कहीं अधिक जटिल बना देते हैं। प्रभावकारिता चीजों को जटिल करने से नहीं परन्तु उन्हें सरल बनाने से प्राप्त होती है। हम कलीसिया की स्थापना के विषय को जितना हो सकता है उतना सरल रखने का प्रयास करेंगे। इस प्रकार, बहुत अधिक लोग इसे समझ सकेंगे और इसमें कार्य कर सकेंगे। जैसे ये लोग क्षेत्र में जाएँगे, तो बहुत से लोग उनकी सरल पहुँच और शैली की प्रशंसा करेंगे और स्वीकार करेंगे।

यीशु के विषय में कहा गया था कि "भीड़ के लोग (साधारण) उसकी आनन्द से सुनते थे।" (मरकुस 12:37)

- यीशु साधारण लोगों से अपनी पहचान बनाता था।
- वह उनकी भाषा बोलता था।
- उसने उनकी निन्दा नहीं की।
- वह जीवन की रोजमर्रा की समस्याओं का समाधान देता था।
- वह उन्हें सुसमाचार सुनाता था।

"साधारण लोगों" को प्रभावित करने और आकर्षित करने का प्रयत्न करो।

यीशु का संदेश और तरीका एक बुद्धिजीवी अल्पसंख्यक, या एक धार्मिक विशिष्ट वर्ग को आकर्षित करने के लिए नहीं था, बल्कि सरल, स्पष्ट था और भीड़ सरलता से समझ जाती थी। उसकी सेवकाई वहाँ तक पहुँचती थी जहाँ सुननेवाले होते थे। समाज के एक मजबूत भाग में इसकी शक्तिशाली अपील थी। वह लोगों के साथ "लय में था।" वे उसके आने का वेसब्री से इन्तज़ार करते थे। वे उसके हर शब्द को बड़े ध्यान से सुनते थे। वे गाँव-गाँव में उसके पीछे मीलों दूर तक चलते थे। वे झील के किनारे उस पर गिरे पड़ते थे। वे अपना भोजन करना भूल जाते थे; क्योंकि वे अपने प्राणों को जीवन की रोटी खिलाने के जिसे वह देता था, इतने उत्सुक थे।

कलीसिया "स्थापना" से हमारा क्या अर्थ है?

यह शब्द एक नई मण्डली या कलीसिया के प्रवर्तन या प्रारंभ को वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। कलीसिया की स्थापना की तुलना फसल रोपने से की जा सकती है। प्रकट है कि स्थापना में "हल जोतने, बीज बोने, पानी देने, फसल काटने, धान निकालने और इकट्ठा करने" की क्रियाएँ सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त, रोपने के सादृश्य में कुछ महत्त्वपूर्ण सादृश्य हैं, जिन्हें कलीसिया स्थापना करनेवालों को मन में रखना चाहिए।

कलीसिया स्थापना की प्रक्रिया में, हमें नीचे दी गई चीजों के महत्त्व को समझना है।

- रोपने के लिए सही जमीन खोजना।
- सही मौसम में सही बीज बोना।
- रोपने से पहले, जमीन को तैयार करना, पत्थर और रुकावटों को निकालना।
- बंजर जमीन को तोड़ना।
- अच्छी जमीन में अच्छा बीज बोना।
- मौसमी बारिश से नरम हुई जमीन में बीज बोना।
- फसल की देखभाल करना। आवश्यक हो तो खाद डालना। नियमित पानी देना।
- छँटनी करना।
- फसल के समय तक इसकी परिश्रम के साथ रखवाली करना।
- उचित समय और मौसम में फसल इकट्ठी करना।

बाद में जब हम कलीसिया स्थापना के लिए नीतियों की चर्चा करेंगे, तब हम इन सिद्धान्तों पर और ध्यानपूर्वक विचार करेंगे।

फसल की निश्चितता

रोपने के विचार में से एक और प्रोत्साहित करनेवाला विचार फसल की निश्चितता है, एक ऐसा सिद्धान्त और प्रक्रिया जिसे परमेश्वर ने पृथ्वी पर मनुष्य की उपस्थिति से अपने आप आरम्भ किया था।

उत्पत्ति 8:22, "अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएँगे।"

भजन 126:6 में दाऊद हमें बताता है, "चाहे बोनेवाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियाँ लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा।"

फसल की अनिवार्यता का यह शक्तिशाली नियम इस पृथ्वी पर जीवन के हर पहलू में निर्माण किया गया है। यह एक सच्चाई है कि यदि हम बोएँगे, तो हम काटेंगे, यदि हम परमेश्वर द्वारा बनाए प्रकृति के नियमों का ध्यानपूर्वक पालन करेंगे, तो हम निश्चय ही फसल काटेंगे। इसलिए कलीसिया स्थापना के साथ भी, परमेश्वर ने कुछ नियम दिए हैं जिनका हमें पालन करना चाहिए। आओ हम मिलकर इन सिद्धान्तों का पता लगाने और उन पर विचार करने का प्रयास करें "ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें।" (यूहन्ना 4:36)।

कृपया इन्हें याद रखें:

- कलीसिया एक इमारत नहीं, बल्कि उद्धार पाए लोगों की मण्डली है।
- "मण्डलियों" न कि "कलीसियाओं" के विषय में सोचो।
- कलीसिया की तुलना किसी विशेष धार्मिक क्रियाओं के नमूने से मत करो।
- साधारण लोगों को प्रभावित करने और आकर्षित करने के विषय में सोचो। (इस किस्म के लोग दूसरे किसी भी किस्म से अधिक हैं।)

प्रश्न:

1. किसी तीन चीजों के नाम बताइए, जो साधारण लोगों को आकर्षित करेंगी ?
2. क्या आप तीन चीजों के नाम बता सकते हैं जो लोगों को आपकी कलीसिया में आकर्षित करेंगी ?
3. तीन सिद्धान्तों के नाम बताइए, जिन पर एक स्वाभाविक फसल की तैयारी के लिए ध्यान देना चाहिए ?
4. एक नई मण्डली आरम्भ करने के लिए आप इन सिद्धान्तों को कैसे उपयोग में ला सकते हैं ?

अध्याय 2 – बाइबल का नमूना

जैसे हम कलीसिया की स्थापना के लिए बाइबल के सिद्धान्तों की खोज करने लगें, तो हमें सबसे पहले प्रेरितों की पुस्तक की ओर फिरना चाहिए, जो प्रारंभिक कलीसिया की स्थापना का एतिहासिक विवरण है। मेरा दृढ़ निश्चय है कि यह न केवल घटनाओं का एतिहासिक विवरण है, बल्कि यह एक "नमूना" है - एक कलीसिया कैसे स्थापित की जाए और कैसे कार्य करे का बाइबल का नमूना। आओ हम अपना ध्यान कुछ प्रमुख चीजों पर लगाएँ।

1. सामर्थ्य की प्रतिज्ञा। प्रेरितों 1:8

यीशु ने कहा, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।"

यहाँ हमारे पास प्रेरितों की पुस्तक की पहली कुंजी है। एक ऐसी कुंजी जो आगे के विवरण के लिए हमारी समझ को खोलती है। एक निर्विवाद तत्त्व जिसके बिना हम प्रारंभिक कलीसिया के कार्यों का अनुकरण करने की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं। हम इस सिद्धान्त को अपनी ही हानि के लिए अनदेखा करते हैं। हम यीशु की इस बात का अर्थ चाहे किसी भी प्रकार से निकालने का प्रयास करें, एक बात तो पक्की है कि वह चेलों की पवित्र आत्मा के अभिषेक के द्वारा एक अलौकिक सामर्थ्य की आवश्यकता की बात कर रहा था। ऐसा ही अभिषेक अध्याय दो में हुआ, और उसके प्रमाण प्रेरितों के जीवन और सेवकाई में स्पष्ट रूप से देखे गए थे।

यह बात बार-बार कही गई है कि इस पुस्तक को "पवित्र आत्मा के कार्य", या और विशेषकर, "पवित्र आत्मा के कुछ कार्य" कहा जा सकता है। यह भी सुझाव दिया गया है कि इस तथ्य में एक गम्भीर महत्त्व है कि पुस्तक के अन्त कोई "आमीन" नहीं है, जो इस बात का संकेत देता है कि उसके सामर्थी कार्यों का अन्त नहीं हुआ था - और और अध्याय अभी लिखे जाने थे। ये परवर्ती कार्य कलीसिया के इतिहास के पन्नों पर लिखे गए हैं। पवित्र आत्मा के बड़े बड़े कार्य बीसवीं सदी में भी देखे गए हैं और बाइबल की भविष्यद्वाणियाँ हमें पहले से जान लेने के शक्तिशाली कारण देती हैं कि आत्मा के सामर्थ्य के सबसे अधिक नाटकीय प्रकटीकरण इस युग के अन्त में, और मसीहा के पृथ्वी पर लौटने से पहले घटित होंगे।
यीशु की भविष्यद्वाणी उसकी घोषणा के 50वें दिन पूरी हुई जब पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा उसके चेलों पर उण्डेला गया था। उस समय से लेकर वे उसकी भविष्यद्वाणी का दूसरा भाग भी पूरा करने लगे - यरूशलेम, यहूदा, सामरिया और अन्त में पृथ्वी की छोर तक उसके गवाह होना।

2. **प्रार्थना का महत्त्व। प्रेरितों** 1:14

हमें कभी भी भूलना नहीं है कि कलीसिया की स्थापना का यह इतिहास एक प्रार्थना सभा में आरम्भ हुआ था। और न ही हमें हर प्रकार की आत्मिक क्रिया, और विशेषकर कलीसिया की स्थापना में एक अनिवार्य तत्त्व के रूप में प्रार्थना के सामर्थ्य और अत्यावश्यकता के महत्त्व को कम करना है। योजनाएँ और कार्यक्रम अनिवार्य हैं परन्तु ये प्रार्थना के स्थान में उत्पन्न होने चाहिए। जब अंताकिया की कलीसिया के अगुए उपवास और प्रार्थना में प्रभु की उपासना कर रहे थे, तब उन्हें पहले महान मिशनरी यात्रा के विषय में प्रकाशन और निर्देश मिले थे।
यदि आप सम्भावित कलीसिया स्थापना करनेवाले हैं; इस प्रकार की सेवकाई में लगने के लिए अपने जीवन पर परमेश्वर के बुलावे से अभिज्ञ हैं, तब इसके विषय में उत्सुकता से प्रार्थना करने लगो और परमेश्वर के सम्मुख प्रार्थना में उत्तम समय बिताओ। अपने बुलावे के विषय में उससे बातें करो, परन्तु उससे भी जरूरी, उसकी बाट जोहो, उसकी आवाज सुनो, उसका निर्देशन खोजो। जैसे आप इस प्रकार परमेश्वर के साथ संगति और सहभागिता करते हो, तो परमेश्वर का आत्मा आपके ज्ञान और समझ में कुछ चीजें उत्तेजित करने लगेगा। परमेश्वर के सम्मुख प्रार्थना में ही उसके हृदय का बोझ और दर्शन आपको दिया जाता है। इस प्रकार के वातावरण में ही वह आप पर कोई काम डालने लगता है।
जो बात मैं कह रहा हूँ, प्रार्थना और मार्गदर्शन के महत्त्व पर, जो अक्सर ऐसे समयों में हमें उपलब्ध की जाती है, जोर देने की है। मैं आपको हृदय से प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि आप अपने प्रार्थना के जीवन को तीव्र करें। केवल परमेश्वर ही जानता है कि फलस्वरूप आपके जीवन में क्या क्या आश्चर्यजनक और उत्तेजक चीजें घटने लग सकती हैं। कलीसिया स्थापकों का यह प्रशिक्षण कोर्स मुख्य रूप से तरीकों और तकनीकों के बारे में नहीं है; यह आत्मिक सेवकाई के बारे में है, जिसका उत्तेजनशील इन्धन प्रार्थना है।

3. **आत्मा का सामर्थ्य। प्रेरितों** 2:1-13

अचानक, पिन्तेकुस्त के दिन, "दूसरे सहायक" के आने की यीशु की प्रतिज्ञा पूरी हुई थी। तत्काल नाटकीय परिवर्तन और रूपान्तरण होने लगे, जो प्रत्यक्ष रूप से आत्मा के सामर्त्य का सीधा परिणाम थे। इनमें से सबसे उल्लेखनीय और प्रत्यक्ष पतरस में हुए। शिष्यता के लिए उसका प्रारंभिक बुलावा, जो मत्ती 4:18-22 में वर्णित है, प्रतिज्ञा के साथ पूरा हुआ। यीशु ने उसे गलील में मछलियाँ पकड़ने से बुलाया था और प्रतिज्ञा की थी, "मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।"
इसके तुरन्त बाद, मत्ती 16:13-20 के कैसरिया फिलिप्पी में, यीशु की सच्ची पहचान और मसीहा की भूमिका के विषय में स्वर्गीय प्रकटीकरण पाने में वह बहुत ही धन्य हुआ था। "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" परन्तु थोड़ी ही देर बाद, यीशु को उसे उसके आत्मविश्वास और परिकल्पना के लिए डाँटना पड़ा। (मत्ती 16:21-23)। पिन्तेकुस्त के दिन के तुरन्त पहले के कुछ सप्ताहों में, उसके जीवन से कुछ निराशाजनक संकेत मिले थे।
मत्ती 26:69-75 में उसका मसीह का इन्कार करना, उसके आत्मिक विकास में एक दुखद पतन दिखाता है, जब उसने तीन बार मसीह को जानने से साफ इन्कार किया था। इसके बाद वह एक गलीली मछुवे के अपने पिछले काम में लौट गया। यूहन्ना 21:1-14। क्रूस के स्थल पर, वह विशिष्ट रूप से अनुपस्थित था। ऐसा लगेगा कि उसका आत्मिक जीवन एक निश्चित पतन की ओर जा रहा था, परन्तु पिन्तेकुस्त के सामर्थ्य ने सबकुछ बदल दिया।
पिन्तेकुस्त के बाद पतरस एक परिवर्तित व्यक्ति है:
- इस अनुभव से पहले वह कुछ डरपोक सा लगता है। बाद में वह साहसी और निडर है।
- पहले वह संकोची और भयभीत था। बाद में वह निडर है।
- पहले वह आत्मविश्वासी और घमण्डी था। अब, उसका घमण्ड मसीह में है।

- पहले उसने यीशु को जानने से इन्कार किया। अब वह भीड़ को उसका प्रचार करता है।
परमेश्वर का अनुग्रह कैसा विशिष्ट है, कि जिसने तीन बार मसीह का इन्कार किया था, उसे कलीसिया के प्रारम्भ के इस महत्त्वपूर्ण दिन पर प्रवक्ता होने के लिए चुना गया!

4. **प्रचार का सामर्थ्य।**

पतरस पर आत्मा के सामर्थ्य का एक प्रमाण वचन का सामर्थ्य और अधिकार के साथ प्रचार करने की उसकी योग्यता है। उसका प्रचार हमारे लिए एक नमूना है।
उसने आत्मा के सामर्थ्य में प्रचार किया।
उसने आत्मा के अभिषेक में प्रचार किया।
उसने परमेश्वर के वचन का प्रचार किया।
उसने क्रूस पर चढ़ाया, गाड़ा गया, पुनरुत्थान हुआ और स्वर्ग में चढ़ा यीशु का प्रचार किया।
उसने परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु का प्रचार किया।
उसने परमेश्वर के मसीह के रूप में यीशु का प्रचार किया।
उसने प्रचार किया कि यीशु प्रभु है।
उसने पापों की क्षमा का प्रचार किया।
उसने मन फिराने, पानी के बपतिस्मे और पवित्र आत्मा के पाने का प्रचार किया।
वह अपने सुननेवालों को एक फैसले पर लाया।
उसने उन्हें स्पष्ट रूप से आग्रह किया कि "अपने आप को इस टेढ़ी जाति से बचाओ।"
उसने फैसला करनेवालों को उनके साथ जुड़ते देखा। प्रेरितों 2:41

5. **उसके संदेश का महत्त्व**

पतरस के संदेश का उच्च स्वर आयत 36 में पहुँचा था, जब उसने घोषित किया, "परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।" बाकी सब चीजें जो पतरस ने कहीं, उनमें से उसके इस वक्तव्य ने लोगों को सामर्थ्य के साथ आकर्षित किया और दोषसिद्ध किया। यह उन्हें एक गम्भीर फैसले के द्वार पर लाया, जिससे वे पुकार उठे, "हम क्या करें ?" यदि पतरस अपने संदेश को एक शीर्षक देता तो यह "यीशु मसीह प्रभु है" होता।
यह हमारे सारे प्रचार और शिक्षा का आधारित विषय होना चाहिए, क्योंकि यह राज्य के सुसमाचार का मूल विषय है। मैं जानता हूँ कि यीशु हमारा उद्धारकर्त्ता, चंगा करनेवाला, बोझ उठानेवाला, सलाहकार, सहायक, और और भी काफी कुछ है। परन्तु, इन सबसे बढ़कर वह प्रभु है!!! यदि हम उसका इससे कम प्रचार करते हैं तो हम राज्य के संदेश के साथ समझौता करते हैं। उसके प्रभुत्व का प्रचार उसकी सेवकाई के हर पहलू को ग्रहण करता है, तिस पर भी घोषणा करता है कि वह अन्त में और अत्यधिक राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है।

6. **हृदय से कायल होना**

प्रेरितों 2:37 हमें बताता है कि "सुननेवालों के हृदय छिद गए"। वे अपने हृदयों में गम्भीर रूप से कायल हुए, ऐसा कहने का यह एक दूसरा तरीका है। वे बहुत परेशान हुए। वे अपनी आत्माओं में बेचैनी अनुभव करने लगे। वे विचलित हुए। उन्हें परमेश्वर के सामने उनके दोष का स्पष्ट अनुभव हुआ और वे कुछ दुख और मनोव्यथा से पुकार उठे, "कृपया हमें बताओ कि स्थिति को बदलने के लिए हम क्या करें।" वे स्पष्ट रूप से पहचान गए और उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें परमेश्वर को उचित उत्तर देना होगा और जो कुछ भी आवश्यक था वे करने को तैयार थे।
एक चीज जिसकी आजकल सुसमाचार प्रचारों में स्पष्ट और दुखद रूप से कमी है, वह है "पुराने तरीके का हृदय में पाप का स्पषट अनुभव होना।"
हम विरले ही लोगों को अशान्त और दुखी पाते हैं, जो पुकार रहे हों, "हम क्या करें ?" यह प्रत्यक्ष रूप से कुछ तत्त्वों के कारणों से होगा और अच्छा होगा हम पता करें कि इनमें से कुछ कारण क्या हो सकते हैं। आओ हम संक्षेप में देखें कि वे कुछ कारण क्या हो सकते हैं:

अ. प्रार्थना पर अपर्याप्त जोर।
आ. हमारे संदेशों में बाइबल की अपर्याप्त विषय-वस्तु।

इ. परमेश्वर से संदेशों का प्रचार करने के बजाय 'प्रवचन' देने की आधुनिक प्रवृति।

ई. घट रहा अभिषेक, क्योंकि हम निष्कपट, गैर-समझौता वाली घोषणाओं को उपयोग में लाने से कतराते हैं।

उ. पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में पूर्ण रूप से अर्पित होने का डर।

ऊ. व्यक्तिगत उपयोग जितना शक्तिशाली हो सकता है उतना बनाने से कतराना।

7. सच्चे पश्चाताप का सामर्थ्य

जब लोग पुकार उठे, "हम क्या करें ?" तो पतरस ने माँगों के साथ समझौता नहीं किया। उसने "फैसले करने के लिए कार्ड" नहीं बाँटे, या उनसे कहा "मेरे पीछे यह सरल प्रार्थना दोहराओ", या न ही सदस्यता के कार्ड पर हस्ताक्षर करवाए। उसने पश्चाताप करने की आवश्यकता को लेकर उनका निर्भयता से और स्पष्ट रूप से सामना किया।

पश्चाताप के लिए बुलावा आधुनिक सुसमाचार में लगभग भुला ही दिया गया है। इसके स्थान पर "अपना हृदय यीशु को दो", या "यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता स्वीकार करो" जैसी पिष्टोक्तियाँ उपयोग में लाई जाती हैं। परन्तु ये बाइबल के नमूने नहीं हैं। इन पिष्टोक्तियों को हम ने लोगों को यीशु स्वीकार करने में सरलता के लिए गढ़ा है। बाइबल के पश्चाताप पर जोर को इन विचारों से बदलने में, हम ने अपने सुनने वालों के लिए एक बड़ी हानि की है। जब यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवा आरम्भ की थी, तो पहला शब्द जो उन्होंने कहा था, "मन फिराओ" था (मरकुस 1:14)।

<u>सच्चा पश्चाताप वह कुंजी है जो उद्धार के लिए द्वार खोलती है।</u>

- सच्ची क्षमा पाने के लिए पश्चाताप अनिवार्य है।
- भीतरी मनुष्यत्व की चंगाई के लिए यह अनिवार्य है।
- जीवन के रूपान्तरण के लिए यह अनिवार्य है।
- हमारे भीतर मसीह के बसने के लिए यह पूर्वापेक्षा है।
- यदि पहले सच्चा पश्चाताप नहीं होता तो पानी का बपतिस्मा एक बेकार धार्मिक विधि ही होगी।

8. प्रभु ने उन्हें कलीसिया में जोड़ दिया।

कृपया इस तथ्य पर विशेष ध्यान दो कि यह प्रभु था जो मन फिराने वालों को कलीसिया में जोड़ता था, और कि प्रभु के तीन हजार को कलीसिया में जोड़ने के तुरन्त बाद शिष्यता की प्रक्रिया आरम्भ हुई। नए विश्वासियों को उपदेश दिया और प्रोत्साहित किया गया कि वे:

अः प्रेरितों से शिक्षा पाने में लवलीन रहें।

"शिक्षा" शब्द का, जिस प्रकार यह पहले इस्तेमाल किया गया था, उससे एक भिन्न अर्थ था जैसा यह आज इस्तेमाल किया जाता है। आज का उपयोग यह विचार देता है कि यह बाइबल के किसी विषय पर जो हम विश्वास करते हैं, एक सार है। परन्तु शब्द के प्रारंभिक उपयोग का अर्थ है - "जीवन का ढंग या शैली"। इसलिए "प्रेरितों की शिक्षा" का अर्थ था "प्रेरितों के जीने का ढंग या जीवन शैली"। यह जो वे विश्वास करते थे उसका बाइबल का वक्तव्य नहीं था, बल्कि जिन चीजों पर वे विश्वास करते थे उसके कारण जीवन की शैली और उत्तमता थी जो वे जी रहे थे। शिक्षा शब्द का उपयोग इसके उपयोग में 1 तीमु. 4:16; 1 तीमु. 5:1-2; तीतुस 2:1-8 में स्पष्ट पाया जाता है।

कुछ तीन वर्ष तक यीशु ने अपने चेलों को सिखाया था कि पिता कैसा जीवन चाहता है वे जीएँ। उसने राज्य के सिद्धान्त जी कर दिखाए और सिखाए भी थे। उसने उन्हें उसके उदाहरण का अनुकरण करने और उसके समान जीने के लिए प्रोत्साहित किया और उपदेश दिया था। उसी सिद्धान्तों का अनुकरण करें और उनके द्वारा जीएँ जिन्हें उसने जीया और सिखाया था। इसलिए यीशु की जीवन शैली प्रेरितों के जीने का तरीका बन गया था।

शिक्षा कोई धर्म, सिद्धान्त, शैक्षिक या तात्त्विक मामला नहीं है। यह एक प्रेमी, व्यवहारिक, सेवा का जीने का तरीका है; एक जीवन शैली जो "मसीही" नाम के योग्य है।

आः संगति रखने में

Koinonia शब्द जो "संगति" अनुवाद किया गया है, का अर्थः साझेदारी है। परमेश्वर और एक दूसरे के साथ साझेदारी। यह एक मजबूत, संगत, और विश्वसनीय और टिकाऊ सम्बंध का संकेत देता है। उदाहरणार्थ, यह विवाह का सम्बंध, यानि, "विवाह की मजबूत साझेदारी" चित्रित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह एक व्यवसाय में साझेदारी चित्रित करने के लिए भी इस्तेमाल होता है जिसमें साझेदार एक दूसरे की ओर सम्पूर्ण रूप से वचनबद्ध होते हैं।

नए चेले यीशु मसीह की ओर, और एक दूसरे की ओर सम्पूर्ण रूप से वचनबद्ध थे। प्रेरित यूहन्ना कहता है कि हमारी यह सहभागिता पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है, और एक दूसरे के साथ भी है। (1 यूहन्ना 1:3)।
सम्बंध की जो उत्तमता उनके और परमेश्वर के बीच स्थापित की गई थी, विश्वासियों के बीच भी स्थापित की गई थी। जब वे मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ जुड़े थे, तो वे एक दूसरे के साथ भी जुड़ गए थे। जब परमेश्वर उनका पिता बना, तो वे भाई और बहन बन गए थे। एक दूसरे के साथ हमारा सम्बंध उतना ही वास्तविक है जितना परमेश्वर के साथ हमारा सम्बंध है। एक दूसरे के साथ सम्बंध में रहे बिना हम परमेश्वर के साथ सम्बंध में नहीं रह सकते हैं। एक दूसरे की ओर वचनबद्ध हुए बिना हम परमेश्वर की ओर वचनबद्ध नहीं हो सकते हैं। 'यदि कोई कहे, "मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ," और अपने भाई से बैर रखे तो वह झूठा है।' (1 यूहन्ना 4:20)। प्रारंभिक कलीसिया के सदस्य परमेश्वर और एक दूसरे की ओर सम्पूर्ण रूप से वचनबद्ध थे और यह वचनबद्ध समूह पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य था।

इ: रोटी तोड़ने में

और वे प्रतिदिन "घर-घर रोटी तोड़ते", का अर्थ जरूरी नहीं कि वे प्रभु भोज मनाया करते थे। इसका अर्थ है कि वे अतिथि-सत्कार करते और मिलकर भोजन करते थे। वे एक दूसरे के घर जाते, सामूहिक भोजन करते, एक दूसरे को बेहतर जानने का प्रयास करते, और उनके सम्बंध मजबूत करते थे। हम दूसरों को कलीसिया में उनके साथ बैठने के बजाय उनके साथ भोजन के समय उन्हें बेहतर जान सकते हैं। अनेक मसीह वर्षों तक एक साथ कलीसिया में आते हैं और फिर भी सतही जानकारी के परे एक दूसरे को जान नहीं पाते हैं। हम कैसे एक दूसरे के लिए अपने प्राण दे देने के लिए राजी हो सकते हैं यदि हम एक दूसरे का अतिथि-सत्कार ही नहीं कर सकते हैं ?
उनके सामूहिक भोजन उनके वाचा के सम्बंध के चिन्ह भी थे। एक वाचा का सम्बंध अक्सर एक सामूहिक भोजन के साथ पक्का होता था और जब कभी भी वे मिलकर भोजन करते, वे इस सम्बंध को बढ़ाते और इसे खुलेआम घोषित करते थे।

ई: सामूहिक प्रार्थना

चौथी चीज जिसमें वे इकट्ठे लवलीन रहे थे सामूहिक प्रार्थना थी। यहाँ पर ध्यान देने के लिए एक महत्त्वपूर्ण क्रम है। यह इसलिए सम्भव हुआ था क्योंकि वे पहले तीन सिद्धान्तों का दृढ़ता से पालन कर रहे थे, वे चौथे क्षेत्र में प्रभावशाली तरीके से कार्य कर सके थे। प्रार्थना में सच्ची एकता तब प्राप्त होती है जब भाग लेनेवाले एक दूसरे के साथ उचित रूप से सम्बंध में होते हैं। सामूहिक प्रार्थना एक कमरे में लोगों को इकट्ठे करने से कहीं अधिक है। कल्पना कीजिए कि एक कमरे में पच्चास लोग प्रार्थना कर रहे हैं। हालाँकि वे सब मसीही हैं, अवश्य नहीं कि वे उस सम्बंध की उत्तमता और पारस्परिक वचनबद्धता में एक होंगे जो संयुक्त प्रार्थना की शक्तिशाली सामर्थ्य लाती है। परन्तु, यदि वही मसीही प्रेरितों के जीने के ढंग, सामान्य वचनबद्धता, वाचा के सम्बंध और मिलकर भोजन करने में अटल हैं, तो वे एक ऐसी एकता बनाएँगे जो उनकी प्रार्थनाओं में प्रकट होगी। (प्रेरितों 4:24)। जब ऐसे लोग मिलकर प्रार्थना करते हैं तब वह स्थान परमेश्वर के सामर्थ्य से हिल जाता है। (प्रेरितों 4:31)।

9. स्तुति करते लोग (प्रेरितों 2:47)

अध्याय 2 की यह अन्तिम आयत बड़े महत्त्व की है। यह पहली कलीसिया में कुछ आदेशक तत्त्वों की रूपरेखा देती है, जैसे कि:

प्रारंभिक कलीसिया एक स्तुति करनेवाली कलीसिया थी

इसे स्पष्ट रूप से और सरलता से पहचाना जा सकता था। परमेश्वर की स्तुति करना उस कलीसिया की विशेषता थी। इसे इस तत्त्व द्वारा स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता था। प्रकट है कि इस याजकीय कार्य पर बहुत जोर दिया जाता था। हमें नए विश्वासियों को स्तुति के लोग बनने के लिए, शिक्षा और उदाहरण द्वारा, सदा प्रोत्साहित करते रहना चाहिए। हमें नई बनाई मण्डलियों के सदस्यों को स्तुति और आराधना करने की एक शक्तिशाली आदत सिखानी चाहिए। यदि इस आयत की बाकी विशेषताएं वर्तमान होनी हों तो मेरा विश्वास है कि यह एक अनिवार्य तत्त्व होना चाहिए।

एक कलीसिया में शक्तिशाली स्तुति और आराधना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह:

- लोगों को आत्मिक रूप से मुक्त करती है
- आत्मा का एक विशेष अभिषेक लाती है
- लोगों को मित्रभाव में बाँधती है
- प्रभु का आनन्द जो हमारी ताकत है लाती है
- अधिपतियों और शासकों को बाँधती है (भजन 149:8)

कलीसिया पर स्थानीय जनसंख्या का बड़ा अनुग्रह था
स्थानीय लोग कलीसिया का बहुत आदर करते थे। जिस प्रकार यीशु को सामान्य नागरिक से बहुत सम्मान और प्रसिद्धि मिली हुई थी, उसी प्रकार उसकी कलीसिया भी लोगों का सम्मान और विश्वास पा रही थी।

प्रभु प्रतिदिन कलीसिया में जोड़ देता था
यह बिलकुल कलीसिया की प्रकृति और प्रवृति के कारण था कि परमेश्वर, जो लोग पश्चाताप करते और परमेश्वर की ओर फिरते थे उनमें जोड़ दिया करता था। मेरा विश्वास है कि परमेश्वर कलीसिया को इस प्रकार चुनौती देता है, "जब तुम लोगों की उस प्रकार देखभाल करने लगोगे जैसा मैं चाहता हूँ उनकी देखभाल हो, तो मैं लोगों को तुम्हारे पास भेजूँगा।"

10. **सामर्थ्य के कार्य**

प्रेरितों 3 हमें एक ऐसे तत्त्व के विषय में बताता है जो प्रारंभिक कलीसिया की एक मूलभूत विशेषता बन गई थी। इसे अँग्रेजी में पॉवर एन्काऊँटर कहते हैं। यह सुसमाचार के अलौकिक पहलू की बात करता है। यह एक तात्कालिक आवश्यकता की परिस्थिति में अलौकिक रूप से सेवा करने, चंगाई लाने, यीशु के उद्धार करनेवाले नाम के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ्य लाने के लिए अधिकार, सामर्थ्य और योग्यता है। "और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ्य दी है।" (प्रेरितों 3:16)।
सामर्थ्य के कार्य के महत्त्व को न तो अनदेखा किया जा सकता है और न करना चाहिए। प्रारंभिक कलीसिया की प्रभावकारिता में यह एक मूलभूत और अनिवार्य तत्त्व था जिसे कम महत्त्व नहीं दिया जा सकता है।
सामर्थ्य का कार्य तब होता है जब परमेश्वर का सामर्थ्य शैतान के सामर्थ्य का सामना करता है। परमेश्वर का सामर्थ्य परमेश्वर के राज्य की घोषणा के साथ साथ कार्य करता है। इसका शैतान के सामर्थ्य से अपंग मानवजाति के रूप में सामना होता है। युद्ध आरम्भ होता है, और यीशु के नाम में विजय और प्रभुत्व शैतान को क्षेत्र परमेश्वर के राज्य को देने के लिए विवश करता है।

<u>सामर्थ्य के कार्यों से मिलने वाले कुछ परिमामः</u>

* सुसमाचार के प्रचार के साथ साथ चिन्ह होते हैं, जैसा यीशु ने कहा था।
मरकुस 16:17-18 "विश्वास करनेवालों के ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, साँपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक वस्तु भी पी जाएँ तौभी उनकी कुछ हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे।"

* आश्चर्यकर्म और चमत्कार संदेश के अधिकार को मान्य ठहराएँगे।
प्रेरितों *2:22* "यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए।"

* लोगों की असली आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।
बाइबल में वर्णित बहुत सारे सामर्थ्य के कार्य उन अनेक प्रकार की मनुष्य की आवश्यकताओं को चित्रित करते हैं जो सुसमाचार के द्वारा पूरी की जाती हैं। बीमार, कमज़ोर और सताए हुए चंगे होते हैं। दुष्टात्माएं निकाली जाती हैं। बन्धन में पड़े लोग स्वतन्त्र किए जाते हैं।

* यीशु का नाम ऊँचा होता है। (प्रेरितों 3:16)

* अनेक प्रभावोत्पादक द्वार खुल जाते हैं।

प्रारंभिक कलीसिया के बाइबल के सारे इतिहास भर में, बहुत सारे विवरण हैं जब परमेश्वर की चमत्कारी सामर्थ्य ने सुसमाचार के प्रचार के लिए प्रभावोत्पादक द्वार खोले थे। हम कितने आनन्दित होते हैं कि कुछ लोगों के विचार के उलटे, वही सामर्थ्य तब से उपलब्ध है और अभी भी उपलब्ध है। सारे संसार भर में लोगों की एक विशाल फसल काटी जा रही है और लाखों करोड़ों लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर रहे हैं। दक्षिण अमेरिका, एशिया और कुछ हद तक संसार के दूसरे भागों में भी बड़ी बेदारी के

दृश्य और त्वरित कलीसिया की बढ़त हो रही है। लगभग हर घटना में जहाँ रचनात्मक बढ़त हो रही है, सामर्थ्य के कार्यों के प्रमाण पाए जाते हैं।

मेरा व्यक्तिगत विश्वास है कि कलीसिया के इतिहास में हुई किसी भी कटनी से अधिक एक बड़ी फसल जल्दी ही इकटठी होने वाली है। मेरा विश्वास है कि यह एक विश्वव्यापी घटना होगी जिसमें परमेश्वर "अपना आत्मा सब मनुष्यों पर" उँडेलेगा। मुझे यह भी विश्वास है कि इस बेदारी की विशेषता बड़े बड़े सामर्थ्य के कार्य होंगे। मेरा विश्वास है कि सैकड़ों हजारों नई मण्डलियाँ उत्पन्न होंगी और इन घटनाओं के लिए द्वार सामर्थ्य के कार्यों के बाइबल की कुंजियों के द्वारा ही होगा।

11. योग से गुणा तक

कलीसिया के प्रारंभिक दिनों में, जैसे जैसे परमेश्वर नए विश्वासियों को कलीसिया में जोड़ता था, उत्तेजनापूर्ण बढ़त हो रही थी।

प्रेरितों 2:44 "और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।"

प्रेरितों 5:44 "विश्वास करनेवाले कलीसिया में बड़ी संख्या में मिलते रहे।"

परन्तु जब हम प्रेरितों 6 में पहुँचते हैं, तब हम पाते हैं कि कलीसिया बढ़त के नए त्वरित पहलू में जा रही है जिसे गुणा कहते हैं। प्रेरितों 6:7, "और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई।"

यह एक सच्ची बेदारी का नमूना चित्रित करता है, जो गतिमात्रा पकड़ता जाता है और योग से गुणा की ओर बढ़ता है। इस प्रकार के बढ़त के नमूने अत्यन्त उत्तेजक होते हैं परन्तु वे अपने साथ समस्याएं भी लाते हैं जिनके लिए हमें बाइबल के उत्तर खोजने चाहिए।

12. प्रशासन का प्रवेश (प्रेरितों 6:1-7

जैसे प्रारंभिक कलीसिया संख्या में बढ़ने लगी, तो उचित प्रशासन की आवश्यकता अनुभव होने लगी। प्रारंभिक चरणों में, प्रशासन और प्रबंध पर कम से कम जोर देकर भी कलीसिया कार्य कर रही थी। परन्तु, जैसे जैसे विश्वासियों की संख्या बढ़ने लगी, उचित प्रबंध की आवश्यकता बहुत जरूरी होने लगी। यह बढ़त एक आत्मिक बेदारी के संदर्भ में हो रही थी की सच्चाई का अर्थ यह नहीं था कि बढ़त सम्भावित समस्याओं के बगैर थी। लोग लोग होते हैं चाहें वे बेदारी में हों या नहीं, और उनके उचित प्रबंध की आवश्यकता पड़ती है।

प्रेरितों ने पहचाना कि कुछ ठोस कदम उठाने होंगे और वे उनके साथ काम करने के लिए अतिरिक्त चेलों का प्रबंध करने लगे। उन्होंने देखा कि उन्हें:

उनके बुलावे को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। "यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में लगे रहें।" (आय. 2)
पर्याप्त उपयुक्त साथी कार्यकर्त्ताओं (सात) को चुनने की आवश्यकता है।
उचित कसौटी, यानि, पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण, स्थापित करने की आवश्यकता है।
उन्हें पहचानना और नियुक्त करना है। (आय. 6)
उन्हें विशेष जिम्मेवारियाँ सौंपनी हैं।
उचित अधिकार देना है।

इन कदमों का लाभकारी परिणाम कलीसिया के त्वरित निरन्तर बढ़त में तुरन्त प्रकट होने लगा। प्रेरितों 6:7। परमेश्वर का वचन फैलने लगा। यरूशलेम में चेलों की संख्या बहुत बढ़ने लगी। बहुत से याजक भी विश्वास करने लगे।

13. स्तिफनुस, पहला मसीही शहीद (प्रेरितों 7)

चेलों का नया समूह (डीकन) जिन्हें अध्याय 6 में दीक्षित किया गया था, दूसरे अनेक क्षेत्रों में भी फल दिखाने लगे। नियुक्त किए गए में दो, स्तिफनुस और फिलिप्पुस, शीघ्र ही भोजन के वितरण से आगे बढ़कर प्रचारकों और चमत्कार करनेवालों का काम करने लगे। आओ हम पहले स्तिफनुस पर विचार करें।

प्रेरितों 6:8 में हम पढ़ते हैं, "स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े-बड़े अदभुत काम और चिन्ह दिखाया करता था।" कुछ ही समय पहले उसे कलीसिया के प्रशासन के लिए उचित पाया गया था (प्रेरितों 6:5)। उसने इस कार्य के लिए अपेक्षित मापदण्ड को पूरा किया था, कि वह "विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था।" प्रकट है कि वह, दूसरे छः पुरुषों के साथ, इस कार्य में खरा उतरा था। शीघ्र ही हम उसे एक दूसरी भूमिका में देखते हैं, वह लोगों में बड़े-बड़े अदभुत काम और चिन्ह दिखाया करता था। ऐसा लगता है कि वह किसी प्रकार की आत्मिक शिक्षुता की अवधि बिता रहा था और कि परमेश्वर ने अब उसे "पदोन्नति" दी थी। यह एक सिद्धान्त पर जोर देता है जो परमेश्वर के काम में बारंबार देखा गया है। कि परमेश्वर अपना

काम अक्सर उन्हें ही सौंपता है जिनके हाथ पहले से ही उसकी सेवा में व्यस्त हैं। यदि आप परमेश्वर के सेवक बनना चाहते हैं तो इसी समय कहीं उसकी सेवा करना आरम्भ कर दो और अपने समय में वह आपकी तरक्की करेगा।

दुर्भाग्यवश उसकी सेवकाई का नया कार्यक्षेत्र थोड़े समय का ही था (प्रेरितों 7:54-60)। नया नियुक्त किया गया प्रचारक, स्तिफनुस पहला मसीही शहीद बना। उसकी मृत्यु में सहमति दे रहा शाऊल पास में खड़ा था। कौन बता सकता है कि इस घटना ने उसे कितनी गहराई से प्रभावित किया होगा और उसका नाटकीय परिवर्तन का कितना श्रेय स्तिफनुस के सामर्थी संदेश को मिला होगा और जिस साहसिक ढंग से उसने प्रार्थना की थी कि "यह पाप उन पर मत लाना।"

14. **सामरिया में बेदारी (प्रेरितों** 8:5-25)

उन दो नौजवान प्रशासकों में से दूसरा फिलिप्पुस था। उसकी डीकन की नियुक्ति के थोड़े ही समय बाद, हम उसे "सामरिया नगर में जाकर लोगों में प्रकार" करता हुआ पाते हैं। (प्रेरितों 8:5)। आओ हम वहाँ उसकी सफल सेवकाई के कुछ पहलुओं पर विचार करें:

- परमेश्वर की सेवा करने की उसकी सच्ची इच्छा एक डीकन के रूप में सेवा करने की उसकी उत्सुकता में पाई जाती है (प्रेरितों 6)।
- उसका उपयुक्त और आदर्श चरित्र। सुनाम, पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण।
- उसका सेवक का हृदय, भोजन बाँटने के लिए इच्छुक।
- वह सामरिया नगर को गया। उसकी इच्छा और उत्सुकता कार्य में बदल गई।
- उसने उन्हें मसीह का प्रचार किया।
- उन्होंने एक मन होकर चित लगाया।
- उसके वचन सुने।
- उसके द्वारा किए गए चिन्हों को देखकर।
- बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं निकल गई।
- बहुत से लकवे और लंगड़े भी चंगे किए गए।
- उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया।
- उन्होंने परमेश्वर के राज्य के विषय में उसके संदेश पर विश्वास किया।
- अनेक पानी में बपतिस्मा पाए।
- अनेक पवित्र आत्मा से भर गए।
- बेदारी सामरिया के बहुत से गाँवों में पहुँच गई।

15. **फिलिप्पुस के लोगों को जीतने के कार्यक्रम (प्रेरितों** 8:26-40)

सामरिया में चल रही महान बेदारी के बीच, प्रभु के एक दूत ने उसे सामरिया छोड़ने और दक्षिण की ओर उस सड़क पर जाने को कहा जो यरूशलेम से गाज़ा को जाती थी। स्वाभाविक में तो यह मूर्खता ही लगेगा। एक बड़ी बेदारी को छोड़ना और रेगिस्थान में जाना चाहे यह कूशियों के खोजा जैसे किसी बड़े व्यक्ति को ही सुसमाचार सुनाना क्यों न हो। परमेश्वर के मार्ग अक्सर हमारी समझ के परे होते हैं परन्तु जब हम कलीसिया के इतिहास को देखते हैं तो हम परमेश्वर की नीति की बुद्धि का सम्मान करते हैं। क्योंकि इस व्यक्ति के हृदय परिवर्तन से सुसमाचार के लिए एक बिलकुल नया संसार खुल गया था।

हमें सदा परमेश्वर की आवाज के प्रति संवेदनशील और उसके हर निर्देश के आज्ञाकारी रहना है। कलीसियाओं की स्थापना के मामले में यह कितना आवश्यक हो सकता है। यदि आपको परमेश्वर से एक स्पष्ट निर्देश मिले, तो चाहे संभावित व्यक्ति कितना भी असंभावनीय क्यों न लगे, आज्ञा का पालन करो। मनुष्य के वर्षों के प्रयासों के बदले आज्ञापालन के एक विशेष कदम से बहुत अधिक प्राप्त किया जा सकता है।

16. **शाऊल का हृदय परिवर्तन (प्रेरितों** 9)

इस समय तक कलीसिया का सबसे बड़ा विरोधी तरसुस का शाऊल था। वह नए विश्वासियों को बड़ी निर्दयता से सता रहा था, अनेकों को कैदखाने में और कुछ को मौत के घाट पहुँचा रहा था। विश्वासियों को बाँधकर यरूशलेम लाने की अपनी मनसा से दमिश्क के मार्ग पर, यीशु उसे बड़े रचनात्मक तरीके से प्रकट हुआ। वह अपने घोड़े पर से नीचे गिर पड़ा, और अपने आप को तुरन्त यीशु की प्रभुत्व में समर्पित करते हुए उसने कहा, "हे प्रभु, मैं क्या करूँ ?"

पौलुस के हृदय परिवर्तन ने प्रारंभिक कलीसिया के इतिहास में एक नया अध्याय खोल दिया। हम पढ़ते हैं, "इस प्रकार सारे यहूदिया, और गलील, और सामरिया में कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय में और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती गई।" - प्रारंभिक कलीसिया की बढ़त हो रही थी और शीघ्र ही सारे संसार में फैलने वाली थी। पौलुस के परिवर्तन का अनुभव अनेक प्रकार से अनोखा था परन्तु एक तत्त्व था जो पौलुस के लिए अनोखा नहीं होगा - उसका यीशु की ओर अपने प्रभु और मालिक के रूप में तात्कालिक और सम्पूर्ण समपर्ण। सब परिवर्तनों के लिए यह एक नमूना होना चाहिए (रोमियों 10:9), "अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे।"

प्रश्न:
1. प्रारंभिक कलीसिया के उत्पन्न होने के लिए प्रार्थना का कितना महत्त्व था?
2. किन तरीकों से पिन्तेकुस्त के अनुभव ने पतरस का रूपान्तरण किया?
3. तीन चीजों के नाम बताओ, जिन्हें पतरस के पिन्तेकुस्क के संदेश ने प्रकट किया था।
4. पतरस के संदेश के जोर में पश्चाताप का कितना महत्त्वपूर्ण था?
5. तीन कारण बताओ कि हम आजकल पश्चाताप का अधिक प्रमाण क्यों नहीं पाते हैं ?
6. किन चार चीजों में प्रारंभिक कलीसिया दृढ़ता से चलती रही?
7. तीन कारण बताओ कि स्तुति और आराधना कलीसिया के लिए क्यों महत्त्वपूर्ण है?
8. तीन चीजों के नाम बताओ, जिन्हें चिन्ह और चमत्कारों ने प्रारंभिक कलीसिया में उत्पन्न किया था?
9. वे तीन चीजें क्या थीं, जिन्हें डीकन चुनने के समय प्रेरित उनमें खोज रहे थे?
10. वे पाँच चीजें क्या थीं, जो फिलिप्पुस के सामरिया जाने पर घटी थीं?

अध्याय 3 – नए नियम में सुसमाचार प्रचार के नमूने

पिछले अध्याय में, हम ने पौलुस के परिवर्तन तक कलीसिया के उत्पन्न और प्रारम्भ की संक्षेप में चर्चा की थी। हम ने उन कुछ सिद्धान्तों और तरीकों को भी देखा था जिन्हें प्रेरितों ने यरूशलेम, यहूदा और सामरिया में मसीह का प्रचार करने और स्थानीय कलीसियाओं को स्थापित करने में उपयोग में लाया था। अब हम प्रेरितों की पुस्तक में अपना सफर जारी रखेंगे और कुछ प्रारंभिक कलीसियाओं के प्रारंभ और जिस तरीके से वे अस्तित्व में आईं की चर्चा करेंगे।

 # फिलिप्पी की कलीसिया

प्रेरितों 16:11-40 में हमें पौलुस की फिलिप्पी की पहली यात्रा और पहले सम्पर्क जो उसे वहाँ मिले थे, उनका विवरण मिलता है। इस पहली आत्रा के दौरान तीन महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटी थीं और सम्भवतः वे सब कलीसिया के बनने में कुछ हद तक सहायक थीं।
- वह एक विशिष्ट स्त्री से मिलता है।
- वह एक लड़की से दुष्टात्मा निकालता है।
- कैदखाने में बेदारी का अनुभव।

फिलिप्पी में उसका जाना संयोग जान पड़ता है क्योंकि वह और उसका दल पहले तो इफिसुस, यदि वहाँ न जा सके तो बितूनिया जाना चाहते थे, परन्तु परमेश्वर ने संकेत दिया था कि उन दो में से किसी भी स्थान के लिए अभी उसका समय नहीं था। (प्रेरितों 16:6-7)। इसके तुरन्त बाद पौलुस को रात में एक मकिदूनी पुरुष का एक दर्शन मिला जिसमें वह कह रहा था, "आओ और हमारी सहायता करो," और वे मकिदुनिया प्रान्त के मुख्य नगर फिलिप्पी में जा पहुँचे।

संयोग या परमेश्वर का प्रभाव?

यह एक दिलचस्प बात है कि किस प्रकार "परिस्थितियाँ" परमेश्वर के राज्य के लिए एक फलदायक क्रियाएँ बन जाती हैं। कभी-कभी कुछ घटनाएँ "आकस्मिक" जान पड़ती हैं, जबकि वे "परमेश्वर के प्रभाव" होते हैं। मैं ने कई बार इन्हें अनुभव किया है। बिना किसी असली उद्देश्य के किसी स्थान पर जाना और तब महसूस करना कि परमेश्वर मुझ से वहाँ कुछ काम करवाना चाहता था। हमें सब समय आत्मिक रूप से सतर्क रहना चाहिए।

एक प्रभावशाली शहर

फिलिप्पी एक महत्त्वपूर्ण रोमी वसाहत थी, जिसका नाम मकिदूनी के फिलिप्प के नाम पर पड़ा था।

कुछ इसे "प्रतिरोपित रोम" भी कहते थे। यह उस क्षेत्र के लिए एक रोमी रक्षकसेना नगर का काम करता था, और व्यापार का एक महान केन्द्र भी था। उस विशेष क्षेत्र के लिए इसकी स्थिति बहुत ही अनुकूल थी।

जब हम प्रार्थनापूर्वक उन उपयुक्त स्थानों पर विचार करते हैं जहाँ हम नई कलीसियाएँ स्थापित कर सकें, तो नीचे दी गई चीजों से हमें अभिज्ञ होना चाहिए:

- जनसंख्या का आकार।
- लोगों की समृद्धि और प्रभाव।
- शहर की अनुकूल स्थिति।
- आसपास के क्षेत्रों का महत्त्व।
- एक अड्डे के रूप में इसकी उपयुक्तता जहाँ से बाद में सारे इलाके में सुसमाचार सुनाया जा सके।

जैसे हम पौलुस की यात्राओं और सेवकाई पर ध्यान देते हैं तो यह प्रकट हो जाता है कि जब कभी भी हो सका उसने सुसमाचार सुनाने के लिए अनुकूल स्थानों और प्रभावशाली शहरों को जानबूझकर चुना था ताकि तब वह उन्हें एक अड्डे के रूप में इस्तेमाल कर सकता था जहाँ से आसपास के सारे क्षेत्रों में सुसमाचार फैलाया जा सके।

एक विशिष्ट स्त्री

पहले सब्त के दिन, पौलुस और उसका दल नदीं के किनारे गए जहाँ एक प्रार्थना का स्थान था। वहाँ उनकी पहचान एक सफल व्यापारी स्त्री, लुदिया से हुई जो उन स्त्रियों के दल की अगुआ लगती थी जो वहाँ प्रार्थना और आराधना करती थीं। अनेक कारणों से लुदिया एक अतिउत्तम सम्पर्क थी।

* उसका हृदय खुला और ग्रहणशील था।
* उसका एक आत्मिक झुकाव था।
* वह एक प्रतिष्ठित और प्रभावशाली स्त्री थी।
* वह एक सफल और अमीर स्त्री थी।
* प्रकट है उसमें शक्तिशाली अगुआई के गुण थे।
* उसका एक बड़ा घर था, जिसमें उसके अपने परिवार के अलावा चार पुरुषों और सभा में आनेवाले विश्वासियों के लिए भी स्थान था।

लुदिया के साथ प्रारंभिक सम्पर्क के तुरन्त बाद, उसने और उसके परिवार ने बपतिस्मा लिया और पौलुस और उसके साथी उनके साथ रहे। प्रकट है, कि लुदिया के साथ यह पहला सम्पर्क बहुत ही महत्त्व का था और फिलिप्पी में आगे एक कलीसिया स्थापित करने के लिए क्रान्तिक था।

निश्चय करो कि जिस नगर या शहर में परमेश्वर आपको ले जा रहा है, वहाँ प्रार्थनापूर्वक उन सम्पर्कों का पता लगाओ जिन्हें परमेश्वर ने आपके लिए तैयार किया है। वे अक्सर कुंजी होते हैं जो अवसर के द्वारा खोल देते हैं और वहाँ कलीसिया की स्थापना निश्चित करते हैं।

सामथ्र्य के कार्य (प्रेरितों 16:16-18)

जैसे नई कलीसिया स्थापित होने लगी, शैतान ने इसे बदनाम और नष्ट करने की कोशिश की। उसने ऐसा एक दुष्टात्मा पीड़ित लड़की के द्वारा करने की कोशिश की, जो पुकार पुकार कर कहने लगी, "ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो तुम्हें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं।" जो बात उसने कही सही थी। शैतान यह दिखा कर कलीसिया को बदनाम करने की कोशिश कर रहा था कि यह लड़की इससे जुड़ी हुई है। परन्तु पौलुस उसकी चाल समझ गया और उसने लड़की में से दुष्टात्मा निकल दी।

एक बार जब नई कलीसिया प्रभावशाली तरीके से स्थापित होने लगती है तब शैतान इस पर किसी प्रकार का आक्रमण करेगा, इसलिए तैयार रहो।

परन्तु वह अकसर अतिक्रमण करता है और जैसे इस मामले में हुआ था, वह अपने ही उद्देश्य को पछाड़ देता है। अन्त में इस सफल सामर्थ्य के कार्य ने फिलिप्पियों की कलीसिया को स्थापित करने में आगे सहायता की थी।

स्थानीय कैदखाने में बेदारी (प्रेरितों 16:23-24)
एक बार जब परमेश्वर का नया काम शुरू होता है, तो आश्चर्य होता है कि किस प्रकार परमेश्वर अवसर और उच्चारण के लिए और अधिक द्वार खोलने लगता है। पौलुस और सीलास की कैद, जो कलीसिया के लिए एक बड़ा गतिरोध हो सकती थी, अन्त में प्रमुख जेलर और उसके परिवार के परिवर्तन के द्वारा इसकी बढ़त में योग देती है। बेशक यह ऐसी अनेक घटनाओं में से एक थी जिसके कारण पौलुस ने कहा, "मुझ पर जो बीता है, उससे सुसमाचार की बढ़ती हुई है।" (फिलि. 1:12)।
जब कोई सुसमाचार प्रचार और कलीसिया स्थापना के लिए समर्पित होता है, तो यह देखकर उत्तेजना होती है कि कितनी बार जीवन की "परिस्थितियाँ" "सुसमाचार की बढ़ती" के लिए अनुकूल और सहायक बन जाते हैं। राज्य की बढ़ती और वृद्धि के लिए हमारे चारों ओर अवसर बने रहते हैं और उन्हें पहचानने और मसीह के लिए उनका लाभ उठाने के लिए हमें चौकन्ने रहना चाहिए।

थिस्सलुनीके में कलीसिया (प्रेरितों 17:1-9)
फिलिप्पी के कैदखाने से छूटने के सीधे बाद थिस्सलुनीके में पौलुस और सीलास की यात्रा और सेवकाई के फलस्वरूप कलीसिया स्थापित हुई थी। फिलिप्पी से थिस्सलुनीके तक की दूरी 160 किलोमीटर की थी और इस नए काम को आरम्भ करने के लिए आराधनालय ने एक अतिउत्तम सम्पर्क दिया था। बहुत कड़ी नाराजगी और विरोध के बावजूद, जो सम्पर्क उन्होंने बनाए थे अटल रहे और वहाँ एक मजबूत कलीसिया बन सकी। पौलुस ने वास्तव में थिस्सलुनीकियों का पहला पत्र वहाँ के सन्तों को मसीह, एक दूसरे और प्रभु के काम की ओर उनके समपर्ण की सराहना के लिए लिखा था। सम्भावित कलीसिया स्थापना करनेवालों के लिए बहुत सी बातें यहाँ दिलचस्पी की होंगी:

अ. फिलिप्पी की कलीसिया ने जिसे उन्होंने हाल में स्थापित किया था, प्रेरितों की सहायता के लिए जब वे थिस्सलुनीके में परिश्रम कर रहे थे, कम से कम दो बार उनको पैसा भेजा था। (फिलि. 4:15-16)।

आ. पौलुस ने अपने हाथों से मेहनत करके अपनी आवश्यकताओं को पूरा किया था। (1 थिस्स. 2:9; 2 थिस्स. 3:7-10)।

इ. हालाँकि उनकी सेवकाई आराधनालय में आरम्भ हुई थी, उनके अधिकाँश धर्मान्तरित आराधनालय के नहीं परन्तु मूर्तिपूजक अन्यजाति थे। (1 थिस्स. 1:9)।

ई. प्रेरितों ने विश्वासयोग्यता के साथ क्रूसित और मरे हुओं में से जी उठे मसीह का प्रचार किया। (प्रेरितों 17:3)।

ए. उन्होंने यीशु का राजा के रूप में प्रचार किया और परमेश्वर के राज्य के विषय में सिखाया। जो दोष उन पर लगाये गए थे उनसे यह बात पूरी तरह प्रकट होती है। उन पर दोष था कि वे कैसर की आज्ञा का विरोध कर रहे थे, जो था "कि एक दूसरा राजा, यीशु है।"

यह आरोप स्पष्ट संकेत देता है कि पौलुस, जैसे वह दूसरे स्थानों में करता था, "परमेश्वर के राज्य की बातें" सिखाता था। जैसे थिस्सलुनीकियों के पत्र दिखाते हैं, उसने घोषित किया था कि मसीहा का राज्य उसके लौटने पर स्थापित होगा (1 थिस्स. 3:13; 5:1-11; 2 थिस्स. 1:5-10; 2:14, और लूका 23:2; यूहन्ना 18:33-37)।

ऐ. जिन्होंने उनके संदेश की ओर प्रतिक्रिया दिखाई थी उनमें कुछ यहूदी, बहुत से भक्त यूनानी, और बहुत सी कुलीन स्त्रियाँ थीं।

थिस्सलुनीके का नमूना
प्रेरितों 19:1-6; 1 थिस्स. 1 और 2.
पत्र प्रारंभिक कलीसिया के जीवन के विभिन्न स्थानों में हमें एक मनोहर झलक देते हैं जो एशिया मायनर और यूरोप में फैली हुई थी। पौलुस और बहुत से दूसरे प्रेरित अब मिशनरी यात्राओं में निरन्तर लगे हुए थे और जहाँ कहीं भी वे जाते स्थानीय कलीसियाएँ पैदा हो जाती थीं। उनके इतिहास की प्रारंभिक अवधि में, कलीसियाएँ अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में थीं और प्रेरितों के नियमित आते रहने की आवश्यकता होती थी।

कलीसियाएँ अभी भी बहुत बुनियादी, अकृत्रिम और सीधी थीं, और कुछ अधिक जटिल ढाँचा या संगठन नहीं था। विश्वासी एक दूसरे के साथ, कलीसिया की सदस्यता और औपचारिक ढाँचों की वैधता के बजाय, उनके सामान्य विश्वास, प्रेम और आशा से जुड़े हुए थे। यह कुछ हद तक इसलिए था क्योंकि वे अभी भी काफी तरुण और अविकसित थे। परन्तु, मेरा विश्वास है कि यहाँ पर किसी चीज का संकेत है जो परमेश्वर चाहता था कलीसिया में सारे युग भर में बनी रहे। वह चाहता था कि इसे, एक संघटन हेने के बजाए, एक जीव होना चाहिए और बने रहना चाहिए। वह चाहता था कि कलीसिया इसकी प्रचीन एकांगी प्रकृति का कुछ मौलिक पहलू बनाए रखे।
प्रकट है कि बढ़त के लिए संघटन और प्रबंध अवश्य होता है। आप जितने अधिक लोगों के लिए जिम्मेवार हैं उतना अधिक आपको अव्यवस्था से बचने के लिए चीजों को उचित रूप से संघठित करना पड़ेगा। परन्तु सहजता, सादगी और उमंग को जो उन प्रारंभिक दिनों के प्रतीक थे बलिदान किए बिना, इसे प्राप्त करने के तरीके और उपाय हैं।
यरूशलेम की कलीसिया में प्रशासन के प्रवेश (प्रेरितों 6:1-7) ने निस्सन्देह दूसरी अनेक तरुण कलीयाओं के लिए एक नमूना रख दिया और इस नमूने में हम सादगी और कुशलता का संयोग देखते हैं। हम नियुक्ति और प्रतिनिधान के सिद्धान्त देखते हैं, जिन्होंने उन समस्याओं को स्पष्टतया हल कर दिया जो कलीसिया में उत्पन्न हुई थीं और फिर भी प्रणाली-विज्ञान की सरलता को बनाए रखा। यह एक प्रणाली भी थी, जो बहुत से "डीकनों" को प्रेरिताई की सेवकाई में जाने के लिए, जैसे कि स्तिफमुस और फिलिप्पुस थे, प्रकट रूप से सही प्रकार का प्रशिक्षण और अनुभव प्रदान करती थी।

हालाँकि नए नियम की कलीसियाएँ एक दूसरे से बहुत भिन्न और अलग थीं, फिर भी असंख्य सामान्य हर थे जो उन प्रारंभिक कलीसियाओं के प्ररूपी बन गए और जिनसे हम आज भी बहुत कुछ सीख सकते हैं।

आओ हम थिस्सलुनीके की इस कलीसिया की स्थापना और प्रारंभिक देखभाल पर एक संक्षिप्त नज़र डालें।

1. थिस्सलुनीके का शहर

थिस्सेलुनीके में पौलुस और उसके साथियों का पहुँचना आकस्मिक से कहीं अधिक था। कुछ ठोस कारण हैं कि क्यों पौलुस और उसके साथियों ने इस शहर में एक नई कलीसिया स्थापित करने का फैसला किया, और क्यों परमेश्वर ने एक मकिदूनी पुरुष के दर्शन के द्वारा पौलुस को प्रेरित किया, जिसने आग्रह किया था, "आओ और हमारी सहायता करो।" (प्रेरितों 16:9-10)। ऐसा जान पड़ता है कि पौलुस ने विश्व के सुसमाचार प्रचार के लिए एक मिशन नीति बना रखी थी और जब जब होता था वह इसे उपयोग में लाता था और प्रयास करता था कि इससे पथभ्रष्ट न हो। वह अपनी नीति का जिक्र 2 कुरिन्थियों 10:14-16 में करता है, और संकेत देता है कि यह उसका "नियम" या "माप" है - सिद्धान्तों का एक समूह - जिन्हें वह काम में लाता रहा जब वह "सीमा से आगे बढ़कर सुसमाचार" सुनाने का प्रयास कर रहा था। (आय. 16)।

उसकी नीति का एक भाग इस प्रकार था:
* उसकी योजना नए स्थानों में, जहाँ पहले सुसमाचार नहीं सुनाया गया है, प्रचार करने की थी। "यह नहीं कि हम दूसरों की सीमा के भीतर बने बनाए कामों पर घमण्ड करें।" (2 कुरिं. 10:16)।
* "पर मेरे मन की उमंग यह है कि जहाँ जहाँ मसीह का नाम नहीं लिया गया, वहीं सुसमाचार सुनाऊँ ऐसा न हो कि दूसरों की नींव पर घर बनाऊँ।" (रोमियों 15:20)।
* वह बड़े-बड़े, अनुकूल केन्द्रों में जाता, और वहाँ कलीसिया स्थापित करता और उसे सारे क्षेत्र में सुसमाचार प्रचार करने के लिए एक अड्डे के रूप में उपयोग करता था। उसकी योजना हर स्थान में आप जाने की नहीं थी परन्तु एक अनुकूल शहर में एक शक्तिशाली केन्द्र स्थापित करने और परमेश्वर पर भरोसा करने की कि वह उन शहरों में से मजदूरों और सेवकों को खड़ा करेगा जो सुसमाचार को लेकर आसपास के क्षेत्रों में जाएँगे। इसी कारण से वह रोम भी जाना चाहता था (रोमियों 15:22)। इसी नीति के कारण उसने अंताकिया में एक कलीसिया बनाई ताकि वहाँ से वह उस शहर के आसपास के विशाल क्षेत्र में सुसमाचार पहुँचा सके। (प्रेरितों 11:19-26)।

अ - यह राजधानी शहर था

थिस्सलुनीके मकिदूनिया का राजधानी शहर और व्यापारिक केन्द्र था। यह रोम प्रान्त का प्रमुख बन्दरगाह था और कुरिन्थ और इफिसुस के बराबर था जो अखाया और एशिया के मुख्य बन्दरगाह थे।

आ - यह एक बड़ा शहर था

उस समय थिस्सलुनीके की जनसंख्या लगभग दो लाथ लोग मानी गई थी, जो उन दिनों में एक बहुत बड़ी जनसंख्या थी। यह तत्त्व अकेले एक बहुत बड़ी चुनौती खड़ी करता है। हमारे आज के विशाल महा-शहर समकालीन कलीसिया के लिए एक विशाल चुनौती पेश करते हैं। इसका एक कारण है बहुत सारे लोग जो वहाँ रहते हैं। जहाँ कहीं बहुत बड़ी संख्या होती है वहाँ उन लोगों को सुसमाचार सुनाने में एक बहुत बड़ी चुनौती भी होती है। उनकी संख्या ही एक चुनौती खड़ी करती है। हमारे आज के अनेक बड़े बड़े शहरों में सुसमाचार नहीं सुनाया गया है। यह बात विशेषकर एशिया के बड़े शहरों के बारे में सच्च है।

इ - इसकी सामरिक स्थिति थी

यह शहर रोम से पूर्व जाने वाले मुख्य मार्ग पर स्थित था और इसलिए इसका दूसरे महत्त्वपूर्ण शहरों के साथ सीधा और नियमित सम्पर्क था, जिन तक सरलता से सड़क या समुद्र द्वारा पहुँचा जा सकता था। इससे शहर में से निकटवर्ती क्षेत्रों में आना-जाना बहुत सम्भव और सुविधाजनक होता था।

ई - इसकी जनसंख्या सर्वदेशीय थी

देशी यूनानियों के अतिरिक्त, अनेक रोमी भी वहाँ बसे हुए थे। एशिया और पूर्व के शहरों के भी कई लोग, और बहुत से यहूदी और यहूदा धर्म में धर्मान्तरित लोग भी वहाँ थे। स्थानीय आराधनालय एक प्रभावशाली स्थान था जो शक्तिशाली यहूदी जनसंख्या के लिए और वहाँ रहनेवाले असंख्य यूनानी धर्मान्तरितों का प्रबंध करता था। यह भी पौलुस के लिए एक चुनौती और एक आकर्षण था। एक कारण कि यरूशलेम कलीसिया के लिए क्यों इतनी आदर्श अवतरण पट्टी थी क्योंकि इसकी जनसंख्या सर्वदेशीय थी। यह बात विशेषकर पिन्तेकुस्त के पर्व के समय सच होती थी जब संसार के अनेक भागों से भक्त यहूदी वहाँ उपस्थित होते थे। यरूशलेम में उनका इकट्ठा होना कलीसिया के अवतरण के लिए उपयुक्त था क्योंकि नए धर्मान्तरित अनेक विभिन्न स्थानों से आए होते थे। एक बार जब वे चेले बनाए गए और विश्वास में पक्के किए गए होते थे, तो सताव ने उन्हें हर दिशा में बिखेर दिया था और जहाँ कहीं भी वे गए उन्होंने सुसमाचार का प्रचार किया। इसलिए यरूशलेम की कलीसिया एक साधारण स्थानीय कलीसिया नहीं थी जिसमें केवल इस्राएली यहूदी ही थे, परन्तु यह एक भिन्न सर्वदेशीय मण्डली थी। इन में से अनेक धर्मान्तरित अन्त में सुसमाचार को अपने देश और उनके अपने शहरों में ले जाने वाले थे।

उ - यह एक प्रसिद्ध व्यापारिय केन्द्र था

थिस्सलुनीके की सड़क या समुद्र द्वारा सामरीक स्थिति और पहुँच ने इसे एक अनुकूल और महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र बनाया हुआ था। अनेक व्यापारी जो वहाँ रहते थे और बहुत से जो वहाँ समय-समय पर आया-जाया करते थे, दूसरे व्यापारियों और पौलुस और उसकी मिशन की नीति के लिए बहुत आकर्षक थे।

2. मिशनरी दल

पौलुस ने थिस्सलुनीके में सबसे पहले अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान प्रचार किया था। सीलास, तीमुथियुस, लूका और सम्भवतः कई और भी उसके साथ थे। इस प्रकार का दल होना एक बड़े लाभ की बात होती है। (प्रकट है, यदि आपके दल में ऐसे पुरुष हों तो आप कुछ बड़ा होने की अपेक्षा करेंगे!) परन्तु, अगरचे आपके दल में ऐसे प्रख्यात सेवक नहीं हैं, फिर भी यदि आप एक दल बना पाते हैं तो आपको बहुत लाभ होगा।

दल में सेवकाई के कुछ प्रत्यक्ष लाभ हैं:

- आत्मिक परिपक्वता और सेवकाई का एक बड़ा केन्द्रीकरण।
- सेवकों, सुसमाचार प्रचारकों, पास्टरों, शिक्षकों आदि की एक बड़ी भिन्नता।
- प्रार्थना की अधिक सामर्थ्य आपके पास है।
- आपसी प्रोत्साहन मिलता है।

आओ हम एक क्षण के लिए इन सेवकों के स्वभाव और विशेषताओं पर नज़र डालें जैसे थिस्सलुनीकियों ने उन्हें देखा था:

* उन्होंने पहले ही मसीह के सुसमाचार के लिए दुख उठाए थे। (1 थिस्स. 2:2)
* उनके अभिप्राय शुद्ध थे। (1 थिस्स. 2:3)
* उन्होंने खोखले चापलूसी वाले शब्द इस्तेमाल नहीं किए। (1 थिस्स. 2:5)
* वे लोभी नहीं थे (1 थिस्स. 2:5)
* वे लोगों पर बोझ नहीं बने। (1 थिस्स 2:6)

* वे नए विश्वासियों के साथ वैसे ही कोमल थे जैसे आया अपने अधिकार में के बच्चों के साथ होती है।
* उन्होंने सुसमाचार के साथ-साथ अपने जीवन भी दिए थे। (1 थिस्स. 2:8)
* वे जैसे एक अच्छे पिता को होना चाहिए, दृढ़ भी थे। (1 थिस्स. 2:11)
यह सब इसलिए था कि उनका "चाल-चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।" (1 थिस्स. 2:12)

3. **जिस ढंग से सुसमाचार उनके पास पहुँचा था।** (1 थिस्स. 1:5)

अ - यह शब्दों के द्वारा आया।
अनिवार्य है कि सुसमाचार शब्दों द्वारा सुनाया जाए। सुसमाचार को बोला, घोषित किया, और समझाया जाए और इसमें संदेश बोलकर या लिखकर व्यक्त किया जाता है।
आ - परन्तु केवल शब्दों में ही नहीं।
यह कहने के साथ-साथ कि सुसमाचार शब्दों द्वारा बताया जाना चाहिए, हम यह कहना चाहते हैं कि केवल शब्द पर्याप्त नहीं हैं। उन शब्दों को पूरी तरह प्रभावशाली होने के लिए कुछ आवश्यक चीजें उनके साथ होनी चाहिए।
इ - यह पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में भी आया।
संदेश पवित्र आत्मा की शक्ति, सामर्थ्य और अधिकार में भी आया था।
ई - यह "बड़े निश्चय" के साथ आया।
प्रारंभ में "बड़ा निश्चय" संदेशवाहकों के बारे में है जो सुसमाचार लाए थे। उन्हें उस संदेश की प्रामाणिकता और वैधता का जिसे वे लाए थे, स्वयं सम्पूर्ण निश्चय था। वे इतने आश्वस्त क्यों थे, उसके कुछ कारण:
- उनके सुसमाचार के सामर्थ्य और प्रभावकारिता का उनका व्यक्तिगत अनुभव।
- जहाँ जहाँ सुसमाचार प्रचार किया गया था उसके परिणाम उन्होंने देखे थे।
- उनका संदेश पूरी तरह बाइबल से था।
- जहाँ कहीं भी उन्होंने सुसमाचार प्रचार किया था पवित्र आत्मा ने उन्हें निश्चय दिया था।
- पानेवाले तब ही निश्चय पा सकते हैं जब संदेशवाहक आप निश्चित होते हैं। "यदि तुरही का शब्द साफ न हो, तो कौन लड़ाई के लिए तैयारी करेगा?" (1 कुरिं. 14:8)।

4. **सुसमाचार की प्राप्ति।** (1 थिस्स. 1:6)

अ) उन्होंने इसे बड़े क्लेश में प्राप्त किया।
थिस्सलुनीके में सुसमाचार के आगमन ने काफी विरोध, सताव और दुख पैदा किया था। अविश्वासियों ने नए विश्वासियों को विशैले आक्रमणों के लक्ष्य बनाया था। आश्चर्य की बात है कि किस प्रकार ऐसे सताव एक अवयस्क कलीसिया की जड़ों को मजबूत करते हैं। वही शक्तियाँ जो कलीसिया के अस्तित्व के लिए खतरा बनती नज़र आती हैं, मसाला बनकर विश्वासियों को इकट्ठे जोड़ देती हैं।

आ) पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ
बाहर सताव, अन्दर आनन्द, सदा से सच्चे विश्वास की छाप रहा है। पवित्र आत्मा का आनन्द बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं होता है। पवित्र आत्मा न केवल तब आनन्दित होता है जब सबकुछ अच्छा हो रहा होता है बल्कि वह हर समय आनन्दित होता है। वह जानता है कि सुसमाचार की अन्तिम विजय अनिवार्य है। जब हम पवित्र आत्मा को अपने अन्दर स्वतन्त्र अभिव्यक्ति देते हैं। वह उस आनन्द को हमारे जीवनों में व्यक्त करता है।

इ) वे मूर्तो से फिरे
उनके जीवन और जीवन शैलियाँ पूरी तरह परिवर्तित हो गए थे। जबकि पहले वे मूर्तियों द्वारा मोहित और उनके गुलाम थे, वे अब मूर्ति पूजा से फिर गए थे। उद्धार के संदेश ने उन्हें उनकी मूर्तियों की विमोहित आत्माओं से स्वतन्त्र कर दिया था और एकमात्र, सच्चे और जीवित परमेश्वर की उपासना करने के लिए मुक्त कर दिया था।

ई) वे अब जीवित परमेश्वर की सेवा कर रहे थे।

इन दो स्थितियों में एक समानान्तर सम्बंध है, जो तुलना और भेद दोनों करता है, यानि, "तुम कैसे मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो।" जैसे एक समय वे उनकी मूरतों की ओर समर्पित और अर्पित थे, अब वे जीवित परमेश्वर की ओर समर्पित और अर्पित थे। उनका जो उत्साह मूरतों के लिए था उससे अधिक उत्साह के साथ उन्होंने अपने आप को परमेश्वर की सेवा में दे दिया था।

उ) वे स्वर्ग से परमेश्वर के पुत्र के लौटने की प्रत्याशा करते थे।

वे मसीह के लौटने के प्रकाश और चेतना में जीते थे। ऐसा नहीं कि वे सामान बाँधकर जाने की तैयारी में बैठे थे, परन्तु ऐसा था कि वे इस जानकारी से जीते थे कि एक दिन मसीह लौट आएगा और वे सब उसके लिए किए गए कामों का हिसाब देने के लिए उसके न्यायासन के सम्मुख खड़े होंगे। इस रवैये का एक व्यक्ति के आत्मिक जीवन पर एक शक्तिशाली शुद्धीकरण और चिकित्सीय प्रभाव पड़ता है। प्रेरित यूहन्ना ने कहा, "और जो कोई उस पर आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा वह (मसीह) पवित्र है।" (1 यूहन्ना 3:3)

5. इसकी ओर नए विश्वासियों की प्रतिक्रिया

थिस्सलुनीके के विश्वासी इस प्रकार के पुरुषों को उनके आत्मिक गुरूओं के रूप में पाकर धन्य थे, क्योंकि वे उनके और प्रभु के अनुयायी बन गए, और इस प्रकार मकिदुनिया और अखया के और जहाँ कहीं भी उनका चर्चा होती थी, सारे विश्वासियों के लिए आदर्श बन गए। (1 थिस्स. 1:8)।

क) उनके "विश्वास के कर्म"

अक्षरक्ष, "उनके नए पाए विश्वास के फलस्वरूप किए गए कर्म।" जबकि यह सत्य है कि हम बिना कर्मो के विश्वास से उद्धार पाते हैं। (इफि. 2:8-9)।

यह भी सत्य है कि विश्वास से उद्धार पाकर, अब हमें उन भले कार्यों को करना है जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे लिए नियुक्त किया है। (इफि. 2:10)। याकूब कहता है, "कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है।" (याकूब 2:20)

ख) उनका प्रेम का परिश्रम

मसीह के लिए उनके प्रेम ने दूसरों के लिए प्रेम पैदा किया था। केवल शब्दों से व्यक्त किया गया प्रेम ही नहीं बल्कि ऐसा सच्चा प्रेम कि यह प्रेम के पात्रों के लिए परिश्रम करता है। पौलुस इसे "सच्चे और जीवित परमेश्वर की सेवा करना" कहता है। (आय. 9)। परमेश्वर की सेवा करना उसके लिए की गई सीधी आत्मिक सेवा में सम्पूर्ण रूप से पूरी नहीं होती है, बल्कि हमारे साथी मनुष्यों के लिए किए गए व्यवहारिक परिश्रमों में जो परमेश्वर के प्रेम के पात्र भी हैं। इस प्रकार, जैसे हम एक दूसरे की सेवा करते हैं, हम परमेश्वर की सेवा करते हैं।

ग) उनकी दृढ़ सहनशीलता

विश्वास का एक आन्तरिक पहलू विश्वासयोग्यता है। सच्चा विश्वास, विरोध और सताव के सामने भी, बना रहता और दृढ़ रहता है।

घ) उनके विश्वास की चर्चा। (1 थिस्स. 1:8)

बाइबल का एक संकेत कि लोगों ने सच्चाई से सुसमाचार प्राप्त किया और प्रतिक्रिया दिखाई है, यह तथ्य है कि सुसमाचार की अब उनके द्वारा दूसरों से चर्चा की जा रही है।

पौलुस अब थिस्सलुनीके को सुसमाचार के प्रचार केन्द्र के रूप में देख रहा था। संदेश यरूशलेम से, यहूदिया, एशिया मायनर और अब यूरोप में पहुँचाया गया था। थिस्सलुनीकियों ने न केवल सुसमाचार अपने लिए प्राप्त किया था, बल्कि वे एक प्रचार केन्द्र बन गए थे जहाँ से सुसमाचार दूर-दराज के क्षेत्रों में प्रचार किया जा रहा था। जो कलीसिया सुसमाचार प्राप्त करती है, इसे आगे पहुँचाने की ईश्वरीय दायित्व भी पाती है। नए नियम की कलीसियाओं का एक सबसे स्पष्ट पहलू बिलकुल यही है और कोई भी समकालीन कलीसिया जो सक्रिय और प्रभावशाली रूप से मिशनरी कार्यक्रमों में नहीं लगती, अपने आप को नए नियम की कलीसिया कहलाने के अधिकार को खो देती है।

एथेंस में पौलुस की सेवकाई। (प्रेरितों 17:16-34)

यूनानीवाद का विश्व केन्द्र, एथेंस संस्कृति, तत्त्व-ज्ञान, धार्मिक विचार, और मूर्तिपूजा का केन्द्र बिन्दु था। पौलुस यह देखकर बहुत ही दुखी हो गया कि विश्व की बौद्धिक राजधानी मूर्तिपूजा को प्रोत्साहन दे रही थी। इस जटिल और विकट स्थिति में उसकी नीति और पहुँच बहुत ही दिलचस्प है और कुछ ऐसी है जिस से हम कुछ अत्यावश्यक सबक सीख सकते हैं। उसके संदेश को प्रासंगिक बनाने पर ध्यान दो। (जिस तरीके से उसने निश्चय किया कि उसका संदेश जिस स्थिति में उसे प्रचार करने के लिए बुलाया गया था, उपयुक्त और उचित था।)

1) <u>आराधनालय में</u>: जहाँ उसने पुराने नियम के वचनों से प्रमाणित करने का प्रयास किया कि यीशु ही वास्तव में मसीहा था। (पौलुस ने उनके साथ तर्क किया, बातचीत की और वादविवाद किया।)

2) <u>बाजार में</u>: (अगोरा, नागरिक केन्द्र) जहाँ दार्शनिक अपने विचारों को प्रस्तुत करने और वादविवाद करने के लिए इकट्ठे होते थे। पौलुस उनके साथ वादविवाद करने लगा।

- उसने उन्हें प्रचार नहीं किया। (उसने तर्क, वादविवाद, और विवाद किया।)
- उसने जैसे आराधनालय में किया था, यहाँ वचनों को उपयोग में नहीं लाया। (वे बाइबल को अधिकार के रूप में पहचानते नहीं थे।)
- उसने उनके अपने कवियों और लेखकों की कुछ बातें उनको सुनाईं। (आय. 28)। सच्चाई के विषय उनको कायल करने के लिए उनके अपने लेखकों को उपयोग में लाया। इस प्रकार अपना तरीका उनके लिए प्रासंगिक बनाया।
- उसने वहाँ से आरम्भ किया जहाँ पर वे थे।
- उसने उनकी प्रशंसा की, कहा कि वे बहुत धार्मिक थे।
- वह उनसे उनके ही स्तर पर मिला था। उन्हें विवाद करना अच्छा लगता था, तो उसने भी उनके साथ विवाद किया। उसने उन विचारों को इस्तेमाल किया जिनसे वे परिचित थे।
- दार्शनिक विवाद के वेश में उसने उपदेश का प्रचार किया।

  "अनजाने ईश्वर" की चर्चा की, जिसे वे पूजा करते थे। (आय. 23)

  निश्चयपूर्वक कहा कि वह वास्तव में परमेश्वर है जिसने संसार और जो कुछ उसमें है बनाया है। (आय. 24-29)

  कि परमेश्वर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। (आय. 30)

  कि एक न्याय का दिन आ रहा है। (आय. 31)

उन लोगों में से एक जिसने पौलुस की बातें सुनी और विश्वास किया, अरियुपगुस का सदस्य दियुनुसियुस था जो दार्शनिकों में प्रभुख था। कुछ लोग एथेंस में पौलुस की सेवकाई को असफल बताएँगे क्योंकि वहाँ पर कलीसिया स्थापित होने का कोई वर्णन नहीं है। परन्तु, यह कोई पौलुस के तरीके या संदेश की असफलता नहीं थी, बल्कि उनके हृदयों की कठोरता थी।

कुरिन्थुस में कलीसिया। (प्रेरितों 18:1-18)

पौलुस एथेंस छोड़कर कुरिन्थुस में आया। हालाँकि ये दोनों शहर एक दूसरे से केवल 50 मील की दूरी पर ही थे, परन्तु दूसरे तरीकों से वे बिलकुल भिन्न थे।

- हर शहर भिन्न है।
- हर एक का अपना चरित्र और विशेषताएँ होती हैं।
- हर एक के लिए भिन्न तरीका होना चाहिए है।
- जब हम कलीसिया की स्थापना की नीति बनाते हैं, हमें इन बातों की जानकारी होनी चाहिए।

एथेंस संस्कृति, ज्ञान और तत्त्व-ज्ञान का केन्द्र था, जबकि कुरिन्थुस व्यापार, भौतिकवाद और घोर अनैतिकता का केन्द्र था। यह प्रेम की देवी, अफरोदाइत का उपासना का केन्द्र भी था, जिसके नाम में अनैतिकता का मुक्त भाव से आनन्द लूटा जाता था। कहा जाता है कि वेश्याओं के 1000 मन्दिर थे।

एक बार फिर, पौलुस अपनी आवश्यकताओं के लिए अपने हाथों से काम करने लगा। वह अक्विला और प्रिस्किल्ला के साथ रहकर काम करने लगा जो आप भी तम्बू बनाने का काम करते थे। पौलुस के इस धंधे ने आधुनिक शब्द "तम्बू बनाना" को जन्म दिया है, जो व्यक्ति के अपने व्यवसाय या पेशे में काम करने का विचार दिखाता है ताकि:

- कुछ देशों में जहाँ मिशनरियों पर रोक है, पहुँचा जा सके।
- उस देश में अपना खर्चा चलाया जा सके।
- उस देश के उत्पादन और जीवनक्षमता में योग दिया जा सके।

पौलुस ने अपनी सेवकाई आराधनालय में और यहूदी बिरादरी के बीच और कुछ यूनानियों में आरम्भ की जो आराधनालय से जुड़े हुए थे। उसका संदेश वही था जो उसने दमिश्क के मार्ग पर और अरब में सीखा था, कि यीशु प्रभु और मसीहा है। (प्रेरितों 2:26; 3:18, 20; 17:3; 18:28)।

हमें ठीक-ठीक पता नहीं है कि पौलुस ने कुरिन्थुस में कितना समय बिताया, सम्भवतः अठारह महिने। इस समय के दौरान एक काफी बड़ी कलीसिया बन गई थी और प्रकट है पौलुस ने उन्हें काफी कुछ सिखाया भी। उसके बाद के पत्र सुधान लाने के लक्ष्य से लिखे गए थे, कुछ त्रुटियों को सुधारने का प्रयास था, जो उनकी कार्यवाहियों में घुस आई थीं।

इफिसुस में कलीसिया (प्रेरितों 19:1-20)

एक बार फिर, इफिसुस पहँचने पर, पौलुस को कुछ सम्भावित विश्वासी मिले, इस समय वे "यूहन्ना बपतिस्मादाता के चेले" थे, जिससे उन्होंने बपतिस्मा पाया था। उन्होंने अभी तक पवित्र आत्मा के विषय में नहीं सुना था। जो शिक्षा उन्हें यूहन्ना से मिली थी, पौलुस ने उससे आगे आरम्भ किया, और उन्हें समझाया कि यूहन्ना यीशु के विषय में ही प्रचार कर रहा था। उसने उन्हें एक बार फिर, यीशु के नाम में, बपतिस्मा दिया। तब उन पर हाथ रखे, और प्रार्थना की, "तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे।" (आय. 6)।

पौलुस की सेवकाई का विषय। (प्रेरितों 19:8)

"वह आराधनालय में जाकर तीन महिने तक निडर होकर बोलता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में विवाद करता और समझाता रहा।" पौलुस की सेवकाई में संगत विषय परमेश्वर के राज्य से सम्बंधित था। इसमें सम्मिलित होता था:

- कि यीशु क्रूसित हुआ, पुनरुत्थान हुआ और महिमा पाया परमेश्वर का पुत्र है।
- कि वह प्रतिज्ञात मसीहा है।
- कि वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है।
- कि उसने परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर लाया है।
- कि वह दाऊद की गद्दी पर से पृथ्वी पर राज्य करने के लिए लौटेगा।

पौलुस उस क्षेत्र में कुछ दो वर्ष से अधिक रहा जब, "यहाँ तक कि आसिया के रहनेवाले क्या यहूदी क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया।" (आय. 10)

अग्रिप्पा के सम्मुख पौलुस की गवाही। (प्रेरितों 26:1-32)

पौलुस पहले ही फेस्तुस के सम्मुख अपनी सफाई पेश कर चुका था और अब वह इसे अग्रिप्पा के सम्मुख पेश करता है। उसे स्पष्ट अनुभव होता है कि कुछ परिस्थितियों में मसीह के द्वारा परमेश्वर के उद्धार के सामर्थ्य की व्यक्ति की अपनी व्यकितगत गवाही से कुछ भी अधिक सामर्थी या प्रभावशाली नहीं हो सकता है। उसकी गवाही में कई भाग हैं:

अ. उसने सच्चे हृदय से अग्रिप्पा की प्रशंसा की। आय. 1-3
जब कभी भी यह मुमकिन हो, इसे करो। अपने सुननेवालों को किसी बात के लिए, जो वास्तव में प्रशंसा के योग्य है, बधाई दो। यह एक अच्छा, सकारात्मक सम्बंध बनाता है। यह अपने सुननेवालों को निष्फल करने से कहीं अधिक उत्पादक है।

आ. उसने पहले के अपने यहूदी होने के जीवन की बात की। आय. 4-11

इ. उसने मसीहियों की ओर अपने विरोध का वर्णन किया। आय. 9-11

ई. उसने दमिश्क की सड़क पर मसीह के साथ अपने नाटकीय मिलान का वर्णन किया। आय. 12-18

उ. उसने अपने अनुभव को बड़े सामर्थ्य के साथ अग्रिप्पा पर लगाया। आय. 27, 32

ऊ. उसने ऐसा इतने प्रभावशाली तरीके से किया कि अग्रिप्पा बोल उठा, "तू थोड़े से समझाने में मुझे मसीही बनाना चाहता है।" आय. 28

ए. उसने जाल खींचने का प्रयास किया, आयत 29। "परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि क्या थोड़े में क्या बहुत में, केवल तू ही नहीं परन्तु जितने लोग आज मेरी सुनते हैं, इन बन्धनों को छोड़ वे मेरे समान हो जाएँ।"

पौलुस की रोम की यात्रा। (प्रेरितों 28:16-31)

हम प्रारंभिक कलीसिया की बढ़त की इन संक्षिप्त अन्तर्दृष्टिओं को पौलुस के रोम के समय के विषय में कुछ टिप्पणियों के साथ समाप्त करते हैं, जहाँ वह कुछ दो वर्ष घर कैद में था। इस समय के दौरान उसे अपने किराए के मकान में रहने दिया गया और वह उन सब को स्वीकार करने के लिए स्वतन्त्र था जो उससे मिलने आते थे, और "बिना रोक-टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।"
"परमेश्वर का राज्य" वाक्यांश में यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान शामिल है परन्तु इस में अनन्त भविष्य में देशों पर मसीह के राज्य का एक शक्तिशाली संदर्भ भी शामिल है। इसका निश्चय ही भविष्य का पहलू है और जोर युग के अन्त पर है।

सीखने की क्रियाएँ:

1. फिलिप्पी में विश्वासियों की एक मण्डली स्थापित करने के लिए कौन सी तीन घटनाएँ हुई थीं ?
2. तीन विशेषताएं दो जिन्हें पौलुस ने लुदिया में पाया था। वह एक विशिष्ट प्रारंभिक सेविका क्यों थी ?
3. हम कैसे जानते हैं कि पौलुस ने थिस्सलुनीके में परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया ?
4. परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने के लिए हमें किस चीज पर जोर देना चाहिए ?
5. एथेंस के आराधनालय से नागरिक केन्द्र में पौलुस का तरीका कैसे भिन्न था ?
6. इफिसुस में पौलुस की सेवकाई का विषय क्या था ? कौन सी तीन चीजें इसमें थीं ?
7. अग्रिप्पा को दी गई पौलुस की गवाही के तीन तत्त्व क्या हैं ?

अध्याय 4 – कलीसिया की स्थापना के लिए सही प्रेरक

यह आवश्यक है कि जो कुछ भी हम परमेश्वर के लिए करते हैं, सही प्रेरणा से निकले।
यह बात कलीसिया की स्थापना के विषय में विशेषकर सच है। यदि कलीसिया स्थापित करने की हमारी अभिलाषा एक गलत प्रेरणा से निकलती है, तो हम कलीसिया एक गलत बुनियाद पर बनाएंगे और गम्भीर समस्याएं अनिवार्य होंगी।
कुछ लोग इस विचार पर सवाल खड़ा करके कहेंगे कि कोई यह कैसे कर सकता है। वे कहेंगे, "निश्चय ही परमेश्वर के लिए काम करने की इच्छा और एक कलीसिया स्थापित करने का कठिन और कभी-कभी कृतघ्न काम अच्छा ही होना चाहिए।" यह सच है कि पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया कि मसीह का प्रचार हो रहा था, चाहे कुछ "डाह या झगड़े" के कारण करते थे। (फिलि. 1:12-18)। फिर भी वांछनीय है कि मसीह का प्रचार एक अच्छे, सच्चे, शुद्ध प्रेरणाओं से हो। जिस आत्मा से संदेश प्रचार किया जाता है, पानेवालों में चला जाता है।

यदि हम एक अच्छी नींव रखना चाहते हैं, तो हमें ऐसा सही प्रेरणा से करना चाहिए।
पहले, आओ हम अपने आप से पूछें कि कुछ गलत प्रेरक क्या हैं जो हम में हो सकते हैं।

अ – घमण्ड

यही कमजोरी थी, जिसने लूसीफर का सत्यानाश किया था। (यशायाह 14:12-23; यहेजकेल 28:12-19)। वह पहले परमेश्वर का एक महत्त्वपूर्ण सेवक था, परन्तु घमण्ड उसके हृदय में छिपा था और अन्त में उसका सत्यानाश कर गया। घमण्ड विनाश का वह औजार है जिसने अनेक दूसरे परमेश्वर के सेवकों को नष्ट किया है। उनकी असफलता के अन्तिम हालात कुछ भी क्यों न रहे हों, यह अक्सर घमण्ड और अह्म होते हैं जो विनाश के मार्ग बनाते हैं। मानव घमण्ड कई हानिकर तरीकों से कार्य कर सकता है, और आत्मिक घमण्ड और अधिक विध्वंसक होता है। ऐसा घमण्ड एक मूल प्रेरक शक्ति हो सकती है जो एक व्यक्ति का कलीसिया आरम्भ करने का कारण बनता है। उनका घमण्ड उन्हें लगातार बाध्य करता रहता है, परन्तु मानव घमण्ड और अह्म पर बनी कोई भी कलीसिया निराशा और असफलता ही लाएगी।

आ – महत्त्वाकांक्षा और सफल होने की इच्छा

बहुत से लोग जीवन में सफल होने और कुछ प्राप्त करने की इच्छा से, जो उन्हें लोगों की नज़रों में लाएगा, प्रेरित होते हैं। यदि ऐसा व्यक्ति मसीही है, और उसके जीवन में इस विशेषता से निपटा नहीं गया है, तो वे प्राप्ति की उनकी महत्त्वाकांक्षा को तृप्त

करने के लिए एक कलीसिया आरम्भ करने और पास्टर बनने के अवसर को खोजेंगे। हालाँकि एक नई कलीसिया आरम्भ करना कोई सरल काम नहीं है, फिर भी जो सफलता लोगों का सम्मान जीतती है उसे प्राप्त करने का यह अनेक तरीकों में से एक सरल तरीका है।

इ – एक नाम और प्रतिष्ठा बनाना

किसी भी कलीसिया मण्डली या सम्प्रदाय में कलीसिया स्थापित करनेवालों को 'हिलाने और चलानेवालों' के रूप में कुछ सम्मान मिलता है। उन्हें उनके समकक्ष व्यक्तियों से जो मात्र कलीसिया की देखभाल करने में संतुष्ट होते हैं, अधिक उद्यमशील, अधिक साहसिक और अधिक सजीव देखा जाता है। यिर्मयाह पूछता है, "क्या तू अपने लिए बड़ाई खोज रहा है? उसे मत खोज।"
ऐसे सम्मान के लिए एक गुप्त इच्छा कभी-कभार परमेश्वर के लिए कुछ प्राप्त करने की सच्ची इच्छा से मिश्रति होती है। परन्तु, हमें प्रार्थनापूर्वक निश्चित करना है कि हमारे प्रेरक मिश्रति नहीं बल्कि शुद्ध हैं और कि हमारा सबसे बड़ा अभिप्राय है कि हमारी सेवकाई द्वारा परमेश्वर को महिमा मिले।

<u>आओ अब हम सही प्रकार के प्ररकों पर विचार करें:</u>

1. गैर-मसीहियों में मसीह का प्रचार करना

मसीह को जानना, और दूसरों को उसके बारे में बताना, पौलुस के जीवन का उपभोगी उत्साह बन गया था, और यह हमारी भी सबसे बड़ी इच्छा और महत्त्वाकांक्षा होनी चाहिए। हमारे सारे प्रचार और सिखाने का मूल कारण लोगों को यीशु मसीह के ज्ञान में लाना होना चाहिए। न-उद्धार पाए हुओं के लिए कि वे उसे और उसके उद्धार के अनुग्रह को जानें। विश्वासियों और सन्तों के लिए, कि वे उसे अधिक घनिष्ठता और गहराई से जानें।

2. उसे ऊँचा उठाना और उसका नाम महान करना

"किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों 4:12)। "और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ्य दी है।" (प्रेरितों 3:16)
"सब यीशु के नाम पर घुटना टेंके, और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।" (फिलि. 2:11)

3. उसके हृदय की इच्छा पूरी करना

यशायाह दास के दुख भोग के विषय में कहता है, "वह अपने प्राणों का दुख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा।" पिता परमेश्वर पुत्र से कहता है, "मुझ से माँग, और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिए, और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिए दे दूँगा।" (भजन 2:8)
जब हम सुसमाचार प्रचार की सेवा और कार्यक्रमों में लगते हैं, और लोगों को परमेश्वर और उसके अनुग्रह के उद्धार के ज्ञान में लाते हैं, तो हम अपने उद्धारकर्त्ता के हृदय की इच्छा को पूरा करते हैं।

4. लोगों को यीशु के उद्धार के ज्ञान में लाना

किसी भी व्यक्ति के लिए जो सबसे बड़ा हम कर सकते हैं, वह है, उन्हें यीशु मसीह और उसके अदभुत ज्ञान में लाना। उनके जीवनों को समृद्ध बनाने या आशीष देने का इससे बड़ा तरीका और कोई नहीं है। इसी लिए सुसमाचार के प्रचारकों के रूप में हमारा बुलावा इस पृथ्वी पर सबसे बड़ा और सबसे महान बुलावा है। यीशु ने कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?" यदि आपके पड़ोसी सारे संसार को प्राप्त कर लें, परन्तु मसीह को नहीं जानें और अनन्त नरक में खो जाएँ, तो उनका सारा किया-कराया व्यर्थ हो जाएगा।

5. लोगों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते देखना

यदि किसी को कभी सुसमाचार प्रचार करने और उसके फलस्वरूप मसीह को स्वीकार करते और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते देखने का सौभाग्य मिलता है, तो उन्होंने अपने जीवन का सबसे बड़ा रोमांच अनुभव किया है। लोगों को "अन्धकार के वश से छुड़ाकर, परमेश्वर के प्रिय पुत्र के राज्य" में प्रवेश करते देखने का कितना ही आनन्द है। परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उनके

जीवनों को नाटकीय तरीके से बदलते, बढ़ते और समृद्ध होते देखना कितना लाभप्रद हो सकता है। लोगों को यह कहते सुनना कि 'यह आपका प्रचार था जिसके द्वारा मैंने मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार करने का फैसला किया था' कितनी आशीष की बात हो सकती है। यह तो पृथ्वी पर भी अदभुत है जब लोग आपके पास आकर ऐसी बातें कहें, परन्तु अनन्तकाल में यह कितनी बड़ी बात होगी जब वे कहेंगे, "यदि आप हमारे समाज में आकर मसीह का प्रचार नहीं करते, तो मैं सम्भवतः यहाँ नहीं होता!"

6. सम्पूर्ण व्यक्ति को चंगाई लाना

यीशु के नाम में बीमार को चंगाई लाना भी एक बड़ा सौभाग्य है। जहाँ कहीं भी प्रारंभिक कलीसिया द्वारा सुसमाचार प्रचार किया जाता था, लोग परमेश्वर के सामर्थ्य के द्वारा चंगाई पाते थे। और यीशु आज भी वैसा ही है। यदि परमेश्वर ने आपको एक संदेश और एक सेवकाई की आशीष दी है, जिसमें बीमार और दुखियों को चंगाई लाने की योग्यता भी सम्मिलित है, तो यह कितनी बड़ी आशीष और सौभाग्य है! उसके नाम में बीमार चंगे होते, कोढ़ी शुद्ध होते, लंगड़े चलते, और दुष्टात्माएँ निकाली जाती हैं। प्रचीन काल के प्रेरित उद्धार, चंगाई और छुटकारे के पूरे संदेश का प्रचार करते थे और संदेश बदला नहीं है।

7. परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर फैलाना

यीशु ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया, "तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।" (मत्ती 6:10)। हर बार जब हम संसार में कहीं भी नई कलीसिया स्थापित करते हैं, तो परमेश्वर का राज्य आता है और उसकी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसी पृथ्वी पर भी होती है। हर नई कलीसिया की स्थापना के साथ, हम शैतान से क्षेत्र ले लेते हैं और मनुष्यों में परमेश्वर के महिमायुक्त राज्य को बढ़ाते हैं। ऐसा करने से हम प्रभु के लौटने और उसके राज्य के शासन के प्रकट होने का मार्ग तैयार करते हैं।

8. हमारे बुलावे को पूरा करना और हमारी सेवकाई का पूरा प्रमाण देना

2 तीमु. 4:5 में, पौलुस तीमुथियुस को उपदेश देता है, "सुसमाचार प्रचार का काम कर, और अपनी सेवा को पूरा कर।" हर पास्टर स्वभावतः सुसमाचार प्रचारक होने के लिए नहीं बुलाया गया है, परन्तु हर पास्टर सुसमाचार का प्रचार करके और लोगों को मसीह में लाकर "सुसमाचार प्रचार का काम" कर सकता है। हम चाहे पास्टर, शिक्षक, प्रेरित या भविष्यद्वक्ता हों, हम सुसमाचार प्रचार का काम कर सकते हैं और इस प्रकार अपनी सेवकाई को पूरी तरह प्रभावशाली बना सकते हैं।

9. आनन्द का मुकुट जीतना

हर सुसमाचार प्रचारक के लिए एक विशेष अनन्त इनाम उपलब्ध है। इसे "आनन्द का मुकुट" कहते हैं। (2 थिस्स. 2:19)। आनन्द का मुकुट लोगों को जिन्हें हमें गवाही देने का आनन्द प्राप्त हुआ था, परमेश्वर की अनन्त उपस्थिति में लाने का सौभाग्य है। पौलुस कहता है, "भला हमारी आशा या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है ? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होगे ? हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो।"

10. यीशु को "धन्य, है अच्छे और विश्वासयोग्य दास"

इस इनाम के लिए मापदण्ड पर ध्यान दो। यह कोई सफलता, महान प्राप्ति, या एक बहुत बड़ी कलीसिया का पास्टर होना नहीं है। इनाम एक "अच्छा और विश्वासयोग्य सेवक" होने के लिए दिया जाता है।

सही प्रेरकों से कलीसिया स्थापना करना

"यदि घर को यहोवा न बनाए, तो उसके बनानेवालों का परिश्रम व्यर्थ होगा।" (भजन 127:1)
जैसे हम प्रेरक के इस विषय की जाँच कर रहे हैं, हमें खुद से गम्भीरता से पूछना चाहिए, "एक कलीसिया स्थापित करने की इच्छा का मेरा सच्चा उद्देश्य क्या है ?" "मैं इससे क्या पाने की आशा करता हूँ ?"
नीचे कुछ अच्छे सकारात्मक प्रेरक और उद्देश्य दिए गए हैं:

कलीसियाएँ राज्य के निर्माण पत्थर हैं।

मत्ता 16:18 में, यीशु ने कहा, "मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा"। वह असली कलीसिया का निर्माण करनेवाला है और हम तब ही सफल होते हैं जब हम उसके साथ मिलकर काम करते हैं। वह अपनी कलीसिया ईंट और गारे से नहीं बल्कि जीवित पत्थरों -

उद्धार पाए लोगों से बना रहा है। वह उन्हें स्थानीय कलीसियाएँ बनाता है, उन्हें इकट्ठा करता है और उन्हें अपने पूरे डील-डौल में बढ़ाता है।

कलीसियाएँ विश्वव्यापी कलीसिया की स्थानीय कलीसियाएँ हैं

विश्वासियों की हर स्थानीय कार्यशील देह महान विश्वव्यापी कलीसिया की एक शाखा है जिस पर मसीह सर्वश्रेष्ठ प्रधान है। हर स्थानीय कलीसिया को इसके भौगोलिक और संस्कृतिक वातावरण में उपयुक्त होना है। यह एक कारण है कि क्यों परमेश्वर इतनी सारी विभिन्न कलीसियाओं को फलने-फूलने देता है। सबके लिए कुछ न कुछ है। एक स्थानीय कलीसिया को इसकी स्थिति और वातावरण में भौगोलिक, संस्कृतिक, भाषाई, सिद्धान्तीय और पारम्परिक रूप से उपयुक्त होना है। हर कलीसिया इसकी स्थिति में प्रमाणिक और उपयुक्त हो।

कलीसियाएँ उद्धार पाए लोगों के बाइबल के समुदाय हैं

स्थानीय कलीसियाएँ प्रामाणिक रूप से नया नियम स्वभाव की हैं। वे निश्चय ही मनुष्य का अविष्कार नहीं हैं हालाँकि उसने इसके वर्तमान आकार को काफी हद तक बनाया होगा। असल में, उनकी शैली नए नियम से पहले की है, क्योंकि ध्यानपूर्वक खोजने से पता चलता है कि नए नियम की कलीसियाएँ प्रचीन यहूदियों के आराधनालयों के नमूने पर आधारित थीं। उस संदर्भ में, कलीसियाएँ "रविवार को जानेवाली सभाओं" से कहीं अधिक होनी चाहिए।

आराधनालय सदा एक समुदाय में जीवन का केन्द्र रहे हैं। यहूदी सोच-विचार द्विभाजन पर विश्वास नहीं करता है जिसमें स्वाभाविक और आत्मिक कड़ाई से अलग किए गए हैं। यह जीवन को एक सम्पूर्ण के रूप से देखता है, और इसलिए हर कार्य जो हम करते हैं ऐसा है जैसे प्रभु के लिए है। और आराधनालय सब प्रकार के समूदाय के जीवन का केन्द्र बन जाता है। नए नियम की कलीसियाएँ भी काफी कुछ इस प्रकार थीं और मेरा विश्वास है कि आधुनिक कलीसियाओं को भी इस नमूने को अपनाना चाहिए। यह निश्चय ही पश्चिमी नमूने के बजाय जिसे हम अक्सर पाते हैं, कई गैर-पश्चिमी संस्कृतियों में उपयुक्त ठहरेगा।

नए नियम की कलीसियाओं को स्थापित करने से जाल बड़ा होता है

हर नई मण्डली जो स्थापित की जाती है सुसमाचार को किसी न किसी के द्वार पर लाती है। जितनी अधिक कलीसियाएँ होंगी, उतना ही अधिक लोगों तक पहुँचने का अवसर मिलेगा। जितनी अधिक विविधता होगी, उतना अधिक आकर्षित होने, और लोगों को अपने प्रभाव के क्षेत्र में आकर्षित करने का अवसर मिलेगा। अधिक स्थानीय कलीसियाओं का अर्थ है अधिक सुसमाचार प्रचार।

कलीसिया की स्थापना विश्व सुसमाचार प्रचार की कुंजी है

आजकल अनेक कलीसिया में, कटनी और संचयन का दर्शन है। इस दशक को "फसल का दशक" कहा जाता है, और विश्व के सुसमाचार प्रचार के विचार सब जगह प्रचलित किए जा रहे हैं। मेरा विचार है कि हमें स्पष्ट रूप से समझने की आवश्यकता है कि कलीसिया की स्थापना पर सम्भव जोर दिए बिना ऐसा कार्य नामुमकिन सा होगा।

न तो सुसमाचार प्रचार सभाएँ, रेडियो कार्यक्रम, टीवी सुसमाचार प्रचार, और न साहित्य सुसमाचार प्रचार कुछ प्राप्त करनेवाले हैं, क्योंकि यह तो स्थानीय कलीसिया है जो नए विश्वासियों को मसीह की देह में दृढ़ करती और सुरक्षित रखती है। आधुनिक इतिहास के कुछ सबसे बड़े सामूहिक सुसमाचार प्रचार सभाओं से मुट्ठी भर ही टिकाऊ विश्वासी मिले हैं क्योंकि स्थानीय कलीसिया मण्डली की कीमत और भूमिका पर बहुत ही कम जोर और महत्त्व दिया गया है।

नई स्थानीय कलीसियाओं को स्थापित करने से कई महत्त्वपूर्ण कार्य पूरे होते हैं:

- यह अधिक क्षेत्र को सम्मिलित करती है।
- यह अधिक लोगों तक पहुचती है।
- यह अधिक लोगों को काम पर लगाती है।

स्थानीय कलीसियाएँ परमेश्वर के लोगों के लिए "भेड़शाला" है

स्थानीय कलीसियाओं का बाइबल का नमूना परमेश्वर ने अपनी भेड़ों की देखभाल, रक्षा और सुरक्षा के लिए बनाया है। परमेश्वर अक्सर अपने लोगों को भेड़ कहता है और यह सादृश्य उनके विषय में बहुत कुछ बताता है। परन्तु इस समय यह कहना पर्याप्त होगा कि भेड़ें कुछ-कुछ नाजुक होती हैं, विशेषकर उस समय जब वे अकेली होती हैं। उन्हें एक झुंड का संरक्षण चाहिए और एक चरवाहे की देखभाल और एक भेड़शाला की सुरक्षा चाहिए। भेड़िए जिनका स्वभाव भेड़ को नष्ट करने का होता है, पहले उन्हें झुंड

से अलग करने का प्रयास करते हैं। इसलिए, जितनी अधिक स्थानीय कलीसियाएं होंगी, भेड़ों को उतना अधिक एक भेड़शाला पाने का अवसर मिलेगा जो उनकी आवश्यकता को पूरा करता है।

जैसे हम अन्तिम समय के महान फसल के निकट पहुँच रहे हैं, हमें समझना चाहिए कि जनजाति तक पहुँचना समीकरण का पहला कदम ही है। उन्हें मसीह की देह में जोड़ना और दृढ़ करना अत्यन्त ही आवश्यक है, ऐसा न हो कि जो फसल काटी गई है नष्ट और व्यर्थ होने के लिए छोड़ दी जाए। इसलिए फसल से सम्बंधित नीति स्थानीय कलीसियाएँ स्थापित करने के विचार पर आधारित होनी चाहिए। न केवल यह एक बाइबल का नमूना है, परन्तु यह फसल को सुरक्षित रखने का एक मात्र तरीका भी है।

सीखने की क्रियाएँ:

1. मनुष्य की तीन विशेषताएं बताओ, जो कलीसिया स्थापित करने के लिए गलत प्रेरक हैं।
2. कलीसिया स्थापित करने के पाँच सही प्रेरक बताओ।
3. तीन कारण बताओ कि कलीसिया की स्थापना क्यों अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

अध्याय 5 – प्रारंभिक कलीसिया के नमूने पर एक और दृष्टि

अब जब हम गम्भीरता से विचार करने लगे हैं कि किस प्रकार की कलीसिया हमें स्थापित करनी है, तो केवल एक ही स्रोत है जिसकी हम सहायता ले सकते हैं, जो है परमेश्वर का वचन, बाइबल। हमें निश्चय करना है कि हम बाइबल के नमूने के अनुसार बनाएँ। जब परमेश्वर मूसा को तम्बू बनाने के बारे में निर्देश दे रहा था, तब उसने बार-बार उससे आग्रह किया, "सावधान रहकर इन सब वस्तुओं को उस नमूने के समान बनवाना, जो तुझे इस पर्वत पर दिखाया गया है।" (निर्गमन 25:40; 26:30; 27:8; इब्रा. 5:8)। हम भी प्रभु के साथ मिलकर निर्माण करते हैं, और बाइबल के नमूने के अनुसार बनाने का प्रयास करते हैं।

वापस प्रारंभ की ओर

जैसे हम प्रेरितों की पुस्तक में प्रारंभिक कलीसिया के आरम्भ की जाँच करते हैं, तो हमें दो चीजों की जानकारी मिलती है:

पहला: एक बाइबल का नमूना

प्रारंभिक कलीसिया परमेश्वर के सर्वसत्ताक कार्य, यानि बाइबल के ज्ञात सिद्धान्तों के द्वारा स्थापित की गई थी। इसलिए जो हमारे पास है वह न केवल नई वाचा की कलीसिया के जन्म का लिखिस इतिहास है, बल्कि सारे युग के लिए कलीसिया के लिए एक नमूना है।

प्रारंभिक कलीसिया के नमूने में कुछ बाइबल के संकेत वर्तमान हैं जिन्हें भौगोलिक या समकालीन संदर्भ में सारे युग में कलीसिया में बनाए रखना चाहिए।

अ – एक बाइबल की बुनियाद

प्रारंभिक कलीसिया के आरम्भ में बाइबल के सारे चिन्ह वर्तमान हैं। प्रकट है कि इसे बाइबल के परमेश्वर ने वाद्यवृन्द किया था। इसके प्रारंभ भविष्यद्वक्ताओं की भविष्यद्वाणियों की पूर्तियाँ हैं। पुराने नियम के लेखों की सतह के नीचे नई वाचा के समूदाय की प्रतिज्ञा छिपी है, और प्रारंभिक कलीसिया इन भविष्यद्वाणियों को पूरा करने लगती है।

इसलिए पवित्र बाइबल कलीसिया की साधन पुस्तक है। यह हर मसीही आकांक्षा और क्रिया के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन है। इसलिए, कलीसिया की स्थापना में हमारा लक्ष्य बाइबल पर आधारित उद्धार पाए और आत्मा से भरे विश्वासियों की मण्डलियाँ आरम्भ करना होना चाहिए।

आ – प्रेरितों का निरीक्षण

प्रारंभिक प्रेरितों ने, जिन्हें प्रभु ने आप चुना और बुलाया था, ठीक ही कलीसिया का निरीक्षण सम्भाल लिया था। कलीसिया किसी कलीसियाई प्रणाली या मनुष्य के बनाए नियमों के नियंत्रण में नहीं थी, परन्तु परमेश्वर द्वारा बुलाए और नियुक्त किए सेवकों के

नियंत्रण में थी जो सेवकाई के लिए नए नियम के नमूने के अनुसार चलते थे। उन में से हर एकः (1) नया जन्म पाया; (2) आत्मा से भरे हुया; (3) परमेश्वर द्वारा बुलाया, और (4) परमेश्वर द्वारा योग्य किया गया नई वाचा का सेवक था।

इ – पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थ्य पाए

नए नियम की सब कलीसियाएँ पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में कार्य करती थीं। पवित्र आत्मा का सामर्थ्य उनमें प्रकट था। वे मनुष्य के कार्यक्रमों या सुविज्ञता पर निर्भर नहीं थे। उनका भरोसा मनुष्य की उपलब्धियों या योग्यता पर नहीं था, बल्कि आत्मा के अभिषेक और सामर्थ्य में था। परिणामस्वरूप, उन्होंने अपनी सेवकाई के बहुत से अलौकिक प्रमाणीकरण देखे थे, और उनके कार्य आत्मा की गतिशीलता से भरे हुए थे। आत्मा के वरदान प्रारंभिक कलीसिया में प्रभावशाली रूप से प्रकट थे, और कुरिन्थियों की कलीसिया में कुछ अधिक ही थे। इसकी वजह से पौलुस ने उन्हें सुधार का एक लम्बा पत्र भी लिखा परन्तु उसने किसी प्रकार से भी इन आत्मा के प्रमाणों को त्याग देने की बात नहीं की।

ई – सदस्यता का बाइबल का आधार

प्रारंभिक कलीसिया में सदस्यता की बढ़त का ब्यान करने का लूका का निराला तरीका "प्रभु कलीसिया में जोड़ देता था" है। क्योंकि कलीसिया को एक देह, और न कि एक क्लब के रूप देखा जाता था। आधुनिक संदर्भ में बहुत सी कलीसियाएँ क्लब जैसी बन गई हैं और सदस्यता का उनका विचार एक क्लब के तरीके जैसा है। सदस्यता अक्सर औपचारिक प्रार्थना-पत्र, परखना, पुष्टीकरण, स्थानान्तरण, या ऐसा कुछ द्वारा पाई जाती है। प्रार्थिओं को कुछ आधार के अनुसार, जो उस विशेष कलीसिया या सम्प्रदाय के लिए उपयुक्त हैं, परखा और मंजूर किया जाता है।

प्रारंभिक कलीसिया के संदर्भ में, नए सदस्यों को मसीह के लिए जीता, पानी में बपतिस्मा दिया, प्रेरितों की शिक्षा और जीवन-शैली, और उद्धार पाई मण्डली के जीवन में दीक्षित किया जाता था। एक ही समय में आत्मिक और मानवीय कार्य दोनों होते थे। मानवीय पहलू औपचारिक और कर्मकाण्डवाद नहीं बल्कि अनौपचारिक और व्यावहारिक होता था।

उ – ग्रह सेल समूह

"घर-घर रोटी तोड़ते" (प्रेरितों 2:46) का अर्थ कई चीजें हो सकता है परन्तु सबसे स्पष्ट अर्थ केवल यह है कि प्रारंभिक कलीसिया की अधिकाँश क्रियाएँ विश्वासियों के घरों में हुआ करती थीं। प्रकट है कि इकट्ठे हुए लोगों की संख्या बहुत बड़ी नहीं होगी क्योंकि सामान्य घर का आकार इसे सीमित करेगा। इसलिए हम निश्चित हो सकते हैं कि जो नमूना स्थापित किया गया था वह यह था कि विश्वासियों के छोटे-छोटे समूह उनके विभिन्न घरों में आराधना और आपसी उन्नति के उद्देश्य से नियमित मिला करते थे। वे सामूहिक भोजन में भाग लेते थे। वे प्रार्थना करते थे। वे मिलकर परमेश्वर की स्तुति करते थे। उन सभाओं के निरीक्षक साधारण (अयाजकीय) अगुवे होते होंगे। सभाएँ, विश्वासियों की उन्नति और मसीहियत के प्रसारण दोनों के लिए बेशक अनिवार्य थीं। वे कलीसिया की बढ़त और कलीसिया की स्थापना के लिए अनिवार्य हैं।

ऊ – बड़ी-बड़ी सामूहिक सभाएँ

"मन्दिर में" (प्रेरितों 2:46)। ने केवल वे छोटे समूहों में उनके घरों में मिला करते थे, बल्कि वे बड़े समूहों में भी नियमित इकट्ठे होते थे, जब सारी स्थानीय कलीसिया एक साथ इकट्ठी होती थी। हमारे आधुनिक संदर्भ में इसे "उत्सव" कहा गया है, यानि जब सारी मण्डली एक साथ सभा करती है। दोनों तरीके आवश्यक हैं और कलीसिया के कार्य, वृद्धि और प्रसारण के लिए सम्भवतः अनिवार्य हैं।

ए – सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करना

"और सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएँ साझे की थीं।" (प्रेरितों 2:44)। "इकट्ठे रहते थे" का अर्थ उसी इलाके में रहते थे से कहीं अधिक है। यह एक मैत्री का संकेत देता है, जो उन दिनों में कलीसिया के "कोइनोनिया" (साझेदारी, बाँटना, सामान्य बन्धन) का प्रतीक है। इसमें जीवन के हर पहलू में एक दूसरे के लिए एक आपसी प्रेमभरी दिलचस्पी और देखभाल सम्मिलित थी। समकालीन टीकाकार इसी बात का जिक्र कर रहे थे जब उन्होंने कहा, "ये लोग जिन्होंने जगत को उलटा-पुलटा कर दिया है, यहाँ भी आ गए हैं।" (प्रेरितों 17:6)।

सामाजिक दिलचस्पी का यह क्षेत्र कलीसिया के जीवन में कोई अस्थाई तत्त्व नहीं था। वर्षों बाद हम इसका प्रेरितों 6:1-7 में गहरा प्रमाण पाते हैं। जब कलीसिया रोजाना के आधार पर विधवाओं की सेवा करती थी, जिसमें भोजन का प्रबंध भी सम्मिलित था।

ऐ – स्तुति और आराधना

"और परमेश्वर की स्तुति करते और सब लोग उनसे प्रसन्न थे।" (प्रेरितों 2:47)। यह वक्तव्य दो महत्त्वपूर्ण चीजों का संकेत देता है।

पहला यह कि वे परमेश्वर की स्तुति करने पर बहुत जोर देते थे। स्पष्ट संकेत यह है कि उनकी स्तुति आनन्द की अभिव्यक्ति में व्यक्त होती थी। (आय. 46)। वे उनकी स्तुति आनन्दपूर्वक और उत्साहपूर्वक व्यक्त करते थे।

दूसरी बात यह थी कि बहुत सारे लोग उनसे प्रसन्न थे। मेरा विश्वास है कि दोनों चीजें जुड़ी हुई हैं और कहीं भी कोई संकेत नहीं मिलता कि उनकी स्तुति की उल्लसित शैली किसी प्रकार से उन्हें लोगों की मान्यता या स्वीकृति से दूर करती थी।

जिस चीज का मैं यहाँ सुझाव देनेवाला हूँ वह यह है कि संगीत और मौखिक अभिव्यक्ति हृदय की एक उचित भाषा है और संचार का एक बहुत की शक्तिशाली माध्यम है। यह हृदय से हृदय की बात कहता है। यह ध्यान जाग्रत करता, लोगों को आकर्षित करता, उन्हें एक सामर्थी संदेश देता और वैसा ही आनन्द, जो स्तुति और खुशी की अभिव्यक्तियों से व्यक्त की जा रही है, पाने की उनमें इच्छा छोड़ जाता है। मुझे निश्चय जान पड़ता है कि अन्तिम दिनों की महान फसल में संगीत, और स्तुति और आराधना एक शक्तिशाली भूमिका निभाएँगे। स्तुति की अव्यिक्तियाँ जो बाइबल पर आधारित भी हैं और समकालीन रूप से उपयुक्त भी हैं, गैर-मसीही संसार में सुसमाचार की महान प्रगति में सहायक होंगी।

जैसे आप राष्ट्रों में गहरा प्रभाव डालने की अपनी योजनाएँ और नीतियाँ बनाते हैं, तो कृपया संगीत और इसकी प्रभावशाली अपील को कुछ गम्भीर सोच-विचार दीजिए। जो संगीत अतिवादी, भिन्न, संस्कृति के रूप से आकर्षक और उपयुक्त है, उसे उपयोग में लाने से मत डरो। आत्मा के अभिषेक में संगीत संसार में सामर्थी रूप से प्रवेश करेगा।

ओ – कलीसिया के साथ भेदभाव किया जाता और सताया जाता था

प्रारंभिक कलीसिया इसलिए नहीं बढ़ी क्योंकि यह सम्माननीय और सामाजिक रूप से स्वीकार्य थी। न ही इसलिए कि यह सरकार का अनुग्रह और सुरक्षा पाई हुई थी। उसके बदले, यह बुरे भेदभाव, सताव और कैद का लक्ष्य थी। परन्तु, यीशु ने प्रतिज्ञा की थी कि जिस कलीसिया को वह बनाएगा उस पर "अधोलोक के फाटक प्रबल नहीं होंगे।" मैं निश्चय ही यह नहीं कह रहा कि हम भेदभाव, विरोध, या सताव उत्पन्न करें। ये वह चीजें नहीं हैं जिनकी हम खोज करें। फिर भी, वे अक्सर एक सच्चे सुसमाचार के प्रचार के परिणामस्वरूप आते ही हैं। तथ्य संकेत देते हैं कि कलीसिया की बढ़त हतोत्साहित करने या रोकने के बजाय, ऐसे तत्त्व वास्तव में इसे बढ़ावा देते हैं। असल में, आज कलीसिया उन राष्ट्रों में जहाँ इसकी उपस्थिति का बड़े शक्तिशाली तरीके से विरोध किया जा रहा है, सबसे अधिक नाटकीय और भरपूर बढ़त अनुभव कर रही है।

औ – प्रारंभिक कलीसिया जीवित, गतिशील और तेजी से फैल रही थी

यह निश्चय ही सच है कि "जहाँ जीवन है, वहाँ बढ़त है।" बढ़त एक स्वस्थ जीवन का चिन्ह है। हर जीवित चीज जो स्वस्थ है, बढ़ेगी। इसलिए यदि एक कलीसिया बढ़ नहीं रही है, तो उस कलीसिया के स्वास्थ्य पर नज़र डाली जानी चाहिए। आश्चर्य की बात यह है कि बहुत सारे मसीही और सेवक जीवन के अत्यावश्यक चिन्हों से डरते हैं। वे सजीवता या जीवन के किसी भी चिन्ह को दबाने और हतोत्साहित करने का प्रयास करते हैं। वे हर उस चीज में जिसे वे छूते हैं निश्चलता और अनुपजाऊपन उत्पन्न कर देते हैं। वे भावात्मिक अभिव्यक्ति, उल्लास या आनन्द से डरते हैं। वे जीवन के चिन्हों के बजाय मृत्यु के चिन्हों को अधिक खोजते हैं। कलीसिया की सभाएँ भयंकर उदास, सभा-पद्धति पूर्वानुमेय और उबाऊ होती हैं। प्रचार अकल्पनाशील और निरर्थक होता है। जीवन का कोई भी चिन्ह बहुत पहले बुझ चुका है। तब वे अगुवे आश्चर्य करते हैं कि क्यों कोई उनकी कलीसिया में आना नहीं चाहता।

आओ हम जीवन का स्वागत करें। केवल भावात्मिक अभिव्यक्ति ही नहीं, बल्कि गतिशील जीवन के अत्यावश्यक चिन्ह भी। आत्मा की हवा को कलीसियाओं में बहने दो। उसे जालों को उड़ा लेने और कलीसिया में नए जीवन की साँस फूँकने दो। जो कलीसियाएं आप आरम्भ करते हैं, प्रेम, जीवन और सामर्थ्य के स्थान हों।

दूसरा: एक संस्कृतिक रूप से उपयुक्त नमूना

हमें पता होना चाहिए कि यह नई कलीसिया संस्कृतिक रूप से असली, और इसके धार्मिक, भौगोलिक और समकालीन संदर्भ में उपयुक्त थी।

अ:	क्योंकि कलीसिया यरूशलेम में, यहूदी पर्व के समय, संसार के अधिकाँश देशों से आए अनुपालक यहूदियों के बीच उत्पन्न हुई थी। प्रकट रूप से इसमें बहुत अधिक यहूदी मात्रा और प्रतिबिम्ब था। कलीसिया के सारे प्रारंभिक सदस्य यहूदी थे, हालाँकि एक छोटी सी संख्या वास्तव में अन्यजाति से धर्मान्तरित थे। इसके विकास और प्रसारण के प्रारंभिक चरणों में, प्रेरित स्थानीय आराधनालयों को अपना लक्ष्य बनाते, और उनके प्रचार और शिक्षा के कार्यक्रमों के लिए उन्हें अपना अड्डा बनाते थे। इसलिए, कई वर्षों तक कलीसिया का यहूदियों की ओर झुकाव बना रहा था।

आ.	क्योंकि कलीसिया मध्य-पूर्व में उत्पन्न हुई थी, इसका स्पष्ट रूप से मध्य-पूर्वीय मात्रा और प्रतिबिम्ब था। इसकी प्रारंभिक सदस्यता सर्वदेशीय होने के बावजूद भी, इसने अभी भी इस प्रतिबिम्ब को बनाए रखा था। जैसे कलीसिया बढ़ने लगी, विशेषकर जब यह एशिया मायनर में तेजी से बढ़ने लगी, तो इसके रीति-रिवाज और प्रतिबिम्ब इसके नए वातावरण के अनुसार कुछ-कुछ हेर-फेर किए गए थे।

इ.	क्योंकि कलीसिया पहली सदी में उत्पन्न हुई थी, इसके तरीके और कार्यक्रम इसके समकालीन वातावरण में उपयुक्त थे। मैं विश्वास करता हूँ कि यह हर प्रकार से एक कलीसिया थी, जो इसके समकालीन वातावरण में पूर्ण रूप से उपयुक्त थी।

मुझे निश्चय है कि अब हम कलीसिया स्थापकों के लिए एक बहुत ही आवश्यक मामले के विषय में बात कर रहे हैं। एक समाज पर अधिकतम प्रभाव होने के लिए, हमारी पहुँच उस समाज के लिए इसके धार्मिक, संस्कृतिक और समकालीन अपील में उपयुक्त होनी चाहिए।

उदाहरणार्थ, यदि हम एक मुस्लिम समाज में कलीसिया आरम्भ करना चाहते हैं तो हमें हर सम्भव प्रयास करना चाहिए ताकि हमारी प्रतिमा उस समाज के आचार-शास्त्र का विरोध नहीं करती है। आधुनिक मसीहियत के अनेक पहलू हैं, विशेषकर "पश्चिमी संसार" की छाप जो प्रकट रूप से मुस्लिम मनोभाव के लिए घिनावनी है। इनमें से कई चीजें असल में मसीही नहीं हैं, और न ही वे वास्तव में बाइबल की हैं। कुछ मसीही परम्परा की हैं, जो कहीं मार्ग में और कलीसिया के इतिहास के विविध मार्ग में जुड़ गई हैं। दूसरीं पूरी तरह पश्चिमी हैं, जो मसीही इतिहास की पिछली कुछ सदियों में अपनाई गई हैं।

अब मैं यह सुझाव बिलकुल नहीं दे रहा हूँ कि जो सच में बाइबल का है और उपयुक्त रूप से मसीही है उसके साथ हम समझौता करें। न ही हमारे संदेश के साथ कोई समझौता किया जा सकता है। परन्तु संदेश के हमारे प्रस्तुतीकरण को अनावश्यक अप्रसन्नता या गलतफहमी से बचाने के लिए ठीक किया जा सकता है। वस्त्र, व्यवहार और जीवनशैली की हमारी प्रतिमा स्थिति के अनुसार होनी चाहिए। मुस्लिम लोगों में मसीहियों के विषय में, और विशेषकर सक्रिय, बाइबल के मसीहियों की ओर अनेक सामान्य धारणाएँ हैं। हम सम्भवतः इन धारणाओं से सहमत न हों या उन्हें उचित न मानें, परन्तु न ही हमें उन्हें अनदेखा करना चाहिए। हमें सदा उनके जानकार होना और सावधान रहना चाहिए, और अनावश्यक अप्रसन्नता पैदा करने से बचने का प्रयत्न करना चाहिए।

यीशु ने अपने समय के वातावरण में देहधारण किया। उसने पर्वों को मनाया और व्यवस्था का पालन किया। हालाँकि बहुत सारे धार्मिक यहूदियों ने उसका विरोध किया, परन्तु उनकी आलोचनाएँ वैध या तर्कसंगत नहीं थीं। उसने उन्हें अप्रसन्न नहीं किया और न ही उनके नियमों को तोड़ा। असल में, उसने साफ-साफ कहा, "मैं व्यवस्था को लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ।"

एशिया और अफ्रीका की बहुत सारी कलीसियाओं ने, उनके समाज के धार्मिक विवेक को, उन विचारों को अपनाकर और आचरण करके जो स्पष्ट रूप से पश्चिमी हैं, नाराज किया है। उन्होंने इस विचार को अनजाने में बल दिया है कि "मसीहियत" एक पश्चिमी या गोरे लोगों का धर्म है। इससे मसीही संदेश का आकर्षण और संबद्धता बहुत कम हो गई है।

हम बारंबार प्रमाण देख सकते हैं कि किस प्रकार कई राष्ट्रों में प्रारंभिक कलीसिया स्थापना में पश्चिमी संस्कृति घुस आई है। ऐसी बहुत सी कलीसियाओं ने पश्चिमी संस्कृति के नमूने को, पश्चिमी वास्तुकला, आराधना के तरीकों, और प्रशासन के तरीकों के साथ, अपना लिया है।

मैं उत्सुकता से उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जब इस प्रभाव का अन्त होगा। जब एशिया की कलीसियाएँ - एशिया की कलीसियाएँ होंगी। जब एशिया की कलीसियाएँ उनके लोगों के लिए संस्कृती के अनुसार असली होंगी। जिन संस्कृतियों को पश्चिमी लोगों ने बहुत पहले से तुच्छ और घटिया और शैतानी माना है, उनमें अक्सर उत्तमता की गहराई है जिसे पश्चिमी मन ने कभी भी समझने या सम्मान करने का प्रयास नहीं किया है। बहुत बार उसने इस सतही रवैया को अपनाया है कि अफ्रीका का सबकुछ सासंसारिक है जिसमें सभ्यता की पतली परत ही है। उसने लोगों की ऐतिहासिक संस्कृति के तमाम चिन्हों को तथाकथित मसीही स्तरों से बदलने का प्रयत्न किया है, जो अक्सर उतने ही सासंसारिक थे जितने वे जिन्हें बदलने का प्रयास किया गया है।

वैसे ही सिद्धान्त उस संस्कृतिक वातावरण के लिए भी सत्य हैं जिन्हें हम जीतने का प्रयत्न करते हैं। न केवल हमें उनके संस्कृतिक मानक और अपेक्षाओं को अनदेखा नहीं करना है, बल्कि उन बातों के साथ समझौता किए बिना जो मूल रूप से बाइबल की हैं,

हमें अपनी भरपूर योग्यता के अनुसार उन्हें समायोजित करना चाहिए। स्थानीय संस्कृति की बातों को अनदेखा करने या महत्त्व कम करने से कुछ प्राप्त नहीं हो सकता है।

तीसरा: प्रारंभिक कलीसिया समकालीन थी।

हमें एक समकालीन भाव से उपयुक्त होने की आवश्यकता को पहचानना है। बहुत से मसीहियों और मसीही कलीसियाओं और संस्थाओं में यह दुर्भाग्यवश प्रवृति है कि "पुराना अच्छा है और आधुनिक बुरा है।" किसी प्रकार परमेश्वर के विषय में हमारा मानसिक चित्र पुराने इतिहास का है। परमेश्वर को एक बुजुर्ग के रूप में जो मन्द और दूर अतीत में रहता है चित्रित किया गया है। कुछ भी सत्य से दूर नहीं हो सकता है।

परमेश्वार सदा समकालीन रहा है। वह कल, आज और कल का परमेश्वर है। वह कल का, आज का और आनेवाले कल का परमेश्वर, एक ही समय में है। वह अनन्त भविष्य का परमेश्वर है।

अतीत से अपने को बाँध देने और पुराने विचारों और तरीकों को पकड़े रहने की हमारी प्रवृति हमारी प्रभावकारिता को रोकती और सीमित करती है। हमारा संदेश न कभी बदला है और न कभी बदल सकता है। परन्तु हमारे तरीके समय के अनुसार बदलने चाहिए।

सीखने की क्रियाएँ:

1. प्रारंभिक कलीसिया के नमूने की पाँच विशेषताएँ दीजिए।
2. प्रारंभिक कलीसिया एक "संस्कृतिक रूप से उपयुक्त नमूना था।"
   - क. तीन चीजें बताइए, जो इसे सच बताती हैं।
   - ख. तीन चीजें बताइए, जो आपके देश में कलीसिया को संस्कृतिक रूप से अधिक उपयुक्त बनाएँगी।

अध्याय 6 – "कलीसिया की स्थापना का चक्र"

इस अध्याय में हम कलीसिया की स्थापना की एक युक्ति की जाँच करने वाले हैं जो प्रजनक प्रक्रिया के अवस्थाओं पर आधारित है जिसे परमेश्वर ने मानवजाति में बुना है। उत्पत्ति 1:26-28 में, जहाँ मानवजाति का पहला जिक्र है, परमेश्वर आदम और हव्वा के लिए अपनी सबसे महत्त्वपूर्ण इच्छा प्रकट करता है, जो थी, "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो।" हमारे लिए जो उसके उद्धार पाए लोग हैं, परमेश्वर का उद्देश्य, फलवन्त होना और उसके राज्य को भरना है।

<u>प्रजनन की प्रक्रिया</u> - उत्पत्ती 1:26-28

मनुष्य को फलवन्त होने और प्रजनन करने के लिए बनाया और ठहराया गया था।
परमेश्वर ने उन्हें सहयोगी प्रयत्न द्वारा इसे पूरा करने के लिए बनाया था।
परमेश्वर ने एक नमूना, एक चक्र, या प्रक्रिया स्थापित की है जिसे उसने प्रकृति में बनाया है:

- 1 - गर्भधारण
- 2 - गर्भावस्था
- 3 - जन्म
- 4 - वर्धन
- 5 - प्रजनन

1 – गर्भधारण अवस्था (या: दर्शन पाना)

<u>कुछ परिभाषाएँ और उनके तात्पर्य:</u>

- गर्भधारण करना - "गर्भवती होना" (अक्सर शारीरिक प्रजनन से सम्बंधित है)

इसका अर्थ एक विचार पाना, या प्रेरणा पाना भी हो सकता है।

- गर्भधारण - गर्भधारण करना। एक विचार या योजना से प्रेरित होना। पूरी समझ प्राप्त करना। (क्या तुम कल्पना कर सकते हो इसका अर्थ क्या है।)
- कल्पनीय - समझ लेने या कल्पना करने योग्य।

कलीसिया की स्थापना के संदर्भ में, इसका अर्थ है कि परमेश्वर हमारी आत्मा में एक विचार डालता है। एक नई कलीसिया आरम्भ करने के लिए वह हमें इच्छा और निश्चय से प्रेरित करता है। वह हमें प्रेरणा और उद्दीपक प्रदान करता है। एक नई कलीसिया आरम्भ करने का विचार और इच्छा परमेश्वर के आत्मा के द्वारा हमारे भीतर उत्पन्न की जाती है।

<u>बाइबल के कुछ तात्पर्य:</u>

मनुष्य को फलवन्त होने और प्रजनन करने के लिए बनाया और ठहराया गया था - उत्पत्ती 1:26-28।

अः प्रजनन के लिए बनाया
परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री दोनों की संरचना और शरीरवृत्ति प्रजनन की प्रक्रिया में एक दूसरे को पूर्ण करने के लिए बनाया था। हमारे शरीर की बनावट इस विशेष कार्य के महत्त्व का संकेत देती है।

आः प्रजनन की प्रवृत्ति
परमेश्वर ने मनुष्य के मानसिक, भावात्मिक और शारीरिक प्रणाली में "सेक्स प्रवृत्ति" बनाई और बैठाई है ताकि उसमें अपने आप को प्रजनन करने की निरन्तर इच्छा बनी रहे।

इः प्रजनन की इच्छा - "अपनी अपनी जाति के अनुसार" उत्पत्ति 1:11-12
परमेश्वर ने हर बीज, जिसमें मनुष्य का बीज भी सम्मिलित है, अपनी अपनी जाति और अपने अपने स्वरूप और समानता के अनुसार बनाया है। हम उत्प. 5:3 में देखते हैं कि "तब आदम के द्वारा उसकी समानता में उसी ही के स्वरूप के अनुसार एक पुत्र उत्पन्न हुआ।"

ईः प्रजनन का फैसला
परमेश्वर ने प्रजनन की प्रक्रिया पुरुष और स्त्री की इच्छा या फैसले के अधीन होने के लिए बनाई है। इस प्रक्रिया में मनुष्य की इच्छा सम्मिलित होनी चाहिए। एक फैसला किया जाना और फिर लागू किया जाना चाहिए।

उः प्रजनन का निश्चय
कभी-कभी निश्चय भी एक भूमिका निभाता है, विशेषकर तब जब किसी कारणवश गर्भ साधारणतः नहीं होता या तर्कसंगत समय में नहीं होता।
बाइबल में, बाँझपन एक असामान्यता के रूप में देखा जाता था और एक शाप और एक कलंक भी माना जाता था। परन्तु यह एक कलंक है जिसे परमेश्वर यशायाह 54:1-4 के अनुसार हम पर से निकालना चाहता है। "हे बाँझ, तू जो पुत्रहीन है जयजयकार कर; तू जिसे प्रसव-पीड़ा नहीं हुई, गला खोलकर जयजयकार कर और पुकार! क्योंकि त्यागी हुई के लड़के सुहागिन के लड़कों से अधिक होंगे, यहोवा का यही वचन है।"
आय. 4-5, "क्योंकि तू अपनी जवानी की लज्जा भूल जाएगी, और अपने विधवापन की नामधराई को फिर स्मरण न करेगी। क्योंकि तेरा कर्त्ता तेरा पति है।"

यहाँ कुछ कारण दिए गए हैं कि क्यों एक कलीसिया अपनी जाति के अनुसार उत्पन्न नहीं कर रही है:
= बहुत निश्चिन्त - आत्मत्याग नहीं करेंगे।
= अपरिपक्वता, (बच्चे जनने के लिए कुछ परिपक्वता की आवश्यकता होती है।)
= नपुंसकता, या बाँझपन, (प्रजनन शक्ति की कमी)
= बीमारी या अस्वास्थ्य बच्चे जनना नामुमकिन करता है।
= कलीसिया स्थापित करने के लिए क्या आवश्यक है का गलत विचार।

कुछ अतिरिक्त तात्पर्य:

क) एक बच्चा जनने में समय लगता है।
ख) सहयोगी प्रयत्न की आवश्यकता होती है।
ग) सम्भावित माता-पिता को कीमत पता लगानी चाहिए।
घ) दोनों को बच्चे की जिम्मेवारी स्वीकार करनी चाहिए।
च) ऐसी परियोजना के लिए सुविचारित अग्रवर्ती योजना की जानी चाहिए।

सादृश्य का कलीसिया से सम्बंध:

अ - यह अनन्तकाल से योजनाबद्ध है।
आ - परमेश्वर ने कीमत का पता लगाया था - अपने एकलौते बेटे का जीवन। (यूहन्ना 3:16)
इ - उसने कीमत दी - परमेश्वर ने अपना बेटा दिया; मसीह ने अपना जीवन दिया।
ई - यीशु अपनी कलीसिया बना रहा है। मत्ती 16:18
उ - उसे हमारे सहयोग की आवश्यकता है।

दर्शन की कल्पना करना - (प्रारंभिक प्रेरणा)

1) दर्शन परमेश्वर से मिलता है।
वह कलीसिया का लेखक, वास्तुकार और निर्माता है। वह हमारी आत्मा में इच्छा डालता है जिस प्रकार उसने मन्दिर के निर्माण के लिए दाऊद और सुलेमान को प्रेरित किया था।

2) यह अक्सर प्रार्थना के उत्तर में मिलता है।
एक नई मण्डली आरम्भ करने की प्रेरणा अकसर उन्हें मिलती है जो परमेश्वर के राज्य की वृद्धि और विकास के लिए प्रार्थनापूर्वक लगे हुए हैं।

3) यह परमेश्वर के आत्मा के द्वारा हमारी आत्मा में उत्पन्न होता है।
प्रारंभिक प्रेरणा आत्मिक होती है जो हमारी आत्मा में उत्पन्न होती है। जैसे हम दर्शन पर ध्यान लगाने लगते हैं, और प्रार्थनापूर्वक इसके विषय में सोचते हैं, तो दर्शन हमारे मन और भावनाओं को भरने लगता है और हमारा सम्पूर्ण अस्तित्व इसकी पूर्ति के उत्तेजक पूर्वाभास में सम्मिलित हो जाता है।

4) कभी-कभी एक "बोझ" के समान। (गहरी चिन्ता)
दर्शन अक्सर खोए हुओं की दुर्दशा के लिए एक गहरी चिन्ता, या बोझ के रूप में आता है। हम एक विशेष स्थान के विषय में बहुत सोचने लगते हैं और पवित्र आत्मा वहाँ के लोगों की आत्मिक आवश्यकताओं का बोझ हम पर डालने लगता है। यह बोझ अक्सर हमें उस स्थान के लिए उत्सुक और संगत प्रार्थना के लिए विवश करता है।

5) कभी-कभी एक उत्तेजक विचार के रूप में।
दूसरे समयों में, बुलावा एक गहरे बोझ के बजाय एक उत्तेजक चुनौती के रूप में आता है। पवित्र आत्मा हमारी आत्मा को आत्मिक परिणामों की संभावनाओं के विषय में उत्तेजित करता है। जितना अधिक हम इसके विषय में सोचते हैं, उतने अधिक हम उत्तेजित होते जाते हैं।

6) अक्सर हमारी आत्मा में एक "चित्र" के रूप में।
मैंने देखा है कि यदि हम परमेश्वर के साथ विश्वास में सहयोग देते हैं तो एक विशेष स्थान में क्या हो सकता है, उसके विषय में परमेश्वर अक्सर एक "भविष्यद्वाणी का चित्र" हमारी आत्मा में देता है। जितना अधिक हम संभावनाओं के विषय में सोचते और प्रार्थना करते हैं, उतना अधिक वह चित्र हमारे मन और हृदय में केन्द्रित होने लगता है। कभी कभी हमें विशेष चीजों की भविष्यद्वाणी द्वारा जानकारी मिल जाती है, और जैसे हम परमेश्वर के सम्मुख विश्वास और आज्ञापालन में चलते रहते हैं वे चीजें

होती जाती हैं। जितना अधिक हम इस चित्र पर केन्द्रित होंगे, उतना अधिक हम उसके लिए तैयार रहेंगे जो परमेश्वर वहाँ करना चाहता है।

7) प्रार्थनापूर्वक मनन उस चित्र को अक्सर विकसित करेगा।
अपनी स्वाभाविक कल्पना को अनियंत्रित होने देने के बजाय हमें निश्चित करना है कि हम अपनी संभावना को प्रार्थनापूर्वक मनन के वातावरण में केन्द्रित और स्पष्ट होने दें। किसी ने कहा है, "अविश्वास यह अन्धेरा कमरा है जहाँ हम अपने नेगेटिव डेवलप करते हैं।" परन्तु, हम यह भी कह सकते हैं कि "प्रार्थनापूर्वक मनन वह वातावरण है जहाँ हमारे सकारात्मक सपने विकसित होते हैं।"

8) इफिसियों 3:20 - "हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है।"
जैसे आप प्रार्थनापूर्वक दर्शन की पूर्ति की प्रत्याशा करते हैं, याद रहे कि "परमेश्वर ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है।"

9) परमेश्वर के निकट रहो - कल्पना को अनियंत्रित न होने दो।
विश्वास और अनुमानित कल्पनाओं के बीच अक्सर एक पतली रेखा होती है। जो चीज हमें अव्यावहारिक कल्पनाओं के क्षेत्र में पड़ने से रोकती है, वह है दीन और अधीन रहना और परमेश्वर और उसके वचन के करीब बने रहना। वह आपको विश्वास की सम्भावनाओं की सीमा तक जाने देगा, परन्तु स्पष्ट कल्पनाओं के खतरनाक क्षेत्र में चले जाने से सुरक्षित रखेगा।

सोचो:
- कलीसिया की स्थापना के लिए आपके पास क्या "दर्शन" है?
- वह कलीसिया कैसी दिखती है?
- आप इसे अधिक स्पष्टता से कैसे देख सकते हो?

2 – गर्भावस्था

इस समय के दौरान दर्शन आपकी आत्मा में "सेता" है। आप जहाँ कहीं भी हों आप दर्शन को अपने अन्दर लिए फिरते हो। यह एक बच्चे के समान आपके अन्दर बढ़ता, बनता, विकसित होता है। आप इसके विषय में सोचते, इसके लिए प्रार्थना करते, इसे मन में स्पष्ट रूप से देखते, और बोलकर इसे अस्तित्व में लाते हो।
यह वह समय भी है जब सारी पूर्व-योजना बनाई जानी चाहिए। जब ठोस तैयारियाँ की जानी चाहिए। आपको प्रार्थनापूर्वक सब संबद्ध चीजों की सूची बनानी है और उन्हें जाँचना है और हर सम्भव आवश्यकता का पूर्वानुमान लगाना है। (एक बार जब आपने एक कलीसिया स्थापित की है, तो अगली बार यह सब काफी आसान हो जाएगा।)

अ – प्रस्ताव की जाँच करना।
नीचे दिए सुस्पष्ट प्रश्नों से अपनी पूछ-ताछ करो:

1. एक नई कलीसिया क्यों आरम्भ की जाए?
क्या उस क्षेत्र में पहले ही पर्याप्त कलीसियाएँ नहीं हैं? यदि हैं तो आप एक और कलीसिया क्यों आरम्भ करना चाहते हो?

2. आपके लक्ष्य का वर्ग कौन है?
आप जनसंख्या के किस भाग को लक्ष्य बनाना चाहते हो? आप किस चीज पर जोर दोगे जो अनोखे रूप से उनकी आवश्यकताओं को पूरा करेगा?

3. आप किस किस्म की कलीसिया आरम्भ करना चाहते हो?
जिस विशेष वर्ग को आप लक्ष्य बनाना चाहते हो, उसके आधार पर आप किस प्रकार की कलीसिया की योजना बना रहे हो और यह उस वर्ग के लोगों के लिए कैसे अनोखे रूप से उपयुक्त होगी?

4. आप किसके साथ आरम्भ करोगे ?

सामान्यतः सलाह दी जाती है कि अकेले, या एक परिवार के बजाय एक कलीसिया स्थापित करने वाला एक दल हो। एक दल अक्सर कहीं अधिक सम्भावना पेश करता है और इसकी सफलता की कहीं अधिक सम्भावना भी होती है। विभिन्न प्रकार के वरदान भी उपलब्ध होते हैं। अधिक शक्ति और प्रोत्साहन होता है। एक अकेले के बजाय एक समर्पित दल में अक्सर अधिक बुद्धि होती है।

5. आप कैसे और कब आरम्भ करोगे ?

आप किस किस्म का तरीका अपनाओगे ? उदाहरणार्थ, एक बड़ी सभा, ग्रह सभाएँ या व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार ?

6. आपको कैसी सहायता की आवश्यकता होगी ?

दो मुख्य क्षेत्र हैं जिनमें आपको सहायता की आवश्यकता पड़ेगी।

+ कार्यकर्त्ता - किस प्रकार की सेवकाइयाँ आपके साथ काम करने के लिए सहायक होंगी ? क्या आप ऐसे लोगों को जानते हो, जो इन क्षेत्रों में वरदान पाए हैं और आपके साथ काम करने और सहायता करने के लिए उपलब्ध हैं ?

+ आर्थिक सहायता - आपको कैसे लगता है आपकी आर्थिक आवश्यकताएँ पूरी होंगी ? क्या कोई सहायता करनेवाली कलीसिया या दल है जो आपको सहयोग देगा ? क्या आप की रोजगार खोजने की योजना है जिससे आप अपने आपने खर्चे पूरे करोगे ?

7. दूसरे लोग कैसे सम्मिलित हो सकते हैं ?

ऐसे तरीके हो सकते हैं जिसमें कुछ लोग जो आपके दल का हिस्सा नहीं हैं, फिर भी कुछ असली तरीकों से आपकी सहायता और आपको प्रोत्साहित कर सकते हैं।

आ – अपने दर्शन और लक्ष्यों पर केन्द्रित होना।

1. आप किन लोगों तक पहुँचने का प्रयत्न कर रहे हो ?

यदि आप सब तक पहुँचने का प्रयत्न करोगे तो किसी तक नहीं पहुँच पाओगे। सुनिश्चित बनो। आपके लक्ष्य का दल इन चीजों से निर्धारित हो सकता है:

- भौगोलिक स्थान।
- राष्ट्रियता, उदाहरणार्थ, मुम्बई के नेपाली लोग।
- जातीय पहचान, उदाहरणार्थ, एक क्षेत्र में एक विशेष जनजाति।
- धार्मिक संबंधन, उदाहरणार्थ, हैदराबाद में रह रहे मुस्लिम।
- समूह पहचान, उदाहरणार्थ, मुम्बई में बाई लोग।
- आर्थिक स्थिति, उदाहरणार्थ, आर्थिक अवस्था से पहचाने जानेवाली एक जनजाति।

पौलुस ने भी संस्कृतिक और समूह भिन्नता को पहचाना और उसका सम्मान किया, 1 कुरिं. 9:19-23।
आय. 20, यहूदियों के लिए, मैं यहूदी बना।
आय. 21, व्यवस्थाहीनों के लिए, मैं व्यवस्थाहीन सा बना।
आय. 22, निर्बलों के लिए, मैं निर्बल सा बना।
मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ।
प्रेरितों 15:19-20। धर्मान्तरितों से जितनी कम हो सकती है उतनी कम संस्कृतिक पहचान त्यागने की माँग की जानी चाहिए।

<u>सोचिए:</u>

- किस किस्म के संस्कृतिक पहचाननेवालों को सम्पूर्ण छोड़ देना चाहिए ?
- किस किस्म के संस्कृतिक व्यवहारों को त्याग देना चाहिए ?
- यह बदलाव कैसे लागू किया जा सकता है ?

2. किस प्रकार की आवश्यकताओं को आप पूरा करने का प्रयत्न कर रहे हो ?

हर लक्ष्य के दल की अपनी विशेष आवश्यकताएँ होती हैं। आप उनका पता कैसे लगाओगे ?

= उस दल और उनके समाज की पर्याप्त रूप से खोज करने से।
= उनके बीच रहने और उन्हें देखने से।
= उनके साथ अपनी पहचान करने से।
= उनमें एक सामाजिक सर्वेक्षण करने से।
"सुसमाचार" का अर्थ है "अच्छी खबर", इन विशेष लोगों के लिए अच्छी खबर क्या हो सकती है ?

3. आप उन आवश्यकताओं को कैसे पूरा करोगे ?

* सुसमाचार की अच्छी खबर लाने से।
अपनी प्रस्तुति जितनी सकारात्मक हो सकती है उतनी बनाओ। सकारात्मक चीजों पर अधिक जोर दो। सुसमाचार के उन पहलुओं पर जोर दो, जो उन लोगों की आवश्यकताओं के लिए विशेषकर संबद्ध हैं। उदाहरणार्थ, कुछ जनजातियों का आत्म-रूप बहुत की कमजोर होता है और आत्मा-मूल्य की लगभग कुछ भी भावना नहीं होती। इसलिए इस बात पर जोर दो कि परमेश्वर ने सब मनुष्यों को अपने स्वरूप और समानता में बनाया है, और कि मसीह उस स्वरूप को हम में पुनःस्थापित करने आया है। नई सृष्टि के भरोसे और कल्याण पर जोर दो।

* उन निपुणताओं को जो आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता करेंगी, जितना अधिक हो सकता है सीखो।
उन क्षेत्रों में जहाँ सामान्य स्वास्थ्य की कमी है, चिकित्सा-सम्बंधी और दन्त्य-सम्बंधी दलों को अल्पकालिक मिशन पर ले आओ, जो सुसमाचार के दलों के लिए मार्ग बनाएगा और विश्वसनीयता स्थापित करेगा।
मैं एक बहुत ही प्रभावशाली सेवकाई के विषय में जानता हूँ जो गाँवों में ताजा पानी लाने के लिए कूएँ खोदने में विशेषज्ञ हैं। जबकि कूएँ खोदे जाते हैं, सुसमाचार सभाएँ भी चलाई जाती हैं और हजारों मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार कर रहे हैं।

* आवश्यकताओं को पूरा करनेवाले सदस्यों को दल में सम्मिलित करो।

4. स्थापित करने की नीति बनाना।
= जितनी अधिक जानकारी एकत्र कर सकते हो करो।
= चुनौतीपूर्ण मामलों पर प्रार्थनापूर्वक बातचीत करो। ऐसा अपने दल, ऐल्डरों, या मिशन के अगुवों के साथ करो।
= कदमों को तर्कसंगत क्रम में रखो। हर काम जिसे करना होगा उसकी एक सम्पूर्ण सूची बनाओ। सूची पर दोबारा नज़र डालो और सबकुछ तर्कसंगत क्रम में लाने के लिए प्राथमिकता के अनुसार हर चीज को लगाओ और इससे निश्चय करो कि हर काम सही क्रम में समय के अनुसार हल किया जाएगा।
= अपने "पूर्वकथित कैलेन्डर" की योजना बनाओ। "पूर्वकथित कैलेन्डर" प्रार्थनापूर्वक "पूर्वानुमान और कल्पना करने" के प्रयास से कि कब कोई कदम उठाना होगा, बनाया जाता है।
= एक यथार्थता जाँच करो। क्या यह योजना सच में सम्भव है ? हर वह चीज जो इस परियोजना की सफलता में बाधा डाल सकती या रोक सकती है उसे सोचकर लिख लो। प्रार्थनापूर्वक समाधान का पता लगाओ। तब हर सकारात्मक संकेत की कि क्यों यह घटना सफल होगी सूची बनाओ। अपने विचारों, बातचीत, और योजना बनाने में इस पर जोर दो। क्या कोई कमजोर कड़ियाँ हैं ? यदि हैं तो, हम उन्हें कैसे निकाल सकते हैं ?

5. अपनी सेवकाई के नमूने को निर्धारित करना।

अपने सबसे उपयुक्त सेवकाई के तरीके का पता लगाना। अपनी सेवकाई के वरदान पर विचार करो। उदाहरणार्थ, बड़ी सभा सुसमाचार प्रचार, ग्रह सभाएँ, व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार, आदि। प्रचलित राजनीतिक, या धार्मिक हालातों पर विचार करो। आपके पास उपलब्ध लोग, उपकरण, वित्त पर विचार करो।
इसे अपने भावी लक्ष्य दल के लिए उपयुक्त बनाओ। उदाहरणार्थ, संस्कृतिक रूप से उपयुक्त, धार्मिक रूप से उपयुक्त, समकालीन उपयुक्तता।
अपनी योजना की प्रगामी अवस्थाओं को, और उन्हें साथ में कैसे जोड़ना है निर्धारित करो।

परियोजना के आरम्भ करने से पहले, यदि आप अधिक विस्तार से योजना बना लें तो जब आप कार्यक्रम में काम कर रहे होंगे तब अनपेक्षित समस्याओं का सामना करने की सम्भावना कम हो जाएगी। सरलता की खातिर और कि अपने प्रभावशाली प्रयोग के लिए हमारे पास एक योजना हो, चाहे हम कलीसिया की स्थापना का कोई की विशेष तरीका हम प्रयोग में लाएँ, आओ हम अनुमान लगाएँ कि एक नई मण्डली आरम्भ करने में विकास की पाँच अवस्थाएँ होती हैं।
हमें इन सब को ध्यानपूर्वक देखना होगा। हर एक की विस्तार से जाँच करनी है, और प्रार्थनापूर्वक विचार करना है कि हर एक को प्रभावशाली तरीके से कैसे लागू करना है। यदि मुमकिन हो सके तो हमें इन में से हर एक अवस्था को उसी क्रम में हाथ में लेना है जिनमें वे यहाँ दिए गए हैं। यदि हम एक इमारत बनाने के सादृश्य पर विचार करें तो हम जानते हैं कि एक क्रम का हमें अनुकरण करना होता है। इसमें सम्मिलित होता है:

अ - बनाने की प्रारंभिक इच्छा।
आ - उपयुक्त किस्म की इमारत निर्धारित करो।
रु - बनाने का उपयुक्त स्थान चुनो।
ई - बनाने का काम आरम्भ करो:
  नींव की खुदाई करना।
  नींव रखना।
  इमारत का निर्माण आरम्भ करना।
  छत डालना।
  भीतरी उपस्कार और साजो-सामान लगाना।

उसी प्रकार हमारी सुसमाचार की नीति भी एक उपयुक्त क्रम में योजनाबद्ध और कार्यान्वित की जानी चाहिए, उदाहरणार्थ,

<u>नीचे दी गई पाँच सम्भावित अवस्थाओं को काम में लाओ:</u>

1: सुसमाचार प्रचार से पूर्व
मित्र बनाना, आवश्यकताओं का पता लगाना। सम्पर्क में आए लोगों की सूची बनाना।

2: सुसमाचार प्रचार
राज्य के लिए भरती करना। सुसमाचार के विभिन्न तरीके प्रयोग में लाना।

3: स्वांगीकरण
उन्हें कलीसिया में लाना। उन्हें देह में मिला लेना।

4: विकास
सेल समूहों में रखना। अनुशासन और प्रशिक्षण।

5: अगुवाई का विकास
सम्भावित अगुवों को तैयार करना। अगुवाई के विकास के अवसर प्रदान करना।

3 – जन्म अवस्था – कलीसिया को अस्तित्व में लाना

"हे मेरे बालको, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिए जच्चा की सी पीड़ाएँ सहता हूँ।" पौलुस गलातियों 4:19 में।
बहुत से तरीके हैं जिसमें कलीसिया की स्थापना में प्रसव-पीड़ा की एक प्रक्रिया, या आत्मिक जन्म की पीड़ाएँ सम्मिलित होती हैं। वास्तव में पवित्र आत्मा ही नए धर्मान्तरितों को और नई मण्डलियों को जन्म देता है और हम आत्मिक दाई का काम करते हैं। परन्तु, ऐसा करने में हम भी कुछ प्रसव-पीड़ा अनुभव करते हैं।
- प्रसव-पीड़ा: उत्पत्ती 25:24 "जब उसके प्रसव का समय आया, तब प्रकट हुआ कि उसके गर्भ में जुड़वे बालक हैं।"
- मसीहा का दुख: यशायाह 53:11 "वह अपने प्राणों का दुख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा।"
- कलीसिया स्थापक की चिन्ताएँ - गलातियों 4:19 "हे मेरे बालको, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिए जच्चा की सी पीड़ाएँ सहता हूँ।"

- तम्बू बनानेवाले का परिश्रम - 1 थिस्स. 2:9; 2 थिस्स. 3:8 "क्योंकि हे भाइयो, तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो; हम ने इसलिए रात दिन काम धन्धा करते हुए तुम में परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया कि तुम में से किसी पर भार न हों।"
सृष्टि का पुनर्जन्म - रोमियों 8:22 "सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है।"
इससे पहले हम उन कुछ तरीकों की चर्चा करें जो एक कलीसिया आरम्भ करने में उपयोग में लाए जाते हैं, हमें अपने आप को स्मरण दिलाना है कि एक कलीसिया को जन्म देने में कुछ बहुत ही असली और अत्यावश्यक आत्मिक क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं। एक बहुत ही वास्तविक भाव में हम प्रसव-पीड़ा और आत्मिक युद्ध में तड़पते हैं और यदि यह सफलतापूर्वक पूरा नहीं होता है तो कलीसिया की स्थापना करने का कार्य सफल न होगा।

लोगों से मिलना और उनसे मित्रता करना

लोगों से मिलने और मित्रभाव रखने का निश्चय करो। बाइबल में मित्र का अर्थ विश्वस्त सलाहकार हो सकता है। उत्प. 26:26 देखो। इसे अभिवादन के रूप में उपयोग में लाया जाता था, चाहे यह मित्र के लिए हो या शत्रु के लिए। मत्ती 22:12; 26:50।
जब यीशु ने अपने चेलों को नियुक्त किया तब उसने उनसे कहा, "जिस किसी घर में जाओ, पहले कहो, इस घर पर कल्याण हो।" लूका 10:5। दूसरे शब्दों में, आरम्भ में सबको मित्र मानो।

1. एक सामुदायिक सर्वेक्षण करो

घर-घर जाने के लिए लिए तैयार रहो।
हर परिवार के साथ मित्रता बनाने का लक्ष्य बनाओ।
"आवश्यकताओं का पता लगाना" सर्वेक्षण करो।
उसी समय लोगों की आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करने के लिए तैयार रहो।

2. अपने प्रभाव के दायरे को बढ़ाओ

अधिकाँश अगुवों के प्रभाव के दायरे होते हैं। दूसरों के साथ सामान्य रुचियाँ और निपुणताएँ।
अपने दायरों का पता लगाओ। अपनी निपुणताओं को बढ़ाओ। अपनी सहायता पेश करो।
आपकी कुछ निपुणताएं यह हो सकती हैं:

- पड़ोसियों की सहायता करना।
- एक खेल-कूद क्लब को सिखाना।
- गितार कक्षाएँ चलाना।
- अंगरेजी कक्षाएं चलाना।
- टायपिंग सिखाना।
- बुनियादी कम्प्यूटर निपुणता सिखाना।
- अकेले माता-पिता की सहायता करना।
- बूढ़ों की सहायता करना।

3. समुदाय का भाग बनो

वहाँ जाओ जहाँ लोग हैं। उनके कार्यक्रमों में सम्मिलित हो जाओ। यीशु लोगों को दण्ड देने नहीं बल्कि उनका उद्धार करने आया था।

4. सेल समूह नीति अपनाओ

स्थानीय कलीसिया के विकास के लिए सेल समूह प्रणाली अनिवार्य है। उनमें से बहुत सी चीजें जिन्हें करने की नया नियम हमें आज्ञा देता है, छोटे समूहों के अलावा पूरी नहीं की जा सकती हैं।
यीशु ने 12 चेलों का एक छोटा समूह बनाया था।
आपकी पहली समूह की सभा, भावी सेल समूहों के लिए एक आदर्श बने।
सेल समूह अगुवों को तैयार करो: अवलोकन, सहभागिता और आवेष्टन द्वारा सिखाओ और प्रशिक्षण दो।

5. एक सेमिनार नीति अपनाओ

उन विषयों पर जिनके विषय में लोग जानना चाहते हैं, और जो उन्हें आकर्षित करेंगे, सेमिनार, व्यावहारिक शिक्षा और कार्यशालाएँ करो। उन सेमिनारों से आरम्भ करो जो सामान्य लोगों को आकर्षित करेंगे, जो रोजाना के जीवन से सम्बंधित हैं जिनके हल लोग जानना चाहते हैं।

- आवश्यकताओं के सेमिनार। (गैर-मसीहियों को आकर्षित करने के लिए)

उन विषयों पर सेमिनार करो जिनकी कई लोगों को आवश्यकता है। जैसे कि, सकारात्मक बच्चों का पालन-पोषण, तनाव प्रबंध, आर्थिक प्रबंध आदि।

- पुल बनानेवाले सेमिनार। (गैर-मसीहियों के साथ सम्बंध बनाने के लिए)

आवश्यकताएं जिनके आत्मिक समाधान होते हैं। जैसे कि, "व्यसनवाले व्यवहारों से छुटकारा पाना", "परिवार में समन्वय लाना" आदि।

- प्रतिक्रिया सेमिनार। (लोगों को फैसले पर लाना)। परमेश्वर को अनुभव कैसे करें।

<u>6. संगति सभाएँ आरम्भ करो</u>

* उत्सव - स्तुति और आराधना, परमेश्वर की उपासना। यह आपकी सार्वजनिक सभा है जिसमें आप पूर्व-मसीहियों को और अपनी नियमित मण्डली को आमंत्रित करते हो। इस सभा को प्रसन्नचित, सकारात्मक, सामर्थी और गतिशील बनाओ। यदि आपके पास संगीतज्ञ हैं तो एक अच्छा संगीत दल बनाने का लक्ष्य बनाओ, जो आनन्दपूर्ण और उल्लसित होकर बजाएँ और जो पूर्व-मसीहियों को आकर्षित करेगा।
* आत्मिक उन्नति - शिक्षाएँ और प्रार्थनाएँ। यह सामान्यतः विश्वासियों की सभा है जहाँ ठोस बाइबल की शिक्षा दी जा सकती है और इकट्ठी प्रार्थनाएँ की जा सकती हैं।
* सुसमाचार प्रचार - गैर-मसीहियों को ईर्ष्या में उकसाओ।

सुसमाचार प्रचार दो मुख्य क्षेत्रों में हो सकता है:

- बाहरी कार्यक्रम। जहाँ लोग हैं वहाँ सुसमाचार ले जाना।
- सुसमाचार सभाएँ जहाँ पूर्व-मसीहियों को बुलाया जा सकता है।

कुछ सेल समूह सिद्धान्त अपनाओ, जैसे कि:

- अनौपचारिकता। पूर्व-मसीहियों की सहभागिता को प्रोत्साहन देना।
- अल्प "धार्मिक" विषयवस्तु।
- संस्कृतिक वास्तविकता।
- जातीय उपयुक्तता।
- समकालीन उपयुक्तता।
- सभाओं को प्रसन्नचित, खुश, चुनौतीपूर्ण और अलौकिक के लिए खुला रखो।

<u>7. सेल समूह बनाओ</u>

आरम्भ से ही सेल समूह प्रकृति विकसित करो, जैसे कि अनौपचारिक, अ-धार्मिक, देखभाल।
("बढ़त अवस्था" में इसके विषय में और अधिक)

4 – वर्धन अवस्था

स्वस्थ बढ़त मात्र संख्या से कहीं अधिक होती है। ऐसे व्यक्ति की कल्पना करो जो केवल शारीरिक आकार में ही बढ़ता है परन्तु मानसिक, भावात्मिक या आत्मिक रूप से नहीं।

यीशु का विकास और वृद्धि बहुरूपी और सन्तुलित थी। वह बुद्धि और डील-डौल, परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ा था। लूका 2:52।

1) उत्कर्ष अगुवाई का महत्त्व।

इस पहलू का महत्त्व कभी भी कम नहीं किया जा सकता है। <u>लोग उनके अगुवों के स्तर से कभी भी ऊपर नहीं उठ सकेंगे।</u>

<u>अच्छी अगुआई का अन्तिम संकेत दूसरे अगुवे उत्पन्न करना है।</u>

अगुआई प्रशिक्षण और सिखानाकी आवश्यकता:

अ - भरोसा सूचित करो।

सम्भावित अगुवे सामान्यतः उनके लिए आपकी अपेक्षा के स्तर तक ऊँचे उठेंगे।

आ - उन्हें पूर्ण रूप से समझने में सहायता करो कि असफलता घातक नहीं है।

परमेश्वर के कुछ अतिउत्तम अगुवों ने असफलता को जीत लिया था। जैसे कि, मूसा, दाऊद, पतरस।

इ - छोटी जीतों को मनाओ।

अभिपुष्टि बदलाव की बुनियाद है।

ई - प्रभावशाली शिक्षा प्रदान करो।

इफिसियों 4:11। पास्टर और शिक्षक सेवकाई का काम करने में सन्तों को सिद्ध करें (यूनानीः "Katatismos" = ठीक बैठाना, टूटी हुई टाँग ठीक करने के समान काम करने योग्य बनाना, या टूटे हुए जाल को ठीक करना)।

उ - एक अगुआई भ्रातृत्व प्रदान करना।

जहाँ अगुवे एक दूसरे को प्रभावित कर सकते हैं, अगुआई आदर्श के अनुसार बनाई जा सकती है - सीखी और सिखाई जाती है। निपुणता प्रशिक्षण। पारस्परिक प्रोत्साहन। भ्रात्रीय सम्बंध और सहभागिता। दल की भावना।

2) "फालो–अप" नीतियों को कार्यान्वित करो।

+ अग्रिम तैयारियाँ आवश्यक हैं। उस तरीके को स्थापित करो जिसे आप अपनाओगे। उपयुक्त सामग्री प्राप्त करो।
+ सहायता के लिए लोगों को संघटित करो।
+ दर्शन लोगों के सामने रखो।
+ उदाहरण द्वारा अगुआई करो।

3) सेल समूह के प्रसरणशील तन्त्र को विकसित करो।

सेल समूह कलीसिया भविष्य की कलीसिया है।

हम छोटे समूहों में ही वह सब पूरा कर सकते हैं जिसे एक दूसरे के लिए करने की हमें आज्ञा दी गई है। सेल समूह शिष्यता बनाने वाले इकाई हैं:

अ - जहाँ लोग एक दूसरे को प्रेम, से सीख, की सेवा और तक पहुँच सकते हैं।

आ - "प्रशिक्षुओं" का प्रशिक्षण और परिष्कार होता है।

इ - मछली पकड़नेवाले तालाब बनाओ। "लोगों के तलाब" जहाँ आप उन्हें पकड़ सकते हो।

ई - निश्चित करो कि समूह गुणा होते हैं।

आरम्भ से ही प्रसारण कारक बनाओ। निश्चित करो कि हर समूह स्पष्ट रूप से समझ लेता है कि उन्हें दूसरे समूह आरम्भ करने की योजना बनानी, और उसकी ओर कार्य करना है।

4) लक्ष्य समूहों पर केन्द्रित रहना।

हर समुदाय में विशेष लोग होते हैं जिनकी विशेष आवश्यकता होती है। कलीसिया की बढ़त का एक रहस्य "इन आवश्यकताओं का पता लगाना और उन्हें पूरा करना आरम्भ करना" है।

- दया की सेवकाइयाँ बनाओ

अप्राधिकृत समूहों के साथ काम करना।

कई वर्ष पहले परमेश्वर ने हमें हमारे शहर की वेश्याओं के साथ काम करने का सौभाग्य दिया था। उनमें से अनेकों ने उद्धार और छुटकारा पाया था।

नशीले पदार्थों और शराब पर निर्भर लोग होते हैं जिनके साथ आप काम कर सकते हो।

बहरे लोगों तक पहुँचा जा सकता है।

- सहायता / पुनर्लाभ समूह

कुछ किस्म की आवश्यकताओं को ठीक होने के लिए एक सहायता समूह की जरूरत पड़ती है। शराबियों के साथ स्पष्ट रूप से ऐसा ही होता है।

जिन लोगों ने विभिन्न प्रकार के तन्त्रिकीय विकार अनुभव किये हैं, उनकी सहायता ऐसे लोग कर सकते हैं जिन्होंने इसे अनुभव किया और ठीक हुए हैं।

5) **सुसमाचार प्रचार की प्रभावकारिता बढ़ाओ।**

\+ परिवारों और सहयोगियों तक पहुँचना

नए विश्वासियों को उनके परिवारवालों और पूर्व सहयोगियों के साथ सम्बंध बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि उन्हें मसीह के लिए जीता जा सके। इसे अक्सरः "ओइकोस सुसमाचार प्रचार" कहा जाता है। यूनानी शब्द "ओइकोस": "परिवार, रिश्तेदार, या घराना" अनुवाद किया गया है। यह नए विश्वासी के करीबी सहयोगियों की बात करता है। अंद्रियास सुसमाचार प्रचार के इस तरीके का एक उदाहरण है। "उन दोनों में से, जो यूहन्ना की बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिए थे, एक शमौन पतरस का भाई अंद्रियास था। उसने पहले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उससे कहा, हम को ख्रिस्त, अर्थात् मसीह मिल गया।" (यूहन्ना 1:40-41)।

\+ सुसमाचार प्रचार के तरीकों में प्रशिक्षण देना

नई मण्डली के आरम्भ से ही, सुसमाचार प्रचार के महत्त्व पर जोर दिया जाना चाहिए और व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार की विभिन्न किस्मों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। जब तक सदस्य उचित रूप से प्रशिक्षित और प्रेरित नहीं हैं, कलीसिया नहीं बढ़ेगी।

\+ सुसमाचार प्रचार के कार्यक्रम आयोजित करो

सुसमाचार प्रचार में पर्याप्त प्रशिक्षण देने के बाद, अगुवों को अब सुसमाचार प्रचार के कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए जिसमें सदस्य भाग ले सकें।

6) **नए सदस्यों को सम्मिलित और संघटित करो।**

उन्हें एक उपयुक्त समूह पाने में सहायता करो

नए विश्वासियों को उपयुक्त समूहों और कार्यक्रमों में जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जो उन्हें उत्पादक सेवकाई में अवसर प्रदान करेगा।

उनके अप्रकट सेवकाई के वरदानों को खोजो और विकसित करो

सेवकाई के विभिन्न वरदानों पर जिन्हें परमेश्वर ने दिया है विशेष शिक्षा दी जानी चाहिए और सेवकाई में उनके उचित और उपयुक्त भूमिका की पहचान करने में सदस्यों की सहायता की जानी चाहिए। (रोमियों 12; 1 कुरिं. 12:7-11; इफि. 4:11-12)।

7) **वर्तमान सेवकाइयों को सुनिश्चित करो और / या बदल दो**

- और अधिक प्रभावकारिता के लिए छँटाई करना। यूहन्ना 15:2 "जो डाली मुझ में है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है; और जो फलती है, उसे वह छाँटता है ताकि और फले।"

स्थानीय कलीसिया में सेवकाइयाँ जितनी प्रभावशाली और उत्पादक हो सकती हैं उतनी बनाई रखनी चाहिए। इसके लिए आवश्यक होगा:

- कुछ वर्तमान सेवकाइयों को बदलना।
- नई सेवकाइयों को प्रशिक्षण देना और नियुक्त करना।
- निश्चित करना कि प्रशिक्षण कक्षाएं सब समय कार्य कर रही हैं।
- सम्भावित अगुवों का निरन्तर स्राव प्रोत्साहित करना।
- अगुवाई अभिव्यक्ति के लिए भूमिकाएँ और अवसर खोजना।

5 – प्रजनन अवस्था

परिपक्वता के एक परिमाण को प्राप्त किए होने का, और बचपन, किशोरावस्था और यौवनारभ से आगे बढ़े होने का एक सबसे स्पष्ट संकेत प्रजनन की क्षमताओं का प्रारंभ है।

एक व्यक्ति अभी तक परिपक्वता में नहीं पहुँचा है यदि वह प्रजनन के योग्य नहीं हुआ है।

एक कलीसिया अभी तक आत्मिक परिपक्वता में नहीं पहुँची है यदि यह अपनी जाति के अनुसार उत्पन्न नहीं कर रही है।

प्रजनन की क्षमता कब आरम्भ होती है? गर्भधारण के समय! परन्तु, इससे पहले यह क्षमता कार्य करे, परिपक्वता की ओर बढ़ने की प्रक्रिया होनी चाहिए। तो हर कलीसिया उत्पन्न करने की क्षमता रखती है, परन्तु वही इसे वास्तव में करेंगी जो उपयुक्त परिपक्वता में पहुँच चुकी है।

<u>परमेश्वर ने कलीसिया को बढ़ने और कलीसियाएँ उत्पन्न करने के लिए बनाया है।</u>

1 - जनन की वचनबद्धता को बढ़ाओ।
आरम्भ से ही सदस्यों को सिखाया जाना और समझाया जाना चाहिए कि कलीसिया की दूसरी मण्डलियों को स्थापित करने की वचनबद्धता है। वे मन में यह जानकारी लिए बढ़ते जाएँ।

2 - सम्भावित फसलों की पहचान करो।
स्थानीय कलीसिया सदा सम्भावित फसल के क्षेत्रों की खोज में लगी रहनी चाहिए जहाँ सुसमाचार प्रचार किया जाए और नई कलीसियाएँ आरम्भ हों। यह "यरूशलेम" में हो - निकटवर्ती क्षेत्रों में; "यहूदा और सामरिया" में - क्षेत्र में थोड़ा आगे; और "पृथ्वी की छोर तक" - हमारे देश की सीमाओं के परे एक प्रति-संस्कृतिक मिशन कार्यक्रम हो।

3 - हर सम्भव साधन द्वारा सुसमाचार प्रचार को प्रोत्साहन दो।

4 - दर्शन लोगों के सामने रखो।
कलीसिया के सदस्यों को उनकी कलीसिया के मिशन के दर्शन के विषय में बारंबार याद दिलाया जाना चाहिए। उन्हें अन्तर्दर्शी और अन्तर्मुखी बनने नहीं देना है परन्तु सदा उन क्षेत्रों के जानकार रहना है जो फसल के लिए पके हुए हैं।

5 - जनन की ओर मण्डली की वचनबद्धता सुनिश्चित करो।

अध्याय 7 – अपनी योजना काम में लाना

"तुम में से कौन है जो गढ़ बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर खर्च न जोड़े कि पूरा करने की सामर्थ्य मेरे पास है कि नहीं ? कहीं ऐसा न हो कि जब वह नींव डाल ले पर तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें, यह मनुष्य बनाने तो लगा पर तैयार न कर सका।" (लूका 14:28-30)।
<u>किसी ने ठीक ही कहा है, "यदि आप योजना बनाने में असफल रहते हैं, तो आप असफल होने की योजना बना रहे हैं।"</u>
<u>एक दूसरा सच्चा विचार है, "अपने काम की योजना बनाओ, और अपनी योजना को काम में लाओ।"</u>
ऊपर दिए वचन में यीशु आप ही हमें याद दिलाते हैं कि पहले कीमत का पता लगाए बिना, और कि काम पूरा करने की क्षमता और योग्यता आपके पास है या नहीं निश्चित किए बिना, किसी काम में लगना मूर्खता है। पहले यह तय किए बिना कि उस काम को पूरा करने की योग्यता आप में है या नहीं, कोई काम आरम्भ करना, और विशेषकर उस काम को आरम्भ करना जिसमें परमेश्वर का नाम सम्मिलित है, मूर्खता है। यीशु ने कहाः-

बैठो। (सोचो)
कीमत पता लगाओ। (हिसाब करो)
बनाओ। (कार्य)

तो सबसे पहला काम जो हमें कलीसिया की स्थापना की सेवकाई में करना होगा, वह उस काम को जो हमारे हृदय में है करने की व्यावहार्यता पर बहुत गम्भीर सोच विचार करना होगा। हम इसे "वस्तुगत योजना बनाना" कहेंगे।

<u>"वस्तुगत योजना" से हमारा क्या तात्पर्य है?</u>
हमारा अर्थ है: एक विशेष लक्ष्य या उद्देश्य सामने रखकर यथार्थवादी योजना बनाना।
इसमें स्पष्ट, गम्भीर, यथार्थवादी, अग्रिम योजना बनाना सम्मिलित है।
वस्तुगत एक अव्यक्तिक, निष्पक्ष, और पूर्वग्रहरहित विचार भी सूचित करता है, जो भावुक और विवेकहीन प्रभावों से स्वतन्त्र है।
यह सब आत्मगत योजना के सीधे उलटा है, जो अक्सर व्यक्तिगत, पक्षपाती, और पूर्वाग्राही होती है। इस प्रकार का सोचविचार अक्सर वास्तव में "इच्छाजनित धारणा" होती है। चीजों को इस प्रकार देखना जैसा आप चाहते या आशा करते हैं वे दिखें। यह एक स्वपनदर्शी का सोचविचार है जो इतना घमण्डी या आत्मविश्वासी है कि वह अपने विचार या आकाँक्षाएँ दूसरों के सामने नहीं

रखता जिनके विचार आत्मगत रूप से प्रभावित न होंगे। यह सोचविचार भावनाओं और कल्पनाओं से प्रभावित है। आत्मगत विचार और योजनाएँ अक्सर अविश्वसनीय और भ्रामक होते हैं। वे अक्सर बहुत भावुक और अवास्तविक होते हैं। आत्मगत सोचविचार "आत्मिक" लग सकता है। यह अक्सर "परमेश्वर सबकुछ सम्भाल लेगा", "प्रभु प्रबंध करेगा", "यह सब परमेश्वर के हाथ में है, मैं क्यों चिन्ता करूँ" जैसे वाक्याँशों में लिपटा होता है।

परन्तु, यीशु आप इस प्रकार के सोचविचार के विरुद्ध चेतावनी देता है।

वह कहता है कि हम किसी पूर्वविचार या योजना बनाने को रद्द न कर दें। यदि एक व्यक्ति किसी बड़े काम को हाथ में लेने वाला है तो पहला काम जो उसे करना चाहिए वह है कि वह बैठ जाए और इसके विषय में पूरी तरह सोचे। आत्मगत तरीके से नहीं जो एक गैरजिम्मेवार तरीके से कहता है: "परमेश्वर की स्तुति हो, यह तो उसका ही काम है। वह सबकुछ सम्भाल लेगा और सारे बिल अदा कर देगा आदि।"

वह चेतावनी देता है कि हम स्पष्ट रूप से परिभाषित वस्तुगत सामने रखकर योजना बनाएँ।

अपने आप से कुछ इस प्रकार के बहुत ही व्यावहारिक प्रश्न पूछें:

- मेरा असली उद्देश्य क्या है ?
- मुझे असल में क्या करने के लिए बुलाया गया है ?
- मैं इसे कैसे करूँगा ?

कृपया इसे ठीक-ठीक समझ लो कि जब मैं ध्यानपूर्वक, वस्तुगत योजना को प्रोत्साहन दे रहा हूँ, तो मैं किसी प्रकार भी यह नहीं कह रहा कि आप विश्वास में योजना न बनाएँ। अपने विश्वास को दर्शन और योजनाओं में अवश्य लाओ। परमेश्वर तत्त्व के लिए सदा स्थान दो। परन्तु यह भी याद रहे कि विश्वास और परिकल्पना में बड़ा अन्तर है। हम विश्वास के मनुष्य हो सकते हैं परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हम मूर्ख या गैरजिम्मेवार हों। उचित योजना विश्वास का इन्कार या कम नहीं करती है।

मैं पाँच प्रयोगात्मक प्रश्न प्रस्तुत करने वाला हूँ जिन्हें आप अपने आप से पूछने के लिए तैयार रहो।

1) **कहाँ?**

- आपकी नई कलीसिया स्थापित करने की योजना कहाँ है ?
- आप उस स्थान के विषय में क्या जानते हो ?
- आप वह सबकुछ कैसे पता लगा सकोगे जो जानना सहायक होगा ?

उस स्थान में जाओ। उसके विषय में जानकारी प्राप्त करो। स्थान के विषय में कुछ पुस्तकें प्राप्त करो।
किसी से पहचान करो जो वहाँ रहता है या रह चुका है।
स्थान पर एक फाइल बनाओ और हर जानकारी जो आपको प्राप्त होती है उसमें रख दो।

2) **क्या?**

आप वहाँ वास्तव में क्या करना चाहते हो ?
यदि वह स्थान जहाँ आप कलीसिया स्थापित करना चाहते हो दूसरे देश में है तो आपको नीचे दिए समान कुछ उत्तर पाने होंगे:

अ - राजनीतिक वातावरण कैसा है ?

सरकार कैसी है ? धर्म, मसीहियत, मिशनरियों की ओर इसकी नीति कैसी है ?
यदि धर्म विरोधी है तो क्या कलीसियाएँ होने दी जाती हैं ?
धार्मिक समूहों पर क्या प्रतिबन्ध लगे हुए हैं ?
क्या विश्वासियों को खतरा होगा ? उन्हें क्या दंड देना पड़ सकता है ?
क्या सरकार स्थिर या अस्थिर है ?
इसका आपके देश के साथ कैसा सम्बंध है ?
आप किस प्रकार का वीसा प्राप्त कर सकोगे ?
क्या एक कलीसिया के कार्यकर्त्ता के रूप में प्रवेश कर सकोगे ?
दूसरी ओर, क्या आपको एक "तम्बू बनानेवाले" के रूप में अर्जी देनी चाहिए ?
क्या देश में स्वतन्त्र रूप से सफर करना मुमकिन है ?

आ - आर्थिक स्थिति कैसी है ?

किस प्रकार की आर्थिक स्थिति प्रचलित है ?
लोगों की प्रतिव्यक्ति आमदनी क्या है ?
वहाँ जीवन का सामान्य स्तर कैसा है ?
क्या भोजन, कपड़े और जीवन की आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध हैं ?
उस देश में विश्वासियों की स्थिति कैसी है ?
क्या उनके प्रति आर्थिक रूप से भेदभाव किया जाता है ?

इ - शैक्षिक स्थिति ?

साक्षरता दर क्या है ? क्या एक साक्षरता कार्यक्रम कार्य कर रहा है ?
कौन सी भाषाएँ बोली या पढ़ी जाती हैं ?
कौन सा मसीही साहित्य उपलब्ध/उचित है ?
छापने की सुविधाएँ कैसी हैं ? छापने की कीमत क्या है ?

3) **कब?**

कलीसिया स्थापना का कार्यक्रम आरम्भ करने का उत्तम समय कौन सा होगा ?
वर्ष का कौन सा समय ? मौसम ? छुट्टियाँ ?
मैं वास्तव में वहाँ कब पहुँचने की आशा करता हूँ ?
क्या परमेश्वर का हमारे लिए आरम्भ करने का विशेष समय है ?

4) **कैसे?**

हम सबसे अधिक प्रभावशाली तरीके से यह कलीसिया स्थापना की परियोजना कैसे आरम्भ कर सकते हैं ?
एक बड़ी सभा का आयोजन करें ?
किस स्थान पर ? प्रचारक कौन होगा ?
जिन सहायकों की आवश्यकता होगी वे कहाँ से मिलेंगे ?
जो धर्मान्तरित जीते जाएँगे उनकी हम उचित रूप से देखभाल कैसे कर सकेंगे ?
एक ग्रह सभा आरम्भ करें ?
कहाँ ? किसके घर में ? क्या ऐसा करने के लिए परमिट लगेगा ?
घर-घर जाने का कार्यक्रम आयोजित करना होगा ?
हमारी पहुँच क्या होगी ? हम इसके लिए सबसे उत्तम प्रतिक्रिया कैसे पा सकते हैं ?

5) **हमें क्या साधन चाहिए होंगे?**

- कार्यकर्त्ता। ऐसे कार्य के लिए एक दल बहुत की वांछनीय होगा।
- साजो-सामान। पी ए सिस्टम। संगीत वाद्य।
- आर्थिक सहायता।
  - प्रारंभिक कार्यक्रम में कितना खर्चा होगा ?
  - अग्रगमन कार्यक्रम का क्या खर्चा होगा ?
  - यह आर्थिक सहायता कहाँ से आएगी ?

इन प्रश्नों के उत्तर में हम:

= आवश्यकताओं का पता लगा रहे हैं।
= वस्तुगत निर्धारित कर रहे हैं।
= तरीकों का विवरण लिख रहे हैं।
= साधन विकसित कर रहे हैं।

इन और ऐसे ही प्रश्नों के उत्तरों से, हमें उचित योजनाएँ बनानी चाहिए जिनमें सम्मिलित होगा:

- **हमारा दर्शन** - दीर्घकालीन वस्तुगत।
- **हमारे लक्ष्य** - वो कदम जिनके द्वारा हम अपने लक्ष्य तक पहुँचेंगे।

आपका दर्शन क्या है?
आपका दीर्घकालीन वस्तुगत क्या है?
यदि आप एक कलीसिया आरम्भ करने की योजना बना रहे हैं तो क्यों न इसी स्थान पर रुक कर, एक पेपर लो, और उस कलीसिया के लिए अपने दीर्घकालीन दर्शन को लिख लो। अपने दर्शन को लिखने में, जितने निश्चित आप हो सकते हो बनो।
अस्पष्ट और अव्यावहारिक शब्दों को मत इस्तेमाल करो।
कहाँ, कब, कैसे, किस प्रकार की, कितनी बड़ी विशेष रूप से लिखो।
उस चित्र का वर्णन करो जो परमेश्वर आपको स्थापित करनेवाली कलीसिया के विषय में दे रहा है।

आपका दर्शन होना चाहिए:

= परमेश्वर द्वारा दिया गया

कलीसिया की स्थापना के लिए कोई भी परियोजना परमेश्वर द्वारा प्रेरित होनी चाहिए। यदि हम ऐसी किसी परियोजना में किसी व्यक्तिगत या स्वार्थी कारण से लगते हैं तो इसकी बुनियाद में आरम्भ से ही एक दुखद दोष होगा, जो इसकी बढ़त और विकास को बिगाड़ देगा।

= सुनिश्चित

एक दर्शन और एक लक्ष्य में एक अन्तर निश्चित तत्त्व होता है। एक दर्शन में विशिष्टता नहीं होती है।
कोई कह सकता है, "मेरा दर्शन एक बड़ी कलीसिया बनाना है।" एक लक्ष्य विशिष्ट होता है।
व्यक्ति कहेगा, "मेरा लक्ष्य अगले पाँच वर्षों में मेरे शहर में 500 सदस्यों की एक कलीसिया बनाना है।"

= परिमेय

हमारी योजना में तत्त्व होने चाहिए जो हमें प्रगति का उचित रूप से मूल्याँकन करने दें। इनमें सम्मिलित होगा:

- संख्या। आप कितने लोगों को जीतने के लिए विश्वास कर रहे हो?
- समय। आप ऐसा कितने समय के अन्दर प्राप्त करना चाहते हो?
- खर्चा। आपको क्या लगता है इसका खर्चा कितना होगा?

= कथनीय

आपकी योजना इतनी विशिष्ट और स्पष्ट होनी चाहिए कि दूसरों को बताई जा सके:

- अपने सहयोगियों और संगी कार्यकत्ताओं को।
- अपनी मण्डली को।

= यथार्थवादी

विश्वास के लक्ष्य भी यथार्थवादी होने चाहिए।
विश्वास का तत्त्व आपकी योजनाबद्ध उपलब्धि को बहुत ही बढ़ा देगा परन्तु यह इसे यथार्थता के क्षेत्र के परे नहीं ले जाएगा।

= निष्पाद्य

यदि आपका दर्शन बहुत बड़ा है, तो इसे छोटे-छोटे, निष्पाद्य टुकड़ों में बाँटना बुद्धिमानी होगा।
अपने दर्शन को दीर्घकालीन और अल्पकालीन लक्ष्यों में विभाजित कर दो।
अपने अन्तिम दर्शन को आपना दीर्घकालीन लक्ष्य होने दो।
तब इसे अल्पकालीन लक्ष्यों में बाँट दो।

आपके लक्ष्य क्या हैं ?

अपने दर्शन को कार्यान्वित करने और पूरा करने में जो कदम उठाने हैं उन पर विचार करने में आपको सम्मिलित करना है:

- कैसे ? (योजना बनाना)
- कब ? (सूची तैयार करना)
- कौन ? (कार्यकर्त्ता प्रबंध)
- कीमत ? (बजट बनाना)

सीखने की क्रियाएँ:

1. पूर्व योजना बनाना क्यों आवश्यक है ?
2. वस्तुगत और आत्मगत योजना में अन्तर का वर्णन करो।
3. उन पाँच प्रश्नों को बताओ जो आप योजना की प्रक्रिया में अपने आप से पूछने वाले हो।
4. हर एक का संक्षेप में वर्णन करो।
5. उन 5 प्रश्नों के आधार पर, कलीसिया की स्थापना के लिए एक नीति बनाओ।
6. अपने जीवन और सेवकाई के लिए दीर्घकालीन दर्शन का 500 शब्दों में वर्णन करो।
7. वहाँ तक पहुँचने के लिए पाँच लक्ष्यों की रूपरेखा बनाओ।

अध्याय 8 – एक महान उपदेश का विश्लेषण करना

एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ. बिल्ली ग्रहम ने "सुसमाचार प्रचारक और उसका प्रचार" नामक एक उपदेश दिया था। उन्होंने संसार भर में जीवन भर सुसमाचार प्रचार करते हुए सीखे उन बहुत सारे सबकों का वर्णन किया, और उन विशेष तत्त्वों की बात की जो उनके अनुसार सुसमाचार संदेश के लिए आवश्यक हैं, और जो आधुनिक मनुष्य के हृदय तक प्रभावशाली तरीके से पहुँच सकते हैं।

मेरे दीन विचार में, डॉ. ग्रहम बीसवीं सदी के सुसमाचार के सबसे प्रभावशाली संचारक हैं, और इसलिए वे प्रभावशाली तरीके से सुसमाचार प्रचार करने के विषय में हमारी समझ काफी बढ़ा सकते हैं। उन्होंने कहा, "हमें उन लोगों को सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया गया है जो खाली, उदास, दोषी, और मृत्यु के डर में जी रहे हैं।" यह सरल वक्तव्य सुसमाचार के संचारक के रूप में हमारे काम का अच्छा वर्णन करता है।

वे उन सिद्धान्तों की बात करते हैं जो सुसमाचार के एक पर्याप्त और प्रभावशाली प्रस्तुतिकरण के लिए आवश्यक हैं, जिनका हर प्रचारक, जो प्रचार के माध्यम के द्वारा मसीह के विषय में बताना चाहता है, बड़े ध्यानपूर्वक विचार करे। मुझे यह भी महसूस होता है कि सब "कलीसिया स्थापक" जब बड़ी सभाओं या सभाओं में प्रयोग के लिए संदेश और उपदेश तैयार करते हैं तो उनकी टिप्पणियों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें और उन्हें मन में रखें। हमें नए क्षेत्र में कलीसिया आरम्भ करने की अपनी नीति की योजना बनाने में भी इन मामलों पर ध्यान देना चाहिए। यह हमें हमारी परियोजना के असली उद्देश्यों के विषय में सचेत रखेगें। न केवल विश्वासियों की एक नई मण्डली आरम्भ करना, बल्कि जो लोग उनके जीवनों में बिना मसीह के और बिना परमेश्वर के हैं, उनकी गम्भीर आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयत्न करना। यहाँ मैं इस सामग्री में से कुछ बातें बताने की स्वतन्त्रता ले रहा हूँ।

आओ हम डॉ. ग्रहम के शक्तिशाली शब्दों को सुनें:

"क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह" का प्रचार करना

हम इस भौतिकवादी, वैज्ञानिक, विद्रोही, अनैतिक, मानववादी युग में सामर्थ्य और प्रभाव के साथ प्रचार कैसे करें ? इस मूल प्रश्न की कुंजी जो प्रभावशाली सुसमाचार संचारण के द्वार को खोलती है, 1 कुरिं. 2:2 में पाई जाती है।

आपको याद होगा कि प्रेरित पौलुस एक मूर्तिपूजक, गैर-ईसाई, बौद्धिक और अनैतिक शहर, कुरिन्थुस को गया था। असल में, यह रोमी संसार का एक सबसे अनैतिक शहर था। जब पौलुस ने सबसे पहले वहाँ कदम रखे तो सारे शहर में वह ही एक मात्र मसीही था। पहली सदी की एक सबसे महान कलीसिया स्थापित करने के लिए उसने क्या किया था? उसका तरीका: "क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूँ।" (1 कुरिं. 2:2)। कुरिन्थियों को दिए अपने संदेश का उसने इस प्रकार सार बताया है। यदि हम पौलुस से व्यक्तिगत रूप से बात करें, तो वह कहेगा,

"केवल मेरी बुद्धि इसे सम्भाल नहीं सकती है, मैं करिन्थियों को सुसमाचार की सच्चाई को स्वीकार करने के लिए कायल कर सकूँ, इसके लिए मेरे पास कोई तर्क या दलील नहीं है।" तब वह, सकारात्मक विश्वास के साथ कहता है, " मैं ने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूँ।" पौलुस जानता था कि क्रूस और पुनरुत्थान में एक पहले से गढ़ी हुई संचारण की सामर्थ्य है। पौलुस जानता था कि पवित्र आत्मा क्रूस के सरल संदेश को लेता है और अधिकार और सामर्थ्य के साथ इसे जीवनों में उँडेल देता है।

आत्मा का काम अत्यावश्यक है।

"परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है।" (1 कुरिं. 2:14)। इसलिए जब हम यीशु मसीह - मसीह का क्रूस और पुनरुत्थान - का सुसमाचार प्रचार करते हैं, तो उसमें पहले से गढ़ी हुई सामर्थ्य पाते है। जैसे पौलुस ने जोर दिया है, सुसमाचार के प्रचारकों को यह स्पष्ट रूप से समझ जाना चाहिए कि शारीरिक मनुष्य तब तक मसीह की सच्चाई को ग्रहण नहीं कर सकता है जब तक पवित्र आत्मा उस पर से पर्दा हटा न दे।

यशस्वी सत्य यह है कि: पवित्र आत्मा संदेश को लेता है, और चाहे यह कितना भी कमजोर, इसकी भाषण-शैली कितनी भी पुरानी क्यों न हो, उसे सामर्थ्य के साथ हृदय और मन में पहुँचा देता है। वह बाधाओं को तोड़ देता है। यह परमेश्वर के आत्मा की अलौकिक सामर्थ्य है। कोई भी सुसमाचार प्रचारक अपनी सेवकाई पर तब तक परमेश्वर का स्पर्श नहीं पा सकता है जब तक वह इन सच्चाइयों की अनुभूति नहीं करता और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में प्रचार नहीं करता है। अन्तिम विश्लेषण में, पवित्र आत्मा ही संचारक है।

चाहे मैं जहाँ कहीं भी होता हूँ, जब मैं लोगों के सामने खड़ा होता हूँ, तो मैं कल्पना करता हूँ कि उनके जीवनों में कुछ चीजें सत्य हैं। हर श्रोतागणों में कुछ विशेष मनौवैज्ञानिक तत्त्व वर्तमान होते हैं। जैसे मैं सुसमाचार का प्रचार करने लगता हूँ, तो मैं पवित्र आत्मा पर भरोसा करता हूँ कि वह हर एक हृदय में जो सुन रहा है कुछ विशेष प्रतिक्रियाशील तार छेड़ेगा।

1. **पहला, मैं जानता हूँ कि जीवन की आवश्यकताएँ सामाजिक सुधार या सांसारिक अमीरी द्वारा सम्पूर्ण रूप से पूरी नहीं होती हैं।**

यह सारे संसार भर में सत्य है। यीशु ने कहा किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।

2. **दूसरा, मैं जानता हूँ कि मसीह बिना हर जीवन में एक अत्यावश्यक खालीपन है।**

सारी मानवजाति किसी चीज के लिए चिल्ला रही है, और वे जानते नहीं यह क्या है। कितने ही लोग आज किसी चीज के लिए पुकार रहे हैं, और कुछ भी पूरा नहीं कर पा रहा लगता है? पैसा पूरा नहीं करता है। ऐंद्रिय अनुभव पूरा नहीं करते हैं। एक व्यक्ति को एक करोड़ रुपये दे दो, और यह तब भी संतुष्ट नहीं कर पाएगा। उसे हर प्रकार की विषयासक्ति दे दो, यह संतुष्ट नहीं करेगी। उसे किस चीज की तलाश है? ....परमेश्वर। केवल परमेश्वर संतुष्ट करता है।

वर्षों से मैं ने संसार के बड़े से बड़े प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में प्रचार किया है। मैं ने नौजवानों की जो बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक, और आत्मिक रूप से खोए हुए हैं, दयनीय याचना को सुना है। वे किसी चीज को खोज रहे हैं और जानते नहीं यह क्या है। पास्कल ने इस का ठीक बयान किया जब उसने कहा, "हर जीवन में एक परमेश्वर-आकार की खाली जगह है जिसे परमेश्वर ही भर सकता है।" जब हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं, हम व्यक्ति के हृदय और जीवन में सीधे उस खालीपन से बाते कर रहे होते हैं। वह व्यक्ति जिस से आप मसीह की बातें कर रहे हो, चाहे अकेले में या एक सभा में, उसमें क्रूस के संदेश के लिए पहले से गढ़ी हुई ग्रहणशीलता है। क्यों? क्योंकि केवल मसीह ही उसके हृदय के खालीपन को भर सकता है। सम्भव है वह उस खालीपन को नहीं जानता, परन्तु यह वहाँ है।

3. **तीसरी चीज जिसकी मैं कल्पना करता हूँ कि, मेरे सुननेवालों में, एकाकी लोग होते हैं।**

एक अंतरिक्षी एकाकीपन है। मैं ने एक बार अपने मित्र से जो एक बड़े विश्वविद्यालय में मनोरोगविज्ञानी और बाइबल-विद्वान है, पूछा, "जो लोग आपके पास सहायता के लिए आते हैं उनकी सबसे बड़ी समस्या क्या है?" उसने एक क्षण सोचा और कहा, "एकाकीपन। और जब आप इसकी सतह तक पहुँचो तो, परमेश्वर के लिए एकाकीपन।" हम सब उसका कुछ अंश अनुभव करते हैं।

उदाहरणार्थ, आप एक सामाजिक जनसमूह में लोगों की भीड़ में हो सकते हैं और आपके आसपास हँसते हुए लोग हों, फिर भी एकाकीपन आप पर छा सकता है। यह अंतरिक्षी एकाकीपन है। परमेश्वर के लिए एकाकीपन, क्योंकि आप अपने सृजनहार से अलग हुए हो। जब आप सुसमाचार प्रचार करते हो, तो आप कल्पना कर सकते हो कि आपके श्रोताओं में यह होगा।

4. **चौथा, मैं जानता हूँ मैं सदा ऐसे लोगों से बात कर रहा होता हूँ जिनमें दोष की भावना होती है।**

दोष सम्भवतः मनुष्यजाति के सारे अनुभवों से सबसे व्यापक अनुभव है। यह सर्वनाश करता है। हमारा संदेश आश्चर्यजनक रूप से कितना संबद्ध संदेश है। क्रूस इस सब के विषय में ही है। जब हम मसीह का प्रचार करते हैं तो, हम सीधे उस तंग करनेवाली, निराशाजनक दोष की समस्या से बातें करते हैं। यह समस्या सदा रहती है। आपको लोगों को दोषी महसूस करवाने की आवश्यकता नहीं है।
उनमें से अधिकाँश पहले ही इसे जानते हैं। उन्हें बताओ उनका असली दोष क्या है - परमेश्वर के विरुद्ध उनका पाप। केवल मसीह ही क्षमा और राहत की भावना ला सकता है।

5. **पाँचवा, मृत्यु का डर विश्वव्यापी है।**

विश्वविद्यालय के एक सर्वेक्षण ने पाया कि नौजवान लोग किसी भी विषय से अधिक सेक्स के विषय में सोचते हैं। दूसरा, आश्चर्यजनक से, वे मृत्यु के विषय में सोचते हैं। कई देशों में विद्यार्थियों का दूसरा सबसे बड़ा कातिल आत्महत्या है। काली छाया सदा वहाँ है, और धूर्त डर को चुप नहीं किया जा सकता है।
परन्तु, यशस्वी खबर यह है: हमारा प्रभु मृत्यु को शून्य करने आया है। अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान में, उसने तीन चीजों: पाप, मृत्यु और नरक को निष्क्रिय किया है। उन्हें देने के लिए जो मृत्यु के विषय में चिन्तित हैं, हमारे पास कैसा अदभुत संदेश है।

संचारण के शक्तिशाली सिद्धान्त:

यहाँ सुसमाचार के संचारण के कुछ सिद्धान्त दिए गए हैं जिन्हें मैं ने अपने अनुभव से सीखा है। यदि हम, एक पवित्र और पवित्र आत्मा से भरे जीवन के समर्थन में, मसीह का प्रचार करें तो इन सब को स्पष्ट अनुभव कर सकते हैं।

1. **सबसे पहले, हमें सुसमाचार का अधिकार के साथ प्रचार करना है।**

इसका यह जानते हुए, दृढ़ निश्चय और आश्वासन के साथ प्रचार करो, कि, "विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।" (रोमियों 10:17)।
जब मैं वचनों को बोलता हूँ तो मैं जानता हूँ कि मैं परमेश्वर का वचन बोल रहा हूँ। यह हमारे लिए परमेश्वर का आधिकारिक संदेश है। यह एक भ्रमातीत पुस्तक है। हमें इससे कभी भी दूर नहीं होना है। मेरी एक मूल आलोचना है: हम आधिकारिक प्रचार पर अधिक बल नहीं दे रहे हैं। आज के महान प्रचारक कहाँ हैं? लूथर, कैल्विन, नॉक्स और स्पर्जियन कहाँ हैं? कलीसियाएँ निरन्तर मुझे लिखतीं और सिफारिश की माँग करती हैं। वे कहते हैं, "हमें किसी ऐसे की आवश्यकता है जो प्रचार कर सकता है। हमारे पास एक अच्छा प्रशासक है। परन्तु हमें प्रचारक चाहिए।" उन्हें एक ऐसा प्रचारक चाहिए जो हमारे प्रभु यीशु के समान प्रचार कर सकता है। परन्तु प्रभावशाली संदेश तैयार करने के लिए कड़ी मेहनत लगती है। लोग कभी-कभार मुझ से पूछते हैं कि मुझे एक संदेश तैयार करने में कितना समय लगा था। मैं उत्तर देता हूँ,"जीवन-काल।"
परमेश्वर के वचन और प्रार्थना में अपने आप को संतृप्त करो। तब, जैसे स्पर्जियन ने कहा, "अपना विषय-वाक्य लो और क्रूस का सीधा रास्ता पकड़ो।" "आप तब तक प्रचार नहीं कर रहे हो जब तक श्रोतागण एक दूसरी आवाज नहीं सुनते।" सुनो, हमारे दो कान हैं।

हमें परमेश्वर के आत्मा की आवाज सुननी है:

* जब आप प्रचार करते हैं तो क्या लोग दूसरी आवाज को सुन पाते हैं?
* जब आप प्रचार करते हैं तो क्या आप पवित्र आत्मा से भरे होते हैं?
* क्या आप अपने प्रचार में अभिषेक पाए होते हैं?
* क्या आप उसके अधिकार के साथ प्रचार करते हैं?

सुसमाचार के संचारण के लिए अधिकार बहुत ही आवश्यक है। लोगों का यीशु को सुनने का एक कारण था कि वह अधिकार के साथ बोलता था। जब आप परमेश्वर का वचन बोलेंगे, तो पवित्र आत्मा उसे इस्तेमाल करेगा। वह इसे रद्द नहीं होने देगा।

2. सुसमाचार का प्रचार सरलता के साथ करो।

प्रचार करने का यही एक तरीका मैं जानता हूँ। आपको परमेश्वर की गम्भीर बातों को लेना और उन्हें सरलता में घोषित करना सीखना है। यीशु दृष्टान्तों में प्रचार करता था, और लोगों के लिए सरल बनाता था। हमें बताना है ताकि लोग समझ सकें। सरलता के साथ प्रचार करो।

3. दोहराव के साथ प्रचार करो।

एक प्रोफेसर ने एक बार कहा कि सम्भवतः यीशु ने अपने आपको 500 बार से भी अधिक बार दोहराया था। सुसमाचार कभी-कभी हमें "पुराना" लगे, परन्तु भीड़ के लिए यह एक "खबर" है। इसे दोहराओ।

4. सुसमाचार का अत्यावश्यकता के साथ प्रचार करो।

इसे एक फैसले के लिए प्रचार करो। लोग मर रहे हैं। आप सम्भवतः ऐसे किसी को बता रहे हैं जो सुसमाचार को अखिरी बार सुनेगा। मसीह की अत्यावश्यकता के साथ प्रचार करो। अपने सुननेवालों को मसीह में लाने के लिए प्रचार करो। फैसले के लिए प्रचार करो। मसीह के समान निर्णय के लिए प्रचार करो। पश्चाताप और विश्वास का बुलावा घोषणा का हिस्सा भी है।

5. हमें एक पवित्र जीवन द्वारा सुसमाचार सुनाना है।

हमारा संसार अखंडता के पुरुषों और स्त्रियों की खोज में है। हमें ऐसे प्रचारकों की भयंकर आवश्यकता है जिनकी सेवकाई का समर्थन उनके जीवन करते हैं। हम जो हैं उसमें से हम लोगों तक पहुँचते हैं। हमें पवित्र लोग होना है।

जिन्होंने मेरे जीवन में मुझ पर सबसे गहरा प्रभाव डाला है वे कोई महान वक्ता और महान प्रचारक नहीं थे। बदले में, मेरा जीवन उन पवित्र पुरुषों और स्त्रियों द्वारा परिवर्तित हुआ है जिन्हें परमेश्वर मेरे मार्ग में लाया है। जैसे किसी ने ठीक ही कहा है: "एक पवित्र व्यक्ति परमेश्वर के हाथों में एक विस्मयकारी हथियार है।" पौलुस ने कहा, "मैं अपनी देह को अधीन रखता हूँ।" हमें इसे गम्भीरता से लेना है।

मुझे लगता है, शैतान तीन चीजों के द्वारा प्रचारकों पर आक्रमण करता है: पैसा, नैतिकता, घमण्ड। मुझे लगता है, हमें अपने सारे जीवन भर इनके साथ संघर्ष करना पड़ेगा।

6. हम अपने संगी व्यक्ति के लिए अपने प्रेम के द्वारा सुसमाचार सुनाते हैं।

यीशु ने कहा, "यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।" (यूहन्ना 13:35)। क्या हम वाकई खोए हुओं को और एक दूसरे को भी प्रेम करते हैं ? जब आप लोगों से मसीह के विषय में बात करते हो और जिस उत्सुकता और प्रेम के साथ आप उनके पास जाते हो, तो क्या उन्हें लगता है कि यह आपका धंधा है ? क्या आप वाकई लोगों से प्रेम करते हो ? क्या यह दिखता है ? क्या वे आपका तरस अनुभव करते हैं ? आप में से कितने इतना प्रेम करते हैं कि आपके आँसू बहते हैं ?

7. हम दयालु सामाजिक रुचि द्वारा सुसमाचार सुनाते हैं।

सामाजिक कार्य की बाइबल में आज्ञा दी गई है। हमारे प्रभु को देखो। उसने कोढ़ी को छूआ। क्या आप कल्पना कर सकते हो कि जब यीशु ने उसे छूआ तो उसे कैसा लगा होगा? कोढ़ी को एक घंटी बजाते हुए और यह कहते हुए आना-जाना होता था, "अशुद्ध, अशुद्ध, अशुद्ध।" और यीशु ने उसे छूआ। यीशु ने उदाहरण द्वारा और नियम द्वारा सिखाया कि हमारी पीड़ितों, बीमारों और गरीबों की ओर एक जिम्मेवारी है।

जब मैं करोड़ों भुखमरों के बारे में सोचता हूँ तो मैं अपना खाना नहीं खा पाता हूँ। इस वर्ष भी विभिन्न देशों में करोड़ों लोग भूख से मरने वाले हैं। अफ्रीका के कुछ हिस्सों में लोगों को पानी नहीं मिलता है। हमें यीशु मसीह के नाम में संसार में - छूते हुए, जरूरत कम करते हुए - जाना है। भूलिए मत कि कलीसिया सामाजिक रुचि के एक अतिरिक्त पहलू के साथ संसार में जाती है। हम अपने प्रभु यीशु के नाम में जाते हैं। हम जरूरतें पूरी करने और देने जाते हैं, परन्तु हमें सदा कहना है, "प्रभु यीशु मसीह के नाम में दिया गया।" यही हमारी प्रेरणा है।

8. अन्त में, हम आत्मा में हमारी एकता द्वारा सुसमाचार सुनाते हैं।

इसे स्पष्ट रूप से समझना है कि यदि हम एकता में बने रहें, और यह भी समझें कि एकता में विविधता है, तो हम मसीह के लिए संसार को उलटा-पुलटा कर सकते हैं। मसीही कलीसिया के इतिहास में पहली बार, महान अधिकार को पूरा करने की सम्भावना हमारी पकड़ में है। परन्तु, हम सब को "मेल के बन्धन में आत्मा की एकता" में मिलकर काम करना चाहिए (इफि. 4:3)। यह हमारा काम है।

आओ हम एक और दृष्टि डालें

मैं सच्चाई से भरोसा करता हूँ कि ऊपर दिया संदेश आपके लिए भी उतना ही अर्थपूर्ण और चुनौतिपूर्ण है जितना मेरे लिए था। यह गम्भीर सरलता, खोए हुओं को जीतने के लिए प्रचार करने के सम्पूर्ण काम का सार प्रस्तुत करता नज़र आता है। इस संक्षिप्त उपदेश में कितने सारे सामर्थी सत्य सम्मिलित हैं। कितनी सारी चीजें हैं जिन्हें हमें, जैसे हम परमेश्वर द्वारा नियुक्त प्रचार की सेवकाई द्वारा लोगों को मसीह में जीतने के सबसे महान कार्य में लगते हैं, अपने मनों में सबसे ऊपर रखना है।

मुझे खुशी है कि डॉ. ग्रहम की एक बात दोहरावे के सामर्थ्य की सिफारिश करती है क्योंकि जिन महत्त्वपूर्ण सच्चाइयों की उन्होंने बात की है उन्हें मैं दोहराने और रेखाँकित करनेवाला हूँ। आओ हम इस शक्तिशाली संदेश को दोबारा अनुभव करें।

1 – मसीह और क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करना

मसीह और क्रूस पर पूरा किया उसका प्रायश्चित का काम का प्रचार करने का सर्वोच्च महत्त्व। वर्षों में, इस सर्व-महत्त्वपूर्ण विषय का प्रचार करने पर जोर कम होता गया है। कई आधुनिक शिक्षकों ने क्रूस के विषय में निन्दक बातें कही हैं, और इसे पुराना, अप्रचलित, अनुभवहीन और लुप्त बताया है। उन्होंने इसके स्थान पर भले कामों का एक सामाजिक सुसमाचार बना लिया है, जो उन्हें अच्छा लगता है क्योंकि यह अधिक सम्मानजनक और सामाजिक रूप से स्वीकार्य है। उन्होंने क्रूस, पापियों के लिए बहाये मसीह का लहू, उद्धार के प्रायश्चित के काम पर जोर देना छोड़ दिया है। यह चीजें बहुत अप्रचलित हैं। बौद्धिक मन के बहुत प्रचीन। ऐसे आधुनिकतावादियों के लिए, अहँकार और प्रतिष्ठा अधिक आवश्यक हैं।

इवेन्जलिकल प्रचारक भी मसीह के क्रूस का प्रचार उतनी बारंबार या उतने अधिकार के साथ नहीं करते हैं जितना वे पहले किया करते थे। सुसमाचार को बुद्धिसंगत बनाना अधिक लोकप्रिय बन गया है। मनोवैज्ञानिक शब्दों में इसका अर्थ बताने का प्रयत्न। अनेकों ने सुसमाचार को बाइबल के सकारात्मक सोचविचार के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश की है। उन्होंने मसीह को किसी प्रकार के गुरू, या दार्शनिक के रूप में प्रस्तुत करने और उसकी शिक्षाओं को एक बौद्धिक परिष्कृत पीढ़ी के लिए स्वीकार्य बनाने का प्रयास किया है।

हमें नए सिरे से अनुभव करना है कि क्रूस का संदेश शाश्वत है।

मसीह के प्रायश्चित के काम में विश्वास के द्वारा उद्धार का सत्य एक शाश्वत सत्य है। यूहन्ना हमें बताता है कि मसीह "जगत की उत्पत्ति के पहले से घात किया हुआ है।" (प्रकाशित. 13:8)। फिर भी, जब हमें शाश्वत भविष्य में एक झलक दी जाती है तो हम परमेश्वर के सिंहासन के ईर्द-गिर्द जीवित प्राणियों को "मेम्ना जो पापियों के लिए वध हुआ" की स्तुति करते हुए देखते हैं। (प्रकाशित. 5:6-12)। बहे लहू के द्वारा उद्धार की लाल रेखा उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक, सारी बाइबल में से खिंची हुई है। यह अनन्त है। यह तात्त्विक है। यह अनिवार्य है। इसके अलावा उद्धार नहीं है।

पौलुस "प्रचार की मूर्खता" की बात करता है, और दृढ़ता से कहता है कि इसी क्रिया के द्वारा मनुष्य परमेश्वर को जान पाते हैं। क्योंकि संदेश उन्हीं के लिए मूर्खता है जो नष्ट हो रहे हैं, परन्तु हमारे लिए जो उद्धार पाते हैं यह परमेश्वर का सामर्थ्य है। (1 कुरिं. 1:18)। हमारा चाहे कैसा भी "बौद्धिक" परिदृश्य क्यों न हो, हमें पहचानना और स्वीकार करना है कि इस "प्रचार की मूर्खता" के द्वारा ही परमेश्वर ने पश्चातापी पापियों का उद्धार करने का निश्चय किया है। यदि हम अपने बौद्धिक, मानववादी अहँकार को क्रूस और क्रूसित मसीह के प्रचार की मूर्खता को ठुकराने दें, तो हम अपने आप को एक ही विकल्प का पीछा करते हुए पाएँगे, यानि "मूर्खता का प्रचार" - आधुनिकतावाद।

अब हर बार जब हम प्रचार करते हैं तो हमें वास्तव में क्रूस का प्रचार करना आवश्यक नहीं है। ऐसा आवश्यक नहीं है कि हम क्रूस की वही कहानी अपने हर संदेश में दोहराएँ। परन्तु, हमें आदेशसूचक सत्य को लाना ही है कि केवल मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा ही मनुष्य उद्धार पा सकता है। हमारे प्रचार को "पुरानी शैली" का होना अवश्य नहीं, क्योंकि उद्धार का संदेश निश्चय ही पुरानी शैली का नहीं है। यह बिलकुल आधुनिक है। असल में, यह भविष्यवादी है।

2 – पवित्र आत्मा का कार्य अत्यावश्यक है।

यदि हम मसीह के लहू के द्वारा उद्धार के सत्य पर जोर नहीं देते तो, हम पवित्र आत्मा को सुननेवालों के हृदय में पाप की अनुभूति लाने का अवसर नहीं देते। यदि यह नहीं होता है तो, सच्चा परिवर्तन भी नहीं होगा। उद्धार का चमत्कार पवित्र आत्मा के बिना नहीं हो सकता है और जब तक उद्धार का संदेश हृदय में विश्वासयोग्यता से बोया नहीं गया है वह दोषसिद्धि और पश्चाताप पैदा नहीं कर सकता है। इसलिए, हमें उसे काम करने के लिए सामग्री देनी है, यानि, क्रूसित मसीह का प्रचार।
क्रूस और उद्धार का प्रचार "मूर्खता" होने का कारण यह है क्योंकि इस आत्मिक सत्य का एक रहस्यवादी आयाम भी है जिसे सांसारिक मनुष्य "समझ" नहीं सकता है। (1 कुरिं. 14:2)। ठीक इसी तात्त्विक रहस्यवादी तत्त्व के कारण हमें पवित्र आत्मा को कार्य करने देना चाहिए। हमें पवित्र आत्मा पर अपने सम्पूर्ण निर्भरता की स्पष्ट जानकारी के साथ सदा प्रचार करना चाहिए। ऐसा न लगे कि सबकुछ आपके उपदेश पर निर्भर है। ऐसी कल्पना मत करो कि यदि आप एक "अच्छा उपदेश" नहीं देते तो कुछ नहीं होगा।
यह आपका उपदेश नहीं है जो लोगों को परिवर्तित करता है; यह पवित्र आत्मा का सामर्थ्य है।
इसलिए, उसके लिए एक माध्यम बनने का प्रयत्न करो। हर बार जब प्रचार करते हो अपना मन उसके सुपुर्द कर दो। जो वह चाहता है आप कहें उसे "महसूस" करने की कोशिश करो और उसके विचारों को अपने शब्दों में प्रवाहित होने दो। विश्वास रखो कि वह अपना कार्य करेगा।

अब, आओ हम मानवजाति की आवश्यकताओं की जिनका सामना किया जाता है, उसकी टिप्पणियों पर संक्षेप में विचार करें।

1) **जीवन की आवश्यकताएँ सामाजिक सुधार या भौतिक अमीरी द्वारा सम्पूर्ण रूप से पूरी नहीं होती हैं।**

इस भौतिकवादी युग में, हम भूल जाते हैं कि मनुष्य मूल रूप से और मुख्यतः एक आत्मिक प्राणी है और कि उसकी असली आवश्यकताएँ और उनके समाधान आत्मिक स्थानों में हैं। कभी-कभी हम सोचने लगते हैं कि सफल और अमीर लोगों का सबकुछ ठीट-ठाक है। कि उनकी सब समस्याएँ समाप्त हो चुकी हैं और उनको कोई चिन्ता या परेशानी नहीं है। असल में, उलटा अक्सर सही होता है। उनके सफल काम ने उनके लिए नए प्रकार की तनावपूर्ण समस्याएँ ला खड़ी की हैं, जिन्होंने उनकी मन की शान्ति और आत्मा का संतोष चुरा लिया है। अनेक लोग "अमीर जवान शासक" द्वारा उचित रूप से चित्रित किए हुए हैं, जिसके पास वह सबकुछ था जिसकी एक व्यक्ति आशा कर सकता है, और फिर भी एक अधिक समृद्ध और ऊँचे गुण के जीवन की लालसा रखता था, जो केवल परमेश्वर दे सकता है।

2) **मसीह बिना हर जीवन में एक अत्यावश्यक खालीपन है।**

"हर जीवन में एक परमेश्वर आकार का खालीपन है जिसे केवल परमेश्वर ही भर सकता है।" जिन लोगों से हम हर दिन मिलते हैं जिनके जीवन "भरपूर" नज़र आते हैं, अक्सर सबसे अधिक आत्मिक आवश्यकता वाले होते हैं। उन्होंने उनके जीवनों के एक गहरे महसूस होनेवाले शून्य को उस सबकुछ से भरने का प्रयत्न किया है जो इंद्रियार्थवादी संसार देता है। परन्तु, यह एक पहेली के समान है जिसका एक टुकड़ा गायब है। केवल एक ही टुकड़ा है जो वहाँ ठीक बैठेगा। हम दूसरे टुकड़ों को वहाँ बैठाने की कोशिश कर सकते हैं परन्तु हम कितनी भी कोशिश क्यों न करें वे वहाँ ठीक नहीं बैठेंगे। और यह चीज परमेश्वर आकार के शून्य के लिए भी सत्य है: केवल एक चीज ठीक बैठती है - स्वयं परमेश्वर। लोग उनके जीवन व्यवसाय, मनोरंजन, सामाजिक क्रियाएँ, नशीले पदार्थ, शराब और सेक्स से भरने की कोशिश कर सकते हैं। कुछ भी असल में ठीक नहीं बैठता है। कुछ भी असल में संतुष्ट नहीं करता। भीतर शून्य खाली रह जाता है और मानवजाति की सबसे गहरी आवश्यकताएँ परमेश्वर के आत्मा की उपस्थिति के द्वारा ही पूरी की जी सकती हैं।

3) **एकाकीपन का दर्द।**

लोगों से भरे हुए इस ग्रह पर करोड़ों एकाकी लोग हैं। एकाकी के बहुसंख्यक विभिन्न कारण हैं, परन्तु सबका एक एकाकी हृदय का मूल हर है। मानवीय एकाकीपन का प्रमुख कारण परमेश्वर से हमारा अलगाव है। मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में और परमेश्वर का साथी होने के लिए बनाया गया था। उस सम्बंध के बिना, एक आयाम लुप्त है। मनुष्य मूल रूप से "परमेश्वर के लिए एकाकी" है। बेशक, अधिकाँश एकाकी लोग इसे पहचानते या स्वीकार नहीं करते हैं, और प्रचारकों के रूप में हमारे काम का एक भाग इस सत्य को स्वीकार करने और उस सम्बंध के लिए जिसे परमेश्वर मसीह में देता है, अपने आपको खोलने में उनकी सहायता करना है। एक बार जब एक व्यक्ति मसीह को अपने जीवन में स्वीकार करता है, तो उनके लिए मुमकिन हो जाता है कि वे फिर कभी एकाकी न हों।

4) **दोष का बोझ।**

एक हानिकर बपौती जो हम अपने प्रारंभिक माता-पिता, आदम और हव्वा से पाते हैं, दोष का बोझ है। यह पीढ़ी से पीढ़ी तक चला आ रहा है। यह अक्सर एक अस्पष्ट तत्त्व है, और उस महान फासले के कारण जो मनुष्य और उसके सृजनहार के बीच है, पहचान में नहीं आता कि असल में यह क्या है।

दोष सदा पहचाननेयोग्य मानसिक समस्याएँ उत्पन्न नहीं करता है। अधिकाँश लोग जो इस दूभर दोष की समस्या के बोझ से दबे हुए हैं उनके जीवन के अनेक दूसरे क्षेत्रों में सामान्यतः काम कर रहे हैं। परन्तु, हृदय के अन्दर, एक निरन्तर भावना है कि सबकुछ ठीक नहीं है। वे जीवन के समन्वय के साथ लय में नहीं हैं। अक्सर थोड़ी सी जाँच-पड़ताल इस तथ्य को सतह पर ले आएगी और तब इससे निपटा जा सकता है। यह पवित्र आत्मा का एक कार्य है। हमें उसे काम करने के लिए कुछ सामग्री देनी होती है। अपने प्रचार में हमें सामान्य आवश्यकता के इन क्षेत्रों के विषय में बात करनी चाहिए और पवित्र आत्मा को दोषी प्राणी को पश्चाताप में लाने देना चाहिए।

5) **मृत्यु का व्यापक डर**

मानवीय जीवन के दो सामान्य हर जन्म और मृत्यु हैं। जैसे मनुष्य पैदा होता है, वैसे ही वह अवश्य मरेगा भी। यह एक काली छाया है जो अवचेतन मन को निरन्तर भरे रहती है। कइयों के लिए, मृत्यु एक महान अज्ञात है। यह तथ्य कि स्वाभाविक मनुष्य मृत्यु और कब्र के बाद क्या है के विषय में इतनी कम जानकारी रखता है, अपशकुन और डर पैदा करता है। मसीहियत का संदेश उसका संदेश है जिसने मृत्यु अनुभव की, इसके रहस्यात्मकता को जीता, मरे हुओं में से जी उठा और परमेश्वर के पास वापस चला गया। वह अग्रसर है। उसने घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में से अनन्त राज्य की महिमाओं में उसके पीछे हो लेने के लिए हमारे लिए मार्ग बनाया है।

हमारे संसार में कितने करोड़ों लोग महान धार्मिक प्रणालियों के गुलाम हैं, उसका कारण मृत्यु का डर ही है। करोड़ों लोग मृत्यु की पकड़ में से बच निकलने के लिए पुनर्जन्म के विश्वास से लिपटे हुए हैं। करोड़ों और लोग उनके सारे जीवन कब्र के बाद ईश्वरीय अनुग्रह पाने की आशा में देवताओं की गुलामी में बिताते हैं। जैसे हम मसीह के रहस्यमय धन का प्रचार करते हैं, तो हमें इन तथ्यों की जानकारी होनी चाहिए।

<u>अन्त में, आओ हम प्रचार के उन पहलुओं पर विचार करें जिन्हें डॉ. ग्रहम आवश्यक समझते हैं।</u>

1) **अधिकार के साथ सुसमाचार सुनाओ।**

अधिकार के साथ प्रचार करने का एक तरीका बाइबल का प्रचार करना है, और तब आप परमेश्वर के अधिकार के साथ बोल सकते हैं। यह कुछ ऐसा है जिसे बिल्ली ग्रहम ने अपनी सेवकाई के आरम्भ में ही सीखा लिया था। वे "बाइबल कहती है..." बोलने के लिए प्रसिद्ध हैं। क्योंकि वे इतनी बारंबार बाइबल में से बोलते हैं, बाइबल का अधिकार उनके साथ है। इससे पवित्र आत्मा को कार्य करने के लिए सामग्री मिलती है, और वह दोषसिद्धि, प्रकाशन, समझ और उद्धार ला सकता है। प्रचारकों के रूप में, हमें वचन में उत्तम समय बिताना चाहिए। इसे पढ़ना, इसमें मग्न होना, इसका अध्ययन करना, इसे सुनकर, भीतर लेकर, और बोलकर इस पर मनन करना है। जीवन के महत्त्वपूर्ण विषयों पर इसे क्या कहना है खोज कर। वचन हमारे सोचविचार को इतना अधिकार में ले ले कि इसे बोलना हमारा दूसरा स्वभाव बन जाए। यदि हम अपने विचार या राय का प्रचार करते हैं, तब तो लोगों को कायल करने के लिए हमारे पास हमारे अपने ही अनुभव हैं। परन्तु यदि हम वह प्रचार करें जो बाइबल कहती है, तब स्वयं परमेश्वर इसके सत्य को अनेक अदभुत तरीकों से प्रमाणित करेगा।

<u>अधिकार के साथ प्रचार करने का दूसरा तरीका अपने ऊपर पवित्र आत्मा के अभिषेक के साथ प्रचार करना है।</u> यीशु ने पहले अवसर पर हमें यह नमूना दिया था। उसने लोगों के सामने नासरत के आराधनालय में इसकी बात की। उसने भरोसे के साथ घोषणा की, "प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है।" मित्रो, हमें आत्मा के अभिषेक को कीमती जानना है। हमें स्पष्ट अनुभव होना चाहिए कि इसके बिना हम नश्वर मनुष्य के समान बोलते हैं। परन्तु, जब परमेश्वर का विशेष स्पर्श हमारे ऊपर है, तो हम मानो परमेश्वर के वचन बोलते हैं। (1 पतरस 4:11)। अभिषेक अवश्य नहीं भावात्मिक जोश में प्रकट होगा। यह केवल जोर से या प्रभावशाली तरीके से बोलना ही नहीं है। यह जो हम बोलते हैं उसमें आत्मा का रहस्यात्मक सामर्थ्य है जो हमारे शब्दों को प्रत्येयता, अधिकार और प्रत्ययकारिता देता है।

जब तक हम अच्छी तरह तैयार और जिस विषय पर हम बोलनेवाले हैं अच्छी तरह से प्रवीण नहीं हैं हम अधिकार के साथ बोलने की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं। आत्मा का अभिषेक अत्यावश्यक है परन्तु यह हमारे हृदय और मन को प्रार्थनापूर्वक और ध्यानपूर्वक तैयार करने की आवश्यकता से छुटकारा नहीं देता है।

हमें बाइबल का अध्ययन करना है और स्पष्टीकरण और प्रकाशन के लिए परमेश्वर की बाट जोहनी है।
परमेश्वर से प्रार्थनापूर्वक पूछना है कि वह कैसे चाहता है हम इस संदेश को प्रस्तुत करें। विषय को उसके परिदृश्य से समझने का प्रयास करना है। इसे वैसे अनुभव करना है जैसा वह करता है और इसे उसके प्रेम और कृपा के साथ बताना है। हम तब भी अधिकार के साथ बोल सकते हैं जब हमें स्पष्ट समझ हो कि हम लोगों के लिए परमेश्वर के प्रवक्ता हैं। भीड़ में ऐसे लोग हो सकते हैं जिन्हें सुसमाचार सुनने का अवसर फिर कभी न मिले। यह उनका अवसर है। एक प्रचारक के जैसा और दूसरा कोई ऊँचा बुलावा या बड़ी जिम्मेवारी नहीं है। हम परमेश्वर और मनुष्य के बीच खड़े हैं। हमें, परमेश्वर के अनुग्रह और योग्यता से, अपनी उत्तम योग्यता के अनुसार परमेश्वर के संदेशवाहक बनना है। जैसे हम वो माध्यम बनने का प्रयत्न करते हैं जिनके द्वारा परमेश्वर अपना वचन भेज सकता है, हमारा संदेश अधिकार और शक्ति के साथ आएगा।

2) **सरलता के साथ प्रचार करो।**

यीशु और बहुत से आधुनिक प्रचारकों में मुख्य अन्तर यह है कि यीशु ने सबसे गम्भीर विषयों को लिया और उन्हें सरल बनाया, जबकि आधुनिक प्रचारक सबसे सरल विषयों को लेते हैं और उन्हें जटिल बना देते हैं। अक्सर एक अह्म की समस्या सम्मिलित होती है, जिसमें प्रचारक गम्भीर ज्ञान की तस्वीर बनाना और एक प्रवीण प्रचारक के रूप में अपना नाम बनाना चाहता है। यीशु एक प्रचारक के रूप में अपने नाम की चिन्ता नहीं करता था। वह इसी में रुचि रखता था कि उसके सुननेवाले उन सत्य को समझ लें जिन्हें वह बताता था।
सम्भवतः हमें "बचकाना" और "बालोचित" में बहुत बड़े अन्तर को एक नए सिरे से समझने की आवश्यकता है। कई प्रचारक बालोचित होने से डरते हैं और सोचते हैं कि कहीं ऐसा न हो वे अपरिपक्व, ज्ञान और परिष्कार में कम समझे जाएँ। यीशु स्वयं बालोचित था और उसने कहा कि जब तक हम भी वैसे नहीं बन जाते हम "राज्य में प्रवेश" नहीं कर पाएँगे। हमें सुसमाचार के अपने प्रस्तुतिकरण को सरल बनाना है, बचकाना और मूर्ख बनकर नहीं, परन्तु सुसमाचार के महान सत्य के पास सरलता के साथ आना है जिसे यीशु अपने द्वारा सम्मानित किया है।

3) **दोहराव प्रयोग में लाने से न डरें।**

एक ही चीज को कहने के कई तरीके होते हैं। महत्त्वपूर्ण विषयों को दोहराने की आवश्यकता का अर्थ यह नहीं कि हम उबाऊ बनें, सदा वही संदेश देते रहें और वही कहानी सुनाते रहें। यीशु लगातार उन्हीं मूल सच्चाइयों को प्रस्तुत करते थे परन्तु वह उन्हें विभिन्न पोशाक में लपेटता था। उसका दृष्टांतों और उदाहरणों को प्रयोग में लाने का तरीका प्रतीभाशाली था। उसने कहानियाँ सुनाई, जो इतनी साधारण थीं कि बच्चे भी उन्हें समझा जाते थे और फिर भी उसके सारे सुननेवाले मोहित रहते थे। वे घंटो सुनते, खाना और आराम भूल जाते, और पूरी तरह उसकी शिक्षाओं में डूब जाते थे।
अधिकाँश लोगों को कुछ चीजें कई बार सुननी पड़ती हैं इससे पहले वे उन्हें समझ सकें। एक प्रभावशाली शिक्षक की निपुणता का एक भाग, विभिन्न तरीके प्रयोग में लाकर परन्तु मूल अनिवार्य सच्चाइयों पर जोर देकर, चीजों को दोहराने की उसकी योग्यता है।

4) **अत्यावश्यकता के साथ प्रचार करो।**

हमारे प्रचार के विषय में सदा एक अत्यावश्यकता की भावना होनी चाहिए। सन्त्रास या उलझन का एक वातावरण नहीं, बल्कि एक असली भावना कि हमारा संदेश आदेशसूचक और अत्यावश्यक है, एक जानकारी कि हमारे संदेश के प्रकाश में महत्त्वपूर्ण फैसले किए जाने चाहिए।
यह तीन उचित कारणों से सत्य है:

<u>अः जिन लोगों को हम प्रचार करते हैं वे संदेश को शायद दोबारा न सुन सकें।</u>

सम्भवतः उनके जीवन के हालातों के कारण उद्धार का संदेश सुनने का यह उनका अन्तिम अवसर हो सकता है। इसलिए अपने प्रस्तुतिकरण को सरल, निश्चित, अत्यावश्यक और एक तात्कालिक फैसले की माँग के साथ बनाएँ। अपने संदेश की समाप्ति के समय लोगों को प्रतिक्रिया के लिए सदा अवसर दें। यह उनका अन्तिम अवसर हो सकता है।

<u>आः जीवन कितना नाजुक है।</u>

मृत्यु कितनी अनिवार्य है। हमें कभी भी मान कर नहीं चलना है कि एक और अवसर मिलेगा। मुझे एक अवसर अच्छी तरह याद है जो कई वर्ष पहले घटा था, जब मैं एक बहुत नया प्रचारक था। यह एक रविवार शाम की सुसमाचार सभा थी और हालाँकि लगभग एक हजार लोग उपस्थित थे, मेरा ध्यान उन दो नवयुवकों पर लगा हुआ था जो सभाग्रह के पिछले भाग में बैठे थे। जब अपील की गई तो कई लोगों ने प्रतिक्रिया दिखाई परन्तु उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। मुझे उनके विषय में इतनी चिन्ता हुई कि इससे पहले वे चले जाते, मैं सभाग्रह के पिछले भाग में जल्दी से गया और उनका सामना किया। मैं ने उन्हें उनके विषय में अपनी भारी

चिन्ता के विषय में बताया और उनसे मसीह को स्वीकार करने का आग्रह किया। उनमें से एक ऐसा करना चाहता था परन्तु उसके साथी ने उसे हतोत्साहित किया। उसने कहा, "हम इतने छोटे हैं कि धर्म के विषय में नहीं सोच सकते हैं। हमारे जीवन हमारे सामने हैं। सम्भव है जब हम बड़े हो जाएँगे तब हमें पता होगा क्या कहना है।" इतना कहकर घर जाने के लिए वे इमारत से बाहर चले गए। एक बस से जल्दी से उतरकर, दूसरी पकड़ने के लिए चौराहे में से गुज़रने के समय, अचानक एक बड़े ट्रक ने उन्हें टक्कर मारी। एक वहीं मर गया, और दूसरा अस्पताल ले जाते हुए। दो नौजवान जिनको लगा था कि मृत्यु अभी कई वर्ष दूर है, अचानक अनन्तकाल में जा पहुँचे थे।

इ: हमारे संदेश के लिए अभी भी अत्यावश्यकता है क्योंकि मसीह का लौटना निकट है।

सारे संसार भर में चिन्ह यही संकेत देते हैं कि हम महाप्रलय की ओर जा रहे हैं। मेरा विश्वास है कि प्रभु के लौटने का प्रचार करना और अत्यावश्कता के साथ करना हमारे लिए उचित और आवश्यक है।

लोगों को जानना अवश्य है कि परमेश्वर का राज्य निकट है। उन्हें बताना आवश्यक है कि यह वर्तमान युग मसीहा के लौटने और देशों पर उसके राज्याभिषेक के साथ चरम तक पहुँच जाएगा। प्रेरित यूहन्ना कहता है, "जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा।" (प्रकाशित. 11:15)।

5) जीवन की पवित्रता के द्वारा सुनाना।

पहले से कहीं अधिक इन दिनों में, प्रचारकों के लिए सुसमाचार उनके उपदेशों के अतिरिकुत उनके पवित्र जीवन शैलियों के द्वारा प्रचार करने की बहुत आवश्यकता है। इसकी सदा से आवश्यकता रही है परन्तु मुझे लगता है कि आज सेवकाई पर शैतान का असामान्य आक्रमण हो रहा है। उसे पता है कि अन्त निकट है। उसे यह भी पता है कि प्रभु के लौटने के पहले इन कठिन दिनों में बहुत बड़ी आत्मिक फसल आने वाली है। इसलिए वह अपनी योग्यता के अनुसार उस फसल को आने से रोकने की भरपूर कोशिश करेगा।

उसका एक प्रधान हथियार संदेशवाहकों की विश्वसनीयता को नष्ट करना है।

दुख की बात है कि वह कुछ हद तक इसे करने में सफल रहा है। कुछ सबसे अधिक विशिष्ट और ऊँचे पाश्वर्क प्रचारक संसार की नज़रों के सामने प्रकट किए गए हैं। इससे विशेषकर एशिया में और संसार के कई दूसरे भागों में भी बहुत विनाश हुआ है। शैतान अभी भी इस तरीके से काम कर रहा है और उसकी कोशिश और आगे तीव्र हो रही हैं। हम में से हर को उसकी नीति को पहचानना और सतर्क रहना उचित होगा। "इसलिए जो समझता है, 'मैं स्थिर हूँ', वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।"

6) अपने साथियों के लिए सच्चे प्रेम के द्वारा सुनाना।

अपनी सेवकाई में पेशावर बन जाना बहुत आसान है। सही प्रेरणाओं के बिना काम करते रहना। हमें स्पष्ट समझना है कि प्रेरणाएँ कुछ करते रहने से अधिक महत्त्वपूर्ण होती हैं। कभी-कभार अपनी प्राथमिकताओं की हमें पुनःजाँच करना आवश्यक होता है। वापस आरम्भ में जाना, प्रार्थनापूर्वक विचार करना कि हमारी सेवकाई का असली अभिप्राय क्या है। कई प्रचारक उनकी सेवकाई का जीवन उत्तम उद्देश्य और शुद्ध अभिप्रायों से आरम्भ करते हैं परन्तु किसी प्रकार बाद में वे उनके बुलावे के व्यावसायिकता में उलझ जाते हैं। हमें वापस क्रूस के पास जाना है। वापस उसी स्थान में जहाँ से आरम्भ किया था। कलवरी के प्रेम के प्रकाश में अपने जीवनों की नए सिरे से जाँच करना।

हमें लोगों को क्रूस के प्रकाश में, उद्धारकर्त्ता की आँखों से देखना है।

हमें तब तक वहाँ बने रहने की आवश्यकता है जब तक हम अपने हृदयों में उनके लिए प्रेम नहीं अनुभव नहीं करते।

मैं नए प्रचारकों को अक्सर बताता हूँ, "सेवकाई दो चीजों के विषय में है। यह परमेश्वर के विषय में है और यह लोगों के विषय में है।" हमारा काम परमेश्वर की सेवा करना और लोगों की सेवा करना है। हम उसके याजक हैं, परमेश्वर और लोगों के बीच खड़े होते हैं। हम दोनों में से कोई भी काम प्रेम बिना नहीं कर सकते हैं। परमेश्वर की या अपने साथी मनुष्य की प्रेमरहित सेवा बिलकुल अस्वीकार्य है।

7) दयालु सामाजिक रुचि द्वारा बताना।

हमारे संसार में करोड़ों लोग हैं जो दयालु रुचि की घोर आवश्यकता में हैं। वे यीशु मसीह की कलीसिया के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती हैं। मैं यह भी विश्वास करता हूँ कि वे उनके बीच एक बड़ी फसल काटने का एक बड़ा अवसर भी प्रस्तुत करते हैं। यीशु निश्चय ही लोगों की सामाजिक आवश्यकताओं की ओर रुचि रखता था। जब उसने भीड़ को खाना खिलाया, और उनके बीमारों को चंगा किया, तब उसने यह रुचि दिखाई थी। हमें उसके उदाहरण का अनुकरण करना है और अपने साथी मनुष्य की वास्तविक

आवश्यकताओं को पूरा करने और उसकी चोटों को चंगा करने के लिए हाथ बढ़ाना है। संसार खलबली और उलझन में है, और केवल यीशु के पास समाधान है। वह हमारी ओर देख रहा है कि हम चुनौती उठा लें और दिखाएँ कि वह "जगत की ज्योती" है।

8) **आत्मा में अपनी एकता द्वारा सुनाना।**
फसल के अवसर के इन क्रान्तिक दिनों में, हम मसीहियों को पहले से कहीं अधिक मिलकर काम करना है। हमारे सामने का काम किसी सम्प्रदाय या संस्था के लिए कहीं बड़ा है। इसके लिए इस प्रकार मिलकर करने की आवश्यकता है जैसा पहले कभी नहीं हुआ है। हमें अपने प्रयासों, अपने साधनों और कार्यकर्त्ताओं को मिलाना है, मसीह को संसार में लाने के लिए एक बड़ी, सामूहिक कोशिश करनी है।

सीखने की क्रियाएँ:
1. डॉ. ग्रहम हर श्रोतागणों में कौन से पाँच हृदय के रवैये देखते हैं ?
2. प्रभावशाली सुसमाचार सुनाने के कौन से आठ सिद्धान्त हैं ?
3. इन में कौन से सिद्धान्तों को आपकी सेवकाई में दृढ़ करने की आवश्यकता है ?
4. हमारे प्रचार में हमें अत्यावश्यकता की एक भावना की आवश्यकता क्यों है ?

अध्याय 9 – कलीसिया स्थापना के कुछ तरीके

नई मण्डली आरम्भ करने के असंख्य प्रभावशाली तरीके हैं। हम उनमें से कुछ पर संक्षिप्त में विचार करनेवाले हैं। सम्भव है आप के लिए कोई दूसरा तरीका काम करो। एक सूक्ति हो सकती है, "यदि यह आपके लिए कार्य करता है, तो इसे करो।"

<u>कुछ तत्त्व जो निर्धारित करने में सहायता कर सकते हैं कि कौन सा तरीका सबसे अधिक उपयुक्त और प्रभावशाली है:</u>

- **वह स्थान जहाँ आप कलीसिया आरम्भ करना चाहते हैं।** आपको राजनीतिक स्थिति पर विचार करना है। कलीसिया की स्थापना के कुछ तरीके सरकार के नियंत्रण और प्रतिबन्ध के कारण अनुपयुक्त होते हैं। उदाहरणार्थ, कई स्थितियों में सार्वजनिक सभाएँ आयोजित करना मना होता है, परन्तु एक दीन पार्श्वचित्र रखते हुए, एक एक व्यक्ति से मिलकर बताना मुमकिन होता है। धार्मिक प्रभाव के कारण से भी यह बात कुछ स्थानों पर सच होती है। कुछ बहु-जातीय और बहु-धार्मिक समाजों में, सरकार बड़ी-बड़ी सार्वजनिक रैलियों की अनुमति नहीं देगी जिनका दूसरे धार्मिक समूह विरोध करेंगे।

- **सेवकाई का आपका तरीका।** एक दूसरा तत्त्व जो आपके तरीके को निर्धारित करेगा आपका विशेष वरदान और सेवकाई का तरीका है। हर कलीसिया स्थापक की ऐसी सेवकाई नहीं होती है जो बड़ी बड़ी सभाएं आयोजित करने के लिए उचित हो। कुछ बहुत अधिक प्रभावशाली कलीसिया स्थापकों का पार्श्वचित्र, जिन्हें मैं जानता हूँ, उन सुसमाचार प्रचारकों से जो बड़ी-बड़ी सभाएँ कर सकते हैं, बहुत कम है।

- **आपके पास उपलब्ध साधन।** आपको ध्यानपूर्वक उन साधनों के विषय में विचार करना है जो आपके पास उपलब्ध हैं। कलीसिया की स्थापना के कुछ तरीकों के लिए एक मजबूत दल की आवश्यकता होती है, जबकि दूसरे तरीके एक व्यक्ति स्वयं या एक बहुत छोटे दल द्वारा प्रभावशाली तरीके से चला सकता है। आपको आर्थिक सहायता के विषय में भी विचार करना है जो उपलब्ध है। बड़ी-बड़ी सभाओं के लिए अक्सर बड़े बजट की आवश्यकता होती है। आपको होने वाले खर्चों का ध्यानपूर्वक पता लगाना है और अपने उपलब्ध साधनों से निर्धारित करना है कि क्या आपके पास उस प्रकार के खर्चे के लिए विश्वास या आर्थिक साधन हैं, और क्या परिणाम खर्चों को उचित सिद्ध करेंगे।

आप वह कलीसिया कहाँ आरम्भ करेंगे?

आप अपनी नई कलीसिया कहाँ आरम्भ करना चाहते हैं उसके लिए अक्सर ईश्वरीय मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी। यह तटस्थ या स्वाभाविक तर्क से अधिक है जो एक व्यक्ति को एक नई कलीसिया आरम्भ करने के काम की प्रेरणा देता है।

आप अक्सर एक विशेष स्थान के लिए "स्वाभाविक से अधिक" रुचि अनुभव करने लगेंगे।

मैं ने इसे अपने, और अपने बहुत से सहकर्मियों के अनुभव में सच पाया है, कि आप एक विशेष स्थान में "स्वाभाविक से अधिक" रुचि अनुभव करने लगते हो। सम्भव है आपको किसी शहर में जाना पड़ा था और जब आप वहाँ थे तो आपने पाया कि उन लोगों की आत्मिक आवश्यकताओं के लिए आप एक बोझ और चिन्ता अनुभव करने लगे थे। आप अक्सर पाएँगे कि उस स्थान के लिए प्रार्थना का बोझ बढ़ने लगेगा और देखेंगे कि जब कभी भी आप प्रार्थना करेंगे उस स्थान की आवश्यकताएँ आपकी प्रार्थनाओं और मध्यस्थता में आने लगेंगी।

आप परमेश्वर की इच्छा अक्सर ऐसी एक रुचि के बने रहने की अवधि से पता लगा सकते हैं।

यदि कुछ महिनों के बाद उस स्थान के लिए बोझ चला जा रहा लगता है, तब सम्भवतः आपने उस काम को कर दिया है जो परमेश्वर चाहता था आप करें। दूसरी ओर, यदि बहुत समय के बाद भी, रुचि बनी रहती है और बढ़ती जाती है, तो आप स्पष्ट अनुभव कर सकते हैं कि परमेश्वर उस स्थान में कुछ महत्त्वपूर्ण काम करने की आपकी अगुवाई कर रहा है।

तब आपको उस स्थान के लिए परमेश्वर की बाट जोहना आरम्भ करने की आवश्यकता है।

इसके विषय में उससे उपयुक्त प्रश्न पूछने लगो। एक सुननेवाला कान, और उस स्थान के लिए परमेश्वर का आत्मा आपको जो दिखा रहा है पहचानने की योग्यता विकसित करने का प्रयत्न करो। परमेश्वर आपको सब प्रकार के प्रभाव बताने लगेगा और जैसे आप उन पर विचार करने लगोगे, आपके और उस स्थान के लिए उसकी योजना आपकी आत्मा में आकार लेने लगेगी। आप देख पाओगे कि किस प्रकार का तरीका वह चाहता है आप अपनाएँ। वह अक्सर आपको, आपके वहाँ जाने पर क्या होगा और आपके वहाँ नई मण्डली आरम्भ करने के प्रयास में क्या कैसे होगा, के कुछ संकेत देगा।

1: **<u>सुसमाचार प्रचार क्रूसेड का तरीका</u>**

यह तरीका एक बहुत सीधा तरीका अपनाता है जो यदि सफल होता है तो बहुत ही फलदायक हो सकता है, और अपेक्षाकृत कम समय में, बहुत बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित करता है। परन्तु, कई महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं जो अन्तिम प्रभावकारिता या उसका विपरीत निर्धारित करेंगे।

कहाँ?

वह स्थान जहाँ आप सभाएँ आयोजित करेंगे पहला तत्त्व है।
क्या यह अच्छा स्थान है, जहाँ लोग आने के इच्छुक होंगे?
क्या यह अधिकाँश लोगो के लिए प्रवेश्य होगा?
क्या कोई सार्वजनिक यातायात उपलब्ध है?
यदि कम या कुछ भी यातायात उपलब्ध नहीं है तो क्या लोग अपने आप वहाँ पहुँ सकेंगे?
यदि क्रूसेड बहुत सफल होता है तो क्या यह स्थान निरन्तर आधार पर उपलब्ध होगा?
यदि नहीं तो, क्या कहीं और कोई उपयुक्त वैकल्पिक स्थान उपलब्ध है?

कौन?

क्रूसेड में प्रचार कौन करेगा?
यदि आप करना चाहते हो तो, क्या आपको निश्चय है कि आपकी इस प्रकार की सार्वजनिक सेवकाई है?
यदि आपके पास एक दूसरा प्रचारक है, एक सुसमाचार प्रचारक, तब आपको दल के एक दृश्य और अंगभूत भाग के रूप में दिखाई देना चाहिए। जब क्रूसेड का समय समाप्त होने लगता है, तब आपको अगुवाई अपने हाथ में ले लेनी है ताकि जब विशेष सभाएँ समाप्त हो रही हैं तो आपको अगुवे के रूप देखा जाए। यह आपको लोगों के सामने एक पार्श्वचित्र देता है और उन्हें आपको उनके आत्मिक अगुवे के रूप में पहचानने में सहायता मिलती है।
क्या आपके पास एक उपयुक्त संगीत सेवकाई दल है? संगीतज्ञ, गायक आदि।
क्या आपके पास कुछ विशेष रूपक, गवाहियाँ, फिल्में, एकल गायक आदि हैं?
क्या आपके दल का इस प्रकार की घटना के लिए वैसा प्रभाव है?

किस चीज पर जोर दिया जाएगा?

एक सार्वजनिक क्रूसेड में लोगों को आकर्षित करने के लिए एक बलाघात होना चाहिए।

क्या यह प्रसिद्ध प्रचारक होगा?

क्या विषय उद्धार, नया जीवन, चंगाई, बाइबल भविष्यद्वाणी होगी?

लोग किस चीज के लिए आएँगे?

कलीसिया की स्थापना के आधुनिक संदर्भ में, चिन्ह और चमत्कारों पर प्रेरिताई बलाघात और चंगाई की सेवकाई को लोगों को सुसमाचार सुनने के लिए आकर्षित करने में एक बहुत ही शक्तिशाली और प्रभावशाली माध्यम के रूप देखा गया है। बीमारों के लिए प्रभावशाली प्रार्थना लोगों को सदा आकर्षित करेगी, विशेषकर वहाँ जहाँ सभाएँ निम्न सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र में आयोजित की जाती हैं, क्योंकि:-

दुर्भाग्यवश, ऐसे स्थानों में सदा कई बीमार लोग होते हैं। उनमें से कइयों के आप-पास या तो चिकित्सा सुविधाएँ नहीं होतीं या वे खर्चा नहीं उठा सकते हैं। ऐसे लोगों में अक्सर चंगाई के लिए मूल विश्वास होता है। जब वे चंगाई का संदेश सुनते हैं, तो वे तुरन्त इसे ले लेते हैं और अपनी चंगाई के लिए विश्वास करते हैं। एक बार जब बात फैल जाती है कि परमेश्वर बीमारों को चंगा कर रहा है, तो लोग बड़ी संख्या में सभाओं में आने लगते हैं।

विज्ञापन और प्रचार

एक सफल क्रूसेड कार्यक्रम में एक सबसे आवश्यक तत्त्व स्थानीय जनसंख्या को बताना है कि क्रूसेड होनेवाला है। एक बड़ी सार्वजनिक स्थान भाड़े पर लेना बेकार होगा यदि किसी को सभाओं के बारे में पता न हो। आप जिस प्रकार के विज्ञापन के साधन इस्तेमाल करना चाहते हैं, उसके अनुसार यह बजट की कभी-कभी एक मँहगी चीज हो सकती है। यदि विज्ञापन के आधुनिक साधन उपलब्ध हैं और आपका बजट उन्हें प्रयोग में लाने की अनुमति देता है, तब ये सभाओं को सूचित करने के प्रभावशाली माध्यम हो सकते हैं।

टीवी, रोडियो या प्रेस में इन्टरव्यू पाओ

यदि आपके पास क्रूसेड में कुछ खबरयोग्य तत्त्व हैं तो आप अखबार या टीवी, रोडियो में इन्टरव्यू दे सकते हैं। या यदि आप विज्ञापनों के लिए स्थान खरीदते हो तो आप एक इन्टरव्यू या लेख की सिफारिश भी कर सकते हो। यह महत्त्वपूर्ण है कि आप इसके लिए एक सकारात्मक प्रतिक्रिया पाएँ। इसलिए इसे शक्तिशाली और लोगों के रुचि का होना चाहिए।

निश्चित करो कि जिसकी आप प्रतिज्ञा करते हो उसे प्रदान भी करो।

यदि आप निधड़क कुछ प्रतिज्ञा करते हो जिसे सिद्ध करने में अयोग्य ठहरते हो तो नाटकीय विज्ञापन एक गंभीर अपकर्ष पैदा कर सकता है। यह तब होता है जब प्रचार ने निधड़क बातें कही हैं, जसे कि, "अंधे देखते हैं, बहरे सुनते हैं, चमत्कार होते हैं" आदि। यदि यह चीजें हो रही हैं तो - बहुत अच्छा है। परन्तु आप विज्ञापन दें और वे न हों, तो लोगों का भ्रम दूर हो जाता है या वे निराश हो जाते हैं और संदेही बन जाते हैं। जब तक परमेश्वर इस प्रकार की चीजों को करने नहीं लगता तब तक ऐसे विज्ञापनों को कम प्रयोग में लाना कहीं अच्छा होगा। एक बार जब वे घटने लगती हैं वे अपना प्रचार आप करती हैं। लोग अपनी गवाहियाँ सुनाने लगते हैं और जो उनके साथ घटा है बताने लगते हैं। लोगों द्वारा कही गई गवाही अक्सर विज्ञापन का सबसे प्रभावशाली साधन है।

मीडिया विज्ञापन सदा उपलब्ध नहीं होता है।

मुझे अनुभूति है कि आप में से कइयों को मीडिया विज्ञापन उपलब्ध नहीं है। आपको अल्प पार्श्वचित्र वाले साधनों पर निर्भर होना होगा। यदि आप एक छोटे कस्बे में अभियान कर रहे हैं, तो मुख्य सड़क पर एक बड़ा बैनर सरलता से व्यवस्थित किया जा सकता है। अपने आप से पूछो, "इस स्थान में लोग अपने माल का विज्ञापन कैसे करते हैं?" तब वैसे ही तरीकों को प्रयोग में लाओ। स्थानीय सुपरमार्केट में विज्ञापन। दुकान की खिड़कियों में विज्ञापन के पोस्टर लगाना। बाज़ार में आकर्षित पर्चे बाँटना। यदि आपको गश्ती ध्वनिपेटी इस्तेमाल करने की अनुमति मिले, तो शहर और आसपास के इलाकों में सभाओं का प्रचार करते हुए गाड़ी में फिरो। सबसे बढ़कर, अपनी कल्पना को प्रयोग में लाओ। अपने कार्यक्रम का प्रचार करने के लिए कुछ नूतन तरीकों की खोज करो। मुख्य बात लोगों को बताना है कि आप यहाँ हैं और आप क्या करनेवाले हैं और इसे इस तरीके से करो जिससे उनकी रुचि और अनुकूल प्रतिक्रिया पा सको। किसी प्रकार, किसी तरीके से आपको लोगों का ध्यान और रुचि आकर्षित करनी है।

"फालो-अप" क्रियाविधि आवश्यक है।

अपना क्रूसेड आरम्भ करने से पहले ही, आपको उन सब का फालो-अप करने की उचित रूप से तैयारी करनी है जो मसीह की ओर वचनबद्धता दिखाएँगे। इसे करने में असफलता, मछलियों को पकड़ने के बाद उन्हें रखने के किसी साधन की तैयारी बिना मछली पकड़ने जाने जैसा है।

आपको अच्छे सलाहकारों की आवश्यकता है।

जितनी जल्दी हो सके नए धर्मान्तरितों के साथ आपको कुछ सम्बंध स्थापित करना है, यानि, उस सभा को छोड़ने से पहले जिसमें उन्होंने समर्पण किया है। जब वे मंच के सामने आते हैं तो आपके और आपके सलाहकारों के साथ उनकी भेंट हो।

- उनके साथ एक व्यक्तिगत सम्पर्क का बिन्दु स्थापित करो।
- उनके साथ प्रार्थना करो। उन्हें कुछ सहायक साहित्य दो।
- उनका नाम और पता ले लो।
- जितनी जल्दी हो सके किसी का उनसे मिलने जाने का प्रबंध करो।
- उनके साथ करीबी सम्बंध बनाए रखने का कुछ व्यावहारिक प्रबंध करो।
- जितनी सभाओं में हो सकता है उतनी सभाओं में उनके आने का प्रबंध करो।

"क्रूसेड से कलीसिया" का परिवर्तन बनाना।

अब हम एक बहुत की गम्भीर बिन्दु पर आते हैं जहाँ हम नए धर्मान्तरितों को एक उत्तेजक क्रूसेड सभा से विश्वासियों की स्थानीय देह का एक भाग बनने के परिवर्तन में सहायता करते हैं।

अक्सर उचित यह है कि जब तक गतिमात्रा बनी हुई है क्रूसेड चलता रहे। यदि उपस्थित लोगों की संख्या लगातार अच्छी बनी हुई है और प्रकट रूप से सभाओं में काफी रुचि बनी हुई है, तो उन्हें जारी रखिए। क्रूसेड की उत्तेजना और प्रेरणा एक बहुत बढ़िया वातावरण बनाता है जिसमें नए विश्वासियों के लिए कुछ आधारीय शिक्षा आरम्भ की जा सकती है। एक क्रमिक परिवर्तन लाना आरम्भ करो। क्रूसेड का वातावरण समाप्त मत करो, इसे जारी रहने दो और क्रमिक रूप से शिक्षा और व्यवहार ले आओ जो आपको भीड़ को देह बनाने में सहायता करेंगे।

यह अदभुत होता है जब क्रूसेड की सुसमाचार प्रचार गतिमात्रा को स्थानीय कलीसिया के रूप में ले जाया जाता है। लोगों को जीतनेवाली घटना के साथ एक सुस्पष्ट उत्तेजना और उत्साह जुड़ा होता है जिसे जितना लम्बा हो सके चलाते रहने की आवश्यकता होती है। नए धर्मान्तरित अच्छे लोगों को जीतनेवाले बनते हैं। सुसमाचार प्रकार के जोश की उत्तेजना और गतिमात्र कभी खोने न पाओ। स्थानीय कलीसिया उत्पन्न होने के बाद भी, इसे लोगों को जीतनेवाली कलीसिया बनाने का प्रयत्न करो।

2: <u>**ग्रह सभाएँ तरीका**</u>

क्रूसेड तरीके की तुलना में कलीसिया की स्थापना का यह एक कम नाटकीय और प्रभावशाली तरीका है, परन्तु इसका समर्थन बहुत अधिक है और अधिक निरन्तर प्रयोग में लाया जाता है।

क्रूसेड ढंग की तुलना में यह तरीका कई और सेवकाइयों के लिए खुला है। मैं अनेक प्रभावशाली कलीसिया के स्थापकों को जानता हूँ जिन्होंने सफलतापूर्वक इस तरीके को प्रयोग में लाया है। वे कोई ऊँचे पार्श्वचित्र के सेवक नहीं हैं। असल में उनमें से अधिकाँश सामान्य प्रचारक हैं जिन्हें परमेश्वर ने नई मण्डलिया स्थापित करने के द्वारा उसका राज्य फैलाने का बोझ दिया है।

मुझे एशिया में एक अच्छे मित्र की याद है जिसने अपनी सेवकाई के जीवन भर में कई नई कलीसियाएँ स्थापित कीं। वह कोई सामर्थी प्रचारक नहीं था, और न ही उसका कोई चमत्कारिक व्यक्तित्व था। सेवकाई में आने से पहले वह एक किसान था और मेरा अनुमान है कि वह कुछ अच्छे कृषीय सिद्धान्त जानता था जिनसे उसे कलीसिया की स्थपना की प्रक्रिया को समझने में सहायता मिली होगी।

उसने अक्सर "तम्बू बनानेवाले की भूमिका" अपनाई। परमेश्वर उसके हृदय में एक शहर की इच्छा डालता था और जल्दी ही वह और उसका परिवार उस शहर में रहने चले जाते। परिवार के खर्चे के लिए वह किसी प्रकार की नौकरी ले लेता, तब एक घर भाड़े पर या खरीद लेता और ग्रह सभाएं आरम्भ करता। वह सदा शान्ति से आरम्भ करता और लगा रहता, और उसके पास कुछ धर्मान्तरित इकट्ठे हो जाते और विश्वासियों की एक स्थानीय मण्डली बन जाती। उसने कभी भी आश्चर्यजनक परिणाम नहीं देखे परन्तु कई वर्षों के दौरान उसने कई कलीसियाएँ सफलतापूर्वक स्थापित कीं। उसका नाम कभी भी प्रसिद्ध नहीं हुआ। वह कोई नामी प्रचारक भी नहीं था। वह बड़े बड़े सम्मेलनों में वक्ता के रूप में बुलाया नहीं गया था। परन्तु मुझे निश्चय है कि जब वह

अनन्तकाल के प्रकाश में अपने प्रभु के सम्मुख खड़ा होगा, तो अपनी विश्वासयोग्यता और आज्ञापालन के लिए एक बड़ा इनाम पाएगा।

कलीसिया की स्थापना, इन्डोनेशिया ढंग में।

इन्डोनेशिया में कलीसिया की स्थापना मसीही कार्यक्रम का बड़ी विशेषता है और नेशनल कलीसिया कई वर्षों के दौरान प्रभावशाली तरीके से बढ़ी है। अनेक अच्छे कारणों से कलीसिया की स्थापना का प्रमुख तरीका ग्रह सभाएँ आरम्भ करना है। इस तरीके की प्रभावकारिता की पुष्टि करने के कई नाटकीय आँकड़े हैं। इस तरीके से सारे देश भर में हजारों नई कलीसियाएँ अस्तित्व में आई हैं। परन्तु जावा के द्वीप की कलीसिया की स्थापना की सेवकाई का एक उदाहरण मैं देना, और कुछ सिद्धान्त जिनका वे पालन करते हैं उन्हें देखना चाहता हूँ।

<u>इस तरीके के कुछ मूल सिद्धान्त नीचे दिए गए हैं:</u>

- **एक दल बनाओ।**

प्रार्थनापूर्वक लोगों का एक दल बनाओ जो नई मण्डली स्थापित करने के लिए समर्पित हैं। दल में कई परिवार या कुछ एकल लोग हो सकते हैं।
अच्छे सम्बंध बनाने और आपसी भरोसे पर जोर देते हुए संगति करना और प्रार्थना करना आरम्भ करो।

- **एक कस्बे, या गाँव को लक्ष्य बनाओ।**

पवित्र आत्मा को कोई विशेष स्थान आपके मनों में लाने दो और तब अपनी प्रार्थनाएँ उस जाति पर केन्द्रित करने लगो। आत्मिक अधिकार लेना सीखो और इसे अपने लक्ष्य-क्षेत्र के विषय में प्रयोग में लाने लगो।

- **वहाँ लोगों से सम्पर्क आरम्भ करो।**

उस शहर में चले जाओ और स्थानीय लोगों से सम्पर्क बनाने लगो। शहर के कुछ प्रभावशाली लोगों, जैसे कि मेयर और परिषद्, स्कूल के प्रिंसिपल और शिक्षक, व्यापारी, दुकानदार आदि, से मित्रभाव में अपना परिचय करो।

- **सुसमाचार सुनाना आरम्भ करो।**

एक दीन रवैया और एक दीन, अहानिकर मुद्रा रखो। यह वहाँ विशेषकर आवश्यक है जहाँ एक सम्भावित विरोधी धार्मिक वातावरण है। अच्छा, आकर्षित साहित्य उपयोग में लाओ।

- **नए विश्वासी बनाओ।**

आपके पहले धर्मान्तिरित बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। आप भावी कलीसिया की नींव रख रहे हो और आपको अच्छी, पक्की सामग्री चाहिए। इसलिए प्रार्थनापूर्वक परमेश्वर पर भरोसा करो कि वह आपको अच्छे लोग देगा जो एक मजबूत केन्द्र बनाएँगे और नई कलीसिया के लिए एक टिकाऊ नींव रखेंगे।

- **व्यक्ति के घर में सभाएँ आरम्भ करो।**

एक बार जब आप एक स्थानीय व्यक्ति के घर में सभाएं आरम्भ करते हो तो आप उस पड़ोस में छाने लगोगे। आप स्थानीय लोगों को संकेत दोगे कि यह नई कलीसिया "बाहरवालों" का ही काम नहीं है बल्कि इसे स्थानीय लोगों का सहयोग मिला है जिन्हें वे जानते हैं। इस नए समूह की स्थानीय पहचान पर जोर देना आवश्यक है।

- **चंगाई की सेवकाई पर जोर दो।**

चंगाई की सेवकाई एक समाज को खोलने के लिए सबसे प्रभावशाली कुंजी है। हर समाज में बीमार और घायल लोग होते हैं। एक बार जब उनमें से कुछ लोगों की वाकई सहायता और चंगाई की गई है, तब बात फैलने लगेगी और और लोग भी शीघ्रता से आएँगे। बीमारी एक ज्ञात आवश्यकता है जो लगभग हर परिवार को प्रभावित करती है और चंगाई कुछ ऐसा है जिसमें हर व्यक्ति रुचि रखता है।

आप एक सेवक के रूप में जिसकी चंगाई की सेवकाई है न पहचाने जाते हों, परन्तु यह आपको बीमारों के लिए प्रार्थना करने से रोक नहीं कहता है। यीशु ने कहा कि विश्वासियों का एक चिन्ह यह भी होगा कि "वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे।" परमेश्वर की अगुवाई की ओर संवेदनशील और क्रियाशील बनो। जब कभी भी आपको लगे कि परमेश्वर आपको बीमारों के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है, ऐसा करो। आपको आश्चर्य होगा कि किस अदभुत तरीके से परमेश्वर विश्वास की इन अभिव्यक्तियों को इस्तेमाल करता है।

3: **एक पुत्री कलीसिया स्थापित करो**

हर स्थानीय कलीसिया की आसपास के क्षेत्रों में पहुँचने और और अधिक कलीसियाएँ स्थापित करने की इच्छा होनी चाहिए। एक अधिक व्यापक समाज में पहुँचने का यह सबसे प्रभावशाली तरीका है। इसे पूरा करने का सबसे प्रभावशाली तरीका ग्रह सभाएँ आरम्भ करके करने का है। हर स्थानीय कलीसिया का आदेश पवित्र लोगों को "सेवा का काम" करने के लिए तैयार करने का है। (इफि. 4:12)।

हर पास्टर को:

- **स्थानीय अगुआई को प्रशिक्षित करने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।**

हर कलीसिया का एक अगुआई प्रशिक्षण कार्यक्रम कार्य रहा होना चाहिए। आदर्शतः इसमें स्थानीय कलीसिया स्थापना में प्रशिक्षण सम्मिलित होना चाहिए। अगुआई के दूसरे कार्य भी सिखाए जाने चाहिए, और भाग लेनेवालों को जितना अधिक हो सके उतना अधिक स्थानीय कलीसिया में सेवकाई के कार्य करने के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। इससे कलीसिया की सेवकाई की सम्भावना बढ़ती है और भावी अगुवे तैयार होते हैं। आदर्शतः सीनियर पास्टर को अपने अगुवों की देखभाल करनी चाहिए, और उन्हें बदले में भेड़ों की करनी चाहिए। इससे सम्भावित अगुवों को सेवा करते हुए प्रशिक्षण मिलता है और वे उस समय के लिए तैयार होते हैं जब वे पास्टर बनेंगे।

- **कलीसिया के आसपास हर भौगोलिक क्षेत्र में ग्रह सभाएँ आरम्भ करनी चाहिएँ।**

हर कलीसिया को ग्रह कलीसियाओं का नेट-वर्क चाहिए। कोई भी कलीसिया विशाल उत्सव प्रकार की सभाओं में इसके सदस्यों की आवश्यकताओं को उचित रूप से पूरा नहीं कर सकती है। लोगों को छोटे समूहों की पारस्परिक क्रिया की करीबी घनिष्ठता भी चाहिए होती है। अगुवाई के इस स्तर पर आपके सहायक पास्टर कार्य करना आरम्भ कर सकते हैं। यहाँ वे मसीहियों के लिए आत्मिक देखभाल और निरीक्षण प्रदान करने से सम्बंधित काम में बहुमूल्य अनुभव पा सकते हैं।

- **उस क्षेत्र में प्रारंभ करने के लिए ग्रह कलीसिया को उपयोग में लाना चाहिए।**

उस पारस्परिक उन्नति के अतिरिक्त जो इन छोटे समूहों में हो सकती है, अनौपचारिक अधार्मिक वातावरण एक प्रभावशाली स्थान प्रदान करता है जहाँ गैर मसीही पड़ोसियों और मित्रों को बुलाया जा सकता है। ग्रह समूह को इसके सामाजिक वातावरण से कभी भी अलग मत होने दो। उन्हें समाज से सम्बंध बनाने के नए नए तरीके खोजते रहने के लिए प्रोत्साहित करो। सुसमाचार प्रचार उद्यमों को प्रोत्साहन दो।

- **अन्त में वहाँ एक नई कलीसिया आरम्भ करने का लक्ष्य रखना चाहिए।**

यदि एक विशेष समूह बढ़त के बहुत अच्छे संकेत देता है तो उसे उस स्थान में एक नई कलीसिया बनने की सम्भावना पर केन्द्रित होने के लिए प्रोत्साहित करो। अगुवाई पर कुछ ध्यान केन्द्रित करो और उस स्थिति में पास्टर का कार्य करने के काम के लिए उन्हें तैयार करने लगो।

प्रतिरोपण की क्रियाविधि

हर माली प्रतिरोपण की क्रियाविधि से परिचित होता है, जिसमें प्रारंभ में बीज एक डिब्बे में बोये जाते हैं और फिर बाद में बगीचे में लगा दिए जाते हैं। जबकि पौधे छोटे हैं वे सब मिलकर माली की निगरानी और निरीक्षण में बढ़ सकते हैं। परन्तु जैसे वे बड़े और मजबूत होने लगते हैं, वे प्रतिरोपण के लिए उपयुक्त हो जाते हैं।

स्थानीय कलीसिया को बीज के एक डिब्बे के रूप देखा जाना चाहिए जिसमें सदस्यों का करीबी निरीक्षण किया जा सकता है, पानी दिया और भोजन दिया जा सकता है जब तक वे विकास के एक चरण तक नहीं पहुँच जाते, तब उनका प्रतिरोपण सम्भव हो सकता है।
ऐसे परिवार बीज के डिब्बे में से दूसरे भौगोलिक क्षेत्र में, जहाँ एक नई कलीसिया आरम्भ करने की सम्भावना है, भेजे जा सकते हैं। आदर्शतः यह एक या दो परिवारों के साथ ही नहीं किया जाना चाहिए। बहुत अच्छा होगा यदि कई परिवार एक साथ भेजे जाएँ जो मिलकर एक शक्तिशाली केन्द्र बन सकते हैं। इसे अधिकारिक रूप से पास्टर और मण्डली की पूरी आशीष के साथ किया जाना चाहिए, जो नई मण्डली का नया अगुवा भी नियुक्त कर सकते हैं। यह डाली या पुत्री कलीसिया तब तक माता कलीसिया के आवरक में रहे जब तक यह अकेले खड़े होने के लिए परिपक्व नहीं हो जाती।
यदि और कलीसियाएँ इस प्रकार के प्रसारण कार्यक्रम को करने लगें, तो कम "विखण्डन और विभाजन" होंगे जिसमें कुछ मण्डलियों के टुकड़े हो जाते हैं। तब प्रसन्न माता-पिता के यहाँ नई कलीसियाएँ जन्म लेंगी और प्रतिद्वन्द्ध और संघर्ष कम होगा। ये चीजें कलीसियाओं की प्रतिष्ठा और नाम के लिए बहुत ही हानिकारक होती हैं।

4: <u>पैक्ट तरीका</u>

यह तरीका जिसे "Plant A Church Together" या "मिलकर कलीसिया स्थापित करो" तरीका कहते हैं, एशिया के असंख्य भागों में सफलतापूर्वक उपयोग में लाया जा रहा है। मेरा विश्वास है कि क्यों इस तरीके पर आशीष है, क्योंकि इसमें नेटवर्किंग, जिम्मेवारियाँ और साधन बाँटना, मिलकर काम करना सम्मिलित है। ये सब बाइबल के सिद्धान्त हैं जिन्हें परमेश्वर देखना और आशीष देना चाहता है।

"पैक्ट" कार्यक्रम इस चीज पर निर्भर करता है कि कुछ दल समझौता करें और व्यवस्था करें जिससे वे एक नई मण्डली स्थापित करने के लिए मिलकर काम कर सकते हैं। यह इन में से किसी भी तरीके से प्राप्त किया जा सकता है:

- **शाखा, या पुत्री कलीसिया कार्यक्रम।**

जिसमें एक स्थानीय कलीसिया उनकी आवरक और निरीक्षण में एक कलीसिया स्थापक को एक नई मण्डली स्थापित करने में यहायता करती है। यह तब सबसे अधिक प्रभावशाली होता है जब जननी कलीसिया कई परिवारों को लक्षित क्षेत्र में रहने के लिए भेज दोती है। तब वे नई मण्डली का केन्द्र बनते हैं।

- **दो या अधिक पड़ोसी कलीसियाओं का जुड़ना।**

जब एक कलीलिया सम्भवतः उतनी बड़ी नहीं है कि नई कलीसिया का उत्तरदायी हो सके, तब एक क्षेत्र की दो या अधिक कलीसियाएँ ऐसा करने के लिए इकट्ठी होती हैं। हर एक कई एक परिवारों को दें सकती हैं जो उस क्षेत्र में रहती हैं जहाँ नई मण्डली स्थापित की जाने वाली है। यह तब बड़ी तरलता से हो जाता है जब उत्तरदायी कलीसियाएँ एक ही समूह या सम्प्रदाय की होती हैं।

- **जिला या क्षेत्रीय अगुआई परियोजना।**

इसमें एक क्षेत्र की असंख्य कलीसियाएँ उनके साधन और कार्यकर्त्ताओं को अधिक मण्डलियाँ स्थापित करने के लिए इकट्ठे होती हैं। इसका एक उदाहरण एक बड़ा कस्बा या शहर है जहाँ उसी समूह की पहले से अनेक कलीसियाएँ हैं। उदाहरणार्थ, यदि वहाँ पँद्रह कलीसियाएँ हैं तो वे अगले पाँच वर्षों बीस तक होना चाहें।

<u>ऐसे कार्यक्रम में कुछ मूलभूत तत्त्व होंगे:</u>
<u>अग्रेसर कार्यकर्त्ता:</u>

मनोबल
अग्रेसर कार्यकर्त्ताओं का मनोबल बहुत ऊँचा होना चाहिए। उन्हें साहसी, और उनका सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए।

प्रेरणा

वे जोश के साथ बहुत प्रेरित हों जो निराशा, सताव और विरोध के सामने बने रहेंगे। वे अनुशासन और संकल्प के साथ स्वयं आरम्भ करनेवाले हों। कलीसिया स्थापक सदा बहुत ही प्रेरित व्यक्ति होने चाहिए।

संदेश
अग्रेसर के पास सुनाने के लिए एक सकारात्मक संदेश होना चाहिए, और वह इस प्रकार सुना सके जिससे वह लोगों को आकर्षित और मुग्ध कर सके।
एक सामर्थी सार्वजनिक सेवकाई आवश्यक है।

सेवकाई
नई मण्डली आरम्भ करने के लिए केवल प्रचार ही सेवकाई का पहलू नहीं होना चाहिए। कार्यकर्त्ता को ऐसी सेवकाई निपुणताएँ भी चाहिए:
- प्रभावशाली प्रार्थना की सेवकाई
- एक चंगाई और छुटकारा की सेवकाई
- सलाह देने की योग्यता

कार्यकर्त्ताओं का सहयोग
कलीसिया की स्थापना में काफी आर्थिक माँगें होंगी और उत्तरदायी और कार्यकर्त्ता मिलकर पहले से तय कर लें कि बजट कैसे पूरा होगा। बजट में कुछ चीजें हो सकती हैं:

कार्यकर्त्ताओं और उनके परिवारों के लिए भोड़े के मकान।
सभा के लिए भाड़े का स्थान।
परिचालन खर्चे।
कार्यकर्त्ताओं को आर्थिक सहयोग।

कार्यकर्त्ताओं का निरीक्षण
अधिकाँश अग्रेसर कार्यकर्त्ता नौसिखिए होते हैं और उन्हें अच्छे निरीक्षण, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। यह एक कारण है कि क्यों पुत्री कलीसिया ढंग बेहतर है। उत्तरदायी कलीसिया का वरिष्ठ पास्टर अग्रेसर कार्यकर्त्ता को निरीक्षण दे सकता है।

5: **"सेवा के केन्द्र" विचार**
मेरी व्यक्तिगत राय है कि अगले कुछ वर्षों की महान फसल में जो कलीसियाएँ आरम्भ की जाएँगी वे समकालीन पारम्परिक कलीसियाओं से कई तरीकों से भिन्न होंगी। मैं उन कुछ विशेषताओं को बताना चाहता हूँ जो मुझे लगता है भिन्न होंगे।

कम "धार्मिक"
कलीसिया का नया ढंग धार्मिक दिखावे और रूप-रंग की चिन्ता नहीं करेंगा। यह उन बहुत सारी धार्मिक विधियों को जो पारम्परिक कलीसियाओं से जुड़े हैं त्याग देंगे। इसका ढंग अधिक एकांगी, यथार्थवादी, व्यावहारिक, और अर्थपूर्ण होगा।

कम सम्प्रदायिक बलाघात
"स्वतन्त्र कलीसियाएँ" बहुत बढ़ती जाएँगी जो संस्थापन संबंधन से नहीं बल्कि एक दूसरे के साथ संगति के सम्बंध रखेंगी। स्थानीय कलीसियाएँ भी सम्प्रदाय या सिद्धान्त संबंधों के बजाय भौगोलिक सन्निकटता के आधार पर एक दूसरे से सम्बंध रखेंगी।

कलीसिया की इमारत पर कम बलाघात
मण्डलियाँ कलीसिया की इमारतों के विषय में कम चिन्ता करेंगी और अ-धार्मिक प्रकार के स्थानों जैसे कि गोदाम, सामाजिक क्लब, सार्वजनिक इमारतों आदि में मिला करेंगी।

सच्ची और झूठी कलीसिया में ध्रुवण

आजकल सच्ची कलीसिया और पन्थों में अन्तर समझना कठिन है। परन्तु कुछ नाटकीय परिवर्तन होंगे जो अन्तर को स्पष्ट कर देंगे।

अधिक अयाजकीय सेवकों का आवेष्ठन

आधुनिक कलीसियाओं में "याजक" और आम लोगों में एक स्पष्ट सीमा है, परन्तु अन्तिम दिनों में ऐसी कोई सीमा नहीं रहेगी। सेवकाई नियुक्त सेवकों तक ही सीमित नहीं रहेगी, बल्कि पवित्र आत्मा व्यवसायी पुरुष और स्त्री, स्कूल शिक्षक, ग्रहणियों आदि जैसे विश्वासियों में से कार्यकर्त्ताओं की एक सेना चुनेगा।

अधिक पवित्र आत्मा के कार्य होंगे

कार्यकर्त्ताओं के वरदान वो नहीं होंगे जो सेमिनरियों या कालेजों में से प्राप्त किए गए हैं बल्कि जो पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए हैं। सच्ची कलीसिया के सेवक किसी मानवीय उपलब्धी या निपुणता के बजाय पवित्र आत्मा के सामर्थ्य पर अधिक निर्भर रहेंगे।

अधिक संस्कृतिक वास्तविकता

पश्चिमी उपनिवेशवाद के संकेत जो आज की कलीसिया में कितने प्रत्यक्ष हैं, नाटकीय रूप से कम हो जाएँगे और वास्तविक संस्कृतिक संकेतों से बदले जाएंगे। उदाहरणार्थ, चीन की कलीसिया अभी से ही बहुत भिन्न, चीन की कलीसिया बन गई है। इसका उससे एक भिन्न ढंग और रूप-रंग है जिसे प्रारंभिक स्थापकों ने दिया था।

अधिक सामाजिक सेवा संबंधित

जिन कलीसियाओं को पवित्र आत्मा सारे संसार भर में स्थापित करेगा, उनका नमूना बाइबल की नए नियम की कलीसिया होगी। उस कलीसिया का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व इसके समय के सामाजिक ढाँचे पर इसका प्रभाव था।
भावी कलीसिया के विश्वासी याजकों का राज्य होंगे जो उनके अपने अपने समाजों पर बहुत भारी राज्य का प्रभाव डालेंगे। वे उनके जीवन उनके समान के मुख्य बहाव से प्रार्थक्य और अलगाव में नहीं जीएंगे। वे उनके समकक्ष लोगों के बीच होंगे, उनके समाजों को प्रभावित करेंगे और उनके समाजों पर राज्य के जीवन का प्रभाव पैदा करेंगे।
हाल में विदेश में सिखाते समय मेरा विश्वास है परमेश्वर ने मुझे एक नए प्रकार की मसीही सेवकाई की झलक दी है जिसे मैं विकसित करना चाहता हूँ। तब से मैं कलीलिया स्थापकों को उस दर्शन से चुनौती दे रहा हूँ और आपको भी इस विचार के विषय में बताने की स्वतन्त्रता ले रहा हूँ।

दर्शन, जिसे मैं "सेवा के केन्द्र", यानि, केन्द्र जिन्हें समाज की आवश्यकताओं की सेवा करने के लिए स्थापित किया जाता है, कह रहा हूँ स्थापित करने से सम्बंधित है। पारम्परिक भाव से प्रायिक क्रियाओं के साथ "कलीसिया" स्थापित करने के बजाय, **दर्शन एक केन्द्र स्थापित करने का है जो समाज को विभिन्न वैध सेवाएँ प्रदान कर सकता है।** अग्रेसर एक नए क्षेत्र में एक स्पष्ट उद्देश्य के साथ जाता है - उस समुदाय की यीशु के नाम में सेवा करने के लिए।
विचार इस अनुभूति पर निर्भर है कि यीशु, हमारा अन्तिम आदर्श इस संसार में एक सेवक के रूप में आया था। (फिलि. 2:1-5)। उसने कहा, "मैं सेवा करवाने नहीं, सेवा करने आया हूँ।" उसके चेलों के रूप में हमें भी उसके नाम में सेवक होना है। जैसे हम नए समाज में जाते हैं, यह बात हमारे मन में सबसे प्रमुख होनी चाहिए।

समाज की सेवा करना

प्रारंभ में अग्रेसर सेवक लक्षित क्षेत्र के हर घर का सर्वेक्षण करेगा। वह हर घर के द्वार पर जाएगा और कहेगा, "मेरा नाम .... है और मैं इस क्षेत्र के हर घर में इस समाज की सामाजिक और आत्मिक आवस्यकताओं का पता लगाने जा रहा हूँ। क्या आप मेरे कुछ प्रश्नों के उत्तर देकर मेरी सहायता करेंगे ?"

> पहले, कृपया अपने परिवार का नाम बताइए ?
> क्या आपके कोई बच्चे हैं ? कितने हैं ?
> कितने लड़के और लड़कियाँ हैं और उनकी उम्र क्या होगी ?
> उनमें से कितने स्कूल जाते हैं ?
> क्या आप कोई समस्या अनुभव कर रहे हैं जिसमें हम आपकी सहायता कर सकें ?

किस प्रकार के कार्यक्रम या सुविधाएँ आपके बच्चों की सहायता कर सकती हैं ?

क्या "बच्चों की देखभाल करनेवाला कार्यक्रम" से आपको अपने परिवार की देखभाल अच्छी तरह करने में सहायता मिलेगी ?

क्या अँग्रेजी भाषा की कक्षा उनके लिए सहायक होगी ?

क्या एक साक्षरता की कक्षा उनके लिए सहायक होगी ?

क्या उनमें से कोई गितार बजाना सीखना चाहेगा ?

क्या आपके बच्चे एक नौजवान क्लब से जो जब खोला जाएगा, लाभ पाएँगे ?

इस प्रकार की बहुत सी क्रियाएं हैं जिन्हें आपके दल में से कोई चला सकता है जो स्थानीय नौजवानों के लिए सहायक और लाभकारी होंगी ?

एक बार जब वे आपके केन्द्र में आने लगेंगे, बाधाएँ टूट जाएँगी।

आप आरम्भ कर सकते हैं एक:

- विवाह मार्गदर्शन केन्द्र
- परिवार नियोजन केन्द्र
- अँग्रेजी भाषा केन्द्र
- एकाकी लोगों के लिए सामाजिक केन्द्र
- बच्चों की देखभाल केन्द्र या बालविहार

ऐसे एक कार्यक्रम में भाग लेने से जिसका मैं सुझाव दे रहा हूँ, कई चीजें पूरी की जा सकती हैं:

- आप अपना परिचय कस्बे के हर परिवार से कर सकते हैं।
- आप असंख्य मैत्रीपूर्ण सम्पर्क बना सकते हैं।
- लोग देखते हैं कि आप यहाँ उनकी सहायता करने के लिए हैं।
- आप उनके कल्याण में इमानदारी से रुचि रखने वाले दिखते हैं।
- आपका मैत्रीपूर्ण, सहायक रूप स्थापित हो जाता है।
- आप स्पष्ट अनुभव कर लेते हैं कि आप एक धार्मिक सनकी नहीं हो।
- आप उनसे उनकी रुचियों और आवश्यकताओं के स्तर पर मिलते हो।

लोगों को केन्द्र में ला सकने के द्वारा, जहाँ विभिन्न प्रकार की क्रियाएं हो रही हैं जिसमें वे या उनके परिवार वाले रुचि रख सकते हैं, लोगों पता चलता है कि आप कहाँ स्थित हैं।

यह आप की क्रियाओं के केन्द्र को और अधिक सुगम्य बनाता है। लोगों को स्पष्ट अनुभव होता है कि आप मात्र धर्म में समय गँवानेवाले नहीं हैं। आप एक असली व्यक्ति हैं जो उनके जीवनों की असली आवश्यकताओं में रुचि रखते हैं।

आप किस प्रकार की कलीसिया में जाना चाहोगे?

आप अपने सर्वेक्षण में कुछ "कलीसिया से सम्बंधित" प्रश्न सम्मिलित कर सकते हो।

आप पूछ सकते हो:

- क्या कारण है आप कलीसिया क्यों नहीं जाते हैं ?
- आप किस प्रकार की कलीसिया में जाना चाहेंगे ?
- हम, स्थानीय कलीसिया आपके लिए क्या कर सकते हैं ?

जितने द्वार हैं उतनी चाबियाँ भी हैं।

एक नई कलीसिया स्थापित करने के लिए अनेक मार्ग और तरीके हैं जिन्हें उपयोग में लाया जा सकता है। हमें अपनी पवित्र कल्पना को उपयोग में लाना है और पवित्र आत्मा को अपनी युक्तियाँ हमें बताने देना है। यीशु "दाऊद की कुंजी रखता है, जिसके खोले हुए को कोई बन्द नहीं कर सकता और बन्द किए हुए को कोई खोल नहीं सकता है।" (प्रकाशित. 3:7-8)।

सदा याद रखो कि, "**यदि आपके पास सही चाबी है तो कोई भी द्वार बन्द नहीं रह सकता है।**"

यदि परमेश्वर आपको किसी स्थान में रखना चाहता है तो कोई भी मनुष्य आपको बाहर नहीं रख सकता है!

सीखने की क्रियाएँ:

1. इस अध्याय में जिक्र किए हुए कलीसिया की स्थापना के 3 तरीके संक्षिप्त में बताओ।
2. आपकी सेवकाई में कौन सा तरीका ठीक बैठता है और क्यों ?

अध्याय 10 – कलीसिया की स्थापना में सामर्थ्य के साथ सुसमाचार प्रचार

जब हम प्रभावशाली कलीसिया की स्थापना से सम्बंधित सिद्धान्त बाइबल में से खोजते हैं तो प्रारंभिक कलीसिया के जन्म और विकास में उस महत्त्वपूर्ण भाग को अनदेखा नहीं कर सकते हैं जिसे सामर्थ्य के साथ सुसमाचार प्रचार ने निभाया था। प्रेरितों की सारी पुस्तक में, सामर्थ्य के कामों की प्रभावकारिता के असंख्य उदाहरण हम देखते हैं और किस तरीके से इन कामों ने

- बोलने के लिए द्वार खोले।
- लोगों की भीड़ की भीड़ को आकर्षित किया, और
- असंख्य नए क्षेत्रों में कलीसियाएं स्थापित करने में सहायता की।

सामर्थ्य के साथ सुसमाचार प्रचार निश्चय ही बाइबल के दिनों तक ही सीमित नहीं था।

इस बाइबल पर आधारित सेवकाई की प्रभावशाली नियुक्ति और सुसमाचार प्रचार और कलीसिया स्थापना में प्रारंभ करने की इसकी प्रभावकारिता के अनेक आधुनिक उदाहरण हैं। लैटिन अमेरिका की बीसवीं सदी की महान बेदारी अलौकिक चिन्हों और चमत्कारों द्वारा सामर्थ्य के साथ प्रवर्तित की गई है। दक्षिण अमरीका में पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से कलीसियाओं की चामत्कारिक बढ़त अनेक चीजों का निर्विवाद प्रमाण है:

- परमेश्वर का सामर्थ्य कलीसिया से ले नहीं लिया गया है।
- चमत्कार अभी भी बीसवीं सदी में देखे जा रहे हैं।
- सामर्थ्य के साथ सुसमाचार अभी भी नए क्षेत्र को खोलने का सबसे प्रभावशाली तरीका है।

1: सामर्थ्य के साथ सुसमाचार प्रचार जैसे यीशु ने प्रयोग में लाया था।

यीशु हमारे जीवन के हर पहलू के लिए सर्वोच्च आदर्श है। यह हमारी सेवकाई के लिए निश्चय ही सच है। वह हमारा सर्वोच्च बाइबल का नमूना है। कोई भी मसीही इस पर कभी भी विवाद नहीं करेगा। वह एक परमेश्वर के सेवक के रूप में भी हमारा अति उत्तम उदाहरण है। जैसे हम उसके स्वरूप में बनने का प्रयास कर रहे हैं, हमें स्वीकार करना है कि उसके जीवन का अलौकिक पहलू अविवाद्य है। यदि हम अपनी सेवकाई उसकी सेवकाई के नमूने पर बनाना चाहें तो हमें अपनी सेवकाई में अलौकिक को देखने का विश्वास करना होगा।

वह हमारा:

- यशस्वी उदाहरण,
- अदभुत प्रेरणा, और
- मुख्य प्रेरणा है।

2: यीशु ने बीमारों को क्यों चंगा किया?

अपनी पूर्वकथित सेवकाई पूरी करने के लिए

मत्ती हमें बताता है कि, "उसने ..सब बीमारों को चंगा किया, ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो: 'उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।'" (मत्ती 8:16-17)।

अपना तरस व्यक्त करने के लिए

असंख्य वचन यीशु के तरस की बात करते हैं जो उसे लोगों की महान आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रेरित करते थे। यीशु ने "उन पर तरस खाया और उनके बीमारों को चंगा किया।" (मत्ती 14:14; 20:34; मरकुस 1:40-41; 5:19; 9:22)।

परमेश्वर की दया व्यक्त करने के लिए

इपफ्रुदीतुस की बात करते हुए, पौलुस कहता है, "परमेश्वर ने उस पर दया की, और केवल उस पर ही नहीं पर मुझ पर भी कि मुझे शोक पर शोक न हो।" (फिलि. 2:27)।

प्रमाणित करने के लिए कि परमेश्वर ने वास्तव में उसे भेजा है

जो चंगाइयाँ और चमत्कार यीशु की सेवकाई में होते थे, वे चिन्ह या पुष्टीकरण थे कि परमेश्वर ने उसे भेजा है, स्वीकृति दी है और उसके साथ है। पतरस कहता है, "यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रकट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए।" (प्रेरितों 2:22)।

- **शैतान के काम नष्ट करने के लिए**

बीमारी शैतान का एक काम है और यीशु इसे नष्ट करने के लिए प्रकट हुआ था।
"परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रकट हुआ कि शैतान के कामों का नाश करे।" (1 यूहन्ना 3:8)। "परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; वह भलाई करता और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।" (प्रेरितों 10:38)

- **परमेश्वर के काम प्रकट करने के लिए**

"कि परमेश्वर के काम उसमें प्रगट हों, जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है।" (यूहन्ना 9:1-7)।

- **परमेश्वर की महिमा प्रकट करने के लिए**

यीशु ने परमेश्वर के बड़े बड़े काम किए थे ताकि पिता की महिमा हो। लाजर की कब्र के पास खड़े होकर, यीशु ने मार्था को कहा, "यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।" (यूहन्ना 11:40)।
<u>ये सब उत्तम कारण हैं कि क्यों हमें यीशु का अनुकरण करने की चेष्टा करनी और बीमार और दुखियों को चंगा करना चाहिए। वे सामर्थी संकेत हैं कि परमेश्वर का राज्य आ गया है, और वे हमारी सेवकाई में प्रकट होने चाहिए।</u>

3: **<u>महान आदेश में बीमारों की चंगाई सम्मिलित है।</u>**

(मरकुस 16:15-22) "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। विश्वास करनेवालों के ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, साँपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक वस्तु भी पी जाएँ तौभी उनकी कुछ हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे। और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन।"
"यीशु भलाई करता और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।" (प्रेरितों 10:38)।

<u>चंगाई के प्रदर्शन और चमत्कार:</u>

- उनके साथ साथ चलेंगे जो सुसमाचार प्रचार के लिए सारे संसार में "जाते" हैं।
- विश्वासियों के सामने सुसमाचार की पुष्टि करते हैं।
- ने प्रारंभिक कलीसिया की नींव रखी थी।

4: **<u>हमें "जाना" है।</u>**

इस प्रतिज्ञा की पूर्ति को देखने के लिए हमें जाने और सुसमाचार का प्रचार करने के लिए तैयार रहना है। परमेश्वर हमारे जाने को आशीष देता है क्योंकि:

- यह आज्ञापालन का कदम है।
- यह विश्वास का कदम है।

कुछ प्रचारक उनकी सेवकाई में चिन्हों को होते हुए नहीं देखते हैं क्योंकि वे परमेश्वर की आज्ञा में विश्वास के साथ नहीं जाते हैं।

प्रारंभिक चेले विश्वास और आज्ञापालन के लोग थे। वे उसे करने लगे जिसकी आज्ञा यीशु ने उन्हें दी थी; सारे संसार में जाना और सब स्थान में सुसमाचार का प्रचार करना, और परमेश्वर उनके साथ था और उसके वचन को चिन्हों और चमत्कारों द्वारा प्रमाणित करता रहा। यदि हम उसकी आज्ञा का पालन करेंगे तो, हम अपेक्षा कर सकते हैं कि वह उसके वचन को चिन्हों और चमत्कारों द्वारा प्रमाणित करेगा।

जो तरीका मरकुस 16:18 में दिया गया है, " वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे", इसे "सुसमाचार प्रचार द्वारा चंगाई" कहा जा सकता है। इस तरीका की यीशु ने उन्हें उपयोग में लाने की आज्ञा दी है जो सारी सृष्टि में जाकर सुसमाचार का प्रचार करेंगे।

यह उनमें से एक चिन्ह है, जिसके विषय में उसने कहा उनके साथ रहेगा।

- सारे संसार में जाओ, सारी सृष्टि को सुसमाचार सुनाओ।
- विश्वास करनेवालों के ये चिन्ह होंगे।
- वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे।
- वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे।

"और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा।"

5: <u>बीमारों को चंगा कैसे करें।</u>

चंगाई की सेवकाई केवल कुछ चुने हुओं के लिए ही नहीं है जिनके पास लगता है "चंगाई का वरदान" है। न उन कुछ प्रचारकों के लिए जो चंगाई देनेवाले सुसमाचार प्रचारकों के नाम से प्रसिद्ध हैं।

<u>यीशु ने कहा ये चिन्ह उनके साथ साथ चलेंगे:</u>

अ: जो सुसमाचार का प्रचार करने को जाते हैं।

सुसमाचार यीशु के विषय में "अच्छी खबर" है। उस अच्छी खबर का अनिवार्य भाग यह है

- "उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।"
- यीशु ने हमारी बीमारियों और साथ में हमारे पापों को भी उठा लिया।
- उसने चंगाई और साथ में क्षमा भी मुहैया की है।
- उसने अपने सेवकाई के दौरान बीमारों को चंगा किया।
- उसने अपने चेलों को बीमारों को चंगा करने का अधिकार दिया है।
- वह कल, आज और कल एक सा है।

"फिर उसने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्माओं और बीमारियों को दूर करने की सामर्थ्य और अधिकार दिया, और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने और बीमारों को अच्छा करने के लिए भेजा।" (लूका 9:1-2)। "अत: वे निकलकर गाँव-गाँव सुसमाचार सुनाते, और हर कहीं लोगों को चंगा करते हुए फिरते रहे।" (लूका 9:6)।

उसने इस अधिकार को वापस नहीं लिया है।

अच्छी खबर यह है कि यीशु जीवित है।

कि उसके पास आज भी उद्धार करने और बीमारों को चंगा करने की सामर्थ्य है।

कुछ प्रचारक अच्छी खबर के बजाय बुरी खबर सुनाते हैं।

वे प्रचार करते हैं कि यीशु अब अपनी सामर्थ्य प्रकट नहीं करता है।

वे प्रचार करते हैं कि प्रेरितों के मरने के साथ चमत्कार बन्द हो गए।

वे बाइबल के चमत्कारों की सफाई देते हैं।
वे समझाते हैं कि आज चमत्कारों के लिए विश्वास करना कैसे व्यर्थ है।
बाइबल कहती है कि विश्वास मसीह का वचन सुनने से आता है। (रोमियों 10:17)
परन्तु जब ये प्रचारक अपना काम कर चुके होते हैं, तो विश्वास आता नहीं - चला जाता है।
कुछ प्रचारक विश्वास का जिक्र या उसे प्रत्साहन नहीं देते हैं।
कुछ लोगों के विश्वास को हानि पहुँचाते और नष्ट करते हैं।
कुछ असली विश्वास की आवश्यकता को जाने देते हैं।
परन्तु ये प्रचार कभी भी चिन्ह, चमत्कार, या चंगाई नहीं देखते हैं।
और जिन लोगों को वे प्रचार करते हैं, कभी चंगाई नहीं पाते।

<u>यीशु ने सदा लोगों को विश्वास करने के लिए प्रोत्साहन दिया।</u>
"क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी?"

पौलुस के प्रचार ने सदा विश्वास को प्रेरित किया।
प्रेरितों 14:8-10 "लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा था, जो पाँवों का निर्बल था। वह जन्म ही से लंगड़ था और कभी न चला था। वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था। पौलुस ने उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा कि उसे चंगा हो जाने का विश्वास है, और ऊँचे शब्द से कहा, 'अपने पाँवों के बल सीधा खड़ा हो।' तब वह उछलकर चलने फिरने लगा।'" जैसे वह मनुष्य पौलुस को सुनने लगा तो उसके हृदय में विश्वास बढ़ने लगा। जब पौलुस को इसका अनुभव हुआ, तो उसने उसे उस विश्वास को प्रयोग में लाने के लिए प्रोत्साहित किया। उसने उसे उसके पाँवों पर खड़े होने की आज्ञा दी।

आपका अधिकार का शब्द
- पौलुस के प्रचार ने विश्वास को प्रेरित किया।
- हमें उस प्रकार प्रचार करने से डरना नहीं है जो विश्वास को प्रेरित करता है।
- हमें परमेश्वर के राज्य की अच्छी खबर बतानी है।
- हमें लोगों को विश्वास करने और उनके विश्वास को प्रयोग में लाने के लिए प्रोत्साहित करना है।
- हमें उन्हें उन चीजों को करने के लिए प्रोत्साहित करना है जो वे पहले नहीं कर सकते थे।

6: <u>विश्वास की प्रार्थना करना</u>

"और विश्वास की प्रार्थना से रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा।" (याकूब 5:15)।
बाइबल इसे स्पष्ट करती है कि प्रार्थना तब ही प्रभावशाली होती है जब यह विश्वास में की जाती है।
"पर वह विश्वास से माँगे, और कुछ सन्देह न करे, क्योंकि सन्देह करनेवाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है। ऐसा मनुष्य यह न समझे कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा।" (याकूब 1:6-7)।

<u>विश्वास की प्रार्थना:</u>
= **केवल परमेश्वर के वचन पर आधारित है।**
सच्चा विश्वास परमेश्वर के वचन के अलावा किसी और चीज से प्रेरित नहीं होता है।
यह इंद्रिय ज्ञान, भावनाओं, या मानव के ज्ञान पर आधारित नहीं है।
यह केवल उस पर खड़ा है जो परमेश्वर कहता है।
इसके अपने विचार या परिकल्पनाएँ नहीं हैं। यह परमेश्वर के वचन के सत्य का समर्थन करता है।
यह जो आप समझता है उस पर नहीं बल्कि जो परमेश्वर कहता है उस पर सिद्धान्त बनाता है।

- **विश्वास परमेश्वर की इच्छा जानता है।**

विश्वास चंगाई के विषय में परमेश्वर की इच्छा जानता है क्योंकि यह उसे स्वीकार करता है जो परमेश्वर का वचन घोषित करता है।

- **विश्वास का एक निश्चित, विशेष लक्ष्य है।**

बाइबल का विश्वास निदान या पूर्वानुमान के सामने डगमगाता नहीं है। यह परमेश्वर के वचन पर खड़ा रहता है कि "परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं।" विश्वास का माँगना, विश्वास करना, और पाना सुनिश्चित है, अस्पष्ट या निराकार नहीं है। कुछ प्रचारक कभी नहीं जान पाते कि कब उनकी प्रार्थना सुनी गई क्योंकि उन्होंने कभी भी कुछ निश्चित रूप से माँगा नहीं था।

- **विश्वास की प्रेरणा सही होती है।**

विश्वास अपने लाभ या पूर्ति के लिए काम नहीं करता है। यह सही, शुद्ध प्रेरणाओं से काम करता है।

- **विश्वास का निडर स्वीकृति होती है।**

विश्वास उसे साहस के साथ बोलने से नहीं डरता जिसे परमेश्वर ने पहले से घोषित किया है।

- **विश्वास के काम इसकी स्वीकृति से मेल खाते हैं।**

विश्वास केवल बोलने में ही शक्तिशाली नहीं, यह काम में भी शक्तिशाली है। विश्वास जो कहता है करता है। बोलने के समान कार्य करता है।

- **विश्वास माँगता और "पाता" है।**

विश्वास न केवल परमेश्वर से प्रार्थना करता है, यह उससे पाने का निश्चय भी करता है।

- **विश्वास दृढ़ता से लगा रहता है।**

यदि विश्वास की प्रार्थना का उत्तर शीघ्र नहीं दिखता है तो विश्वास तब तक लगा रहता है जब तक उत्तर नहीं आ जाता।

- **विश्वास परमेश्वर को महिमा देता है।**

अब्राहम ने "न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की; और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है।" (रोमियों 4:20-21)।

<u>चंगाई लानेवाले सिद्धान्तः</u>

- **परमेश्वर के वचन का प्रचार**

प्रेरितों का प्रचार मसीह को ऊँचा करता था।
उन्होंने प्रचार किया कि यीशु **प्रभु** है।
- सृष्टि का प्रभु
- उद्धार का प्रभु
- शैतान पर प्रभु
- पाप, बीमारी और दुष्टात्माओं पर प्रभु

- **लोगों के विश्वास को प्रोत्साहन देना**

'तब पतरस ने कहा, "चाँदी और सोना तो मेरे पास है नहीं, परन्तु जो मेरे पास है वह तुझे देता हूँ; यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।" और उसने उसका दाहिना हाथ पकड़कर उसे उठाया; और तुरन्त उसके पाँवों और टखनों में बल आ गया।' (प्रेरितों 3:6-7)

- **आत्मिक अधिकार प्रयोग में लाना**

"और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को...सामर्थ्य दी है। उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसको तुम सब के सामने बिलकुल भला चंगा कर दिया है। (प्रेरितों 3:16)

- **आत्मा के सामर्थ्य से अधिकार के साथ बोलना**

"तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा........।" (प्रेरितों 4:8)
प्रेरितों ने मनुष्य के ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं कहीं, परन्तु आत्मा के सामर्थ्य और प्रदर्शन की बातें।

- **पवित्र साहस के साथ कार्य करना**

- वे परमेश्वर की चंगाई की वाचा के विषय में जानते थे।

- वे मसीह की चंगाई की सेवकाई के गवाह थे।
- उनमें विश्वास का एक सकारात्मक आश्वासन था।
- उन्होंने शुद्ध प्रेरणा से कार्य किया।

- **उन्होंने कई चिन्ह और चमत्कार किए**

चमत्कार सुसमाचार के प्रस्तुतिकरण को नाटकीय बनाते हैं। चमत्कार सुसमाचार की वैधता को प्रमाणित करते हैं। चमत्कार लोगों को आकर्षित करते हैं।

- **चमत्कारों ने लोगों को विश्वास में स्थापित किया**

"मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था, इसलिए कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो।" (1 कुरिं. 2:4-5)

<u>वे चंगे होंगे (मरकुस 16:18)</u>

सब चंगाइयाँ तात्कालिक नहीं होतीं। यह बाइबल के दिनों में भी सच था और आज भी सच है।
लूका 17:12-15 में, यीशु दस कोढ़ियों को शुद्ध करते हैं, जिनके विषय में हम पढ़ते हैं, "और जाते ही जाते वे शुद्ध हो गए।"

सीखने की क्रियाएँ:

1. सामर्थ्य के साथ सुसमाचार प्रचार ने कौन सी तीन चीजें पूरी कीं ?
2. यीशु के चंगा करने के तीन कारण बताओ ?
3. समझाओ कि ये तीन चीजें हमें उसका अनुकरण करने में क्यों प्रोत्साहित करेंगी।
4. हम क्यों अपेक्षा करें कि महान आदेश का पालन करने से चिन्ह और चमत्कार होंगे ?
5. विश्वास की प्रार्थना की तीन विशेषताएँ बनाइए।
6. तीन चीजें बताइए जो लोगों को चंगाई पाने में सहायता करेंगी।

अध्याय 11 - कलीसिया स्थापित करना

"अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा। उसी का साम्राज्य युगानुयुग रहे। आमीन।" (1 पतरस 5:10-11)
इस वचन का उस विषय में जिस पर हम इस समय विचार कर रहे हैं, यानि, एक नई मण्डली स्थापित करना, विशेष उपयोग है।

सारे अनुग्रह का परमेश्वर

यदि हम ने एक नई मण्डली को अस्तित्व में लाया है तो यह परमेश्वर का अनुग्रह है जिसने यह किया है। ऐसा काम केवल वह ही कर सकता है। इसलिए हमें यह बात मन में रखनी है और स्पष्ट अनुभव करना है कि इस काम का भविष्य भी उसके योग्य हाथों में ही है। जो हुआ है उसका हम कुछ भी श्रेय नहीं ले सकते हैं। और न हमें इसके भविष्य के विषय में बहुत चिन्ता करनी है। यह प्रभु का काम है और वही इसका जिम्मेवार है।

तुम्हारे थोड़ी देर दुख उठाने के बाद

एक नई मण्डली स्थापित करने का प्रारंभिक समय सदा आसान नहीं होता है। कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कई स्थितियों को प्रार्थना से हल करना पड़ता है। कलीसिया लोगों से बनी होती है और जहाँ लोग होते हैं वहाँ अक्सर हल करने के लिए समस्याएँ भी होती हैं। परन्तु यह सब मसीह यीशु में बढ़ने की प्रक्रिया का एक भाग है। ऐसी समस्याओं को न तो अनदेखा करना है और न ही छुपाना है, परन्तु विश्वास और प्रेम से उनका सामना करना है। जैसे पवित्र आत्मा को हम इस समय में हमें से ले जाने देते हैं, तो हम उसे इस नई मण्डली पर परमेश्वर की छाप डालने का अवसर देते हैं।

यह प्रारंभिक समय बहुत ही अत्यावश्यक है। हम इस मण्डली की नींव रख रहे हैं जो इसे आनेवाले कई वर्षों तक प्रभावित करता रहेगा। मैं ने आप कई वर्षों के दौरान इसे देखा है कि एक कलीसिया की नींव बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। कुछ कलीसियाएं गलत फैसलों से जो मण्डली के बनने के प्रारंभिक चरण में लिए गए थे, कभी भी सम्भल नहीं पाती हैं। इस चुनौती के लिए संवेदनशील बनो और एक अच्छी, मजबूत, टिकाऊ नींव डालने का निश्चय करो।

तुम्हें सिद्ध करेगा

"सिद्ध" शब्द सम्पूर्णता, मैत्री, समन्वय, ऐक्य, एकता, एकीकरण का विचार देता है। इन सब तथ्यों को विश्वासियों का नया समूह उनकी प्राथमिकता की सूची में सबसे ऊपर रखे। यदि ये तत्त्व नींव का एक हिस्सा हैं तो इस कलीसिया की सही नींव है जिस पर एक शक्तिशाली मण्डली बनाई जा सकती है।

स्थिर

इसका अर्थ है स्थापित करना, दृढ़ करना। इसे भी एक इमारत की नींव से जोड़ा जा सकता है। यदि ये चीजें पर्याप्त नहीं हैं तो जो कुछ भी उन पर बनाया जाएगा ढह जाने के संकट में है।

बलवन्त

यह शब्द उस इमारत के लिए उपयोग हो सकता है जिसे कोई दृढ़ नींव पर बनाएगा। इसे सख्त, मजबूत इमारत होना है।

करेगा

प्रारंभिक शब्द निश्चय ही एक अच्छी नींव रखने के सम्पूर्ण विचार से सम्बंधित है। मूल शब्द में कुछ विचार हैं - सम्मति देना, प्रशंसा करना, नियुक्त करना, अभिषेक करना और घोषित करना। जब हम उन मामलों का विचार करेंगे जो एक अच्छी नींव रखने के लिए अत्यावश्यक हैं, तब हम इन सब विचारों की संक्षेप में चर्चा करनेवाले हैं।

आओ अब हम कुछ अत्यावश्यक तत्त्वों पर संक्षेप में विचार करें:

1: दृढ़ नींव

उद्धार

आपको निश्चित करना है कि जो लोग इस मण्डली का आधार बनेंगे सच में नया जन्म पाए हुए हैं। कुछ सिद्धान्त के विषय होते हैं जिन पर हम भिन्न होने के लिए सहमत हो सकते हैं, परन्तु यह उनमें से नहीं है। लोगों को जीतने की हमारी पुस्तिका में, हम ने सच्चे उद्धार की एक ठोस, बाइबल पर आधारित आश्वासन बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया है। सब धर्मान्तरितों को इसकी शिक्षा दो। उनसे बातचीत करो। उनके दिल की बात बाहर निकालो। हर एक विश्वास की एक स्पष्ट स्वीकृति करे और इसकी अत्यावश्यक गवाही दे।

यह बात तब और भी आवश्यक होती है जब आप कलीसिया में पदधारियों को नियुक्त करते हैं। कभी-कभी प्रारंभिक चरण में योग्य लोगों की और उनकी जो विभिन्न कार्यों में निपुण हैं कमी होगी। यह आपको उस किसी को नियुक्त करने में प्रेरित कर कहता है जो एक सच्चा विश्वासी और सम्पूर्ण रूप से मसीह की ओर, और मसीही आचरण की ओर वचनबद्ध नहीं है। इस तरीके से आप अपने और कलीसिया के लिए सब प्रकार की समस्याएँ खड़ी कर सकते हैं।

बाइबल

कृपया आरम्भ से ही निश्चित कर लें कि आपके लोग परमेश्वर के वचन की शिक्षाओं के प्रभाव में डाले गए हैं। एक बाइबल पर आधारित कलीसिया बनने का लक्ष्य बनाएँ। बाइबल अध्ययन और शिक्षा को प्राथमिकता बनाएँ। परमेश्वर के वचन की सत्यता के ईर्द-गिर्द संगति बनाने की योजना बनाएँ।

संगति

यह एक शब्द है जिसके असंख्य अर्थ हैं जिनमें से कुछ अवश्य नहीं बाइबल के हैं। बाइबल में संगति अनुवाद किया गया शब्द 'Koinonia" है, जिसका मुख्य अर्थ एक साझेदारी की ओर वचनबद्धता है। इसका एक अच्छा उदाहरण एक अच्छा विवाह है - जहाँ दो लोग एक दूसरे की ओर पूरी तरह वचनबद्ध हैं।

इसलिए लोगों से वचनबद्धता की अपेक्षा करो:

- सबसे पहले परमेश्वर और उसके राज्य की ओर वचनबद्धता।
- यीशु, उसकी शिक्षाएँ और उसके व्यक्तित्व की ओर वचनबद्धता।
- बाइबल के सिद्धान्तों और आचरण की ओर वचनबद्धता।
- मसीह की देह के साथी सदस्यों की ओर वचनबद्धता।
- उन विश्वासियों की ओर जो उस स्थानीय देह के भाग हैं जिसके आप एक सदस्य हैं वचनबद्धता।

एक साथ संगति कई रूप ले सकती है:

- सामूहिक उत्सव।
- ग्रह कलीसिया की पारस्परिक क्रिया।
- सामुदायिक विश्राम।

प्रार्थना

प्रारंभिक कलीसिया के सदस्य कई चीजों में दृढ़ता के साथ लगे रहे जिनमें से एक सामूहिक प्रार्थना था। उनकी प्रार्थना सभाएँ उनकी क्रियाओं के लिए सामर्थ्य के गढ़ थीं। "इस संसार के सपनों से कहीं अधिक काम प्रार्थना से किया जा सकता है।"

सुसमाचार प्रचार

एक कलीसिया की स्थापना के तुरन्त बाद, और विशेशकर तब जब वह कलीसिया किसी प्रकार के सुसमाचार प्रचार द्वारा आरम्भ की गई है, तो एक सामर्थी सुसमाचार प्रचार के प्रभाव को बढ़ावा देना आरम्भ करना चाहिए।

नए विश्वासियों का जोश ठण्डा मत होने दो। उनका उत्साह कम मत होने दो। जबकि वे अभी भी उनके पहले प्रेम के उत्साह में हैं, गवाह होने और लोगों को मसीह में लाने पर एक कड़ा जोर दो। यह वह समय है जब कई विश्वासियों के उनके मित्रों के साथ अभी भी करीबी सम्बंध हैं। उन्हें उनके मित्रों के साथ सम्पर्क बनाए रखने और उन्हें कलीसिया में ले आने के लिए प्रोत्साहित करो।

2: अगुवाई

एक स्थानीय कलीसिया की वृद्धि और विकास के लिए अच्छी अगुवाई अनिवार्य है।

यदि आपने एक नई कलीसिया आरम्भ की है, परन्तु स्थाई रूप से वहाँ रहना नहीं चाहते हैं तो:

कलीसिया को बहुत जल्दी मत छोड़ो।

जबकि कलीसिया अभी भी प्रारंभिक वर्धन के उत्साह में है, तो उस नमूने को जितनी देर तक हो सकता है प्रोत्साहन दो। बेदारी और वर्धन की आत्मा उत्तेजक और आकर्षक है। जब आग जल रही होती है, लोग वहाँ आकर अपने को गर्म करना चाहते हैं।

वहाँ अधिक देर तक मत रुको।

परन्तु, यह भी एक खतरा है कि आप वहाँ अधिक देर तक टिके रहें। याद रहे कि जो सेवकाई एक नया क्षेत्र खोलने के लिए सफल रही है, वही नहीं होगी जो वहाँ रहने के लिए उपयुक्त है। निर्माण परियोजना के प्रारंभिक चरणों में, बुलडोज़र एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, परन्तु एक बार जब नींव रख दी जाती है और इमारत बनने लगती है, तो वही बुलडोज़र बहुत हानि पहुँचा सकते हैं। एक बार जब सुसमाचार प्रचारक ने अपना काम कर लिया है, चरवाहे को काम सम्भाल लेना है। यह एक बिलकुल भिन्न सेवकाई है।

फिर भी ऐसा भी अक्सर होता है कि अग्रेसर पास्टर बनता है। मैं कहूँगा कि छोटी कलीसियाओं की स्थापना में, जैसे कि ग्रह कलीसियाएँ, यह अक्सर होता है और काफी सफल भी प्रमाणित हुआ है।

निश्चय करो कि आपके जाने से पहले अच्छी अगुवाई ने कार्यभार सम्भाल लिया है।

यदि एक बार कलीसिया आरम्भ होने पर आपका उद्देश्य आगे बढ़ जाना है तो अच्छी तरह निश्चय करो कि उपयुक्त अगुवाई कार्यभार सम्भाल ले। नई अगुवाई को स्थान में रखने में देरी विनाशकारी हो सकती है। नए विश्वासी इस चरण में अक्सर असुरक्षित होते हैं और उन्हें एक चरवाहे की आवश्यकता होती है।

नई अगुवाई को उनके काम के लिए अभिषेक करो।

नई कलीसिया के स्थापक के रूप में, आपको अपना आवरण आगे दे देना है, और नए अगुवे को अपनी आशीष देनी है और लोगों को इसकी जानकारी होनी चाहिए। उन्हें पता होना चाहिए कि नए अगुवे को आपका भरोसा और आशीष प्राप्त हैं। लोग उनकी वफादारी आपके बदले नए अगुवे को देने लगें, उसके लिए आपको जो भी करना पड़े करिए।

हर प्रकार से समर्थक और सहायक बनो।

यदि आप क्षेत्र छोड़ देते हैं तो अपने रवैये में नए अगुवे की ओर सदा सकारात्मक रहो। यदि कुछ लोग आपके साथ सम्पर्क बनाए रखते हैं, तो उन्हें नए अगुवे की ओर उनके वफादारी के लिए जोर से प्रोत्साहित करो। यदि वहाँ असल में कुछ समस्याएँ हैं तो अगुवे के साथ न कि सदस्यों के साथ सम्पर्क करो।

3: कलीसिया की सदस्यता

कलीसिया की सदस्यता के दो पहलू हैं:

आत्मिक

यह उसकी कलीसिया में लोगों को जोड़ने की परमेश्वर की भूमिका से सम्बंधित है।
पहलौठों की कलीसिया के नाम स्वर्ग मे लिखे हुए हैं। (इब्रा. 12:22-24)
"जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।" (प्रकाशित. 21:27)
"और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।" (प्रेरितों 2:47)

यह "कलीसिया में मिला देना" पवित्र आत्मा की एक आत्मिक क्रिया है जिसमें वह लोगों को स्वयं एक कलीसिया में, और दूसरे सदस्यों के साथ जोड़ता है। एक बार जब परमेश्वर ने इसे किया है जो हमें जानने की आवश्यकता है कि "जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।" कुछ मसीही बड़ी सरलता से एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया में चले जाते हैं, और वे ऐसा प्रभु की अनुमति पाए बिना करते हैं। निश्चय ही एक कार्य होता है कि क्यों परमेश्वर लोगों को एक विशेष मण्डली में जोड़ता है और हमें ऐसा करने की उसकी बुद्धि का पालन और आदर करना चाहिए।

स्वाभाविक

कुछ मसीही एक विशेष कलीसिया की कानूनी सदस्यता लेने की आवश्यकता के विषय में संदिग्ध और अनिश्चयी होते हैं। वे इसे बाइबल की बात नहीं मानते। परन्तु बाइबल में असंख्य संकेत हैं कि पुस्तकें निकाली गई थीं और लोगों के नाम उनमें लिखे गए थे।
इस्राएलियों के नाम उनके देश की पुस्तकों में लिखे गए थे।
प्रारंभिक कलीसिया की बढ़त संख्यिकीय रूप से लिखी गई थी।
यीशु ने बारह चेलों से आरम्भ किया।
तब उसने सत्तर औरों को भी नियुक्त किया।
500 से अधिक ने उसे स्वर्ग में जाते देखा।
पिन्तेकुस्त के दिन 3000 कलीसिया में जुड़े थे।
प्रेरितों 4:4 में 5000 और जुड़े थे।

एक उचित रूप से बनाई सदस्यता जिसमें सदस्य कानूनी रूप से जुड़े होते हैं, का एक बहुत निश्चित लाभ है।

- यह वचनबद्धता का परिमाण है।
- ऐसी वचनबद्धता में सुरक्षा होती है
- आवश्यकता पड़ने पर, अनुशासन उचित रूप से लाया जा सकता है।
- कानूनी जिम्मेवारियाँ उचित रूप से निभाई जा सकती हैं।

- व्यवसायी उत्तरदायित्व और वचनबद्धताएँ कानूनी रूप से निभाई जा सकती हैं।

नोटः कुछ परिस्थितियों में, राजनीतिक या धार्मिक बाधाओं के कारण, सदस्यों का विवरण या सूचियाँ रखना नासमझी होगी। ऐसी परिस्थितियों में इसे न करें।

4: शिष्यता

हर स्थानीय कलीसिया इसके सदस्यों की शिष्यता के लिए परमेश्वर के सम्मुख जिम्मेवार है। यह प्रेरिताई सेवकाइयों का जिन्हें परमेश्वर कलीसिया में रखता है, एक सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। "उसने (यीशु) कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए।" (इफि. 4:11-12)।

शिष्यता कलीसिया की शिक्षुता प्रणाली है। यीशु ने अपनी अधिकाँश सेवकाई 12 पुरुषों को चेला बनाने में लगाई। उन्होंने जो सीखा था वह उन्हें विश्वासयोग्य पुरुषों को सिखाना था जो दूसरों को सिखाने योग्य होंगे। (2 तीमु. 2:2)। शिष्यता का अर्थ उदाहरण और शब्दों से सिखाना होता है। शिष्यता में अनुशासन चाहिए होता है। कलीसिया स्थापना प्रशिक्षण कार्यक्रम एक प्रकार का शिष्यता प्रशिक्षण है।

5: भण्डारीपन और अर्थप्रबंध

नई मण्डली के जीवन में इस विषय पर बातचीत जितनी जल्दी हो सके करनी चाहिए। यह अत्यावश्यक है कि मण्डली के रूप में लोग अर्थप्रबंध के भण्डारीपन का एक सही और बाइबल पर आधारित विचार रखें। परमेश्वर को उचित रूप से देय वित्त रोकने से, कलीसिया पर आनेवाली आशीष रुक सकती है। (मलाकी 3:8-12)

ईश्वरीय सिद्धान्त को समझने से कि "लेने से देना धन्य है", एक मण्डली के जीवन में बहुत आशीषें आ सकती हैं। उलटे, इसे समझने और प्रयोग में लाने में असफलता "स्वर्ग के झरोके" बन्द कर सकता है।

एक कलीसिया को उनके अगुवाई की भौतिक आशीषों से सेवा करने की उनकी जिम्मेवारी को समझना भी बहुत आवश्यक है। "अतः जबकि हम ने तुम्हारे लिए आत्मिक वस्तुएँ बोईं, तो क्या यह कोई बड़ी बात है कि तुम्हारी शारीरिक वस्तुओं की फसल काटें।" (1 कुरिं. 9:11)। "यदि अन्यजातीय उनकी आत्मिक बातों में भागी हुए, तो उन्हें भी उचित है कि शारीरिक बातों में उनकी सेवा करें।" (रोमियों 15:27)

देने के विषय में कुछ बाइबल के सिद्धान्तः

1. पहले अपने आप को प्रभु को देना है। (2 कुरिं. 8:5)
2. स्वेच्छा से दो। (2 कुरिं. 8:3, 12)
3. हर्ष से दो। (2 कुरिं. 9:7)
4. उदारता से दो। (2 कुरिं. 8:2; 9:13)
5. अनुपात में दो। (2 कुरिं. 9:6; 8:14-15)
6. नियमित रूप से दो। (1 कुरिं. 16:1-2)
7. सुव्यवस्थित रूप से दो। (2 कुरिं. 9:7)
8. प्रेम से दो। (2 कुरिं. 8:24)
9. धन्यवाद के साथ दो। (2 कुरिं. 9:11-12)
10. प्रभु और उसके पवित्र लोगों के लिए दो। (2 कुरिं. 9:12-13)

6: सुविधाएँ और इमारतें

एक नई मण्डली के आरम्भ होने के तुरन्त बाद, सम्भव है कि कलीसिया की इमारत या सुविधाओं का प्रश्न उठेगा। यह अक्सर सभा के स्थान को भाड़े पर लेने की समस्या के कारण होता है जैसे किः

- असंगत सुलभता
- अनुपयुक्त वातावरण
- बढ़ते हुए भाड़े
- साजो-समान को लाने-ले जाने की आवश्यकता।

- एक स्थान से दूसरा स्थान बदलना पड़ना।
ये सब असली समस्याएँ हैं और स्थाई स्थान प्राप्त करने की इच्छा को बढ़ाती हैं। एक स्थाई सुविधा बनाने या खरीदने में मुख्य समस्या पैसों की (या पैसों की कमी की) होती है। नई मण्डली जिसे पैसों की कमी नहीं है, सौभाग्यशाली है। अधिकाँश स्थानों में जमीन की और इमारत की कीमत बहुत कलीसियाओं के लिए एक गम्भीर समस्या बन गई है। जहाँ स्थान बनाने या खरीदने का फैसला जल्दी किया जाता है, वहाँ अक्सर दूसरे महत्त्वपूर्ण मामलों में अर्थप्रबंध की कमी अनुभव होती है।
मेरी सलाह होगी:

- जब तक हो सके भाड़े पर रहो।
- अगुवे और उसके परिवार की देखभाल करने की आवश्यकता को प्राथमिकता दो।
- दूसरी जिम्मेवारियों और चुनौतियों को प्राथमिकता दो।
- बहुत बड़ा कर्ज़ बहुत जल्दी मत लो। कुछ मण्डलियाँ एक बड़े कर्ज़े को चुकाने के बोझ के कारण दूसरी महत्त्वपूर्ण जिम्मेवारियों को अनदेखा करती हैं।

जब एक मण्डली 300 से अदि सदस्यों की हो जाती है तब अपना परिसर प्राप्त करने की बेहतर स्थिति में होती है।

जब परिसर को बनाने या खरीदने का फैसला करना होता है, तब अनेक तत्त्वों को ध्यान में रखना चाहिए:

= दृश्यता
ऐसे स्थान को लेने का प्रयत्न करो जो विशिष्ट है जिससे लोगों को आपके होने की जानकारी रहेगी। ऐसे स्थान में आप जनता का ध्यान आकर्षित करने और अपनी उपस्थिति विख्यात करने के लिए उचित संकेत लगा सकेंगे।

= अभिगम्यता
अपने को ऐसे स्थान में स्थापित करने की कोशिश करो जो अभिगम्य है और पहुँचने में सरल है। यदि सार्वजनिक यातायात उपलब्ध है तो इसके निकट होने की कोशिश करो। ऐसा हो कि लोग आपके पास अधिक कठिनाई के बिना पहुँच सकें।

= आकार
यदि आप बना रहे या खरीद रहे हैं तो एक ऐसा स्थान पाने का प्रयत्न करो जो आपको विस्तार करने के लिए जगह देगा। या कुछ ऐसा बनाओ जो अधिक लोगों को समायोजित करने के लिए बढ़ाई जा सके। कई कलीसियाएँ ऐसा कुछ खरीदती हैं जो उनकी तात्कालिक आवश्यकता पूरी करता है और जब वे बढ़ते हैं और अधिक स्थान की आवश्यकता पड़ती है तो अपेक्षित कीमत बहुत अधिक होती है। याद रहे कि जमीन और इमारत की कीमतें कभी कम नहीं होने वाली हैं।

= समाज के लिए उपयुक्तता
आपको जिस समाज में काम करने के लिए बुलाया गया है उनकी प्रकृति को मन में रखना है और अपनी इमारत को लोगों की जीवन शैली और संस्कृति के अनुसार उपयुक्त बनाना है।

= अपनी इमारत में लचीलापन लाओ
जितना अधिक बारंबार एक कलीसिया की इमारत वैध और उन्नत करनेवाली क्रियाओं के लिए उपयोग होगी, उतनी अधिक वह इमारत इसके मालिकों के लिए कीमती होगी। कुछ कलीसिया की इमारतों को सप्ताह के छः दिन खाली पड़े देखने में दुख होता है। अपनी इमारत को सभाओं के अलावा असंख्य दूसरी क्रियाओं के लिए उपयोग में लाकर लचीला बनाओ।

= अपनी इमारत को अधिक परम्परागत बनाने का लक्ष्य मत रखो
एक प्रचारक और मण्डली के लिए उपयुक्त होने के लिए, एक कलीसिया की इमारत का पारम्परिक रूप और ढंग बहुत ही सीमित करनेवाला और प्रतिबंधक होता है। कलीसिया को उस प्रकार के ढंग में बनाने से कोई उपयोगी उद्देश्य पूरा नहीं होता है। आजकल लोग कलीसिया के ढंग से प्रभावित नहीं होते हैं। असल में यह ढंग अक्सर एक मनोवृत्ति प्रकट करता है जो पुरानी और अप्रचलित है। ऐसी इमारत में आप बहुत कम प्रकार के कार्य कर सकते हैं।

= अच्छा भण्डारीपन दिखाना

मैं कुछ कलीसियाओं के विषय में दुखी हूँ जो कीमती इमारतों में बहुत अधिक धन लगाते हैं। इसलिए ईंट और गारे में इतना अधिक पैसा लगा होता है कि कलीसिया के असली काम के लिए जो सुसमाचार प्रचार और मिशन है, उपलब्ध नहीं होता है।
यीशु ने हमें इमारतों को बनाने का, और विशेषकर कीमती इमारतों को बनाने का जो अचल संपत्ति में करोड़ों रुपया फँसा देती हैं, आदेश नहीं दिया है। संसार के कुछ भाग में करोड़ों लोगों अल्पपोषिण और भूख से मर रहे देख कर बहुत दुख होता है, जबकि दूसरे स्थानों में कलीसिया कीमती इमारतों पर करोड़ों रुपये खर्च कर रही है। एक दिन परमेश्वर हमारे भण्डारीपन और जो साधन हमारे नियंत्रण में थे उनका हमने क्या किया, उसके लिए हमारा न्याय करेगा। इसलिए: "अपना पैसा अपने उपदेश में, न कि अपनी इमारत में लगाओ।"

7: वर्धन और विस्तार का दर्शन लगाओ

हर कलीसिया जीवित और बढ़ती रहनी चाहिए। न केवल इसकी अपनी चारदिवारी के अन्दर, बल्कि यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया और संसार की छोर तक भी बढ़नी चाहिए।
वर्धन के लिए दर्शन और विश्वास आरम्भ से ही बोया जाना चाहिए। लोगों को परमेश्वर के राज्य को घोषित करने और इसे हर स्थान में फैलते देखने के उनके ईश्वरीय बुलावे की जानकारी दी जानी चाहिए। हर विश्वासी एक सुसमाचार प्रचारक हो और हर कलीसिया एक सुसमाचार प्रचार केन्द्र हो। सबसे स्वास्थ्यकर कलीसियाएं वे हैं जिनमें लोग प्रभु के काम में पूरी तरह व्यस्त रखे जाते हैं। किसी भी मण्डली में जितने अधिक लोग सक्रिय होंगे, उतनी वह कलीसिया सब प्रकार से अधिक बढ़ेगी। लोगों को दर्शक बनने के लिए नहीं बल्कि भाग लेनेवाले बनने के लिए प्रोत्साहन दो। लोगों को काम पर लगाओ। उन्हें सेवकाई के काम के लिए प्रशिक्षण दो और तैयार करो।

सीखने की क्रियाएँ:

1. एक ठोस नींव के लिए आवश्यक तीन तत्त्वों को बताओ।
2. नई अगुवाई नियुक्त करने के लिए तीन आवश्यक सिद्धान्तों को बताओ।
3. कलीसिया की अगुवाई के दो पहलुओं पर संक्षेप में टिप्पणी करो।
4. देने के विषय में बाइबल के पाँच निषेधादेशों को बताओ।
5. एक इमारत के चुनाव में किन तीन तत्त्वों को देखना चाहिए?

अध्याय 12 - वहाँ चलना जहाँ सन्त चले थे

एक कलीसिया स्थापक के रूप में हम अच्छी संगति में हैं। आप हमारे विश्वास के अग्रेसरों के कदमों का अनुकरण कर रहे हो। आप बाइबल के और कलीसिया के इतिहास के कुछ सबसे महान लोगों के उदाहरण का अनुकरण कर रहे हो।
\+ यीशु सबसे महान कलीसिया स्थापक था। उसने लोगों की फसल को पाने के लिए, जो सारे युग की कलीसिया बनेंगे, अपने ही जीवन का बीज बोया था।
\+ सारे प्रेरित भी कलीसिया स्थापक थे।
यरूशलेम, यहूदिया, और सामरिया में प्रारंभिक कलीसिया के आरम्भ और स्थापित होने के बाद, प्रेरित एक विशाल मिशनरी कार्यक्रम के अधीन सारे संसार भर में फैल गए जिससे सुसमाचार तब के ज्ञात संसार के हर भाग में ले जाया गया। उनमें से कई सुसमाचार प्रचार करते हुए मिशन क्षेत्र में मर गए और असंख्य देशों में कलीसियाएँ स्थापित कीं।
\+ प्रारंभिक कलीसिया के कई प्रमुख अगुवे कलीसिया स्थापक थे।
कलीसिया के इतिहास के अनेक प्रख्यात व्यक्तियों ने उनके जीवन पृथ्वी के दूर-दराज के क्षेत्रों में कलीसियाएँ स्थापित करने के लिए दे दिए। विश्वास के महान अग्रेसरों ने सुसमाचार को विश्वासयोग्यता के साथ संसार के चारों कोनों में पहुँचाया था। एक आधुनिक कलीसिया स्थापक के रूप में, आप पुरुषों और स्त्रियों की इस सम्मानित मण्डली में जुड़ जाते हो जिन्हें परमेश्वर ने राज्य का अच्छा बीज बोने और यीशु का नाम अपना बनाने और घोषित करने के लिए विश्वासियों के समूह उत्पन्न करने को बुलाया है।

अग्रेसरों की आत्मा

एक आधुनिक कलीसिया स्थापक के रूप में आप में भी वही आत्मा होना है जो विश्वास के अग्रेसरों में था। सुसमाचार घोषिक करना आज भी उतना ही अभियाचनीय और चुनौतिपूर्ण काम है जिसके लिए एक समर्पित, त्याग संबंधी और साहसी व्यक्ति चाहिए।

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसका आत्मा आज भी उपलब्ध है। वही आत्मा जिसने प्रारंभिक कलीसिया को, और जो उनके अनुयायी थे, उनको प्रेरित किया था, आज भी उपलब्ध है। आज कलीसिया में पुरुषों और स्त्रियों की एक बड़ी सेना है जो सुसमाचार के काम और कलीसिया स्थापित करने के लिए अलग किए गए हैं। मुझे इनमें से कुछ अदभुत लोगों को जानने का सौभाग्य मिला है। मैं संसार के कई देशों में जाकर और सेवा करके धन्य हुआ हूँ जहाँ ये अदभुत लोग मसीह के सुसमाचार को फैलता देखने और स्वर्ग के नीचे पृथ्वी पर विश्वासियों के समूह उत्पन्न होते देखने के लिए उनके जीवन दाँव पर लगा रहे हैं।

<u>इसमें वास्तव में कोई रहस्य नहीं है कि यह गतिशील आत्मा किस चीज का बना है। यह आत्मा है:</u>

- **जीवित मसीह**

हम केवल मसीह के नाम में, संसार को उसके विषय में बताने के लिए नहीं जा रहे हैं। हम अपने जीवनों में उसकी उपस्थिति के सामर्थ्य में जा रहे हैं। हमारे भीतर उसका जीवन हमें विवश करता है। वह न केवल हमारे साथजाता है। वह हमारे भीतर जाता है। जैसे हम उसके आत्मा को हमें संचालन करने देते हैं, वह हमें बड़े सामर्थ्य के साथ खोए हुओं तक पहुँचने के लिए प्रोत्साहित करता है।

- **जीवित वचन**

परमेश्वर का वचन मिशनरी पुस्तिका है। उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक यह परमेश्वर के मिशनरी हृदय की जानकारी हमें देती है। हर दिन हम इससे बल पा सकते हैं। यह खोई हुई मानवजाति की आवश्यकताओं की ओर और उन तक सुसमाचार के साथ पहुँचने के पिता के हृदय के बोझ की ओर हमारा ध्यान ले जाती है।

- **पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में डाला गया है।**

परमेश्वर का प्रेम कमजोर या निर्जीव नहीं, बल्कि तेजस्वी, स्पन्दमान और सामर्थी है। यह ऐसा नहीं जो चुके से सहानुभूति दिखाता है, परन्तु ऐसा है जो बड़ी दया के साथ पुरुषों और स्त्रियों से भरे संसार में पहुँचता है जो मसीह बिना और आशा बिना जी रहे और मर रहे हैं।

- **पवित्र आत्मा का अभिषेक**

यदि आत्मा का अभिषेक कुछ करता है तो यह गवाह बनाता है। यह पिन्तेकुस्त का अभिषेक था जिसने प्रारंभिक कलीसिया को उनके संसार के हर भाग में भेजा और यह वहीं अभिषेक है जिसने सारे लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और दक्षिण-पूर्व एशिया में हजीरों कलीसियाओं को जन्म दिया है।

- **सुसमाचार प्रचार का आत्मा**

जिन्हें परमेश्वर ने सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया है उनके हृदयों में मनुष्यों को जीतने के उत्साह से सुसमाचार की आग सुलग उठती है। यह ऐसा भस्म करनेवाली और जव्लनशील जोश है जिसे कुछ और नहीं केवल काम की पूर्ति और पुरुषों और स्त्रियों को मसीह के उद्धार में लाने का सर्वोच्च्य संतोष ही ठण्डा कर सकता है।

- **मिशनरी उत्साह का आत्मा**

यह मिशनरी उत्साह था जिसने यीशु को उसकी सबसे बड़ी परिक्षा की घड़ी में बल प्रदान किया। गतसमनी के बगीचे में जहाँ लहू की बूँदें पसीने के साथ बह रही थी, वह पुकार उठा, "हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जाए, तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।" यह वही मिशनरी उत्साह का आत्मा है जिसने हजारों को उनके घर और परिवार छोड़ने, संसार भर में जाने और अपने आप को दूसरी संस्कृति में ढालने को राजी किया है, केवल इी लिए कि मसीह का संदेश उन लोगों तक पहुँचाया जा सके।

- **निस्वार्थीपन का आत्मा**

यीशु निस्वार्थीपन का सर्वोत्तम उदाहरण पेश करता है और चाहता है कि उसके अनुयायी और चेले उसकी नकल करें। यह विशेषकर कलीसिया के स्थापकों के लिए आवश्यक है जिनकी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाएँ दूसरों के लिए उनके जीवन उँडेलने के लिए त्यागी गई हैं। वह मण्डली धन्य है जिसका प्रेरित मसीह के निस्वार्थीपन का उदाहरण है और जो प्रसव पीड़ा के द्वारा लोगों की एक मण्डली को उसी साँचे में उत्पन्न करता है।

- **आत्मत्याग**

मुझे संदेह है कि किसी व्यक्ति ने बिना किसी बलिदान के एक नई कलीसिया को अस्तित्व में लाया होगा। ऐसा जान पड़ता है कि सच्चे विश्वासियों की एक मण्डली को अस्तित्व में लाने के लिए यह कीमत देनी पड़ती है। अपनी मन की आँखों में मैं उन कुछ आत्मत्यागी कलीसिया स्थापकों को देख सकता हूँ जिनके जानने का सौभाग्य और आनन्द मुझे प्राप्त हुआ है। पुरुष और स्त्रियाँ जिन्होंगे कई वैध चीजों को त्याग दिया ताकि वे उनके परमेश्वर द्वारा दिए बुलाए को पूरा कर सकें। उनकी बात सोचते ही मेरा सर सम्मान से झुक जाता है, जिन्होंने संसार से दूर और असभ्य परिस्थितियों में जीवन जीया, यीशु के नाम के लिए निर्वासित और तिरस्कृत परन्तु लोगों को परमेश्वर के राज्य और उसकी कलीसिया में लाने का आनन्द प्राप्त किया।

- **साहस**

संसार के कुछ क्षेत्रों में मसीह और सुसमाचार के लिए परिश्रम करने के लिए पक्के साहस से कम कुछ नहीं लगता। उन देशों में जहाँ सरकार मसीही विरोधी है। या प्रधान धर्म मसीही विरोधी है। जहाँ सब प्रकार का भेदभाव और पक्षपात एक मसीही बनने में भी कठिनाई उत्पन्न करता है और जिनका उद्देश्य मसीहियों की नई मण्डली स्थापित करना है ऐसा अपने जीवनों को खतरे में डालकर करते हैं।

इब्रानियों 11:32-40 में, लेखक "विश्वास के नायकों" की प्रशंसा यह कहते हुए करता है, "संसार उनके योग्य न था।" मैं उन बहुत से साहसी कलीसिया स्थापकों के विषय में जिन्हें जानने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है ऐसा ही महसूस करता हूँ। सुसमाचार प्रचारक, उनकी पत्नियाँ और परिवार, जिन्होंने मसीह के लिए सबकुछ बलिदान और त्याग दिया है। मसीह के विषय में बताने और पृथ्वी पर उसकी कलीसिया स्थापित करने के लिए मीलों तक सफर करना, कभी-कभी तो विरोधी और अननुकूल क्षेत्रों में जाना। मैं दीनभाव से उन हर एक को सलाम करता हूँ, जो कहीं अधिक महत्त्व का है, प्रभु भी उन्हें सम्मान देता है और एक दिन कहेगा:
"धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।"

स्तुति और आराधना: एक गहरा अध्ययन और इसके महत्त्व को समझना

कुछ विश्वासी "आराधना" शब्द समझे बिना कि वास्तव में इसका अर्थ क्या है इसे इस्तेमाल करते हैं। वे अक्सर इसे अपनी कलीसिया की सार्वजनिक आराधना के अनुसार प्रयोग में लाते हैं न कि इसके बाइबल के अर्थ के आधार पर। वे सोचते हैं कि आराधना वह है जो वे रविवार सभा में करते हैं, और जो कुछ वे रविवार सभा में करते हैं आराधना ही होगी।

इसका परिणाम यह होता है कि विश्वासियों का एक दल कहता है कि आराधना स्वतन्त्र स्वतःप्रवृत्ति और शोर-शराबा है जबकि दूसरा दल इसे नियत उपासना-पद्धति और शान्त श्रद्धा से जोड़ता है। परन्तु यदि हमें परमेश्वर की आराधना आत्मा और सच्चाई में करने के बाइबल के बुलावे को समझना है, तो हमें इन विवादों से आगे बढ़कर पता लगाना है कि बाइबल परमेश्वर की आराधना करने के विषय में क्या कहती है।

बाइबल "आराधना" की परिभाषा बताने और इसका वर्णन करने के लिए बहुत सारे इब्रानी और यूनानी शब्द उपयोग में लाती है, परन्तु पुराने और नए नियमों दोनों में मूल संदर्भ सदा से 'सक्रिय सेवा' का रहा है।

इब्रानी शब्द abodah और यूनानी शब्द latreia "आराधना" के लिए सबसे सामान्य शब्द हैं, और वे दोनों मूल में दासों या सेवकों के काम का महत्त्व बताते हैं।

सेवा

अधिकाँश लोग आज यह मानते हैं कि "आराधना" का अर्थ एक है और "सेवा" का अर्थ बिलकुल भिन्न है (हालाँकि वे दोनों आराधना सभाओं के विषय में बात करते हैं)। वे सोचते हैं कि "आराधना" आत्मिक कार्य है जैसे कि गीत गाना और प्रार्थना करना, और कि "सेवा" उपयोगी कार्य है जैसे कि फर्श साफ करना, कुर्सियाँ लगाना आदि। परन्तु बाइबल ऐसा कोई भेद नहीं करती है। जहाँ तक बाइबल का सम्बंध है हमारी परमेश्वर की आराधना हमारी परमेश्वर की सेवा है; जिस तरीके से हम उसकी सेवा करते हैं उसी तरीके से हम उसकी आराधना करते हैं।

Abodah – अबोदाह

इब्रानी संज्ञा अबोद्याह कुछ बाइबलों में 'काम', कुछ में 'आराधना', और अधिकाँश में 'सेवा' अनुवाद किया गया है। इसकी क्रिया या तो 'काम करना', या 'आराधना करना' या 'सेवा करना' अनुवाद की गई है।

उत्पत्ति 14:4; 15:13-14; 25:23; 29:15-30 और निर्गमन 1:14 दिखाते हैं कि abodah शब्द प्रारंभ में दासों या भोड़े के सेवकों का उपयोगी काम दर्शाता था।

जब कभी भी बाइबल मानव वस्तुगत के साथ adad या adobah शब्द इस्तेमाल करती है, यह सदा एक दास के रवैये या सेवक के काम की बात करती है। हम इसे, उदाहरणार्थ, निर्गमन 21:2; यिर्मयाह 40:9; यहेजकेल 48:18-19 में पाते हैं।

परन्तु पुराना नियम लगभग सदा adad और adobah शब्दों को उस तरीके का वर्णन करने के लिए उपयोग में लाता है जिससे परमेश्वर के लोग सही तरीके से सच्चे परमेश्वर की या गलत तरीके से झूठे देवताओं की सेवा करते हैं।

<u>यह महत्त्व का है कि आत्मा और सच्चाई में आराधना की हमारी समझ इस पहचान पर आधारित हो कि बाइबल की आराधना व्यावहारिक कार्य और आत्मिक क्रियाएँ दोनों सम्मिलित करती है।</u>

पुराना नियम 'अबोद्याह' शब्द-समूह का प्रयोग करता है, उदाहरणार्थ:

* लोगों को परमेश्वर की सेवा / आराधना करने के लिए बुलाना - निर्गमन 3:12; 7:16; 8:1,20; 9:1,13; 23:25; व्यवस्थाविवरण 10:12; 11:13; यहोशू 24:14-16; भजन 1:11; 100:2; यिर्मयाह 30:9; सपन्याह 3:9
* लोगों को झूठे देवताओं की सेवा / आराधना से बुलाना - व्यवस्था. 7:16; 28:14; यिर्मयाह 25:6; 35:15
* व्यावहारिक कार्यों का वर्णन करना जो परमेश्वर की सेवा / आराधना में सहयोग देते हैं - निर्गमन 36:1-5; गिनती 3:7-8; 4:23-28; 47-49; 7:6-9; 1 इतिहास 28:20-21; 2 इतिहास 24:12
* आत्मिक क्रियाओं का वर्णन करना जो परमेश्वर की सेवा / आराधना में सहयोग देती हैं - गिनती 8:11, 19-26; 18:6-7; 1 इतिहास 23:24-32
* परमेश्वर की सेवा / आराधना में संगीत के योगदान का वर्णन - 1 इतिहास 25:1-8
* विशेष आत्मिक क्रियाओं का वर्णन करना - निर्गमन 12:25-26; 2 इतिहास 35:1-19

अबोद्याह शब्द-समूह का विस्तृत उपयोग 2 इतिहास में विशेषकर स्पष्ट है। यह अध्याय यरूशलेम में राजा योशिय्याह द्वारा आयोजित की गई एक फसह 'आराधना/सेवा' का वर्णन करता है।

- आयतें 2-3 बताती हैं कि किस प्रकार योशिय्याह ने याजकों को सेवा के उनके कार्यों के लिए और लेवियों को परमेश्वर और उसके लोगों की उनकी सेवा के लिए प्रोत्साहित किया।
- आयतें 4-14 लेवियों और सामान्य लोगों द्वारा सभा की प्रयोगात्मक तैयारियों का वर्णन करती हैं।
- आयतें 15-16 दिखाती हैं कि गायक और द्वारपाल (पुराने नियम के आज के भण्डारियों के तुल्य) भी आराधना/सेवा में उतने ही सहयोगी माने जाते थे जितने याजक और लेवी होते थे।

यह दिखाता है कि परमेश्वर की आराधना सभा की ध्यानपूर्वक तैयारी उतनी ही आराधना/सेवा है जितनी आराधना सभा अपने में है, और 'द्वारपालों' के प्रयोगात्मक कार्य और लोगों का उदारता से देना उतना ही सेवा/आराधना का कार्य है जितना 'गायकों' का सहयोग और 'याजकों और लेवियों' के आत्मिक कार्य हैं।

Latreia

Latreia, 'सेवा' और latreuo, 'सेवा करना', abodah और abod के यूनानी तुल्य हैं। वे प्रारंभ में एक दास या सेवक की भाड़े की सेवा का वर्णन करते थे, परन्तु नए नियम में वे मुख्य रूप से मनुष्य की परमेश्वर की सेवा या आराधना का वर्णन करने के लिए उपयोग में लाए गए हैं।

उदारणार्थ, यह शब्द समूह मत्ती 4:10; लूका 1:74; 2:37; 4:8; प्रेरितों 7:7; 24:14; 26:7; 27:23; रोमियों 1:9; 9:4; 12:1; फिलिप्पियों 3:3; 2 तीमु. 1:3; इब्रानियों 8:5; 9:1,6,14; 10:2; 12:28; प्रकाशित. 7:15; 22:3 में उपयोग में लाया गया है।

इन वचनों को ध्यान से पढ़ने पर पता चलता है कि एक ही शब्द तम्बू, मन्दिर, स्वर्ग, आदि में आत्मिक 'आराधना' का वर्णन करने के लिए उपयोग में लाया गया है और वही शब्द रोजाना के जीवन में उपयोगी 'सेवा' के लिए उपयोग में लाया गया है। रोमियों 12:1 में latreia का उपयोग इन दोनों अर्थों को संपुटित करता है: हमें अपने शरीरों को हर चीज में जो हम करते हैं जीवित बलिदान के रूप में परमेश्वर को अर्पित करने के लिए कहा गया है; तथाकथित 'आत्मिक' और 'सांसारिक' क्रियाओं में कोई अन्तर नहीं है - हमारा काम हमारी आराधना है और हमारी आराधना हमारा काम है।

सिर झुकाना

यदि abodah और ltreia शब्द-समूह आराधना और सेवा के बीच सम्बंध पर जोर देते हैं, तो shachah और proskuneo शब्द-समूह इस बात पर बल देते हैं कि <u>आराधना / सेवा का सार परमेश्वर के सामने सिर झुकाना है।</u>

इब्रानी शब्द shachah और यूनानी शब्द proskuneo साधारणत: 'आराधना' अनुवाद किए गए हैं, और वे दोनों प्रकट करते हैं कि परमेश्वर के सेवक यदि वो सेवा/आराधना जिसकी परमेश्वर अपेक्षा करता और के योग्य है, तो उनका परमेश्वर के सामने सिर झुकाने का रवैया होना चाहिए।

Shachah का अक्षरक्ष: अर्थ है: 'खुद को नीचे झुकाना', और proskuneo का अक्षरक्ष: अर्थ है: 'आगे होकर चूमना'। दोनों मिलकर दिखाते हैं कि हमारी आराधना / सेवा आदरपूर्ण भय और प्रेममय विस्मय और अचरज से उमड़नी चाहिए।

ये शब्द इसे स्पष्ट कर देते हैं कि परमेश्वर मुख्य रूप से प्रार्थना, स्तुति, गीत गाना, सेवा करने आदि की बाहरी क्रियाओं को नहीं देखता है; बदले में, वह मुख्य रूप से आदरपूर्ण भय और श्रद्धापूर्ण प्रेम के भीतरी रवैयों को खोजता है। हालाँकि हमें निश्चय करना है कि हमारी सार्वजनिक आराधना संस्कृति के अनुसार संगत है, आराधान के विभिन्न ढंगों के विषय में वाद-विवाद और मतभेद परमेश्वर के बुलावे की बात से चूक जाते हैं।

यूहन्ना 4:1-24 में, सामरी स्त्री के साथ यीशु की बातचीत दिखाती है कि आराधना के बाहरी पहलू इसका सार नहीं हैं। Proskuneo यूहन्ना 4:20-24 में सात बार उपयोग किया गया है, यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर बाहरी स्थान और ढंग के मामलों के बजाय 'आगे होकर चूमने' के सही भीतरी रवैयों से अधिक संबद्ध है।

Shachah – शचाह

Shachah पुराने नियम में यह दिखाने के लिए उपयोग किया गया है कि परमेश्वर के लोग जब वे उसके सम्मुख आते थे तो उसके सामने साष्टांग प्रणाम करते थे: वे या तो उनके सम्मुख सिर झुकाते, या घुटनों के बल होते, या भूमि पर लेट जाते थे।

उदाहरणार्थ, हम इसे उत्पत्ति 24:26-28; निर्गमन 4:31; 12:27; 34:8; 1 इतिहास 29:20; 2 इतिहास 20:18; 29:30; नहेम्याह 8:6; अय्यूब 1:20 और भजन 95:6 में देखते हैं।
परन्तु इससे अधिक shachah यह दिखाने के लिए उपयोग किया गया है कि परमेश्वर के लोगों को जब वे परमेश्वर के सम्मुख आते थे तो उन्हें आदरपूर्ण भय और श्रद्धापूर्ण प्रेम का भीतरी रवैया रखने के लिए बुलाया गया था। उदाहरणार्थ, हम इसे उत्पत्ति 22:5; निर्गमन 241; व्यवस्था. 26:10; 1 शमूएल 1:28; 1 इतिहास 16:29; नहेम्याह 9:3; भजन 96:9; 99:5 में देखते हैं।
क्योंकि shachah मूल रूप से आराधना सेवा के भीतरी रवैये को दर्शाता है, यह पुराने नियम में एक दूसरी क्रिया के साथ संयोजन में उपयोग किया गया है जो आराधना सेवा में साथ के बाहरी कार्य का वर्णन करता है। उदाहरणार्थः

+ सिर झुकाना और आराधना - उत्पत्ति 24:26,48; निर्गमन 4:31
+ बलिदान और आराधना - निर्गमन 32:8; 1 शमूएल 13; 2 राजा 17:36
+ सेवा और आराधना - व्यवस्थाविवरण 8:19
+ स्तुति और आराधना - 2 इतिहास 7:3; भजन 66:4
+ पाप स्वीकार और आराधना - नहेम्याह 9:3
+ भोजन और आराधना - भजन 22:29

shachah और उदाहरणार्थ, स्तुति, सेवा और बलिदान के बीच बाइबल का निरन्तर सम्बंध प्रेरणात्मक रवैये के महत्त्व को दिखाता है। जो स्तुति क्षद्धापूर्ण भय और प्रेम से नहीं निकलती परमेश्वर को प्रभावित नहीं करती है। जो सेवा विस्मय और अचरज से प्रेरित नहीं है परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करती है। जो बलिदान भय और भक्ति से नहीं होता परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं, आदि।

Proskuneo

नए नियम में Proskuneo, 'आगे होकर चूमना' के साथ भी ऐसा ही है। कभी-कभार यह शब्द एक शारीरिक कार्य को दर्शाने के लिए जो आदरपूर्ण भय और श्रद्धापूर्ण प्रेम सूचित करता है, उपयोग में लाया गया है। उदाहरणार्थ, मत्ती 2:11; 4:9; 28:9; मरकुस 15:19; प्रेरितों 10:25; 1 कुरिं. 14:25; प्रकाशित. 7:11; 11:16; 19:4,10; 22:8।

परन्तु अक्सर proskuneo को श्रद्धापूर्ण भय और प्रेम के भीतरी हृदय के रवैयों का वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया है। उदाहरणार्थ, मत्ती 8:2; 9:18; 14:33; 15:25; 18:26; मरकुस 5:6; यूहन्ना 4:23-24; 9:38; प्रेरितों 24:11; प्रकाशित. 4:10 में।

दूसरे शब्द

तीन और यूनानी शब्द जिन्हें नए नियम में 'आराधना करना" अनुवाद किया गया है:

* sebomai, अर्थ है "आदर करना", और मत्ती 15:9; मरकुस 7:7; प्रेरितों 16:14; 18:7,13; 19:27 में उपयोग किया है।
* sebazomai, अर्थ है "उपासना करना", और रोमियों 1:25 में उपयोग किया हा।
* eusebeo, अर्थ है "श्रद्धामय होना" और प्रेरितों 17:23 में उपयोग किया है।

Proskuneo के समान, ये तीन शब्द भी बाहरी कार्य के बजाय श्रद्धा या भक्ति की भीतरी भावना पर जोर देते हैं।

हम ने देखा है कि बाइबल अक्सर "आराधना" शब्द उपयोग करती है परन्तु "आराधना" की परिभाषा नहीं देती है; परन्तु, आराधना के लिए इब्रानी और यूनानी शब्द संकेत देते हैं कि यह सेवा करने का कार्य है जो भक्तिपूर्ण भय और प्रेमभरी श्रद्धा के रवैये में से निकलता है।
इसलिए, हम कह सकते हैं कि आराधना परमेश्वर से उसके स्वभाव, गुणों, मार्गों और दावों की सीधी स्वीकृति है जो दोनों भीतर अनुभव किए जाते और आत्मिक और व्यावहारिक कार्यों में भी व्यक्त किए जाते हैं।

स्तुति

बाइबल न केवल आराधना की एक संयुक्त तस्वीर चित्रित करने के लिए कई इब्रानी और यूनानी शब्द उपयोग करती है, बल्कि यह एक और बहु-मुखी क्रिया प्रस्तुत करने के लिए स्तुति के लिए विभिन्न शब्द उपयोग करती है।
जिस प्रकार हमें आराधना की हमारी आधुनिक समझ को बढ़ाने के लिए व्यावहारिक सेवा और भीतरी रवैये सम्मिलित करने हैं, उसी प्रकार हमें पहचानना है कि स्तुति परमेश्वर के विषय में जोर से गीत गाने से अधिक है।

पुराने नियम में, 'स्तुति' अक्सर सम्मान या आराधना का एक कार्य जो परमेश्वर को उसकी सृष्टि अर्पित करती है – सामान्यतः पुरुष और स्त्रियाँ, परन्तु सदा नहीं। विभिन्न इब्रानी शब्द जिन्हें 'स्तुति' अनुवाद किया गया है, वे सब आराधना की विशेष किस्मों के बारे में हैं, और स्तुति की हमारी समझ के लिए उन सब को अपनाना है।

Halal – (हलाल)

हलाल सबसे सामान्य इब्रानी शब्द है जो "स्तुति करना" अनुवाद किया गया है, और जिसका मूलतः अर्थ है: 'आनन्द से चिल्लाना'। ऐसा लगता है कि प्रारंभ में हलाल एक बलिदान की मृत्यु के दुख का संकेत देने के लिए उपयोग होता था, परन्तु बाद में यह परमेश्वर का बलिदान को स्वीकार कर लेने की खुशी की चिल्लाहट का वर्णन करने के लिए उपयोग होने लगा।

हलाल का सार एक जोरदान शोर करना है, और इसे पुराने नियम में किसी की स्तुति का वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया है:

* एक पुरुष या स्त्री - उत्पत्ति 12:15; नीतिवचन 27:2; 28:4; 31:28-31; 2 शमूएल 14:25
* झूठे देवता – न्यायियों 16:24
* परमेश्वर – 1 इतिहास 16:36; 2 इतिहास 5:13; 20:19-21; 30:21; एज्रा 3:10-11; नहेम्याह 5:13; भजन 22:23; 35:18; 69:30-34; 119:164; 148:1; 150:1-6; यशायाह 62:9; यिर्मयाह 20:13
* परमेश्वर का नाम – भजन 69:30; 74:21; 145:2; 148:5; योएल 2:26
* परमेश्वर का वचन – भजन 56:4,10

पुराने नियम के समय में स्तुति और आराधना अक्सर एक सामूहिक कार्य होता था, और सामूहिक हलाल पर बाइबल का बल इन वचनों में स्पष्ट है: न्यायियों 16:24; 1 इतिहास 16:36; 23:5; 2 इतिहास 23:12; 30:21; एज्रा 3:11; नहेम्याह 5:13; भजन 22:22; 35:18; 102:18; 107:32; 109:30; 117:1।

आजकल हम स्तुति को अक्सर धन्यवाद से जोड़ते हैं। दिलचस्पी की बात यह है कि स्तुति के लिए इब्रानी भाषा के सब शब्दों में से केवल हलाल ही धन्यवाद से जोड़ा गया है। ऐसा जान पड़ता है कि जब लोग परमेश्वर का स्तुति में धन्यवाद करना चाहते थे तो वे ऐसा आनन्द के साथ ऊँची आवाज में करते थे। हम इसे, उदाहरणार्थ, 1 इतिहास 16:4; 23:30; 25:3; 29:13 और नहेम्याह 12:24 में देखते हैं।

हाल्लेलुया, 'प्रभु की स्तुति हो' अभिव्यक्ति भजन 104:35 और 135:3 में; भजनों 106; 111; 113; 135; 146-149 के आरम्भ में और भजनों 104-106; 113; 115-117; 135; 146-150 के अन्त में उपयोग की गई है।

Yadah – (यादाह)

इब्रानी शब्द यादाह अक्सर 'स्तुति करना' अनुवाद किया गया है, परन्तु इसका अक्षरक्षः अर्थ 'फेंकना' है जैसे विलापगीत 3:53 में। यह उलझन पैदा करनेवाला लगेगा, परन्तु – संसार के कई भागों में – लोग आज भी उन पर चीजें फेंक कर उनकी प्रशंसा करते हैं। उदाहरणार्थ, लोग नए विवाहित दम्पति पर कनफटी या फूल फेंककर उनकी प्रशंसा करते हैं।

यादाह दो सम्पूरक तरीकों से उपयोग किया जाता है, यह सुझाव देने के लिए कि

परमेश्वर के लोगों द्वारा की गई स्तुति में शरीर या आत्मा के कार्य होते हैं
स्तुति मूलभूत रूप से मुँह से बोली जाती है

कुछ बाइबलें यादाह को '(पाप) स्वीकार करना' अनुवाद करती हैं (जैसे कि, 1 राजा 8:33-35; 2 इतिहास 6:24-26; अय्यूब 40:14; भजन 32:5 में) और 'धन्यवाद करो' (जैसे कि 2 शमूएल 22:50; 1 इतिहास 16:4-8; भजन 18:49; 30:12; 136:1-20 में)। परन्तु जब और स्थान में यह 'स्तुति' अनुवाद किया गया है तो यह वही शब्द है।

कई स्थानों में, यादाह हलाल के साथ क्रम में उपयोग किया गया है - जैसे 1 इतिहास 29:13; 2 इतिहास 31:2; एज्रा 3:11 और नहेम्याह 12:24 में। ऐसे वचनों में, अनुवादकों ने इन दो शब्दों में भिन्नता की खातिर हलाल को स्तुति और यादाह को धन्यवाद देना अनुवाद किया है। परन्तु ये वचन दिखाते हैं कि परमेश्वर अपेक्षा करता है कि हमारी स्तुति में हलाल का शोर और यादाह का शरीर या आत्मा का कार्य हो।

यादाह का हर उपयोग एक कार्य और एक घोषणा का संकेत देता है, और हमें निश्चित करने की आवश्यकता है कि स्तुति की हमारी समझ में कार्य सम्मिलित है, और पहचानने की कि हमारे स्तुति के शब्द धन्यवाद, या स्वीकरण, या सार्वजनिक घोषणा में हो सकते हैं: यह सब स्तुति है।
यादाह स्तुति की सामान्य भाव में उपयोग किया गया है, उदाहरणार्थ, उत्पत्ति 29:35; 2 इतिहास 7:3; भजन 9:1; 42:5; 54:6; 57:9; 86:12; 108:3; 118:28; 138:1-2; यशायाह 12:1-4; 25:1; 38:19 और यिर्मयाह 33:11 में।

Zamar – ज़मार

यह क्रिया तारदार वाद्य की 'गुंजन' से आता है, और पुराने नियम में तब उपयोग हुआ है जब स्तुति गाने के साथ या एक संगीत वाद्य के बजने के साथ हुई है।
Mizmor संज्ञा ज़मार से प्राप्त हुई है, और यह शब्द भजन के लिए है। यह 57 भजनों के नाम में 'एक गीत आरम्भ करने के लिए' उपयोग किया गया है जो एक संगीत वाद्य के साथ गाया जाता था।
ज़मार अक्सर 'स्तुति गाना' अनुवाद किया गया है, और उदाहरणार्थ, न्यायियों 5:3; 2 शमूएल 22:50; भजन 7:17; 9:11; 47:6; 61:8; 98:4; 108:1; 144:9; 147:7; 149:3 और यशायाह 12:5 में उपयोग हुआ है।

Shabach – शबाच

यह क्रिया एक मूल से ली गई है जिसका अर्थ है: 'सहलाना, या शान्त करना' - और भजन 8:2; 65:7; 89:9 और नीतिवचन 29:11 में क्रोध, या समुद्र और शत्रुओं को 'शान्त करने' का वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया है। और स्थान में, शबाच 'परमेश्वर को स्तुतियों से खुश करने' के विषय में है; उदाहरणार्थ, यह भजन 63:4; 117:1; 145:4; 147:12; दानिय्येल 2:23; 4:34-37; 5:4,23 में उपयोग किया गया है।
शबाच अक्सर 'स्तुति करना' अनुवाद किया गया है, परन्तु कुछ अनुवाद इसे 'धन्य कहना', या 'गुणगान करना', या 'महिमा देना', या 'आदर करना' अनुवाद करते हैं विशेषकर तब जब यह हलाल के साथ क्रम में उपयोग हुआ है। यह संकेत देता है कि हमारी स्तुति में शबाच की नम्रता और हलाल का शोर सम्मिलित होना चाहिए।

Todah तोदाह

यह संज्ञा अक्सर 'धन्यवाद' अनुवाद की गई है, परन्तु कभी-कभी 'स्तुति' भी अनुवाद की गई है - उदाहरणार्थ, भजन 42:4; 50:23 और 56:12 में।

जबकि आराधना, स्तुति और धन्यवाद में बहुत अधिक परस्परछादी है, उन्हें दो तरीकों से पहचाना जा सकता है:

आराधनाः परमेश्वर के अस्तित्व का आदर है;

स्तुतिः उसके स्वभाव का आदर है;

धन्यवादः उसकी क्रियाओं का आदर है।

आराधना: हर शब्द, कार्य और रवैये के लिए एक सर्व-समाविष्ट करनेवाली अभिव्यक्ति है जो परमेश्वर के सर्वोच्च्य मूल्य की स्वीकृति में से प्रवाहित होती है।

स्तुति: मूल रूप से परमेश्वर के विषय में प्रशंसा की वाचिक घोषणा से संबंध रखती है।

धन्यवाद: एक वाचिक घोषणा या एक उदार कार्य से संबंध रखती है जो परमेश्वर ने जो किया है उसके लिए कृतज्ञता व्यक्त करता है।

यह परस्परछादी मुख्य कारण है कि यादाह और तोदाह जैसे शब्द कभी-कभी स्तुति और कभी-कभी धन्यवाद अनुवाद किए गए हैं। एक अन्तर है, परन्तु यह बिरले ही अर्थवान् है।

नए नियम के शब्द

नए नियम में कई विभिन्न यूनानी शब्द 'स्तुति करो' अनुवाद किए गए हैं। उन सबका कुछ कुछ भिन्न अर्थ है, और हमें स्तुति की ऐसी समझ और अभ्यास होना चाहिए, जो उन सबका लाभ उठा सकता है।

= aineo: इसका प्रारंभिक अर्थ 'एक कहानी सुनाना' था, परन्तु नए नियम में इसे परमेश्वर की उच्चारित स्तुति का वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया है - उदाहरणार्थ, लूका 2:13,20; 19:37; 24:53; प्रेरितों 2:47; 3:8-9; रोमियों 15:11; प्रकाशित. 19:5।

= epaineo: इसका अर्थ 'प्रशंसा करना' है और सब उत्साही उच्चारित प्रशंसा का संकेत देता है - उदाहरणार्थ, 1 कुरिं. 11:2,17,22; 2 कुरिं. 8:18; इफि. 1:12-14; फिलिप्पियों 1:11; 4:8; 1 पतरस 1:7; 2:4।

= hummeo: यह यूनानी शब्द 'hymn भजन' का स्रोत है और इसका अर्थ है 'स्तुति गाना' - जैसे इसे, उदाहरणार्थ, मत्ती 26:30; मरकुस 14:26; प्रेरितों 16:25 और इब्रानियों 2:12 में उपयोग किया गया है।

= psallo: इसका अर्थ एक तारदार वाद्य को टंकारना, और यह एक संगीत वाद्य के साथ स्तुति करने का उल्लेख करता है। - जैसे याकूब 5:13 में।

= exomologeo: इसका अर्थ 'स्वीकार करना' है और एक खुले स्वीकरण, उत्सव या घोषणा का संकेत देता है; कुछ अनुवाद इसे 'धन्यवाद देना' उपयोग करते हैं परन्तु 'स्तुति' अधिक उपयुक्त है - इसे मत्ती 11:25; लूका 10:21; रोमियों 14:11; 15:9; फिलिप्पियों 2:11 और प्रकाशित. 3:5 में उपयोग किया गया है।

= eucharisteo: हालाँकि इस शब्द का अक्षरक्षः अर्थ 'धन्यवाद देना' है, और इसे ऐसा ही अनुवाद किया गया है, फिर भी यह नए नियम का स्तुति के लिए सबसे सामान्य शब्द है और यादाह के समान ही उपयोग किया जाता है। Eucharistes परमेश्वर की ओर आनन्द की अभिव्यक्ति का वर्णन करता है और आत्मा के फल का एक पहलू है। उदाहरणार्थ, यह मत्ती 26:27; मरकुस 8:6; लूका 17:16; यूहन्ना 11:41; प्रेरितों 28:15; रोमियों 1:8; 1 कुरिं. 14:18; कुलु. 1:3; 2 थिस्स. 2:13; प्रकाशित. 11:17 में उपयोग हुआ है।
पारम्परिक कलीसियाएँ प्रभु भोज को Eucharist कहती हैं क्योंकि वे प्रभु भोज को मूल रूप से मसीह की मृत्यु के लिए धन्यवाद के कार्य के रूप में देखती हैं।

बाइबल की स्तुति

सारी बाइबल स्तुति के प्रस्फोटन से भरी पड़ी है जो आनन्द से भरे हृदय से स्वेच्छा से निकलती हुई जान पड़ती है जो सारी बाइबल में परमेश्वर के लोगों के जीवन की विशेषता है।
बाइबल इसे स्पष्ट करती है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि में आनन्दित होता है, और कि सारी सृष्टि को भी इसका आनन्द स्तुति में व्यक्त करना चाहिए। उदाहरणार्थ, हम इसे उत्पत्ति 1; भजन 90:14-16; 104:31; नीतिवचन 8:30-31; अय्यूब 38:4-7; प्रकाशित. 4:6-11 में देखते हैं।
स्तुति परमेश्वर के लोगों का एक प्रमुख विशिष्ट चिन्ह है, और अविश्वासी स्तुति करने से इन्कार करके उनके विश्वास की कमी प्रकट करते हैं। हम इसे रोमियों 1:21; 1 पतरस 2:9; इफिसियों 1:3-14; फिलिप्पियों 1:11; प्रकाशित. 16:9-14 में देखते हैं।
बाइबल दिखाती है कि परमेश्वर के राज्य के आने का संकेत परमेश्वर के लोगों में, और सारी सृष्टि में गहरे आनन्द और सच्ची स्तुति का पुनःस्थापना होगा - उदाहरणार्थ, हम इसे यशायाह 9:2; भजन 96:11-13; लूका 2:13-14; प्रकाशित. 5:9-14 में देखते हैं।
तम्बू और मन्दिर में स्तुति और आराधना राज्य की स्तुति का पूर्वानुभव था, और यह परमेश्वर की उद्धार करनेवाली उपस्थिति में होने के कारण लोगों के आनन्द में से निकलती थी - उदाहरणार्थ, हम इसे व्यवस्था. 27:7; गिनती 10:10; लैव्यव्यवस्था 23:40 में देखते हैं।

परन्तु अय्यूब 1:21 दिखाता है कि बाइबल की स्तुति केवल आनन्द का हृदय ही प्रकट नहीं करती है, क्योंकि लोगों को उनकी भावनाएँ और परिस्थितियाँ कैसी भी क्यों न हों, उनके परमेश्वर के सम्मुख आनन्दित होने की आज्ञा दी गई थी - जैसे व्यवस्था. 12:7; 16:11-12 में है।

मन्दिर की स्तुति के लिए ध्यानपूर्वक प्रबंध किए गए थे, इसलिए यह सदा अनायास नहीं थी। निर्गमन 15:20; 2 शमूएल 6:14; भजन 42:4; 149:3 और भजन 150 दिखाते हैं कि इसमें भजन, जयजयकार, जलूस, प्रतिस्वनी गाना, नचना और संगीत वाद्य सम्मिलित होते थे।

पहले मसीही विश्वासी उनके आनन्द को मन्दिर की आराधना में सम्मिलित होकर व्यक्त करते रहे थे - जैसे लूका 24:53; प्रेरितों 3:1; मरकुस 2:22 दिखाता है, फिर भी मसीह में नए जीवन के अनुभव को स्तुति के नए ढंगों में व्यक्त होने की आवश्यकता है। पुरुष और स्त्री जो यीशु के सामर्थ्य को अनुभव करते थे, स्वैच्छिक स्तुति में फूट पड़ते थे - जैसे हम लूका 18:43 और मरकुस 2:12 में देखते हैं। नया नियम स्तुति के कई प्रस्फोटन का उल्लेख करता है जब लोग परमेश्वर के सामर्थ्य को अनुभव करने लगे थे, उदाहरणार्थ, प्रेरितों 2:46; 3:8; 11:18; 16:25 और इफिसियों 1:1-14 में।

कुलुस्सियों 3:16 और मत्ती 26:30 बताते हैं कि प्रारंभिक विश्वासी उनकी स्तुति और आराधना में पुराने नियम के भजनों को उपयोग करते थे। 1 कुरिन्थियों 14:26; कुलुस्सियों 3:16 और प्रकाशित. 5:8-14 दिखाते हैं कि प्रारंभिक कलीसिया उनकी स्तुतियों में नए भजन भी उपयोग करते थे; और लूका 1:46-55, 68-79; 2:29-32 और प्रेरितों 2:4-11 भविष्यद्वाणी की स्तुति की अनेक किस्मों का वर्णन करते हैं।

स्तुति रूपी बलिदान

इब्रानियों 13:15 एक 'स्तुति रूपी बलिदान' की बात करता है। यह लैव्यव्यवस्था 7:11-21 को स्मरण करता है, जहाँ पुराने नियम के विध्यात्मक बलिदानों में धन्यवाद का स्थान स्थापित किया गया था, और व्यवस्थाविवरण 26:1-11 को जहाँ दिखाया गया है कि वेदी पर दान लाने के पीछे मूल कारण कृतज्ञता होना था।

इस अध्ययन में, हम ने स्तुति और आराधना के लिए बाइबल के विभिन्न शब्दों की जाँच की है, और बाइबल के स्तुति और आराधना के अर्थ को विस्तार और गहराई से समझने लगे हैं। जैसे हम सारे पुराने और नए नियम में आराधना / सेवा पर विचार करने लगेंगे, और उसे अपने जीवनों में प्रयोग में लाने लगेंगे, तो हमें इस विस्तृत समझ को मन में रखना होगा।

पुराने नियम का नए नियम में प्रयोग

दाऊद के तम्बू का विस्तार से अध्ययन आरम्भ करने से पहले, बाइबल का अर्थ निकालने के महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों की चर्चा करना लाभप्रद होगा, क्योंकि इनकी खोज और प्रयोग के द्वारा ही सत्य पाया जा सकता है। 'परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने में है, परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात का पता लगाने से होती है" (नीतिवचन 25:2)।

इसे याद रखना चाहिए कि प्रारंभिक कलीसिया के पास कोई नया नियम नहीं था। उनका "नया नियम" "पुराने नियम" में था। पुराने और नए नियम के विषय में ठीक ही कहा गया है:

"नया पुराने में है,
पुराना नए में समझाया गया है,
नया पुराने में छिपा है,
पुराना नए में प्रकट है,
नया पुराने में लिपटा है,
पुराना नए में खुला है।"

इसलिए, क्योंकि नए नियम का प्रमाणिक पवित्रशास्त्र-संग्रह प्रारंभिक कलीसिया के इतिहास में लिखा या सम्पूर्ण नहीं हुआ था, प्रेरित सबकुछ जो परमेश्वर उनके मध्य कर रहा था उसे समझाने के लिए पुराने नियम के लेखों का सहायता लेते रहे थे।

अ. <u>मसीह पुराने नियम के तीन-गुणा भागों को खेलता है।</u>

लूका 24:26-45। लूका के सुसमाचार के इस परिच्छेद में हम दो चेलों को इम्माऊस के मार्ग पर, प्रभु यीशु के दुख उठाने और मृत्यु के कारण दुखी पाते हैं। उन्हें विभिन्न प्रकार की खबरें सुनने को मिली थीं कि वह मरे हुओं में से जी उठा है और कुछ स्त्रियों को दिखाई दिया है।

जैसे वे पिछले कुछ दिनों की दुखद घटनाओं की चर्चा कर रहे थे, कि यीशु आप उनके निकट आकर उनके साथ साथ चलने लगा। वे उसे पहचान न सके। यीशु ने उन्हें पूछा कि वे किन दुखित घटनाओं की चर्चा कर रहे हैं और बताए जाने पर, वह उन्हें उनके आत्मिक प्रत्यक्षज्ञान की मन्दबुद्धि के लिए डाँटने लगा। तब उसने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्रशास्त्र में से अपने विषय में लिखी बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया। उसने उन्हें दिखाया कि, "पवित्र शास्त्र में मेरे विषय में लिखा है" (इब्रानियों 10:5-9; भजन 40:6-8)। वह पिता की इच्छा पूरी करने और पुराने नियम के शास्त्रों को अपने में पूरा करने आया था।

तीन-गुणा "खुलने" पर ध्यान दो जो प्रभु ने उन दो चेलों के लिए किया था।

1. उन्होंने खुली आँखें अनुभव कीं। आय. 31
2. उन्होंने खुले पवित्रशास्त्र सुने। आय. 32
3. उन्हें खुली समझ मिली। आय. 45

"खुला" शब्द का अर्थ है: "सम्पूर्ण रूप से खोलना" और पवित्रशास्त्र में अक्षरक्षः और लाक्षणिक रूप से उपयोग किया गया है।

आयत 44 में हमारे पास मसीह द्वारा दिए पुराने नियम के तीन-गुणा भाग है।

1. व्यवस्था
2. भजन संहिता
3. भविष्यद्वक्ता

व्यवस्था, भजनसंहिता, और भविष्यद्वक्ता "मुहर बन्द पुस्तक" के समान हैं जिसे पुनरुत्थान हुआ प्रभु खोलता और मुहरें तोड़ता है। उसे ही आत्मिक आँखें खोलती हैं। उसे ही पवित्रशास्त्र खोलना है। उसे ही बन्द समझ खोलनी है। जब तक वह नहीं करता, पुराने या नए नियम का सत्य हृदय पर प्रकट नहीं होगा।

आँखों को खोलना धार्मिक अंधेपन और आत्मिक अन्धकार से छुटकारा पाना है।

पवित्रशास्त्र खोलने का अर्थ उनमें छुपे सत्य को प्रकट करना है, जिन्हें सांसाररिक मनुष्य कभी देख नहीं सकता है।

समझ खोलने का अर्थ वह प्रकाश और प्रदीप्ति हैं जो इन पिछले दो के खुलने के कारण हृदय में आते हैं। पौलुस ने यहूदियों के साथ पवित्रशास्त्र में से विवाद किया और उन्हें दिखाया कि कैसे यीशु नासरी उनकी भविष्यद्वाणी की और ऐतिहासिक पूर्ति है (प्रेरितों 17:1-3)। उन दो में अनुकूलता प्रत्यक्ष थी।

यह परमेश्वर का मेम्ना यीशु मसीह है जो जैसे प्रकाशितवाक्य में दिया है, सात मुहरों से बंद पुस्तक (यूनानीः Biblion) को ले सकता है और मुहरों को खोल सकता है, और यूहन्ना को ही नहीं, परन्तु कलीसियाओं को भी समझ दे सकता है (प्रकाशित. 5:1-9)। 2 कुरिन्थियों 3 में पुरानी और नई वाचा की महिमा का भेद और तुलना करने में पौलुस समझाता है कि किस प्रकार उनके मसीहा के विषय में सारे यहूदियों पर अंधापन बैठा हुआ था। उनके पुराने नियम के शास्त्रों ने मसीहा के आने, उसके दुख, और आनेवाली महिमा के विषय में बताया था, फिर भी अंधेपन का अविश्वास सारे देश पर था। वे उनके अंधेपन के अविश्वास के कारण उनके अपने शास्त्रों में मसीह को देख नहीं सके। पौलुस ने लिखा, "परन्तु वे मतिमन्द हो गए, क्योंकि आज तक पुराना नियम पढ़ते समय उनके हृदयों पर वही परदा पड़ा रहता है, पर वह मसीह में उठ जाता है। आज तक जब कभी मूसा की पुस्तक पढ़ी जाती है, तो उनके हृदय पर परदा पड़ा रहता है। परन्तु जब कभी उनका हृदय प्रभु की ओर फिरेगा, तब वह परदा उठ जाएगा।" (2 कुरिन्थियों 3:14-16)।

इस सबका संकट आज भी कलीसिया में परमेश्वर के कई लोगों में प्रत्यक्ष है। हृदय पर परदा पड़ा हुआ लगता है, पुराने नियम को पढ़ने में आत्मिक अंधेपन की एक स्थिति है। कितनी बार विश्वासियों ने कहा है, "यह पुराने नियम में से है; पुराने नियम में से हमारे लिए आज कुछ नहीं है, वह सब तो मसीह में पूरा हो चुका है, हमें केवल नए नियम की आवश्यकता है।" पुराने नियम को एक ऐतिहासिक पुस्तक के रूप में ही देखा जाता है। भविष्यद्वक्ताओं के लेखों को स्वाभाविक इस्राएल पर लगाया जाता है, और इसलिए कलीसिया से वह सारा सत्य जो इसका है चुरा लिया जाता है।

प्रभु की ओर सच्चे दिल से फिरने से हृदय का परदा निकल जाएगा, और हमारे मन की आँखें ज्योर्तिमय हो जाएँगी। तब हम पुराने नियम की व्यवस्था, भजनसंहिता और भविष्यद्वक्ताओं को पढ़ने पर मसीह और उसकी कलीसिया को देखेंगे। प्रभु अपने पवित्र आत्मा के द्वारा कलीसिया के लिए इन पुस्तकों को एक बड़े पैमाने पर खोल रहा है।

आ. पुराने नियम का अध्ययन क्यों करें?

क्योंकि दाऊद के तम्बू का यह अध्ययन हमें पुराने नियम में उस तक ले जाता है जो प्रतीक है, इसलिए हमें समझना आवश्यक है कि हमें क्यों इनका अध्ययन करना है।

नीचे कई एक कारण दिए गए हैं कि क्यों विश्वासी उसकी खोज करने के लिए जो दाऊद के तम्बू के विषय से संबंधित है, पुराने नियम के शास्त्रों का प्रयोग करेगाः

1. दाऊद का तम्बू शास्त्र का भाग है जो परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। (2 तीमुथियुस 3:16)

2. मसीह ने आप भी अपने से संबंधित पुराने नियम के शास्त्रों में से चीजों को समझाया था जो व्यवस्था, भजनसंहिता और भविष्यद्वक्ताओं में हैं। (लूका 24:26, 27, 44, 45)

3. जितनी बातें पहले से लिखी गई हैं, वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें। (रोमियों 15:4)

4. यीशु आप व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को पूरा करने आया था। (मत्ती 5:17-18)

5. यीशु ने कहा कि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता भविष्यद्वाणी करते हैं। (मत्ती 11:13)

6. पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने मसीह के दुख और आनेवाली महिमा के विषय में कहा था। उन पर यह प्रकट किया गया था कि वे अपनी नहीं परन्तु हमारी सेवा के लिए ये बातें कहा करते थे। (1 पतरस 1:10-12)

7. जो चीजें इस्राएल के पुराने नियम के इतिहास में घटी थीं प्रतीक और उदाहरण थीं और ये चीजें हमारे उपदेश के लिए लिखी गई थीं जिन पर युग का अन्त आ पहुँचा है। (1 कुरिं. 10:6, 11)

8. इब्रानियों के लेखक ने कहा, "पवित्र शास्त्र में मेरे विषय में लिखा है", यानि मसीह के विषय में। (इब्रानियों 10:7; भजन 40:6-8)

9. पवित्रशास्त्र "पहले स्वाभाविक और तब जो आत्मिक है" की बात करता है (1 कुरिं. 15:46-47), और यह एक सिद्धान्त है जिसे इस अध्ययन में प्रयोग किया जा सकता है।

10. मूसा का तम्बू एक प्रतिरूप, एक प्रतिबिम्ब, अनन्त, आत्मिक, और स्वर्ग में की वस्तुओं के नमूने के रूप में दिया गया था (इब्रानियों 8:5; 9:23-24)। यह दाऊद के तम्बू पर भी लागू होना चाहिए।

दाऊद का तम्बू बाहरी रूप के एक भौतिक तम्बू में ईश्वरीय ज्ञान और सत्य को रखता है। हम उसमें छिपे ज्ञान और सत्य को खोजने के लिए बाहरी रूप को देखते हैं। पुरानी वाचा का बाहरी रूप बीत जाएगा परन्तु उनमें छिपा ज्ञान और सत्य, और जिसे नए नियम ने बनाए रखा है, बना रहेगा। (रोमियों 2:20)

इ. <u>प्रारंभिक कलीसिया में पुराने नियम का प्रयोग</u>

प्रेरितों की पुस्तक और सारा नया नियम भी प्रकट करता है कि प्रेरितों ने मसीह और उसकी कलीसिया से संबंधित जिनकी पुराने नियम में पूर्वाभास और भविष्यद्वाणी की गई थी, कैसा "खुलना" अनुभव किया था। अनेक विश्वासी पुराने नियम में मसीह को देखते हैं परन्तु कलीसिया को देखने में असफल रहते हैं। इन्हें अलग नहीं किया जा सकता है। मसीह जो सिर है और कलीसिया जो उसकी देह है, एक है। परमेश्वर ने न केवल मसीह के विषय में परन्तु उसकी देह से संबंधित चीजों की भी भविष्यद्वाणी की थी। इसलिए प्रेरित उस सब के लिए जो प्रभु उसके आत्मा के द्वारा उनके मध्य कर रहा था, निरन्तर व्यवस्था, भजनसंहिता और भविष्यद्वक्ताओं को प्रयोग करते रहे थे।
नीचे प्रेरितों की पुस्तक में से लिए गए बहुत सारे वचन हैं। इनमें से हर एक पुराने नियम का प्रारंभिक कलीसिया द्वारा प्रयोग दिखाता है और उन्होंने किस प्रकार उन में से शास्त्रों का अर्थ निकाला था। इन शास्त्रों का निकट से निरीक्षण करने से पता चलेगा कि नए नियम के लेखक पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के अचूक व्याख्याता बने थे। इसलिए जैसे हम मसीह और उसकी कलीसिया के प्रकाश में पुराने नियम के पवित्रशास्त्रों की व्याख्या करते हैं, तो वे हमें अनुकरण करने के लिए सुरक्षित मार्गदर्शन देते हैं।

परिच्छेदों को यहाँ संक्षेप में लिखा गया है, और उन व्यक्तियों पर बल दिया गया है जिन्होंने व्यवस्था, भजनसंहिता और भविष्यद्वाणियों को लिखा था।

1. प्रेरितों 1:18-20। भजनसंहिता। <u>दाऊद</u> ने पवित्र आत्मा के द्वारा यहूदा के विषय में कहा था।
2. प्रेरितों 2:14-21। भविष्यद्वक्ता। <u>योएल</u> ने अन्तिम दिनों में पवित्र आत्मा के उँडेले जाने के विषय में बताया था।
3. प्रेरितों 2:22-36। भजनसंहिता। <u>दाऊद</u> ने मसीहा के पुनरुत्थान, और पिता के दाहिने हाथ सर्वोच्च पद पाने के विषय में कहा था।
4. प्रेरितों 3:19-22। व्यवस्था। भविष्यद्वक्ता <u>मूसा</u> ने मसीह के आगमन की बात की थी।
5. प्रेरितों 3:23-25। भविष्यद्वक्ता। <u>शमूएल</u> और उसके बाद वाले सब भविष्यद्वक्ताओं ने इन दिनों की बात की थी।
6. प्रेरितों 4:23-30। भजनसंहिता। <u>दाऊद</u> ने मसीह के विषय में भजमसंहिता में बोला था।
7. प्रेरितों 8:30-35। भविष्यद्वक्ता। <u>यशायाह</u> ने क्रूस पर मसीह के दुख की बात की थी।
8. प्रेरितों 13:15, 38-41। व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता। नबी <u>हबक्कूक</u> ने मसीहा के दिनों में परमेश्वर के कार्यों की बात की थी।
9. प्रेरितों 10:43। भविष्यद्वक्ता। सब नबियों ने मसीहा के दुख और आनेवाली महिमा की बातें की थीं।
10. प्रेरितों 17:2-3। भविष्यद्वक्ता। पुराने नियम के पवित्रशास्त्र। पौलुस ने शास्त्र खोलकर निश्चय के साथ कहा कि यीशु नासरी ही पवित्रशास्त्र की पूर्ति है (2 कुरिं. 3:13-16 में)।
11. प्रेरितों 28:23-31। व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता। <u>मूसा</u> और <u>यशायाह</u> ने मसीह की बात की।
12. प्रेरितों 15:15-18। भविष्यद्वक्ता। <u>आमोस</u> नबी ने दाऊद के तम्बू और अन्यजातियों के आने की बात की थी।

इस संक्षिप्त सूची पर सरसरी नज़र डालने पर पता चलता है कि प्रारंभिक प्रेरितों को कितनी अन्तर्दृष्टि मिली थी और उन्हेंने व्यवस्था, भजनसंहिता और भविष्यद्वक्ताओं को कितना प्रयोग किया था। उन्होंने इन्हें उनके जीवनों में परमेश्वर के काम की भविष्यद्वाणी की गई और अर्थ निकाला गया है, कहा।

नीचे दिया गया चित्र इन चीजों की सत्यता प्रकट करता है और दिखाता है कि किस प्रकार पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता नए नियम के समयों की ओर संकेत करते हैं।

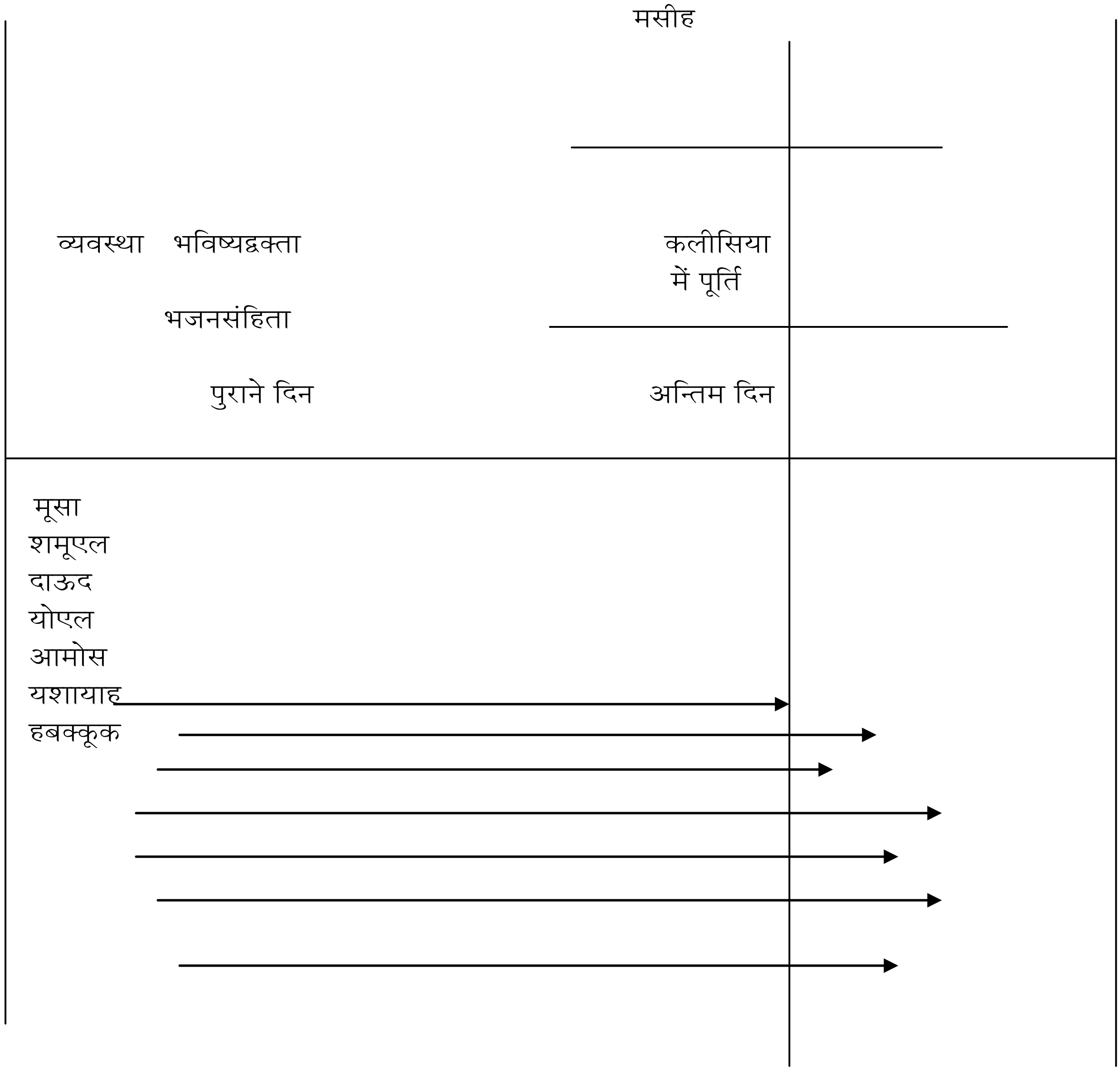

इसलिए सारा नया नियम उसका प्रकटीकरण है जो पुराने नियम के "बीज" में था। सुसमाचार, प्रेरितों की पुस्तक, प्रेरित, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक उन उद्धरण, संकेतों, और व्याख्यात्मक प्रकटीकरणों से भरे पड़े हैं जो व्यवस्था, भजनसंहितों, और भविष्यद्वक्ताओं में छिपे हुए थे।
व्यवस्था, भजनसंहिता और भविष्यद्वक्ताओं में दाऊद के तम्बू से संबंधित सत्य की नदियाँ और धाराएँ हैं, जिनकी नया नियम पुष्टि करता है और जिसके द्वारा लेखकों को "खुलना" दिया गया था।

ई. <u>पुराना नियम ईश्वरीय उत्कीर्ण रत्न</u>

"उत्कीर्ण रत्न" का अर्थ है "एक रत्न जिसकी दो सतहें हैं, एक सतह पर आकृति गढ़ी गई है, ताकि यह दूसरे की पृष्ठभूमि पर उठाया गया हो।"

पुराना नियम हमें अनेक "उत्कीर्ण रत्न" प्रदान करता है। पुराने नियम के इतिहास में बहुत सी चीजें परमेश्वर ने ऐसे ही बनाई थीं। परमेश्वर अक्सर लोगों को कुछ प्रतीकात्मक रूप से करने को कहता था जिसे वह आप वास्तव में करेगा। कृपया ध्यान दीजिए, ऐसा नहीं कहा जा रहा है कि ये चीजें पुराने नियम में वास्तव में नहीं हुई थीं। इसका कहने का अर्थ यह है कि ऐतिहासिक घटना उसका एक प्रतीकात्मक पूर्वाभास भी थी जिसे परमेश्वर मसीह और उसकी कलीसिया में नए नियम में पूरा करने पर था।

1. अब्राहम इसहाक को अर्पित करता है। उत्पत्ति *22*

इस अध्याय में हम अब्राहम को परमेश्वर द्वारा बुलाए जाने और उसके एकलौते पुत्र को मोरिय्याह पर्वत पर होमबलि करके चढ़ाने की आज्ञा पाने का विवरण पाते हैं। पिता अब्राहम अपने एकलौते पुत्र, इसहाक को लेता है, और तीन दिन की यात्रा के बाद, उसे प्रतीकात्मक रूप से मोरिय्याह पर्वत पर अर्पित करता है। इस स्थान पर परमेश्वर का उद्धार करनेवाला नाम, यहोवा यिरे - "प्रभु उपाय करेगा" प्रकट हुआ था। इस एकलौते पुत्र के स्थान पर एक मेढ़ा चढ़ाया गया था। इब्रानियों 11:17-19 हमें बताता है कि अब्राहम ने प्रतिज्ञा के पुत्र को बलिदान करके चढ़ाया और चित्र में उसे मरे हुओं में से जीवित प्राप्त किया।

कौन इसे ईश्वरीय उत्कीर्ण रत्न के रूप में देखने में असफल रहेगा? एक सतह पर सत्य के रत्न का दूसरे की पृष्ठभूमि पर उठाया जाना प्रत्यक्ष है। पिता परमेश्वर उचित समय पर अपने एकलौते पुत्र यीशु को (यूहन्ना 3:16) कलवरी के पर्वत पर तीन दिन और तीन रातों के चिन्ह के साथ अर्पित करेगा (मत्ती 12:39-40)। प्रतिज्ञा का पुत्र उसके बाद मरे हुओं में से जीवित किया जाएगा। परन्तु उसके स्थान पर एक पशु चढ़ाने के बजाय जैसे इसहाक के साथ हुआ था, उसे पशु के स्थान पर चढ़ाया जाएगा, और इस प्रकार उसके निष्पाप, सिद्ध और एक बार के बलिदान द्वारा पुराने नियम के पशुओं के बलिदान को समाप्त कर दिया जाएगा।

इस प्रकार, परमेश्वर ने पुराने नियम में अब्राहम से वह करवाया जो वह आप नए नियम में करने पर था। यह सच में एक ईश्वरीय उत्कीर्ण रत्न था!

2. महायाजक हारून। निर्गमन *28, 29*। लैव्यव्यवस्था 8, 9, 16।

एक दूसरा उत्कीर्ण रत्न वह है जो हारून की महायाजकीय सेवकाई में चित्रित है। महायाजक मनुष्यों में से लिया जाता था और मनुष्यों ही के लिए, ठहराया जाता था कि भेंट और पाप बलि चढ़ाया करे। (इब्रानियों 5:1-5)। अपनी याजकीय सेवकाइयों में, मन्दिर के याजक और बलिदान चढ़ानेवाले के रूप में, हारून प्रभु यीशु मसीह की सेवकाई का पूर्वाभास देता है। हारून यहोवा के सम्मुख अपने में सारे इस्राएल के देश का प्रतिनिधित्व करता था। केवल एक महायाजक था, परमेश्वर और मनुष्यों के बीच केवल एक मध्यस्थ और सारे इस्राएल में जो परमेश्वर के सम्मुख आना चाहता था हारून के द्वारा ही आ सकता था। यहाँ दिखाए उत्कीर्ण रत्न को पहचानने में कौन असफल हो सकता है? इब्रानियों का लेखक सत्य के इस रत्न को, जैसे यह दूसरी सतह के रूप में, इस्राएल के इतिहास की पृष्ठभूमि पर उठाया जाता है, इसकी सतह पर रखता है। हारून की सेवकाई मसीह की सेवकाई का संकेत देती है।

बड़ा छोटे से बढ़ कर होता है, और इसलिए पुराने नियम में, याजक और बलिदान दो भिन्न चीजें थीं, जबकि नए नियम में मसीह याजक और बलिदान दोनों एक व्यक्ति में है (इब्रानियों 7, 8, 9, 10)। मसीह स्वर्गीय मन्दिर में सेवा करता है, और जो कोई परमेश्वर के सम्मुख आना चाहता है उसके द्वार ही आ सकता है। इस प्रकार परमेश्वर ने हारून महायाजक से प्रतीकात्मक रूप से वह करवाया जो उसका पुत्र महायाजक के रूप में मलिकिसिदक की रीति पर वास्तव में करेगा। सचमुच एक और ईश्वरीय उत्कीर्ण रत्न! पुराने नियम में असंख्य ईश्वरीय उत्कीर्ण रत्न हैं। एक बार जब ईश्वरीय उत्कीर्ण रत्न का सिद्धान्त देखा जाता है, तो यह पवित्रशास्त्र को एक अनोखे ढंग से खोल देता है। हम ने ईश्वरीय चित्रों को उनके विशेष चोखटे में देखा है, सत्य को प्रतीकात्मक रूप से पुराने नियम में रखा हुआ जैसे वे नए नियम में वास्तव में पूरे होंगे।

3. दाऊद का तम्बू

वही बात दाऊद के तम्बू के विषय में भी सत्य है। परमेश्वर ने राजा दाऊद को लिया, और जो वह आप मसीह और कलीसिया में वास्तव में और आत्मिक रूप से करने पर था, उसके द्वारा वास्तव में और प्रतीकात्मक रूप से करवाया।

दाऊद का तम्बू इन ईश्वरीय उत्कीर्ण रत्नों में से एक है। दाऊद के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के समय पर इस सत्य के रत्न को उठाया गया है। पुराने नियम के सब प्रतीकों के जैसा इसका चौखटा भी सीमित है, परन्तु इस चौखटे के अन्दर परमेश्वर बहुत सारा आत्मिक सत्य रखता है, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के द्वारा नए नियम में ले जाया गया है।

दाऊद की वाचाः इसका महत्त्व क्या है

बाइबल प्रकट करती है कि परमेश्वर एक वाचा-बनानेवाला और वाचा-रखनेवाला परमेश्वर है। दाऊद से पहले, बड़ी-बड़ी वाचाएँ जो अस्तित्व में थीं:

अदन की वाचा	-	उत्पत्ति 1
आदम की वाचा	-	उत्पत्ति 3
नूह की वाचा	-	उत्पत्ति 8-9
अब्राहम की वाचा	-	उत्पत्ति 15, 17, 22
मूसा की वाचा	-	निर्गमन 24, व्यवस्थाविवरण 4-5
पलिस्तीनी वाचा	-	व्यवस्थाविवरण 29-30

परमेश्वर की महान वाचाओं में से अन्तिम वाचा जो पुराने नियम में बाँधी गई थी दाऊद के साथ थी। इसे दाऊद की वाचा कहा जाता है। दाऊद को कहा गया है:

1. एक साक्षी,
2. एक प्रधान, और
3. एक आज्ञा देनेवाला (यशायाह 55:4)।

वाचा का ब्योरा मुख्य रूप से 2 शमूएल 7; 1 इतिहास 17, और भजन 89 और 132 में पाया जाता है। बाइबल के अधिकाँश व्याख्याता इस सत्य को स्वीकार करते हैं कि दाऊद की वाचा की अन्तिम पूर्ति और सिद्धि दाऊद के महान पुत्र, प्रभु यीशु मसीह में होती है। यह वही है जिसने नई वाचा बाँधी थी। दाऊद की वाचा में यीशु मसीहः राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु के रूप में विश्व का अन्तिम शासक है।

बेशक इस्राएल में वाचा की सांसारिक, स्वाभाविक और राष्ट्रीय पूर्ति भी है। परन्तु, सबसे बढ़ कर यह मसीह और कलीसिया में वाचा की स्वर्गीय, आत्मिक, और अनन्त पूर्ति है। इसके बाद के पहलू पर इस अध्ययन में विचार किया जा रहा है। जो आत्मिक और अनन्त है उसको तब समझा या उसका महत्त्व तब तक नहीं जाना जा सकता है जब तक पहले उसे जो स्वाभाविक और सांसारिक है देखा न जाए (2 कुरं. 4:18)। पहले स्वाभाविक होता है तब आत्मिक होता है (1 कुरिं. 15:46)।

पुराने और नए नियमों से संबंधित अर्थ निकालने का सबसे मूल सिद्धान्त उसे देखना है जो नीचे दिए दो स्तम्भों में दिया गया है। इसे दाऊद की वाचा और नई वाचा में देखा जा सकता है।

	पुराना नियम	नया नियम
1.	प्रतीक	प्रतिरूप
2.	प्रतिबिम्ब	वास्तविकता
3.	सांसारिक	स्वर्गीय
4.	स्वाभाविक	आत्मिक
5.	अस्थायी	अनन्त
6.	प्रतिज्ञा	प्राप्ति
7.	भविष्यद्वाणी	पूर्ति
8.	पूर्वाभास	सिद्धि
9.	राष्ट्रीय इस्राएल	आत्मिक इस्राएल, कलीसिया
10.	दाऊद की वाचा	नई वाचा

दाऊद की वाचा से संबंधित अध्यायों और इस वाचा से संबंधित चीजों में दिए दूसरे शास्त्रों को ध्यान से पढ़ने की आवश्यकता है। दाऊद के सारे इस्राएल पर राजा बनने के बाद, उसने सियोन पर कब्जा किया और तम्बू को स्थापित किया जिससे उसका नाम जाना जाता है। जब वह एक दिन अपने घर में बैठा हुआ था, और जब प्रभु ने उसे उसके शत्रुओं पर जय दी थी, दाऊद परमेश्वर के लिए एक घर के विषय में बहुत सोचने लगा। उसने नातान नबी से कहा कि इस्राएल के राजा के रूप में उसके पास एक सुन्दर घर है,

जबकि राजाओं के राजा, परमेश्वर का सन्दूक पर्दों के पीछे एक तम्बू में है। नातान ने दाऊद को जो उसके मन में था करने के लिए उत्साहित किया। दाऊद की इच्छा परमेश्वर के लिए एक घर बनाने और उसका सन्दूक वहाँ रखने की थी।
परन्तु, प्रभु का वचन नातान नबी के पास आया कि वह दाऊद को बताए कि वह परमेश्वर के लिए घर नहीं बनाएगा, परन्तु उसका पुत्र, सुलेमान बनाएगा।
प्रभु ने दाऊद को याद दिलाया कि इस्राएल के मिस्र में से निकलने से लेकर, उसने किसी को भी उसके लिए एक घर बनाने के लिए नहीं कहा था। प्रभु ने स्पष्ट कहा, "क्योंकि जिस दिन से मैं इस्राएलियों को मिस्र से ले आया, आज के दिन तक मैं कभी घर में नहीं रहा; परन्तु एक तम्बू से दूसरे तम्बू को और एक निवास से दूसरे निवास को आया जाया करता हूँ" (1 इतिहास 17:5 और 2 शमूएल 7:6)। इसके अतिरिक्त, प्रभु ने दाऊद को कहा कि वह उसके लिए घर बनाएगा। परमेश्वर ने वाचा की सब बातें नातान नबी को रात के दर्शन में दीं और उसने उन्हें दाऊद को कह सुनाया। दाऊद की वाचा के विषय में बहुत सारी चीजें भजनसंहिता और भविष्यद्वक्ताओं में बिखरी पड़ी हैं। इन्हें यह देखे बिना कि वे दाऊद के पुत्र, यीशु मसीह की ओर संकेत करती हैं, पढ़ना नामुमकिन है।
इसे पहले ही देखा जा चुका है कि वह होता है जो दाऊद के स्वाभाविक घर से सम्बंध रखता है, परन्तु उस सब के पीछे वह है जो मसीहा से सम्बंधित है। इसकी नए नियम के लेखकों ने और दाऊद की वाचा की चीजों को दाऊद की जड़ और सन्तान, यीशु मसीह में उनके प्रयोग ने भरपूर पुष्टि की है। नए नियम के लेखक पुराने नियम के लेखों के अचूक व्याख्याता हैं। दाऊद की वाचा से सम्बंधित बहुत सारी सामग्री के होने के कारण, हम वाचा में सम्मिलित 9 प्रमुख चीजों को ही चुनेंगे। हम पहले संक्षेप में स्वाभाविक को देखेंगे, तब आत्मिक को। हम उस पर विचार करेंगे जो दाऊद को दिया गया है और तब उस पर जो दाऊद के महान पुत्र, यीशु मसीह में पूरा हुआ है। दिए गए वचनों को पढ़ो और उनके अनुकूल हो जाओ।

1. दाऊद के साथ वाचा

स्वाभाविक - (भजन89:3, 34-37; यिर्मयाह 33:17-26)

परमेश्वर ने दाऊद के साथ वाचा बाँधी। यह वाचा दाऊद के सन्तान, घर, राज्य और सिंहासन से सम्बंधित एक अनन्त वाचा थी। यह एक अटूट वाचा थी। हालाँकि इसमें दाऊद के पापी सन्तान पर सजा सम्मिलित थी, फिर भी परमेश्वर उस वाचा को कभी तोड़ेगा नहीं। प्रभु ने इस वाचा को नातान नबी को दर्शन में दिया था, और उसने दाऊद को बताया। बाइबल प्रकट करती है कि परमेश्वर एक वाचा रखनेवाल परमेश्वर है। परमेश्वर ने इस वाचा को शपथ के द्वारा पक्का किया था (भजन 89:3, 49)।

आत्मिक - (मत्ती 26:26-28; इब्रानियों 13:20)

यीशु मसीह दाऊद के पुत्र के रूप में दाऊद की वाचा की पूर्ति है। उसने नई वाचा बनाई जो अनन्त वाचा है। असल में, नई वाचा दाऊद की वाचा में थी, और ये दोनों अब्राहम की वाचा में हैं। हर एक दूसरे का विस्तार है। परमेश्वर ने नई वाचा को जो यीशु मसीह में साकार है, शपथ के साथ पक्का किया है (भजन 110:4; इब्रानियों 7:20-22, 28)।

2. दाऊद की सन्तान

स्वाभाविक - (भजन 89:4, 29-36; 2 शमूएल 7:12-15; 1 इतिहास 17:11-13; यिर्मयाह 33:17-26; भजन 89:26)

दाऊद की सन्तान सदा बनी रहने वाली थी। हालाँकि दाऊद की सन्तान अपराध की दोषी होगी, और परमेश्वर उस सन्तान को सजा देगा परन्तु वह उसे सुरक्षित रखेगा। परमेश्वर उनके साथ एक पिता-पुत्र के सम्बंध के आधार पर बर्ताव करेगा। कौन इसे समझने में असफल रहेगा कि दाऊद के वंश के कई राजाओं पर ईश्वरीय ताड़ना पड़ी थी। परन्तु परमेश्वर ने अपनी वाचा के अनुसार उस सन्तान को सुरक्षित रखा था।

आत्मिक - (यशायाह 7:13-14; मत्ती 1:1; रोमियों 1:3-4; प्रकाशित. 5:5; 22:16; यिर्मयाह 33:15-16)

इस तथ्य के विषय में कोई संदेह नहीं है कि दाऊद का स्वाभाविक वंश सदियों तक चलता रहा था। परन्तु दाऊद की सन्तान इसका सच्ची अभिव्यक्ति यीशु मसीह, जो शरीर के भाव से दाऊद की सन्तान है, में ही पाती है। अपने देवत्व में मसीह दाऊद का प्रभु और मूल है। अपनी मानवता में मसीह दाऊद का पुत्र और सन्तान है। वही सत्य इस तथ्य में भी है कि मसीह शरीर के भाव से

अब्राहम की सन्तान है (गलातियों 3:16)। इब्रानियों का लेखक दाऊद की वाचा के इस "पिता-पुत्र" सम्बंध के खण्ड को यीशु मसीह को लगाता है। 2 शमूएल 7:14 की तुलना इब्रानियों 1:5 से करो।

3. दाऊद का घर

स्वाभाविक - (1 इतिहास 17:10, 16-27; 2 शमूएल 7:4-7, 12-29)

दाऊद परमेश्वर के लिए एक भौतिक घर बनाना चाहता था। प्रभु ने दाऊद से कहा कि वह दाऊद के लिए एक स्वाभाविक घर बनाएगा। इसकी पूर्ति दाऊद के वंश के सदियों तक दाऊद के सततः घराने में थी।

आत्मिक - (इब्रानियों 3:1-6; 1 तीमुथियुस 3:15; इफिसियों 2:21-22; 2 तीमुथियुस 2:20; गलातियों 6:10; 1 पतरस 2:4-5)

यीशु मसीह का जो दाऊद की सन्तान है, घर होना चाहिए। ऊपर दिए वचन स्पष्ट दिखाते हैं कि कलीसिया उसका घर है। यह कोई भौतिक या स्वाभाविक घर नहीं है। यह आत्मिक घर है। मसीह अपने घर का पुत्र है, जिसका घर हम हैं। यहूदी और अन्यजाति दोनों यीशु मसीह के द्वारा विश्वास के घर में लाए गए हैं।

4. दाऊद का राज्य

स्वाभाविक - (2 शमूएल 7:12, 17; 1 इतिहास 17:11, 14)

दाऊद का तो सदा का एक राज्य, एक अधिकार, और राज्य करने के लिए एक लोग होने ही थे। बाइबल का इतिहास इसकी गवाही देता है। दाऊद के वंश, यहूदा के घराने के राजाओं का अपरिवर्ती वंशज की तुलना उत्तरी राज्य, इस्राएल के घराने के राजाओं से की जा सकती है जिनके वंशज बदलते रहे थे। दाऊद के राज्य ने पलिश्तीन में इसका अधिकार दाऊद से सिदकिय्याह तक बनाए रखा था। इस समय राज्य टूटा था। दाऊद की वाचा की यह आभासी भंग है जिसका संकेत भजनकार भजन 89:38-52 में देता जान पड़ता है। यिर्मयाह नबी इस तथ्य की पुष्टि करता है कि दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा कभी भी टूटेगी या रद्द नहीं होगी (यिर्मयाह 33:17-26)। दाऊद का स्वाभाविक राज्य मसीह के अनन्त राज्य की ओर संकेत करता है।

आत्मिक - (यशायाह 9:6-7; यिर्मयाह 23:5-6; 33:15-16; लूका 1:30-33; प्रकाशित. 5:5; इब्रानियों 1:8; दानिय्येल 2:44)

नए और पुराने नियम के लेखक स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि दाऊद का राज्य मसीह में और मसीह के द्वारा चलता रहता है। यीशु ने दिखाया कि उसका राज्य इस संसार का नहीं है। उसका राज्य स्वर्गीय और आत्मिक राज्य है (यूहन्ना 18:36-37)। इसमें नए जन्म द्वारा प्रवेश किया जाता है (यूहन्ना 3:1-5)। जिब्राएल स्वर्गदूत ने मरियम को बताया था कि उसका पुत्र यीशु याकूब के घराने पर सदा राज्य करता रहेगा और उसके राज्य का कभी अन्त नहीं होगा। मसीह ने अपने सेवकाई में कभी भी राष्ट्रवादी या भौतिकवादी राज्य की बात नहीं की। मत्ती का सुसमाचार जो राजा और राज्य का सुसमाचार है प्रकट करता है कि यह राज्य स्वर्गीय, आत्मिक, और अनन्त राज्य है।

5. दाऊद का सिंहासन

स्वाभाविक - (2 शमूएल 7:13, 16; 1 इतिहास 17:11-15; भजन 89:29-36; 122:5; 132:11)

दाऊद का एक सिंहासन होना ही था। सिंहासन राजाधिकार और शासन का चिन्ह होता है। यह राज्य से जुड़ा होता है। राज्य के लिए सिंहासन की आवश्यकता होती है। राज्य के लिए एक शासक, एक राजदण्ड की आवश्यकता होती है। दाऊद का सिंहासन दाऊद से सिदकिय्याह तक अटूट वंश में चलता रहा था। सिदकिय्याह यहूदा के घराने पर राज्य करनेवाला अन्तिम यहूदी-दाऊदी राजा था। परन्तु वही पवित्रशास्त्र जो दाऊद के राज्य के विषय में हैं दाऊद के सिंहासन पर भी लागू होते हैं (भजन 89:38-52; यिर्मयाह 33:17-26)। परमेश्वर की वाचा अनन्त और अटूट है। वह वाचा रखनेवाला परमेश्वर है। दाऊद का सिंहासन अनन्त है।

आत्मिक - (यशायाह 9:6-7; लूका 1:30-33; प्रेरितों 2:22-36; रोमियों 1:3)

एक बार फिर, नए नियम के लेखक इस तथ्य की बात करते हैं कि यीशु मसीह को दाऊद का सिंहासन मिलना ही था। एक भौतिकवादी, राष्ट्रवादी सिंहासन नहीं - यह शासन का स्वर्गीय सिंहासन था। जब दाऊद ने देखा कि परमेश्वर मसीह को उसके सिंहासन पर बैठाने के लिए खड़ा करेगा, तो उसने मसीह के पुनरुत्थान और पिता के दाहिने हाथ सर्वोच्च पद पाने की बात की। मसीह पिता के सिंहासन पर बैठेगा, उसके दाहिने हाथ, अभी और तब तक जब तक उसके सारे शत्रु उसके पैरों की चोकी नहीं बन जाते (भजन 110:1-4; मत्ती 22:44; इब्रानियों 1:3; 10:11-13; प्रकाशित. 3:21; इफिसियों 1:20; 1 कुरिं. 15:25-26)। दाऊद का सांसारिक सिंहासन दाऊद के पुत्र के सिंहासन की ओर संकेत करता है।

6. <u>दाऊद की अटल करुणा</u>

<u>स्वाभाविक</u> - (2 शमूएल 7:12-17, 15; 1 इतिहास 17:13; यशायाह 55:3-4; भजन 89:1-2, 14, 28-34)

जो वाचा परमेश्वर ने दाऊद के साथ बाँधी थी करुणा की वाचा थी। यदि दाऊद की सन्तान विधर्मी बन जाएँ, तो परमेश्वर उन्हें ताड़ना देगा, परन्तु वह अपनी करुणा उनसे जैसे उसने शाऊल से हटाई थी नहीं हटाएगा। परमेश्वर ने राजा शाऊल का न्याय किया और न्याय में उसे कब्र तक ले गया। उसने उससे अपनी करुणा हटा ली थी। करुणा नहीं का अर्थ मृत्यु है। परन्तु, परमेश्वर ने दाऊद से अपनी अटल करुणा की प्रतिज्ञा की, हालाँकि वह उसके सन्तान के अपराधों को दण्ड उन्हें देगा। यह करुणा, दाऊद की अटल करुणा की वाचा थी। आश्चर्य नहीं, कि दाऊद के बहुत सारे भजन प्रभु की करुणा की बात करते हैं - करणा और सच्चाई की (भजन 85:10)।

<u>आत्मिक</u> - (प्रेरितों 13:27-37, 34; 2 तीमुथियुस 2:8; रोमियों 1:3-4)

प्रेरितों की पुस्तक में, पौलुस दाऊद की अटल करुणा के अर्थ में मसीह के मरे हुओं में से जी उठने को सम्मिलित करता है। दाऊद के पुत्र के रूप में मसीह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया और हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया था। हमारी खातिर वह कब्र तक गया था। दाऊद की अटल करुणा या पवित्र और अटल कृपा (प्रेरितों 13:34) में मसीह का मरे हुओं में से जी उठना सम्मिलित है। मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण, नई वाचा के द्वारा दाऊद की अटल करुणा उन सब तक पहुँचती हैं जो मसीह में विश्वास करते हैं। परमेश्वर की करुणा सब विश्वास करनेवालों तक पहुँचती हैं, परन्तु अमरता के लिए पुनरुत्थान दाऊद की अटल करुणाओं में से सबसे बड़ी है (प्रकाशित. 20:6; इफि. 1:3)। अटल करुणा में पुनरुत्थान सम्मिलित है, और सिंहासन में परमेश्वर की दाहिने हाथ का पद सम्मिलित है।

7. <u>दाऊद की कुंजी</u>

<u>स्वाभाविक</u> - (यशायाह 22:20-25, 22)

केवल यही एक विशेष वचन है जो पुराने नियम में दाऊद की कुंजी की बात करता है। यह भविष्यद्वाणी एल्याकीम ("परमेश्वर का पुनरुत्थान" या "प्रतिशोधी परमेश्वर") को कही गई थी। उससे दाऊद के घराने की कुंजी की प्रतिज्ञा की गई थी। कुंजी खोलती है। यह लोगों को अन्दर आने या बाहर रहने देती है। इससे दरवाजों को बन्द किया या खोला जाता है। राजा दाऊद अपने घर, अपने सिंहासन, अपने राज्य की "कुंजी" जिसे चाहता उसे दे सकता था। कुंजी प्रयोग करनेवाला दाऊद के घराने, और उसके सारे धन का सच्चा उत्तराधिकारी होगा। वह राज्यपाल होगा। पुराना नियम इस कुंजी को देने की बात करता है।

<u>आत्मिक</u> - (प्रकाशित. 3:7)

नए नियम में दाऊद की कुंजी के आत्मिक महत्त्व को पहचानने में कोई गलती नहीं की जा सकती है। फिलदिलफिया की कलीसिया को अपने संदेश में, यीशु आप कहता है कि वह जो पवित्र और सत्य है, और जो दाऊद की कुंजी रखता है, जिसके खोले हुए को कोई बन्द नहीं कर सकता और बन्द किए हुए को कोई खोल नहीं सकता है। वह सच्चा एल्याकीम, "पुनरुत्थान" और "प्रतिशोधी" है।

नया नियम प्रकट करता है कि उसके पास सारी कुंजियाँ हैं:

- उसके पास परमेश्वर के राज्य की कुंजियाँ हैं (मत्ती 16:19)।
- उसके पास ज्ञान की कुंजियाँ हैं (लूका 11:52)।
- उसके पास मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ हैं (प्रकाशित. 1:18)।

- उसके पास अथाह कुण्ड की कुंजी है (प्रकाशित. 9:1; 20:1)।
- उसके पास दाऊद की कुंजी है (प्रकाशित. 3:7)।

उसके पास हर परिस्थिति की कुंजी है। वह लोगों को अन्दर आने देता है, और बाहर रहने देता है। जब तक वह द्वार खोलने के लिए कुंजी प्रयोग नहीं करता, कोई अन्दर नहीं आ सकता है। प्रेरितों 15:15-18 में इसके प्रयोग का सच्चा महत्त्व यही है। दाऊद की कुंजी विश्वास का द्वार खोलती है और यहूदी और अन्यजाति दोनों को परमेश्वर के साथ नई वाचा के सम्बंध में लाती है।

8. दाऊद का सींग

स्वाभाविक - (भजन 132:17; 92:10; 89:20,24; 18:2; 1 राजा 1:39)

पवित्रशास्त्र में सींग शासन करने के लिए सामर्थ्य और अभिषेक की बात करता है (भजन 75:4-5, 10)। सींग राजाओं और राज्यों की बात करते हैं। दाऊद के लिए, सींग पद के अभिषेक का लक्षण था। दाऊद परमेश्वर के आत्मा के अभिषेक का मूल्य जानता था। सींग एक बलिदान की मृत्यु के द्वारा प्रदान किया जाता था। तेल के लिए सींग प्रदान करने के लिए लहू बहा होता था। तेल के अभिषेक से पहले, यह लहू द्वारा प्रायश्चित का संकेत देता है। जब प्रभु ने कहा कि वह दाऊद के सींग को फलने देगा, तो यह उसमें राजा-याजक के द्वैत पद के संयोग की बात कर रहा था। परमेश्वर ने हारून के याजकपद को हारून की छड़ी के फलने के द्वारा अनुप्रमाणित किया था। फली हुई छड़ी ने प्रमाणित किया कि हारून परमेश्वर का अभिषिक्त और नियुक्त महायाजक था। इसलिए फला हुआ सींग प्रमाणित करेगा कि दाऊद परमेश्वर का अभिषिक्त राजा याजक था।

आत्मिक - (लूका 1:67-70; प्रकाशित. 5:6)

लेवी के वंश का याजक जकर्याह, जो मसीहा के अग्रदूत, यूहन्ना का पिता था, दाऊद के सींग की पूर्ति की भविष्यद्वाणी करता है। उसने कहा कि इस्राएल के परमेश्वर ने अपने लोगों पर दृष्टि की और उनका उद्धार किया है और दाऊद के घराने में एक उद्धार का सींग निकाला है। परमेश्वर का मेम्ना जो दाऊद का मूल है, के सात सींग हैं। ये उद्धार के सामर्थ्य की सम्पूर्णता और पूर्ति का प्रतीक हैं। उसने सर्वोच्च बलिदान के रूप में अपना लहू बहाया। अपनी बलिदान सम्बंधि मृत्यु के द्वारा उसने तेल का सींग, पवित्र आत्मा का अभिषेक प्रदान किया है। लहू नहीं तो तेल नहीं! परमेश्वर के मेम्ने की देह और लहू के कारण, जो बलिदान का स्थानापन्न मेम्ना था, पवित्र आत्मा कलीसिया में वह अभिषेक का तेल बन जाता है (उत्पत्ति 22:13)।

9. दाऊद का तम्बू

स्वाभाविक - (यशायाह 16:5; आमोस 9:11, 13; 2 शमूएल 7:17, 19; 1 इतिहास 17:1-3)

ऐतिहासिक विवरण में हम देखते हैं कि किस प्रकार दाऊद ने परमेश्वर के सन्दूक के लिए एक तम्बू लगाया था। यह भौतिक तम्बू था जिसमें एक भौतिक सन्दूक था। यहाँ दाऊद ने याजकों का एक समूह नियुक्त किया और इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की आराधना और स्तुति के लिए एक नया क्रम स्थापित किया। यह राजा दाऊद के नगर, सियोन पर्वत पर लगाया गया था। यहाँ मसीहा से सम्बंधित बहुत से भजन लिखे गए थे। इस पुस्तक का उद्देश्य इस क्षेत्र को और अधिक सम्पूर्ण रूप से खोजना है। पता होना चाहिए कि दाऊद का तम्बू और दाऊद की वाचा वैसे ही सम्बंधित हैं जैसे मूसा का तम्बू और मूसा की वाचा सम्बंधित हैं।

आत्मिक - (प्रेरितों 15:13-18; इब्रानियों 12:22-24)

जब नए नियम के लेखक दाऊद के तम्बू को बनाने के भविष्यद्वाणी के संदर्भ की बात करते हैं तो प्रकट है कि वे एक भौतिक तम्बू के शाब्दिक पुनःस्थापना की खोज में नहीं थे, और न ही वे वाचा के भौतिक सन्दूक की पुनःस्थापना की खोज कर रहे थे। स्वाभाविक आत्मिक का संकेत देता है। नए नियम के लेखकों को दाऊद के तम्बू के आत्मिक महत्त्व का और वहाँ स्थापित उस क्रम का प्रकटीकरण मिला था। एक बार फिर हम दोहराना चाहेंगे कि इस पुस्तक का उद्देश्य उस महत्त्व को स्थापित करना है।
दाऊद के तम्बू में मसीह अपनी कलीसिया में सम्मिलित है। कलीसिया उसका तम्बू है और नई वाचा में सम्बंधित है। एक मन्दिर और याजकपन के बिना एक वाचा नहीं हो सकती है (इब्रानियों 8:1-13)।

सारांशः

दाऊद की वाचा की महिमा तब प्रत्यक्ष हो जाती है जब हम स्पष्ट अनुभव करते हैं कि यह अपनी सच्ची पूर्ति दाऊद के पुत्र, यीशु मसीह, और नई वाचा में पाती है। नए नियम के लेखक दाऊद की वाचा की इन 9 चीजों को लेते हैं और उन्हें मसीह और उसकी

कलीसिया को लगाते हैं। इसलिए जो दाऊद की वाचा में स्वाभाविक, राष्ट्रीय, और भौतिक था वह नई वाचा में मसीह और कलीसिया में आत्मिक, स्वर्गीय और अनन्त में और के द्वारा अनन्त पाया जाता है।
असल में, दाऊद की वाचा में सम्मिलित उन चीजों की प्रकृति इसकी पुष्टि करता है। क्योंकि वे चीजें भौतिक, शारीरकि, सांसारिक, और भौतिक हैं, जो अपने में न तो अनन्त हैं और न हो सकती हैं। केवल एक ही तरीके से ये चीजें अनन्त हो सकती हैं और यह नई वाचा में और के द्वारा है, जो आत्मिक और अनन्त है (2 कुरिं. 4:18)।

नीचे दी गई तुलना दिखाती है कि सियोन में राजा और याजक दोनों पद सम्मिलित थे और कि "दाऊद का तम्बू" अभिव्यक्ति में बाइबल के सम्पूर्ण प्रकटीकरण के प्रतिवाद के बिना दोनों विचार सम्मिलित हैं।

पुराना नियम

दाऊद का नगर सिय्योन

दाऊद का घराना	दाऊद का तम्बू
दाऊद के सिंहासन के लिए राजकीय घर	परमेश्वर के सन्दूक के लिए याजकीय सेवकाई
सिय्योन में राजसी सरकार	सिय्योन में याजकीय तम्बू-सम्बंधी

1. दाऊद ने दाऊदपुर में अपने लिए घर और देवदारू के घर बनवाए (1 इतिहास 14:1; 15:1; 16:43)। दाऊद के घर का तम्बू (भजन 132:3)।	1. दाऊद ने परमेश्वर के सन्दूक के लिए एक स्थान तैयार करके एक तम्बू खड़ा किया (1 इतिहास 15:1; 2 इतिहास 1:4)
2. दाऊदपुर में सिय्योन का गढ़ (2 शमूएल 15:1; 1 राजा 8:1)	2. परमेश्वर का सन्दूक दाऊद द्वारा खड़े किए तम्बू में रखा गया था। (2 शमूएल 16:17-19; 1 इतिहास 16:1-3)
3. दाऊद ने सिय्योन में अपने सिंहासन पर राजा के रूप में शासन किया। मसीहा का प्रतीक, उसका पुत्र स्वर्गीय सिय्योन में राज्य कर रहा है (1 इतिहास 11:4-9; भजन 2:6-7; 146:10; प्रेरितों 4:23-26; 13:33; इब्रानियों 12:22-24)	3. दाऊद ने कुछ याजकों और लेवियों को प्रभु के सन्दूक के सम्मुख सेवा करने, धन्यवाद करने, और इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की स्तुति करने लिए नियुक्त किया (1 इतिहास 16:4-38)।
4. दाऊद अपने देवदारू के घर में बैठे परमेश्वर के सन्दूक के विषय चिन्ता प्रकट करता है (1 इतिहास 17:1-2; 2 शमूएल 7:1-2; भजन 132:1-18)।	4. परमेश्वर का सन्दूक तम्बू में रहता था (1 इतिहास 17:1; 2 शमूएल 7:1; 11:11)।
5. प्रभु दाऊद को उसके लिए घर बनाने से मना करता है परन्तु प्रतिज्ञा करता है कि वह उसके लिए घर बनाएगा, और सुलेमान मन्दिर बनाएगा (1 इतिहास 17:3-15; 2 शमूएल 7:3-17)।	5. प्रभु ने दाऊद को कहा कि वह एक तम्बू से दूसरे तम्बू को, और एक निवास से दूसरे निवास को आया जाया करता रहा है (1 इतिहास 17:5; 2 शमूल 7:6)।
6. सिय्योन और यरूशलेम नगर था जहाँ दाऊद से लेकर अन्तिम राजा सिदकिय्याह तक, दाऊद के वंश के सारे राजा राज्य करते रहे। 606 ई.पू.	6. परमेश्वर ने सिय्योन को अपने निवासस्थान के लिए चुना था। परमेश्वर जो सिय्योन में विराजमान है, उसकी स्तुति करो। सिय्योन महान राजा का नगर है (भजन 9:11, 14; 147:2; 48:1-3)। सिय्योन से, परमेश्वर का तेज प्रकट होता है (भजन 50:1-2)। परमेश्वर सिय्योन के फाटकों से याकूब के सारे निवासियों से बढ़कर प्रीति रखता है (भजन 87:2)।
7. दया के साथ दाऊद का सिंहासन स्थापित होगा। इस पर मसीहा सत्य, न्याय, और धार्मिकता में बैठेगा (यशायाह 16:5)	7. मसीहा पिता के सिंहासन पर एक राजा-याजक होगा (जकर्याह 6:12-13; भजन 110; इब्रानियों 7)।

नया नियम

प्रभु यीशु मसीह

मसीह - दाऊद का पुत्र
दाऊद के घराने का
यहूदा के वंश का

दाऊद का राज्य स्थापित करने के लिए
सदा का राजा
दाऊद की वाचा

(मत्ती का सुसमाचार)

मसीह - महान महायाजक
स्वर्गीय तम्बू और मन्दिर का
अपने पिता के सिंहासन का

याजकपन स्थापित करने के लिए
सदा का याजक
नई वाचा

(इब्रानियों की पुस्तक)

कलीसिया

यहूदी

अन्यजाति

(आमोस 9:11, 12 और प्रेरितों 15:15-17)
दाऊद का तम्बू
फिर उठाऊँगा / खँडहरों को फिर बनाऊँगा

इस तम्बू में यहूदी और अन्यजाति

मलिकिसिदिक के अनुसार
राजा और याजक

स्वर्गीय सिय्योन
स्वर्गीय यरूशलेम

राजकीय याजकों का समाज

प्रकाशितवाक्य 14:5,6; 5:9; 1 पतरस 2:5-9

नया नियम दिखाता है कि मसीह और कलीसिया मिलकर, मलिकिसिदिक के अनुसार, राजकीय याजकों का समाज, राजा और याजक बनते हैं। यह उसे इकट्ठा करता है जो दाऊद से और उसके राज्य से सम्बंधित दाऊद के तम्बू के प्रकटीकरण से, और उसके याजकपन के क्रम से जिसे उसने सिय्योन में वाचा के सन्दूक में स्थापित किया था सम्बंध रखता है। और यह सुसमाचार विधान का पूर्वाभास देता है। इस युग में, यहूदी और अन्यजाति, दाऊद के तम्बू में, राजा-याजकों के रूप में एक हो जाते हैं और प्रभु की आराधना करते हैं।
जिस प्रकार राजा और याजक के दो पद पुराने नियम में अलग थे और नए नियम में मसीह में एक किए गए हैं, उसी प्रकार सिय्योन के दो तम्बू नए नियम के एक तम्बू में इकट्ठे किए गए हैं। यह मसीह और उसकी कलीसिया में है। दाऊद के तम्बू का सिंहासन और दूसरे तम्बू में परमेश्वर के सन्दूक का सिंहासन मसीह में इकट्ठा किया गया है।

इस समझ के साथ हम अपने अध्ययन में, विशेषकर जैसे यह दाऊद की आराधना से सम्बंध रखती है, और इसमें दाऊद का राज्य अलग किए बिना, आगे बढ़ते हैं। यहूदी और अन्यजाति मसीहा के राज्य और मसीहा की आराधना में इकट्ठे होते हैं। यहूदी और अन्यजाति मसीह में एक बनते हैं। दो तम्बू मसीह में एक हो जाते हैं। राजा और याजक के दो पद मसीह में एक हो जाते हैं। यह नए नियम का प्रकटीकरण है।

नीचे दिया गया चित्र पुराने नियम के समय के, राजा और याजक के दो पदों के साथ, दो तम्बूओं को दिखाता है, और कि कैसे दोनों नए नियम में, मसीह में, जो अपने सिंहासन पर राजा और याजक दोनों है, एक तम्बू में इकट्ठे किए गए हैं।

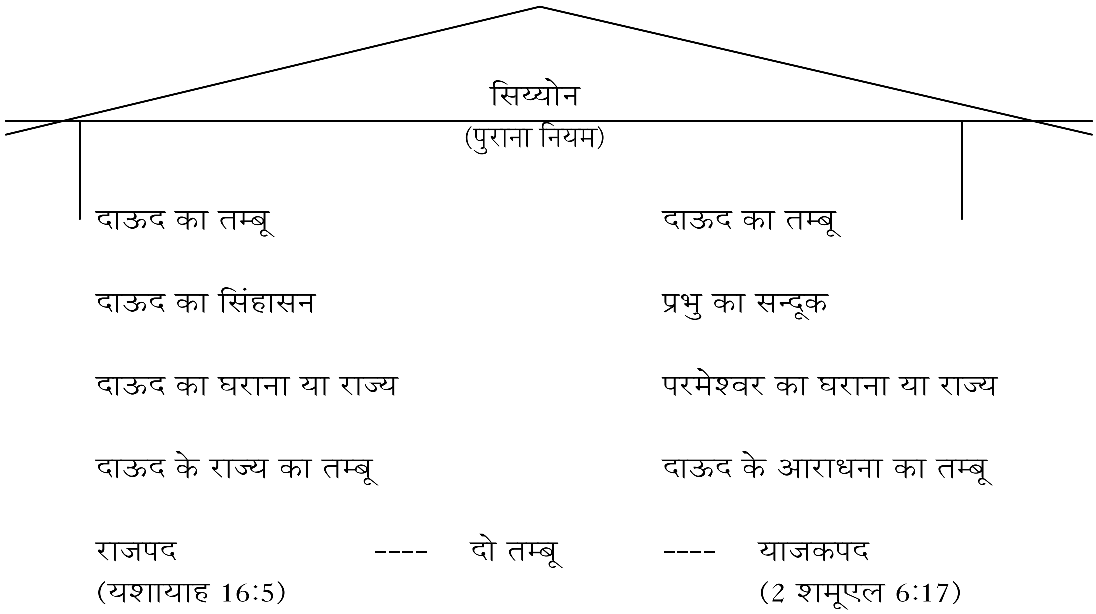

दाऊद के तम्बू की तैयारी और आज की कलीसिया के लिए शिक्षा

उन तीन महिनों के दौरान जब परमेश्वर का सन्दूक ओबेदेदोम के घर में था, दाऊद ने देखा कि परमेश्वर की आशीष उस घर पर आई है। तब वह परमेश्वर और उसके वचन को खोजने लगा और निश्चय है कि परमेश्वर ने उसे अपनी इच्छा की समझ और अन्तर्दृष्टि दी होगी।

अब दाऊद प्रभु के सन्दूक के लिए एक स्थान तैयार करता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि दाऊद परमेश्वर की इच्छा के अनुसार एक तम्बू खड़ा करता है। इस पर संदेह प्रकट किया जा सकता है कि क्या दाऊद परमेश्वर की इच्छा में था जब उसने मूसा के तम्बू के होते हुए एक और तम्बू खड़ा किया।

उन से सम्बंधित जिन्होंने, वे चाहे फिलिस्तीनी थे या इस्राएली, परमेश्वर के सन्दूक को अपवित्र हाथों से छूआ था, पिछली घटनाओं का एक संक्षिप्त पुनर्विचार यह तथ्य प्रकट करता है कि कोई भी परमेश्वर के सन्दूक के विषय में साहस नहीं कर सकता था।

यदि दाऊद ने मूसा के तम्बू के विरोध या खण्डन में एक दूसरा तम्बू खड़ा करने का साहस किया होता, तो वह भी मारा गया होता, जैसे मृत्यु और विपत्तियों ने अभी तक कितनों का न्याय किया था। होप्नी और पीनहास की मृत्यु से लेकर जब परमेश्वर का सन्दूक शीलो के तम्बू में से निकाला गया था, दाऊद तक जब परमेश्वर के सन्दूक को पहली बार लाया जा रहा था, मृत्यु और न्याय प्रबल हुए थे। तो यदि एक और तम्बू खड़ा करने में दाऊद परमेश्वर की इच्छा के बाहर होता, तो परमेश्वर उसका भी न्याय करता। नहीं! जैसे नीचे दिए वचन दिखाते हैं, दाऊद वास्तव में परमेश्वर की इच्छा में था: परमेश्वर ने दाऊद के विषय यह कहकर गवाही दी, "मुझे एक मनुष्य, यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है; वही मेरी इच्छा पूरी करेगा।" (प्रेरितों 13:22)। और एक बार फिर वचन कहता है, "क्योंकि दाऊद तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने समय में सेवा करके सो गया...।" (प्रेरितों 13:36)। और दोबारा, "...दाऊद के समय तक रहा, उस पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया; अतः उसने विनती की कि वह याकूब के परमेश्वर के लिए निवास स्थान बनाए।" (प्रेरितों 7:46)।

परमेश्वर के सन्दूक को इस तम्बू में लाने के लिए दाऊद की तैयारी के विषय में दिए गए ब्योरे से कई आत्मिक सबक सीखे जा सकता है। हमारे लिए ब्योरा विशेषकर 1 इतिहास 15:1-24 में दिया गया है।

अ. एक स्थान की तैयारी

1 इतिहास 15:1, 3, 12 में "तैयारी" शब्द पर ध्यान दो। दाऊद ने परमेश्वर के सन्दूक के लिए एक स्थान तैयार किया। यह कोई अव्यवस्थित काम नहीं था। परमेश्वर की उपस्थिति के निवास के लिए एक स्थान की निश्चित तैयारी की गई थी। नीचे दिए पवित्रशास्त्र ध्यान देने योग्य हैं क्योंकि उनमें से हर एक दिखाता है कि परमेश्वर ने एक स्थान की इच्छा प्रकट की थी जहाँ वह अपने लोगों के साथ रह सकता और जहाँ उसका नाम बना रहता।

- "... जहाँ जहाँ मैं अपने नाम का स्मरण कराऊँ वहाँ वहाँ मैं आकर तुम्हें आशीष दूँगा" (निर्गमन 20:24)।
- "... मैं उसके लिए निवासस्थान बनाऊँगा" (निर्गमन 15:2)।
- "किन्तु जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सब गोत्रों में से चुन लेगा, कि वहाँ अपना नाम बनाए रखे, उसके उसी निवासस्थान के पास जाया करना" (व्यवस्थाविवरण 12:5)।
- "...तब जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिए चुन ले उसी में तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, और दशमांश, और उठाई हुई भेंटे; मन्नतों की सब उत्तम उत्तम वस्तुएँ जो तुम यहोवा के लिए संकल्प करोगे..." (व्यवस्थाविवरण 12:11)।

मूसा का तम्बू पहले परमेश्वर का एक स्थान था। अब दाऊद का तम्बू परमेश्वर के लिए तैयार वह स्थान बनता है। परमेश्वर सदा से अपने लोगों के बीच रहने के स्थान की इच्छा रखता था। इसलिए, दाऊद परमेश्वर के सन्दूक के लिए एक स्थान तैयार करता है।

नए नियम की स्थानीय कलीसिया अब वह स्थान है जहाँ प्रभु उसके नाम में इकट्ठे हुए अपने लोगों के साथ मिलता है। (मत्ती 18:20) "जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।"

आ. दाऊद ने एक तम्बू खड़ा किया

पवित्रशास्त्र दिखाते हैं कि जो स्थान दाऊद ने प्रभु के लिए तैयार किया था सिय्योन, यरूशलेम में एक तम्बू था।

- "...उसने तो उसके लिए यरूशलेम में एक तम्बू खड़ा कराया था" (2 इतिहास 1:4)।

- "तब परमेश्वर का सन्दूक ले आकर उस तम्बू में रखा गया जो दाऊद ने उसके लिए खड़ा कराया था..." (1 इतिहास 16:1)।
- "लोग यहोवा का सन्दूक भीतर ले आए, और उसके स्थान में, अर्थात् उस तम्बू में रखा, जो दाऊद ने उसके लिए खड़ा कराया था..." (2 शमूएल 6:17)।

पुराने नियम में तम्बू के लिए निभिन्न शब्द प्रयोग किए गए हैं:
- मूसा का तम्बू (इब्रानी "Ohel") निर्गमन 18:7-12।
- मिलापवाला तम्बू (इब्रानी "Ohel") निर्गमन 33:7-11।
- प्रभु का निवासस्थान (इब्रानी "Mishkan") निर्गमन 25:9; 26:1-35।
- दाऊद का तम्बू (इब्रानी "Ohel") 1 इतिहास 16:1-3; 2 शमूएल 6:17; यशायाह 16:5।

निवासस्थान मात्र एक तम्बू था जो सिय्योन, यरूशलेम में खड़ा किया गया था। यह सुलेमान के मन्दिर के बनने तक वहाँ था। निश्चय ही जहाँ तक ढाँचे का सम्बंध है इसकी तुलना मूसा के तम्बू और उसके तीन स्थानों से नहीं की जा सकती है। यह तथ्य कि दाऊद का निवासस्थान एक तम्बू था, इस बात की गवाही देता है कि यह अस्थाई और परिवर्ती था। यह कोई अन्तिम ढाँचा नहीं था। जो इसमें स्थापित किया गया था मन्दिर के क्रम में मिला लिया गया था। दाऊद के तम्बू और सुलेमान के मन्दिर का प्रकाश राजा दाऊद को दिया गया था।

परमेश्वर की तम्बू की गतिविधियों के चरण 1 इतिहास 17:5 में स्पष्ट व्यक्त किए गए हैं, "क्योंकि जिस दिन से मैं इस्राएलियों को मिस्र से ले आया, आज के दिन तक मैं कभी घर में नहीं रहा; परन्तु एक तम्बू से दूसरे तम्बू को और एक निवास से दूसरे निवास को आया जाया करता हूँ।"

और दोबारा, "जिस दिन से मैं इस्राएलियों को मिस्र से निकाल लाया उस दिन से आज के दिन तक मैं कभी घर में नहीं रहा; तम्बू के निवास में आया जाया करता हूँ" (2 शमूएल 7:6)। यह महत्त्व की बात है कि परमेश्वर सदा आया जाया करता है, अपने लोगों को अपने प्रकटीकरण के खुलने में धीमे-धीमे ले जाता है।

तम्बू इस तथ्य की भी बात करता है कि हम यात्री और अजनबी हैं, और अब्राहम, इसहाक और याकूब के समान, हमें एक ऐसे नगर की तलाश है जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है। मसीही के लिए इस संसार में कोई स्थाई नगर नहीं है, परन्तु उनका चरित्र यात्री का है जिसका प्रतीक पुर्वजों के तम्बू, और दाऊद और मूसा के तम्बू हैं (1 पतरस 2:11; इब्रानियों 11:8-16; 13:14; प्रकाशित. 21-22)।

इ. <u>इस्राएल का इकट्ठा होना</u>

सन्दूक को दाऊद के तम्बू में लाने की तैयारी में परमेश्वर के लोगों का एक देश के रूप में एक साथ इकट्ठा होना सम्मिलित था। पहले अवसर पर दाऊद ने देश के अगुवों को और इस्राएल के लोगों को इकट्ठा किया (1 इतिहास 13:1-4)। तीन महिने के बाद एक बार फिर सब लोग इकट्ठे होते हैं। इस बार परमेश्वर के तरीके से करने के लिए (1 इतिहास 15:25)।

लोगों का यह इकट्ठा होना एक उद्देश्य के लिए था। लोगों को एक करने का कारण परमेश्वर का सन्दूक लाना और, शमूएल के समय से लेकर राजा शाऊल के समय तक के दुखद पतन के बाद, इस्राएल में सच्ची आराधना पुनःस्थापित करना था।

आज की कलीसिया के लिए आत्मिक शिक्षा प्रत्यक्ष है। यदि कलीसिया प्रभु की उपस्थिति - हमारा सन्दूक - को पुनःस्थापित होता देखना चाहती है तब एक उद्देश्य और लोगों का सच्चे दिल से इकट्ठा होना होगा।
- "राज्य राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएँगे" (उत्पत्ति 49:10)।
- "मेरे भक्तों को मेरे पास इकट्ठा करो, जिन्होंने बलिदान चढ़ाकर मुझ से वाचा बाँधी है" (भजन 50:5)।
- "जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ" (मत्ती 18:20)।
- जहाँ भाई लोग एक मन से इकट्ठे होते हैं वहाँ प्रभु अपनी आशीष उँडेलता है - एक मन, एक उद्देश्य, एक लोग (भजन 133; प्रेरितों 2:1-4)।

अगुवों को इकट्ठे होना है (निर्गमन 4:29)। लोगों को इकट्ठे होना है (प्रेरितों 14:27)।

सामान्यतः परमेश्वर पहले अगुवों के पास आता है, और तब मण्डली के पास। इस्राएल का देश दाऊद के तम्बू की सच्चाई से चूक जाते यदि अगुवे जो प्रकाश परमेश्वर ने दाऊद को दिया था उसका विरोध करते और झगड़ते।

यह बात आज भी लागू होती है। परमेश्वर की मण्डलियाँ दाऊद के तम्बू के प्रकाश को खो देती हैं क्योंकि उनके अगुवे उसका विरोध करते हैं। यह कितनी आशीष और महिमा की बात है कि दाऊद के पास अगुवे और लोग थे जो इस काम के लिए उसके साथ एक मन थे।

ई. **<u>नियम के अनुसार</u>** (1 इतिहास 15:13)

जब दाऊद परमेश्वर के सन्दूक को लाने के लिए लेवियों और लोगों को तैयार कर रहा था, तो उसने उन्हें परमेश्वर के क्रम का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया। उसने उन्हें कहा, "क्योंकि पिछली बार तुम ने उसको न उठाया था इस कारण हमारा परमेश्वर यहोवा हम पर टूट पड़ा, क्योंकि हम उसकी खोज में नियम के अनुसार न लगे थे।"

यह "नियम के अनुसार" क्या था? यह महत्त्वपूर्ण था कि दाऊद सीखता कि परमेश्वर के पास पालन के लिए एक नियम था, हालाँकि परमेश्वर दाऊद पर वर्धमान सत्य प्रकट कर रहा था। परमेश्वर नियम का परमेश्वर है। सृष्टि नियम प्रकट करती है। उद्धार नियम प्रकट करता है। अनन्त परमेश्वर में भी नियम है। और इसलिए, जब परमेश्वर के घर की बात होती है तो वहाँ भी ईश्वरीय नियम होना चाहिए। बेशक, हो सकता है कि बहुत कुछ जो मनुष्य का नियम है, परमेश्वर का नियम न हो, और सम्भव है मनुष्य को परमेश्वर का नियम अव्यवस्था लगे। परन्तु परमेश्वर ने अपने वचन में अपने लोगों के पालन के लिए आराधना का नियम दिया हुआ है।

"नियम" शब्द में "ईश्वरीय आदेश, विधि, निर्णय, पद्धति" का विचार है।

उस नियम पर ध्यान देना अच्छा होगा जिसे परमेश्वर अपने से सम्बंधित चीजों और उसके लोगों की आराधना में उसके पास आने में आज्ञा दी है।

1. पीतल की वेदी पर बलिदानों का एक नियम है। लकड़ी और पशुओं के भीतरी भागों का वेदी पर रखने का "नियम" था; परमेश्वर का नियम (लैव्यव्यवस्था 1:7, 8, 12; 6:12)। "नियम" शब्द का यहाँ अर्थ है "एक कतार में रखना, सजाना, क्रम में रखना"।
2. सोने का दीवट और इसकी 7 डालियाँ सुबह और साँझ को जलाई जानी थीं ("सजाना" निर्गमन 27:21, 39:37)।
3. मेज पर रोटी सजाकर रखनी होती थी (निर्गमन 40:4, 23)। 2 इतिहास 13:11 भी देखो (भेंट की रोटी)।
4. याजक अपनी पारी के लिए ईश्वरीय नियम की प्रतीक्षा करते थे। "नियम" शब्द का यहाँ अर्थ है "निर्णय, दण्ड, औपचारिक आदेश"। लूका 1:8 भी देखो, "दल की पारी"। जकर्याह अपने याजक के काम के लिए नियम से परमेश्वर की प्रतीक्षा करता था।
5. मसीह के याजकपद का प्रकाश "मलिकिसिदक की रीति पर" है (इब्रानियों 5:6, 10; 7:11, 17, 21)। ("समय पर नियमित प्रबंध, पद या चरित्र का नियत अनुक्रम, आधिकारिक उच्चपद"।)
6. पवित्र लोगों के पुनरुत्थान का भी एक नियम है। हर व्यक्ति अपने नियम के अनुसार जी उठेगा, "कुछ जो प्रबंध में नियमानुसार है।"

इसलिए सबकुछ जो परमेश्वर और उसकी सेवा से सम्बंधित है परमेश्वर के "नियम के अनुसार" है। यही सत्य नए नियम में स्थानीय कलीसियाओं के पालन के लिए लाया गया है। प्रेरित पौलुस ने कलीसियाओं को ईश्वरीय नियम के अनुसार, जो उसे दिया गया था, स्थापित किया था। उसने उन्हें इस नियम का पालन करने को प्रोत्साहित किया था। जब विश्वासी ऐसा करते हैं तो वह प्रसन्न होता है, और जब वे परमेश्वर के नियम का पालन नहीं करते तो वह उन्हें चेतावनी देता है कि उसे चीजों को ठीक करना पड़ेगा।

7. कुरिन्थियों की कलीसिया को वह लिखता है, "सारी बातें शालीनता और व्यवस्थित रूप से की जाएँ" (1 कुरिन्थियों 14:40)। ("नियमित प्रबंध... आदि।) कलीसिया में आत्मिक वरदानों के प्रयोग का नियम होना चाहिए।

1 कुरिन्थियों 16:1, "जैसी आज्ञा ("पूर्ण रूप से व्यवस्थित करना") मैं ने कलीसियाओं को दी है।" कलीसियाओं को दिए जाने वाले विश्वासियों के दान का भी नियम था।

"शेष बातों को मैं आकर ठीक करूँगा" (1 कुरिं. 11:34)। प्रभु भोज के समय भी नियम होना चाहिए।

लूका 1:1, 3, में लूका अपने सुसमाचार को लिखने का कारण लिखता है, "मुझे भी यह उचित हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक-ठीक जाँच करके, उन्हें क्रमानुसार लिखूँ।"

पौलुस कुलुस्सियों के विश्वासियों को लिखता है कि वह आत्मिक भाव से उनके निकट होकर उनके "व्यवस्थित जीवन को देखकर प्रसन्न होता" है (कुलु. 2:5)।

इसलिए पुराने और नए नियम के पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं कि परमेश्वर हर उस चीज में जो आराधना और ईश्वरीय सेवा से सम्बंधित है, नियम खोजता है। बलिदानों में नियम, वेदी पर नियम, दीवट पर नियम, याजकपद में नियम।

नया नियम वही सत्य जारी रखता है। प्रेरित पौलुस ने कलीसिया में एक नियम स्थापित किया था। जो नमूना और प्रकाश उसे दिया गया था उसके अनुसार उसने चीजों को क्रमानुसार सजाया था।

आत्मा के वरदानों में नियम, प्रभु भोज के समय नियम, आराधना और विश्वासियों के इकट्ठा होने में नियम। सन्तों के पुनरुत्थान में भी नियम होगा। विभिन्न महिमाओं में ईश्वरीय प्रबंध।

इस प्रकार तम्बू के खड़े करने में जो शिक्षा दाऊद ने पाई वो यह थी कि उसे एक "नियम के अनुसार" करना होगा। नए नियम की कलीसिया में भी परमेश्वर की आशीष और उपस्थिति पाने के लिए "नियम के अनुसार" की शिक्षा को पहचानना और पालन करना है। सभा में ईश्वरीय नियम के बिना, सबकुछ अराजकता, अन्धेर और अव्यवस्था होगी। "परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है" (1 कुरिं. 14:33)। कलीसिया में ईश्वरीय नियम न होने के कारण लोग "अपनी इच्छा करेंगे" जैसे कुरिन्थियों की कलीसिया में था। परन्तु परमेश्वर के सन्तों के नियम को देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है (कुलुस्सियों 2:5)। सन्तों को जानने की आवश्यकता है कि वे परमेश्वर के घर में जो जीवित परमेश्वर की कलीसिया, सत्य का खम्बा और आधार है, कैसा व्यवहार करें (1 तीमुथियुस 3:15)।

उ. <u>**लेवियों के कंधों पर सन्दूक**</u> (1 इतिहास 15:2, 12, 14, 15)

"नियम के अनुसार" जिसकी चर्चा दाऊद के समय में की गई थी वह परमेश्वर के सन्दूक के उठाने से सम्बंधित था। प्रभु ने मूसा के द्वारा आज्ञा दी थी कि सन्दूक को लेवी उनके कंधों पर उठाया करेंगे। इसमें सोने से मढ़े हुए बबूल की लकड़ी के डण्डे लगे रहते थे, चाहे सन्दूक रखा हुआ है या सफर में है (निर्गमन 25:10-15)। आय. 15 में प्रभु कहता है, "वे डण्डे सन्दूक के कड़ों में लगे रहें; और उससे अलग न किए जाएँ।" डण्डों को सदा सन्दूक में लगाए रखना था। जब आखिरकार सन्दूक को दाऊद के तम्बू से सुलेमान के मन्दिर में ले जाया गया था, तब डण्डे निकाल दिए गए थे (2 इतिहास 5:9; 1 राजा 8:8)। यहाँ सफर समाप्त हो चुका था और विश्राम और स्थायित्वता मन्दिर के प्रतीक के रूप में प्रकट किए गए थे। तब तक डण्डे प्रभु के सन्दूक में लगे हुए थे। न केवल यह ऐसा था, बल्कि सफर के समय सन्दूक को याजकों के कंधों पर उठाया जाना होता था - बैलगाड़ी पर नहीं (गिनती 4:4-6, 15; 7:9 और यहोशू 6:6-7)। मूसा के तम्बू के विभिन्न भाग बैलों द्वारा खीचीं गाड़ियों पर ले जाए जाते थे, परन्तु परमेश्वर का सन्दूक नहीं (गिनती 3:36-37; 7:7-9)।

<u>पवित्रशास्त्र में "कंधा" सरकार, सहायता और जिम्मेवारी में शक्ति का संकेत देता है।</u>

1. प्रभु को चढ़ाए कुछ बलिदानों में से कंधा और छाती याजक को दिए जाते थे (लैव्यव्यवस्था 7:32-34; 8:25-26; गिनती 18:18)।
2. कंधा हिलाने की भेंट के लिए प्रभु के सामने हिलाया जाता था और कुछ बलिदानों के लिए लाया जाता था (लैव्यव्यवस्था 9:21; 10:14-15)।
3. कंधा एक विशेष भाग होता था जो याजकों को दिया जाता था (व्यवस्था. 18:3)।
4. शमूएल नबी ने कंधे के विशेष भाग को अभिषिक्त राजा शाऊल को दिया था (1 शमूएल 9:24)। यह सरकार और जिम्मेवारी जो इस्राएल के राज्य के मामले में उसके कंधों पर आने वाली थी का अभिव्यंजक था।
5. इस्राएल के पुत्रों के 12 नाम दो मणियों पर गढ़ कर एपोद के कंधों पर लगाए गए थे। वे कंधों पर रखे गए थे (निर्गमन 28:12; 39:7)।
6. परमेश्वर की सरकार मलिकिसिदक की रीति के अनुसार राजा-याजक, यीशु मसीह के कंधों पर रखी गई है (यशायाह 9:6)। दाऊद के घराने की कुंजी उसके कंधे पर रखी गई है (यशायाह 22:22)।

यह सब इस तथ्य का प्रतीकात्मक है कि उचित सरकार, सहायता, और जिम्मेवारी की शक्ति प्रभु की है। वह ऐसों को नियुक्त करता है जिनको वह चाहता है और जिनको वह चुनता है।
नए नियम की कलीसिया में शासन करनेवालों की सेवकाई है। मसीह के द्वारा, आत्मा से परमेश्वर का शासन योग्य और नियुक्त अगुवों के कंधों पर रखा जाता है (1 कुरिन्थियों 12:28; इब्रानियों 13:7, 17)। विश्वासी शासन को तुच्छ नहीं जानें जिसे परमेश्वर कलीसिया में स्थापित करता है (2 पतरस 2:10)।
परमेश्वर ने किसी भी इस्राएली को सन्दूक को उनके कंधों पर लिए फिरने की अनुमति नहीं दी थी, परन्तु उन्हें ही जिन्हें इसकी जिम्मेवारी के लिए अभिषेक दिया गया था। तो परमेश्वर उसकी कलीसिया का शासन उनके कंधों पर रखता है जिन्हें उसने उस जिम्मेवारी के लिए मसीह में बुलाया, सज्जित किया, योग्य किया और अभिषिक्त किया है (1 इतिहास 15:2)।
प्रभु की महिमा वहीं उतरेगी जहाँ उसके नियम का पालन किया जाता है, आत्मा के जीवन में, व्यवस्था के अक्षर में नहीं।

ऊ. <u>**पवित्रीकरण का समय**</u> (1 इतिहास 15:12, 14)

दाऊद के तम्बू की तैयारी में लेवियों की उनकी सेवा के लिए पवित्रीकरण की एक बड़ी प्रक्रिया सम्मिलित है। दाऊद ने याजकों और लेवियों को परमेश्वर का सन्दूक लाने से पहले अपने आपको पवित्र करने के लिए कहा। उसने उन्हें याद दिलाया कि क्योंकि पहली बार वे ऐसा करने में असफल रहे थे उनका न्याय हुआ था।

"पवित्र करने" का अर्थ होता है: "अपने आप को अलग करना, प्रभु के लिए या पवित्र उपयोग के लिए अलग करना।" याजकपद के लिए पवित्रीकरण और समर्पण के नियम निर्गमन 29 और लैव्यव्यवस्था 8 में दिए गए हैं।

उनके पवित्रीकरण में सम्मिलित था:

1. दाहिने कान, अँगूठे, पैर के अँगूठे पर लहू लगाकर शुद्ध करना।
2. पानी से नहाना।
3. पवित्र तेल से लहू पर अभिषेक करना जो दाहिने कान, दाहिने अँगूठे और दाहिने पैर के अँगूठे पर लगाया गया था।

याजकों को प्रभु की सेवा के लिए पवित्र करने के लिए लहू, पानी, और तेल उपयोग किए जाते थे। उन्हें साफ और सफेद सूक्ष्म सनी के कपड़े पहनाए जाते थे (निर्गमन 28)। तब उनके हाथों पर भेंटों के कुछ भाग रखे जाते थे जो उनके याजकपद की सेवकाई के अभिषेक के लिए प्रभु को चढ़ाए जाते थे। केवल इसके बाद ही वे प्रभु की सेवा कर सकते थे। इस प्रकार दाऊद के समय में, दाऊद के तम्बू को सिय्योन में स्थापित करने से पहले, याजकों के पवित्रीकरण के लिए एक बड़ी प्रक्रिया और काम किया गया था। यह सब प्रतीकात्मक सत्य उसकी ओर संकेत करते हैं जो नए नियम में परमेश्वर के लोगों से सम्बंधित प्रमाणित किया गया है। विश्वासियों को मलिकिसिदक की रीति पर परमेश्वर के राजा और याजक कहा गया है (प्रकाशित. 1:6; 5:9-10; 1 पतरस 2:5-9)। विश्वासी यीशु के लहू से शुद्ध किया, पानी से बपतिस्मा पाया और तब पवित्र आत्मा से अभिषिक्त किया होना चाहिए। उसे सूक्ष्म सनी के कपड़े पहने होना चाहिए जो मसीह की धार्मिकता है। और तब वह नए नियम के तम्बू में जो कलीसिया है, याजकीय सेवा में जा सकता है (प्रकाशित. 19:8)।

विश्वासी को उसके जीवन में "तीन गवाह" अनुभव करने होते हैं:

= लहू का गवाह
= वचन के पानी का गवाह
= पवित्र आत्मा का गवाह (1 यूहन्ना 5:6-10)

परमेश्वर का यह तीन-गुणा काम विश्वासी को याजकीय सेवा के लिए पवित्र और अभिषिक्त करता है।

हम पवित्र किए गए हैं:

1. लहू (इब्रानियों 13:12),
2. वचन (यूहन्ना 17:17। और
3. आत्मा (1 पतरस 1:2) से।

सब बुराइयों से अलग, परमेश्वर के तम्बू में याजकीय सेवा के लिए पवित्र होने से, हम उसकी उपस्थिति में उसकी पवित्रता की आराधना करने के लिए खड़े हो सकते हैं (भजन 29:1-2)।

दाऊद के तम्बू की तैयार कोई छोटा काम नहीं था। स्थान तैयार करना, लोगों को इकट्ठा करना, ईश्वरीय नियम का पालन करना और पवित्रीकरना का अच्छा समय - ये सब सम्मिलित थे। इन में से हर एक किसी भी स्थानीय कलीसिया के लिए जो उनके मध्य परमेश्वर की उपस्थिति पाना चाहते हैं, आत्मिक और व्यावहारिक शिक्षा देता है।

पुरानी वाचा में याजक दैनिक सेवा के लिए बाहरी आँगन और पवित्र स्थान में प्रवेश करते थे। केवल महायाजक ही अतिपवित्र स्थान में प्रवेश कर सकता था, और वह भी वर्ष में एक ही बार प्रायश्चित के महान दिन (इब्रानियों 9:1-10; लैव्यव्यवस्था 16)।

यीशु के क्रूस से सम्बंधित पर्दे का फटना दिखाता है कि अतिपवित्र स्थान सब विश्वास करनेवालों के लिए उसी समय खुल गया था। यीशु मसीह महान महायाजक है, और क्रूस में सारी की सारी बलिदान की प्रणाली एक सिद्ध बलिदान में मिला दी गई थी। विभिन्न पर्व के दिनों में चढ़ाए जानेवाले सारे बलिदान यीशु के उस एक बलिदान में मिलाए गए थे। जहाँ तक यीशु के शरीर और लहू का सम्बंध है, फसह और प्रायश्चित क्रूस में एक किए गए थे। इसी कारण से वह परदे के पीछे जा सकता था और हमें भी अपने अग्रदूत के पीछे प्रवेश करने का साहस है। उसके शरीर में ईश्वरीय और मानवीय स्वभावों के संयोग के कारण, वह याजक और बलिदान दोनों है।

निष्कर्ष और सारांश

इस अध्ययन के अन्त में, हम फिर एक ही समय में वर्तमान दो तम्बुओं के प्रतिरूपक पूर्ति पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।
जैसे दो तम्बू थे, दाऊद के समय में लगभग 40 वर्ष तक याजकों के दो समूह दो भिन्न पर्वतों पर कार्य रहे थे, वैसे ही नए नियम के समय में वह है जो इसका उत्तर देता है।
यहूदा में कई लोग यीशु मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने, और जीवित होने के 40 वर्ष बाद भी पुरानी मूसा की वाचा पर चलते रहे थे। वे पशुओं के बलिदान चढ़ाते रहे। उन्होंने हारून के याजकपद को सन् 70 तक जारी रखने के लिए फटे हुए पर्दे को सिला होगा, जब तक परमेश्वर ने उस मन्दिर को नष्ट करने दिया (इब्रानियों 10:1-4; मत्ती 24:1-2)।
परन्तु, अनुग्रह से चुने हुए कुछ लोगों ने (रोमियों 11:5) यीशु मसीह पर विश्वास किया, उसकी एक ही बार की भेंट स्वीकार की और मलिकिसिदक याजकपद के अधीन आए, और इस प्रकार पर्दे के भीतर प्रवेश कर सके। यह नई वाचा के नियम में एक अधिक बड़ा और अदिक सिद्ध तम्बू है। इब्रानियों 7-8-9-10 पढ़ें।

रेखाचित्र सत्य को चित्रित करता है और विरोधी सारांश इसे प्रमाणित करता है।

पुराना तम्बू | **नया तम्बू**

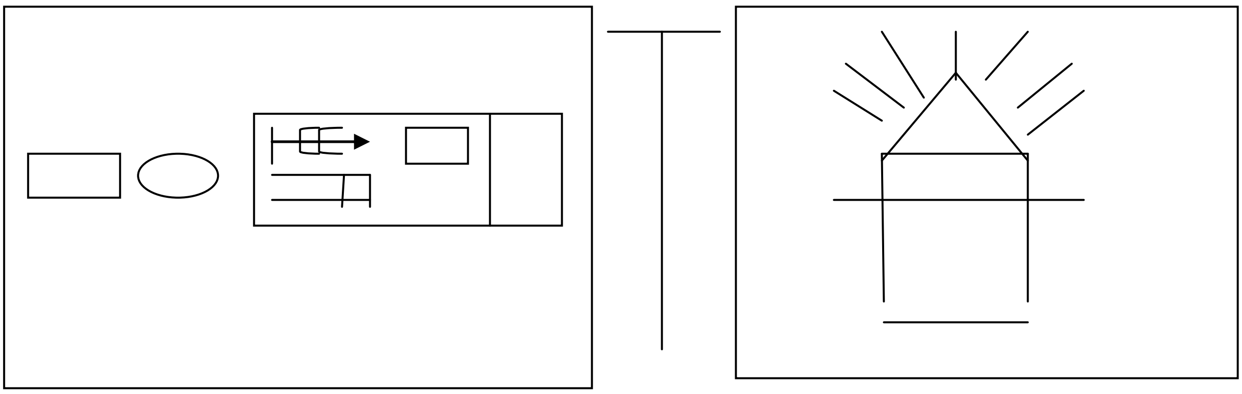

पुरानी मूसा की वाचा	**मसीहा की नई वाचा**
-अनेक बलिदान	-एक सिद्ध निष्पाप बलिदान
-पशुओं के बलिदान और समर्पण	-यीशु का ईश्वरीय-मानवीय बलिदान
-हारून का याजकपद	-मलिकिसिदक का याजकपद
-अतिपवित्र स्थान में प्रवेश नहीं	-अतिपवित्र स्थान में प्रवेश
-फटा हुआ पर्दा	-पर्दे के भीतर प्रवेश
-काम समाप्त नहीं	-समाप्त काम
-याजक पुराने नियम का पालन करते हैं	-बहुत सारे याजक विश्वास करते हैं
-यहूदी राष्ट्र और अन्यजाति से आए हुओं के लिए	-सब राष्ट्रों, यहूदी और अन्यजाति के लिए
-महिमा चली गई	-प्रभु की महिमा (कुलु. 1:27; इफि. 3:21)
-घर उजाड़ पड़ा है (मत्ती 23:38; 24:1-2)	-उसकी कलीसिया उसका घर है (इब्रा. 3:1-6; 1 तीमु. 3:15)
-क्रूस ठुकराया गया	-क्रूस स्वीकार किया गया
-प्रतीकात्मक - सिनै पर्वत	-आत्मिक रूप से - सिय्योन पर्वत (यशा. 28:16; इब्रा. 12:22-24; 1 पत. 2:6-9)

मूसा का तम्बू याजकों को दाऊद के तम्बू में लाने के लिए संरक्षक जैसा है, जैसे "व्यवस्था मसीह तक पहुँचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई" (गलातियों 3:24)।
सुलेमान का अनुभव उन यहूदियों के अनुभव का पूर्वाभास देता है जिन्होंने मसीह में विश्वास किया था। पहले उन्होंने मूसा के तम्बू को अनभुव किया; पुरानी वाचा, हारून का याजकपद, पीतल की वेदी, पशुओं के बलिदान, या जो गिबोन पर स्थापित था। तब उन्होंने दाऊद का तम्बू अनुभव किया; मसीह में साकार सन्दूक, नई वाचा, मलिकिसिदक का याजकपद, और सिय्योन पर्वत पर आत्मिक बलिदान।

इस प्रकार, दाऊद का तम्बू प्ररूपी अर्थों से भरा पड़ा है, जिसके विषय में हमारे वर्तमान उद्देश्य के लिए कहना पर्याप्त होगा, कि, दाऊद को, जो परमेश्वर के हृदय के अनुसार था, जो आप मसीह का एक सुस्पष्ट प्रतीक है, और जो दूसरे किसी भी कुलपति से अधिक सुसमाचार से निकट से जुड़ा हुआ है (मत्ती 1:1; प्रेरितों 13:22, 34; रोमियों 1:3; 2 तीमु. 2:8; प्रकाशित. 22:16) असली आत्मिक आराधना से सम्बंधित परमेश्वर का हृदय जानने का सौभाग्य मिला था। और कि वह, एक भविष्यद्वक्ता था, और जानता था कि परमेश्वर ने उससे शपथ खाई थी कि उसके शरीर में से, वह उसके सिंहासन पर बैठने के लिए मसीह को खड़ा करेगा (प्रेरितों 2:30), उस तम्बू में जो सिय्योन पर खड़ा किया गया था, प्रार्थना, प्रचार और गीत द्वारा आराधना का एक अदभुत पूर्वाभास देने की अनमति पाया था, जो इस सुसमाचार के युग में परमेश्वर के लोगों की विशेषता होगी।
इस प्रकार, दाऊद के समय में एक ही समय में विद्यमान दो तम्बू उसका प्रतीक हैं जो मसीहा के समय में, सुसमाचारों, प्रेरितों के काम और पत्रों में हुआ था।

राजा दाऊद के समय में "तम्बू"

भजन कई स्थानों पर "तम्बू" की बात बहुवचन में करते हैं:
- भजन 43:3 वे ही मुझ को तेरे पवित्र पर्वत पर और तेरे निवास स्थान (तम्बू) में पहुँचाएँ
- भजन 46:4 परम प्रधान के पवित्र निवास स्थान (तम्बू) में
- भजन 84:1 हे सेनाओं के यहोवा, तेरे निवास (तम्बू) क्या ही प्रिय हैं।
- भजन 118:15 धर्मियों के तम्बू में जयजयकार और उद्धार की ध्वनि हो रही है
- भजन 132:7 आओ, हम उसके निवास में प्रवेश करें

आराधना का ईश्वरीय क्रम, पवित्रशास्त्र के अनुसार

उन पवित्रशास्त्रों पर विचार करने के बाद जो स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि आराधना दाऊद की आज्ञा और प्रभु की आज्ञा के अनुसार थी, अब हम आराधना की इस सेवकाई से सम्बंधित विविध प्रकार की अभिव्यक्तियों पर विचार करेंगे।
"आराधना" शब्द का अर्थ है: किसी को, विशेषकर परमेश्वर को "आदर देना, श्रद्धा रखना, बहुत पसन्द करना, श्रद्धांजलि अर्पित करना, भक्ति और सम्मान देना।" इस अध्ययन में, प्रभु की ओर सब सेवाओं को सम्मिलित करने के लिए इसे सबसे विस्तृत भाव में उपयोग किया गया है। हमारी सारी सेवा आराधना और स्तुति के एक सच्चे हृदय में से निकलनी चाहिए।
प्रभु यीशु ने कहा कि पिता ऐसों की खोज में है जो "आत्मा और सच्चाई में" उसकी आराधना करेंगे (यूहन्ना 4:24)। मनुष्य को परमेश्वर का आराधक होने के लिए बनाया गया था। अपने आप में, मनुष्य नहीं जानता कि वह परमेश्वर की आराधना कैसे करे, फिर भी वह आराधना करना चाहता है। इसी कारण से मनुष्य आराधना के तरीके बनाता है या धार्मिक सभाओं के लिए किसी प्रकार का कार्यक्रम बनाता है और फिर परमेश्वर से कहता है कि उसके कार्यक्रमों को आशीष दे। और, क्योंकि मनुष्य को पता नहीं है कि परमेश्वर की क्या इच्छा है उसकी आराधना कैसे हो, वह विभिन्न प्रकार के तरीके बनाता है। लोग सामान्तः एक विशेष ढंग को अपना लेते हैं जो उन्हें पसन्द आता है, उनके आत्मिक स्वभाव में ठीक बैठता है और जो उनके सोच-विचार को ठोकर नहीं लगाता।

हमें अपने आप को पूछना चाहिए कि जब यीशु ने कहा कि पिता ऐसों की खोज में है जो उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, तो उसका क्या अर्थ था। <u>हम आत्मा में आराधना कैसे कर सकते हैं ? हम सच्चाई में आराधना कैसे कर सकते हैं ?</u>
"आत्मा में" आराधना करने का अर्थ है पवित्र आत्मा को विश्वासी के उद्धार पाए आत्मा पर कार्य करने देना - परमेश्वर के लिए प्रेम, आराधना, भक्ति, आदर और सम्मान निकलने देना। विश्वासी अपनी आत्मा में पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म पाया है (यूहन्ना 3:1-5)। उसकी आत्मा परमेश्वर के आत्मा के साथ संयोग में है (रोमियों 8:16; 1 कुरिन्थियों 6:17)। और जब पवित्र आत्मा उद्धार पाए आत्मा पर मँडराता है, तो "आत्मा में" आराधना प्रभु के लिए निकलती है जो आत्मा है (यूहन्ना 4:20-24)।
"सच्चाई में" आराधना करने का अर्थ परमेश्वर के वचन के अनुसार आराधना करना है। यीशु ने कहा, "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर : तेरा वचन सत्य है।" (यूहन्ना 17:17)। परमेश्वर का वचन सत्य का पवित्रशास्त्र है। परमेश्वर ने अपने वचन में बताया है कि हम उसकी आराधना कैसे करें। उसने उनसे जो उससे सच में प्रेम करते हैं, स्तुति और आराधना की विभिन्न प्रकार की अभिव्यक्तियों की अपनी स्वीकृति दिखाई है। "सच्चाई में" आराधना करना परमेश्वर के वचन के अनुसार आराधना करना है।
इसलिए, "आत्मा और सच्चाई में आराधना" में विश्वासी पवित्र आत्मा की प्रेरणा में और प्रभु के वचन के अनुसार परमेश्वर का आदर और आराधना करता है। उचित आराधना के लिए आत्मा और वचन दोनों की आवश्यकता है। दोनों होने चाहिए। यदि आत्मा नहीं है तो आराधना मरी हुई, निर्जीव है। यह अक्षर है जो मारता है। सबकुछ खोखला ढाँचा बन जाता है। यदि वचन नहीं है तो आराधना मात्र भावुक बन जाती है और हठधर्म को ले जा सकती है। सच्ची बाइबल की आराधना में आत्मा और वचन दोनों की आवश्यकता है। ढंग या क्रम के साथ कोई समस्या नहीं है।
उत्पत्ति 1:2 में हम पृथ्वी को बेडौल और सुनसान पड़ा देखते हैं और गहरे जल के ऊपर अन्धकार था। तब परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता है और परमेश्वर बोलता है।
आत्मा और वचन की सेवकाई के द्वारा अस्तव्यस्तता में से नियम, अन्धकार में से उजाला, अव्यवस्थता में से आकार आता है (उत्पत्ति 1:1-5)। इस लिए, ईश्वरीय आराधना भक्त मण्डली के मध्य कार्य कर रहे आत्मा और वचन पर निर्भर है।

<u>आराधना की अभिव्यक्तियाँ:</u>

नीचे आराधना की बहुत सारी अभिव्यक्तियाँ दी गई हैं जो दाऊद के तम्बू के क्रम से और इस्राएल के इतिहास से जुड़ी हई हैं। इसे पहचानना चाहिए कि जब तक मण्डली आत्मा का जीवन बनाए नहीं रखता, तो उनमें से हर एक यान्त्रिक, निर्जीव आकार बन सकते हैं। यह भी नहीं कहा जा रहा है कि इनमें से हर एक हर सभा में होने चाहिए। जो आराधनाा की अगुवाई के लिए जिम्मेवार है वे परमेश्वर के आत्मा की ओर संवेदनशील होंगे और प्रभु के मन पर निर्भर होंगे। उस सभा के लिए वे आत्मा के प्रभाव का पालन करेंगे।
प्रभु की सेवा के विभिन्न तरीके जिनकी सूची नीचे दी गई है उन पर संक्षिप्त टिप्पणी की गई है। मूसा के तम्बू और दाऊद के तम्बू के क्रम में तुलना भी बताई गई है।

1. **गायकों और गीत गाने की सेवकाई** (1 इतिहास 15:16-27; 25:1-7)

दाऊद ने दाऊद के तम्बू में कुछ लेवियों को गीत गाने के लिए नियुक्त किया था। प्रभु के गीत में गायकों की सेवकाई यहाँ बहुत विशिष्ट थी। मूसा के तम्बू में कभी किसी गायक ने गीत नहीं गाया था।

2. **संगीतज्ञों की संगीत वाद्यों के साथ सेवकाई** (1 इतिहास 23:5; 25:1-7)

राजा दाऊद ने उसके तम्बू में प्रभु के लिए गाने के लिए विभिन्न प्रकार के संगीत वाद्यों को बजाने के लिए संगीतज्ञों को नियुक्त किया था। मूसा के तम्बू में कभी कोई संगीत वाद्य नहीं बजाया गया था।

3. **सन्दूक के सामने लेवियों की सेवकाई** (1 इतिहास 16:4, 6, 37)

लेवियों को वाचा के सन्दूक के सामने हर दिन हर व्यक्ति के काम के अनुसार सेवा करने के लिए नियुक्त किया गया था। यह मूसा के तम्बू की व्यवस्था से बहुत ही अलग था। केवल महायाजक प्रायश्चित के महान दिन को ही अतिपवित्र स्थान में प्रवेश करने और परमेश्वर के सन्दूक के सामने खड़े होने का साहस कर सकता था। और यह बड़ी खामोशी और धर्मानुष्ठान में होता था। यदि किसी और व्यक्ति ने अतिपवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस किया होता, तो उस न्याय टूट पड़ता। परन्तु यहाँ दाऊद के तम्बू में याजकीय वंश के लेवियों का एक दल खड़ा था। वे परमेश्वर के सन्दूक के सामने अपनी पारी के अनुसार प्रतिदिन खड़े रहते थे। याद रहे कि दाऊद का तम्बू अतिपवित्र स्थान का मूसा के तम्बू से सिय्योन पर्वत पर स्थानान्तरण सूचित करता है। इसलिए इन लेवियों को "पर्दे के पीछे" पहुँच मिली हुई थी (इब्रानियों 6:19-20; 9:7-9; 10:20-21)।

4. **लिखने की सेवकाई** (1 इतिहास 16:4; 28:12, 19)

राजा दाऊद ने अपने तम्बू में "लिखने" के लिए लेवी ठहराए। "लिख लेने" का अर्थ है: "लिख लेना ताकि याद रखा जा सके।" इसमें शास्त्री की सेवा सम्मिलित थी। कई भजन, विशेषकर वे जो सिय्योन से सम्बंध रखते हैं, पवित्र आत्मा की प्रेरणा में दिए गए होंगे। भजन 80 का शीर्षक और सारा भजन भी इसका एक उदाहरण है। आसाप जैसे वह वाचा के सन्दूक और इस्राएल के चरवाहे के सामने जो करूबों पर विराजमान है, खड़ा हुआ होगा एक भविष्यद्वाणी की प्रार्थना की (भजन 80:1) भजन लेवी शास्त्रियों द्वारा लिखे जाते थे ताकि याद रखे जाएँ। यदि भजन लिखे नहीं जाते तो कितना बड़ा भण्डार खो गया होता। मूसा एक मात्र ऐसा व्यक्ति था जिसने अपने तम्बू से सम्बंधित प्रेरित पवित्रशास्त्र लिखे थे। दाऊद के तम्बू से सम्बंधित दाऊद ने और कई लेवियों ने भजन लिखे थे।

5. **प्रभु को धन्यवाद देने की सेवकाई** (1 इतिहास 16:4, 8, 41)

दाऊद ने लेवियों को प्रभु को धन्यवाद देने के लिए भी नियुक्त किया था। कितने सारे भजन परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर को उसकी दया के लिए धन्यवाद देने के लिए उपदेश देते हैं। धन्यवाद देना सब चीजें देनेवाले की ओर कृतज्ञता और प्रशंसा की एक अभिव्यक्ति है। अकृतज्ञता अन्तिम दिनों का एक चिन्ह है। जिन्हें दाऊद के तम्बू में रखा गया था उन्हें सब चीजों के लिए धन्यवाद देना था (भजन 116:17; 2 इतिहास 29:30-31; 1 थिस्स. 5:18)। मूसा के तम्बू में इस्राएल प्रभु को एक स्वैच्छिक धन्यवाद की भेंट चढ़ा सकता था (लैव्यव्यवस्था 7:12-13)।

6. **स्तुति की सेवकाई** (1 इतिहास 16:4, 36)

दाऊद के तम्बू में एक भाग प्रभु की उसकी भलाई और दया के लिए स्तुति करना था। लेवी अपनी अपनी पारी के अनुसार प्रभु की स्तुति करते रहते थे। शब्दामुक्रमणिका की जाँच करने पर "स्तुति" के असंख्य संदर्भ मिलते हैं जो प्रभु के लिए इसके महत्त्व का स्पष्ट अनुभव देते हैं।

स्तुति "कहना" बाइबल की बात है (यशायाह 12:1, 4; यिर्मयाह 33:10-12)। स्तुति "गाना" भी बाइबल की बात है (भजन 47:6-7; 98:1-6; 100:2)। भजन विशेषकर प्रभु के लोगों को "स्तुति गाने" का उपदेश देते हैं। 150 भजनों में से "स्तुति गाने" के 70 संदर्भ हैं। मूसा के तम्बू में स्तुति गाई नहीं जाती थी। सबकुछ शान्ती में होता था। परन्तु दाऊद के तम्बू में स्तुति की ध्वनि निरन्तर होती रहती थी।

7. **भजनों की सेवकाई** (1 इतिहास 16:9; भजन 98:6)

समर्पण के दिन, दाऊद ने गायको और संगीतज्ञों को एक भजन सिखाया। दाऊद के तम्बू की विशेषता भजन लिखना और गाना थी। अधिकतर भजन दाऊद के तम्बू से जुड़े हैं। इनमें सिय्योन के कई संदर्भ हैं। यह मूसा के तम्बू से भिन्न है जहाँ केवल एक या दो भजन लिखे गए थे, और वे भी मूसा ने लिखे थे (भजन 90-91, शीर्षक)। नया नियम हमें भजनों को गाने का उपदेश देता है (कुलुस्सियों 3:16; इफिसियों 5:18-19; याकूब 5:13; 1 कुरिन्थियों 14:26), जिससे दाऊद की प्रथा जारी है। कलीसिया सामान्यतः पहचानती है कि भजन आराधना के एक अनिवार्य भाग हैं। इतिहास गवाह है कि भजन गाए जाते रहे हैं।

8. **आनन्द मनाने की सेवकाई** (1 इतिहास 16:10, 16, 25-31)

आनन्द मनाना भी दाऊद के तम्बू की विशेषता थी। कनानी धर्म, और मसीहियत के बाहर बहुत से धर्मों में कोई असली आनन्द नहीं होता है। मूसा के तम्बू में भी बहुत औपचारिकता होती थी; दाऊद के तम्बू का आनन्द नहीं था। असंख्य वचन विश्वासी को प्रभु में आनन्दित होने का उपदेश देते हैं (फिलिप्पियों 3:3; 4:4)।

9. **ताली बजाने की सेवकाई** (भजन 47:1; 98:8; यशायाह 55:12)

कोरहवंशियों का एक भजन लोगों को ताली बजाने का उपदेश देता है। मनुष्य की आनन्द और प्रशंसा की सबसे स्वाभाविक प्रतिक्रिया ताली बजाने की होती है। पालने में पड़े शिशु से लेकर, नौजवान, और व्यस्क तक सब के लिए ताली बजाना खुशी, धन्यवाद, प्रशंसा, और आनन्द की एक अभिव्यक्ति है। तो परमेश्वर के लोगों को कितना अधिक इसे करना चाहिए जैसे वे बाइबल के दिनों में करते थे? मूसा के तम्बू में ऐसी कोई भी आनन्द की अभिव्यक्ति नहीं थी।

10. **जयजयकार करने की सेवकाई** (1 इतिहास 15:28; भजन 47:1, 5; यशायाह 12:6)

जब परमेश्वर के सन्दूक को दाऊद के तम्बू में ले जाया गया था, प्रभु के लिए बहुत जयजयकार की जा रही थी। इस्राएल के इतिहास में अनेक पवित्रशास्त्र जयजयकार की बात करते हैं। जब इस्राएल ने यरीहो के चक्कर लगाने के 7वें दिन जयजयकार की, तो परमेश्वर ने दीवारों को गिरा दिया (यहोशू 6:5)। कभी समय होते हैं जब जयजयकार करना मात्र खाली शोर होता है (1 शमूएल 4:5-9), परन्तु जब यह प्रभु की आराधना का एक भाग है तब परमेश्वर उसके लोगों की जयजयकार के साथ कार्य करता है। प्रभु यीशु ललकार के साथ अपने लोगों को लेने एक बार फिर आएगा (1 थिस्स. 4:16)।

11. **नाचने की सेवकाई** (1 इतिहास 15:29; 2 शमूएल 6:14; भजन 149:3; 150:4)

दाऊद के तम्बू के समपर्ण के दिन प्रभु के सामने नाचा जा रहा था। मिकल ने दाऊद को प्रभु के सन्दूक के सामने नाचते देख उसे तुच्छ जाना। नाचने का समय होता है (सभोपदेशक 3:4)। कनानियों के अधिकाँश नाच ऐंद्रिय, कामुक थे, और पूर्तिपूजक त्योहारों में किए जाते थे। इस्राएक का नाचना आनन्द, और स्तुति में और प्रभु की आराधना में होना था। यह विशेषकर पर्व के अवसरों से जुड़ा होता था। जब इस्राएल के लोगों ने लाल समुद्र के पार किया और मिस्रियों से छुटकारा पाया, मिरियम और स्त्रियाँ नाचने लगी थीं (निर्गमन 15:20)।

12. **हाथ उठाने की सेवकाई** (भजन 134; 141:2)

लेवी दाऊद के तम्बू में प्रभु की आराधना के भाग के रूप में उनके हाथ उठाते थे। बाइबल में हाथ उठाने के कई विचारोतेजक अर्थ हैं। यह समर्पण, एक व्यक्ति का प्रभु के सामने मन्नत मानने, प्रार्थना और आराधना का कार्य है। यह पुराने और नए नियम की आराधना का एक कार्य है (उत्पत्ति 14:22; लैव्यव्यवस्था 9:22; लूका 24:50; 1 तीमु. 2:8)। भजनकार कहता है, "मेरी प्रार्थना तेरे सामने सुगन्ध धूप, और मेरा हाथ फैलाना, संध्याकाल का अन्नबलि ठहरे" (भजन 141:2)। मूसा के तम्बू में केवल हारून आशीष में हाथ उठा सकता था। दाऊद के तम्बू में सब प्रभु के लिए उनके हाथ उठा सकते थे। आज भी ऐसा ही है। सब विश्वासी याजकीय सेवा में उनके हाथ उठा सकते हैं। हमें अपने हृदय भी अपने हाथों के साथ उठाने हैं (विलापगीत 3:41)।

13. **आराधना की सेवकाई** (1 इतिहास 16:29; भजन 29:1-2; 95:6)

हालाँकि "आराधना" शब्द इस अध्ययन में इसके सामान्य भाव में उपयोग किया जा रहा है, इसके सुनिश्चित भाव में इसका अर्थ है: 'झुकना, बहुत नीचे झुकना, मुँह के बल लेट जाना।"
दाऊद के तम्बू में लेवियों को न केवल गाना, स्तुति करना, संगीत वाद्य बजाना, ताली बजाना, हाथ उठाना था बल्कि उन्हें आराधना भी करनी थी। प्रभु के सामने झुकना, भक्ति और आदर में मुँह के बल भूमि पर लेटना भी था। आराधना की यह अभिव्यक्ति आत्मा और सच्चाई में आराधना की परमेश्वर के सामने सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है (यूहन्ना 4:20-24; प्रकाशित. 5)। सब विश्वासी परमेश्वर के सामने आत्मा का लेटना अनुभव कर सकते हैं (प्रकाशित. 11:1-2; मत्ती 28:9,17)। सिनै पर्वत पर लोग दूर से आराधना करते थे (निर्गमन 24:1-2)। दाऊद के तम्बू में आराधना परमेश्वर के निकट है। यीशु के लहू के द्वारा नए नियम में यह और अधिक निकट है।

14. **<u>प्रभु को खोजने की सेवकाई</u>** (1 इतिहास 16:10-11; 2 इतिहास 7:14)

दाऊद ने लेवियों को उसके तम्बू में प्रभु के दर्शन के खोजी होने का उपदेश दिया था। यह भी आराधना का भाग है; अपने सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर के दर्शन के खोजी होना। केवल वही जो उसे उनके सम्पूर्ण अस्तित्व से खोजते हैं उसे पाते हैं। उसे खोजते हुए हमें आनन्दित होना है (भजन 27:8; 63:1-2; 70:4)। दाऊद का तम्बू वह स्थान था जहाँ याजक और लेवीय उसे खोजते थे।

15. **<u>आत्मिक बलिदानों की सेवकाई</u>** (भजन 27:6; 1 पतरस 2:3-5; इब्रानियों 13:15-16)

दाऊद का तम्बू वह स्थान था जहाँ याजक और लेवी प्रभु को आत्मिक बलिदान चढ़ाया करते थे। जैसे पहले देखा गया है, पशुओं के बलिदान समर्पण की सभा में चढ़ाए गए थे परन्तु केवल आत्मिक बलिदान ही दाऊद के तम्बू में प्रतिदिन चढ़ाए जाते थे। यह मूसा के तम्बू में चढ़ाए जाने वाले पशुओं के बलिदानों से बहुत भिन्न था।
<u>नीचे कई आत्मिक बलिदानों के नाम दिए गए हैं जिनका पवित्रशास्त्र में जिक्र है।</u>

- आनन्द के बलिदान (भजन 27:6)।
- धन्यवाद के बलिदान (भजन 116:17; लैव्यव्यवस्था 7:12; योना 2:9)।
- स्तुतिरूपी बलिदान (यिर्मयाह 17:26; 33:11; इब्रानियों 13:15)।

ये सब "आत्मिक बलिदान" नए नियम के राजपदधारी याजक कलीसिया में जो आत्मिक घर है चढ़ाते हैं। यीशु के शरीर और लहू के एक बार के बलिदान के बाद पशुओं के बलिदानों की आवश्यकता नहीं है। नए नियम का विश्वासी जो प्रभु का सेवक याजक है, मसीह के द्वारा परमेश्वर को अपना शरीर (रोमियों 12:1-2), अपनी स्तुति (इब्रानियों 13:15) और अपना पदार्थ (इब्रानियों 13:16) अर्पित करता है।

16. **<u>"आमीन" कहने की सेवकाई</u>** (1 इतिहास 16:36)

इब्रानी भाषा में "अमीन" शब्द का अर्थ है: "निश्चय ही।" इसका अनुवाद किया है, "आमीन, तथास्तु, सत्य।" इसमें विश्वासयोग्यता और सत्य सम्मिलित हैं। यूनानी भाषा में उसी शब्द का अर्थ है, "दृढ़, विश्वसनीय" (तथास्तु) और "आमीन, वस्तुतः" अनुवाद किया गया है। हृदय से "आमीन" कहना सहयोग की अभिव्यक्ति, विश्वास का समर्थन है, निश्चिति है कि कही गई बात सत्य है, और यह हो जाएगी।
यह ध्यान देने योग्य है कि इस्राएल ने व्यवस्थाविवरण 27:15-26 और गिनती 5:22 में प्रभु के श्रापों के उत्तर में "आमीन" ही कहा था। दाऊद के तम्बू में यह आशीष का "आमीन" था। यह पुराने नियम और नए नियम की आराधना की भी अभिव्यक्ति है (नहेम्याह 5:13; 8:6; भजन 89:52; 106:48; 1 कुरिन्थियों 14:16; इफिसियों 3:21; प्रकाशितवाक्य 7:12)।
दाऊद के तम्बू से सम्बंधित, या में, आराधना की विभिन्न अभिव्यक्तियों पर संक्षिप्त में विचार किया गया है। इनमें से सब या कुछ किसी भी सभा में हो सकती हैं। वे सब बाइबल में से, परमेश्वर के वचन में से हैं। पुराने और नए नियम दोनों के विश्वासी आराधना और स्तुति की इन अभिव्यक्तियों में प्रवेश कर सकते हैं। यह कहना व्यर्थ होगा कि क्योंकि इनमें से कुछ नए नियम में स्पष्ट रूप से सूचित नहीं हैं इसलिए ये चीजों केवल पुराने नियम के इस्राएल के लिए हैं और नए नियम की कलीसिया के लिए नहीं हैं। नए नियम की कलीसिया पुराने नियम की कलीसिय में से निकली है। प्रारंभिक विश्वासी उनकी शिक्षाओं, प्रचार और आराधना में भजनों और बाकी के पुराने नियम का समर्थन माँगते रहे थे। नया नियम पुराने नियम को रद्द नहीं करता है। नया पुराने का अर्थ बताता है। नया नियम दिखाता है कि पशुओं के बलिदान और मूसा की व्यवस्था क्रूस में पूरे हुए और समाप्त कर दिए गए थे। परन्तु यह कहीं नहीं कहता है कि आराधना, और आराधना की अभिव्यक्तियाँ रद्द कर दी दई थीं। कुछ इभिव्यक्तियों को स्वीकार

करना और कुछ को ठुकराना असंगत है, क्योंकि सब प्रभु की ओर बाइबल की अभिव्यक्तियाँ हैं। यीशु के क्रूस और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के कारण, और क्योंकि नए नियम के विश्वासी मसीह के द्वारा, और मलिकिसिदक की रीति पर परमेश्वर के राजा और याजक हैं, आराधना नए नियम में एक बड़े और ऊँचे स्तर पर ले जायी गई है।
नए नियम की कलीसिया भजनों की रीति पर प्रभु की आराधना करती थी। यदि यह चीजें ऐसी नहीं हैं तो आज की कलीसिया को यह कहकर कि उनमें से कुछ भी हम पर लागू नहीं होता, भजनों में से कुछ भी स्वीकार नहीं करना चाहिए। परन्तु, भजन एक आराधना कर रही कलीसिया के मध्य सामान्यतः मसीह का प्रकटीकरण हैं। "मैं (मसीह) सभा (कलीसिया) के बीच तेरी (परमेश्वर) प्रशंसा करूँगा" (भजन 22:22-31)। "यदि आनन्दित है, तो वह स्तुति के भजन गाए" (याकूब 5:13)। "अपने अपने मन में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ" (इफिसियों 5:18-19; कुलुस्सियों 3:16)।

नीचे दिया गया रेखाचित्र और इसके अपने-अपने कालम मूसा के तम्बू और दाऊद के तम्बू की भिन्नता को और इस अध्ययन में विचार की गई आराधना की अभिव्यक्तियों को स्पष्ट करते हैं। दोनों तम्बुओं की आराधना में भिन्नता स्पष्ट है। विद्यार्थी दाहिनी हाथ के कालम में दिए वचनों को पढ़े और ध्यान दे कि किस प्रकार नया नियम दाऊद के तम्बू में दी पुराने नियम की आराधना के क्रम की पुष्टि करता है।

आराधना का क्रम स्थापित किया गया

दाऊद का तम्बू
(नए नियम की कलीसिया)
(सिय्योन पर्वत का नियम)

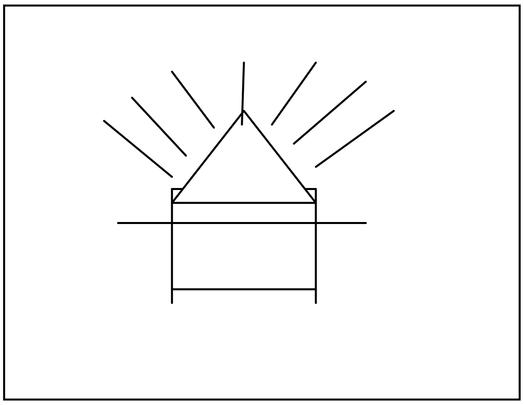

1. गायक और गीत गाना
(1 इतिहास 15:16-27;
कुलुस्सियों 3:16)

2. संगीत वाद्य
(1 इतिहास 23:5; 25:1-7;
इफिसियों 5:18-19)

3. लेवी सन्दूक के सामने सेवा करते हैं
(1 इतिहास 16:37;
इब्रानियों 6:19-20; 10:19-21)

मूसा का तम्बू
(पुराने नियम की कलीसिया)
(सिनै पर्वत का नियम)

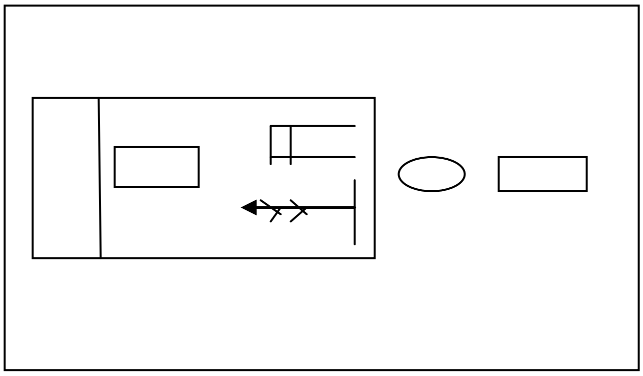

1. कुछ नहीं (गिबोन पर्वत -कुछ।
1 इतिहास 16:37-43)

2. कुछ नहीं

3. केवल महायाजक

4. लिखना (1 इतिहास 16:4; भजन 80:1; प्रकाशित. 1:10-11)	4. कुछ नहीं
5. धन्यवाद देना (1 इतिहास 16:4, 8, 41; 1 थिस्स. 5:18)	5. कुछ नहीं
6. स्तुति करना (1 इतिहास 16:4, 36; इब्रानियों 13:15)	6. कुछ नहीं
7. भजन गाना (1 इतिहास 16:7; इफि. 5:18-19; 1 कुरिं. 14:26; याकूब 5:13)	7. कुछ नहीं (केवल भजन 90)
8. आनन्द और खुशी (1 इतिहास 16:10, 27, 31; प्रेरितों 13:52)	8. आज्ञा दी गई
9. ताली बजाना	9. कुछ नहीं
10. जयजयकार करना (1 इतिहास 15:28; 1 थिस्स. 4:16)	10. कुछ नहीं (केवल यरीहो, यहोशू 6)
11. नाचना (1 इतिहास 15:29; भजन 149:3; लूका 15:25)	11. कुछ नहीं (केवल निर्गमन 15)
12. हाथ उठाना (भजन 134; 1 तीमु. 2:8)	12. कुछ नहीं
13. आराधना - पहुँच - झुकना (1 इतिहास 16:29; यूहन्ना 4:20-24)	13. आराधना - दूर से
14. प्रभु को खोजना (1 इतिहास 16:10-11; प्रेरितों 15:17)	14. तम्बू को खोजा
15. आत्मिक बलिदान (भजन 27:6; 116:17; 1 पतरस 2:3-5; इब्रानियों 13:15-16)	15. पशुओं के बलिदान
16. आमीन (आशीष देने में) (1 इतिहास 16:36; 1 कुरिं. 14:	16. आमीन (श्राप में) (व्यवस्था. 27:15-26)

नीचे दी गई आमोस 9:11-12 की टिप्पणी पढ़ो:

"उस समय" - याकूब कहता है (प्रेरितों 15:16-17) 'इसके बाद' यानि, मसीहा के विधान में (उत्पत्ति 49:10; होशे 3:4-5; योएल 2:28; 3:1)। दाऊद का तम्बू - "दाऊद का घराना" नहीं जो उसके कारोबार के विषय में जब वह प्रबल हो रहा था उपयोग किया है (2 शमूएल 3:10), परन्तु झोपड़ी, उसके राज्य और परिवार की कमजोर स्थिति व्यक्त करता है जिसमें वे आमोस के समय में गिरे हुए थे, और बाद में बेबिलोन की बँधुआई के समय पुनःस्थापना से पहले; और गौणतः, अन्त के दिनों में दाऊद का प्रतिरूप, मसीहा में इस्राएल के पुनःस्थापना से पहले (भजन 102:13-14; यशायाह 12:1; यिर्मयाह 30:9; यहेजकेल 23:24; 37:24)।
"तम्बू उसके लिए उपयुक्त है, जैसे उसका मनुष्य का स्वभाव तम्बू है जो उसने इम्मानुएल, 'परमेश्वर हमारे साथ' बनने में धारण किया था (यूहन्ना 1:14)। कुछ "दाऊद के तम्बू" को मानते हैं कि वह था जो उसने सिय्योन में खड़ा किया था जब उसने परमेश्वर के सन्दूक को ओबेदेदोम के घर से लाया था। यह वहाँ उसके राज्य के तीस वर्ष रहा, जब सुलेमान का मन्दिर बनाया गया था; जबकि "मिलापवाला तम्बू" गिबोन पर ही था (2 इतिहास 1:3), जहाँ याजक बलिदान चढ़ाया करते थे (1 इतिहास 16:39)।
गीत और स्तुति दाऊद के टहलुओं की सन्दूक के सामने सेवा थी (आसाप आदि); सुसमाचार की बलिदान-संबंधि सेवा (स्वर्ग में अब मसीहा का याजकपद) और पृथ्वी पर पहले के अलावा विश्वासियों की परमेश्वर की उपस्थिति में पहुँच का विभाजन (2 शमूएल 6:12-17; 1 इतिहास 16:37-39; 2 इतिहास 1:3)।

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इब्रानियों का लेखक विश्वासियों को बताता है कि हम सिनै पर्वत के पास नहीं बल्कि सिय्योन के पास आए हैं; मूसा के तम्बू में इसके आराधना के शान्त नियम, इसके आकार और औपचारिकता, व्यवस्था के अक्षर के पास नहीं जो मारता है, बल्कि दाऊद के तम्बू में, आत्मा के पास जो जीवन देता है आए हैं।

उनके लिए जिनकी अगुवाई की जिम्मेवारी है, सभोपदेशक 3:1-8 में दिए सिद्धान्त को याद रखना अच्छा होगा, "हर एक बात का एक...समय है" (आय. 1)। गाने का समय है, ताली बजाने का समय है, हाथ उठाने का समय है, आनन्द मनाने और प्रभु के सामने नाचने का समय है, स्तुति करने का समय और आराधना करने का समय है। हर एक काम के लिए समय है। आराधना की सब अभिव्यक्तियों में पवित्र आत्मा की ओर संवेदनशीलता मार्गदर्शक होगा।
जैसे पहले देखा गया है, बाइबल का अर्थ निकालने का एक सिद्धान्त पुराने नियम की सब चीजों को क्रूस के पास लाना है। क्रूस वह बनता है जिसे "व्याख्या फिल्टर" कहा जा सकता है जिसमें से सबकुछ गुज़रना चाहिए। पुराने नियम में से कुछ चीजें क्रूस के पास आती हैं और समाप्त कर दी जाती हैं। कुछ चीजें क्रूस के पास आती हैं और उसमें से निकलती हैं और मान्य ठहराई जातीं और ऊपर उठाई जाती हैं।
आराधना और आराधना की अभिव्यक्तियाँ क्रूस के पास आतीं और में से निकल जाती हैं। आराधना क्रूस पर समाप्त नहीं हुई थी। आराधना कभी भी समाप्त नहीं होगी। आराधना सदा के लिए है, और आराधना आत्मा और सच्चाई में हो (यूहन्ना 4:20-24)।
हम स्तुति और आराधना की विभिन्न अभिव्यक्तियों को जैसे उन्हें पुराने नियम में देखा गया था और नए नियम में मान्य ठहराया गया है, दो कालमों में रखेंगे। यह दिखाएगा कि इन अभिव्यक्तियों को पुराने नियम के इस्राएल तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए, परन्तु ये नए नियम कलीसिया की उचित अभिव्यक्तियाँ हैं जो परमेश्वर के लोगों की वर्तमानता है।

1. | पुराना नियम क्रमः
(राज्य का तम्बू) | नया नियम क्रमः |
|---|---|
| दाऊद की वाचा | नई वाचा |
| सिय्योन पर्वत | स्वर्गीय सिय्योन |
| दाऊद का तम्बू | कलीसिया, परमेश्वर का नए नियम का निवासस्थान |
| राज्य, राजत्व | मसीहा का राज्य, राजत्व |
| दाऊद की सन्तान | मसीहा, दाऊद का पुत्र |
| दाऊद का घराना | मसीहा का घराना |
| दाऊद का सिंहासन | मसीहा दाऊद के सिंहासन पर बैठता है |
| शत्रुओं को वश में करता | अपने शत्रुओं को पैरों तले करता |
| अन्यजाति देशों को जीतता है | अन्यजाति उसके राज्य में आते हैं |
| राजा दाऊद | राजा-याजक यीशु, दाऊद का पुत्र |

2\.

पुराने नियम की आराधना <u>अभिव्यक्तियाँ</u> <u>(आराधना तम्बू)</u>	नए नियम की आराधना <u>अभिव्यक्तियाँ</u>
स्तुति और आराधना का क्रम	स्तुति और आराधना, प्रकाशितवाक्य 4-5
परमेश्वर का सन्दूक	परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन
दाऊद, मधुर गायक और भजनकार	यीशु - आराधना के अगुवे; इब्रानियों 2:12
गीत गाना	इब्रानियों 2:12; कुलुस्सियों 3:16
ताली बजाना	नए नियम में वर्णन नहीं
स्तुति करना	इब्रानियों 13:15; स्तुतिरूपी बलिदान
हाठ उठाना	1 तीमुथियुस 2:8; पवित्र हाथ उठाना
झुकना	प्रभु के सामने गिरना; प्रकाशितवाक्य 4
आनन्दित होना	लूका 1:47; प्रेरितों 13:51; कूदना
आराधना करना	आत्मा और सच्चाई में; यूहन्ना 4:20-24
घुटनों पर होना	घुटनों पर होना; लूका 22:41
खड़े रहना	खड़े रहना; प्रकाशितवाक्य 20:12
भजन गाना	भजन, स्तुतिगान, आत्मिक गीत; इफि. 5:18-19
जयजयकार करना	बड़ी ललकार; 1 थिस्स. 4:16
नाचना	नाचना; लूका 15:25
संगीत वाद्य	परमेश्वर की वीणाएँ; प्रकाशितवाक्य 5:8

स्तुति और आराधना की सब अभिव्यक्तियों का उद्देश्य उन्नति करना है। क्या यह सन्तों की उन्नति करती है? क्या यह प्रभु की महिमा करती है? क्या यह गैर मसीहियों को मसीह के पास लाती है या उन्हें भगा देती है? सब चीजें उन्नति के लिए की जाएँ (1 कुरिन्थियों 14:3-5, 12, 26)।

संगीत का संक्षिप्त इतिहास

क्योंकि दाऊद की पद्धति में संगीत इतनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि संगीत के विकास की कुछ बातें करना अनिवार्य हो जाता है। यह इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि कलीसिया का इतिहास कलीसिया में संगीत के स्थान को लेकर संघर्ष और विवाद प्रकट करता है।

कलीसिया की आराधना में कंठ और यंत्रीय संगीत के स्थान को लेकर सदियों से बहुत कलह होती रही है। आज की बहुत सी कलीसियाएँ मण्डली का गीत गाना और कुछ संगीत वाद्यों का उपयोग स्वीकार करती हैं। संघर्ष एक लम्बे समय से चला आ रहा है। कुछ सम्प्रदाय हैं जो मसीही आराधना में संगीत वाद्यों के प्रयोग को रोकती हैं परन्तु गीत गाने का कुछ प्रयोग करने देती हैं। हमारे समय में बदलाव की हवाएँ बह रही हैं। संगीत का यह संक्षिप्त इतिहास प्रभु के सामने इस सेवकाई के महत्त्व को समझने में हमारी सहायता करेगा। अधिक सुयोग्य लेखकों ने संगीत के इतिहास के विषय में विस्तार से लिखा है, इसलिए इस अध्याय में हम अपने वर्तमान संदर्भ से सम्बंधित कुछ मुख्य मुद्दे ही लेंगे।

अ. संगीत का स्वर्गीय आरम्भ

1. सृष्टि का समन्वय

संगीत के आरम्भ के विषय में कुछ संदेह नहीं होना चाहिए। संगीत या तो परमेश्वर, या शैतान या मनुष्य से आरम्भ हुआ है। बाइबल बताती है कि संगीत परमेश्वर के हृदय में आरम्भ हुआ था। मनुष्य की सृष्टि से पहले, और स्वर्गदूतों की सृष्टि से भी पहले संगीत परमेश्वर के अस्तित्व में था।

शब्दकोष में संगीत की परिभाषा है कि यह "कंठ या यंत्रीय स्वरों को परिवर्ती स्वरमाधुर्य, स्वरसंगति, लय, और ध्वनिरूप में मिलाने की कला और विज्ञान है, विशेषकर इसलिए कि संरचनात्मक रूप से सम्पूर्ण और भावात्मिक रूप से व्यंजक रचनाएँ बन सकें।"

सृष्टि आप वास्तव में परमेश्वर का "संगीत-समारोह" है। सृष्टि के छायापथ एक स्वरमाधुर्य और एक समन्वय प्रस्तुत करते हैं जो परमेश्वर का संगीत का हृदय प्रकट करता है। जब परमेश्वर ने सृष्टि की रचना की तो उसने उन सबको उनके परिक्रमा-पथ पर रखा, और वे सब एक विशाल और यशस्वी समस्वर संगीत-समारोह में चलते हैं। कोई भी बेसुरा स्वर नहीं था। सृष्टि परमेश्वर का वाद्यवृन्दीय प्रबंध है।

2. स्वर्गदूतों की गायक-मण्डली

बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों की रचना की और संकेत देती है कि सृष्टि की रचना के समय स्वर्गदूत "स्वर्गीय गायक-मण्डली" थे। इस स्वर्गीय गायक-मण्डली का अगुवा भोर का तारा, लसीफर था।

अधिकाँश बाइबल के व्याख्याता विश्वास करते हैं कि शैतान अपने पतन से पहले लूसीफर (यहेजकेल 28:11-19; यशायाह 14:12-17) था। यदि यह सही है तो, लूसीफर का वर्णन सूचित करता है कि वह स्वर्ग का गायक-अगुवा, स्वर्ग की गायक-मण्डली का निर्देशक और आराधना का अगुवा था। उन मुख्य बातों पर ध्यान दो यहाँ बताई गई हैं।

- अ) उसका नाम लूसीफर था, जिसका अर्थ है "भोर का चमकनेवाला तारा"।
- आ) वह अभिषिक्त करूब था, सेवकाई के लिए एक विशेष अभिषेक पाया था।
- इ) वह "छानेवाला करूब" था, और परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर रहता था।
- ई) वह सर्वांग सुन्दर और बुद्धि से भरपूर रचा गया था।
- उ) वह परमेश्वर की अदन नामक बारी में था।
- ऊ) वह एक याजक के समान अपने वस्त्रों में कीमती पत्थरों के साथ पहनाया गया था।
- ए) जिस दिन से वह सिरजा गया था उसी दिन से उसके डफ और बाँसुलियाँ बनाई गई थीं।

इस प्रकार, यह संकेत देता है कि लूसीफर में संगीत की सेवकाई थी और परमेश्वर ने उसे, स्वर्गीत गायक-मण्डली की अगुवाई करने के लिए, इस सेवकाई में अभिषेक किया था। उस आरम्भिक सृष्टि में कैसा स्वर्गीय संगीत, कैसा स्वर्गीय सुरीलापन सुनाई दिया होगा। स्वर्गदूतों को परमेश्वर की आराधना करने और सेवा टहल करनेवाली आत्माएँ बनाया गया था (इब्रानियों 1:13-14; 12:22; दानिय्येल 7:10; लूका 2:13; प्रकाशितवाक्य 5:1, 11)।

अय्यूब की पुस्तक हमें बताती है कि सृष्टि के समय "भोर के तारे एक संग आनन्द से गाते थे और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार करते थे" (अय्यूब 38:4-7)। अधिकाँश व्याख्याता स्वीकार करते हैं कि भोर के तारे या परमेश्वर के पुत्र स्वर्गदूत ही हैं। स्वर्गदूत "सृष्टि का गीत" गाते हैं परन्तु वे "उद्धार का गीत" नहीं गाते (1 पतरस 1:12; प्रकाशितवाक्य 5:1-12)।
सृष्टि की रचना के समय गाना और जयजयकार हुआ था, क्योंकि सारी सृष्टि और प्राणी ईश्वर के साथ सम्पूर्ण समन्वय में थे। किसी प्रकार का बेसुरापन नहीं था।

3. पाप का बेसुरापन

केवल अनन्तकाल ही सृष्टि में पाप के प्रवेश करने का सम्पूर्ण विवरण दे पाएगा। अचानक, सृष्टि और प्राणियों के ईश्वरीय संगीत और समन्वय में, लूसीफर जो अभिषिक्त करूब था, ईश्वरीय इच्छा के विरुद्ध अपनी इच्छा का दावा करने के लिए उठता है। स्वर्ग के संगीत और गायण का निर्देशक अपनी सुन्दरता, बुद्धि, अभिषेक, और सेवकाई देखता है और घमण्ड, अभिमान और हठ से फूल जाता है। विद्रोह प्रकट होता है। बेसुरापन जो मात्र समन्वय की कमी, संगीत के सुरों का मतभेद है, सृष्टि में सुनाई देता है। परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध हठ प्रकट होता है। स्वर्गदूत उनकी इच्छा में परखे जाते हैं। कुछ लूसीफर के पीछे होने का फैसला करते हैं और परमेश्वर के परलोग से निकाले जाते हैं। पाप परमेश्वर की सृष्टि के सुमेल को तोड़ देता है। पाप बेसुरापन लाता है। प्रतापी संगीत मेजर अब निराशाजनक संगीत मायनर बन जाता है। सृष्टि में एक और स्वर सुना जाता है। ईश्वरीय सूमेल टूट जाता है।
परमेश्वर लूसीफर को तीसरे स्वर्ग से फेंक देता है, परन्तु अब सृष्टि में संगीत की ध्वनि दो परस्पर-विरोधी स्वरों में सुना जाता है; मायनर और मेजर। यह ध्यान देने योग्य है कि परमेश्वर ने लूसीफर (शैतान) से न तो उसकी बुद्धि और न ही उसकी संगीत की सेवकाई छीनी। यह उसके पास अभी भी है और मनुष्य के सारे इतिहास में शैतान द्वारा प्रेरित संगीत मनुष्य जाति को भ्रष्ट करने, विक्रत करने, और अन्त में नष्ट करने की शक्ति रखता है।
संगीत अपने में न तो नैतिक और न अनैतिक है। यह निनैतिक है! यह संगीत का प्रयोग है जो इसे बुरा या अच्छा, नष्ट करनेवाला या उन्नति करनेवाला बनाता है।
इसलिए, लूसीफर ने अपनी संगीत की सेवकाई को खोया नहीं; उसने इसे भ्रट कर दिया। आज उसके पास यह एक प्रमुख-हथियार है जो लोगों को परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह से दूर ले जा रहा है। वह इसकी शक्ति को पहचानता है।

आ. अन्यजाति देशों का संगीत

ऐसा जान पड़ता है कि पृथ्वी के सब प्रचीन लोग मानते थे कि संगीत का आरम्भ ईश्वरीय है। हर सभ्यता में संगीत के आरम्भ और रचना के विषय में कुछ अनुश्रुति है। लगभग हर मामले में एक देवता इसे खोजता है और मनुष्यजाति को देता है।
इतिहास प्रकट करता है कि आरम्भ से संगीत केवल आराधना के लिए प्रयोग किया जाता था। चाहे लोग सच्चे परमेश्वर, या मूरतों, या शैतानी आत्माओं की आराधना करते थे, संगीत आदि से आराधना में प्रयोग हुआ है। सब जमजातियाँ के पास चाहे वे कितनी भी असभ्य क्यों न थीं, किसी न किसी प्रकार के संगीत वाद्य थे। परमेश्वर ने मनुष्य में आराधना करने की इच्छा डाली है। परमेश्वर ने मनुष्य को आराधना करने की उसकी इच्छा व्यक्त करने की योग्यता दी है और वह इसे संगीत, स्वर या यंत्रीय, के द्वारा करता है। हम यहाँ संक्षिप्त में देशों और संगीत के सदंर्भो को देखेंगे।
1. बाइबल में संगीत वाद्यों का सबसे पहला जिक्र कैन के अभक्त वंश में है। वे वीणा और बाँसुली आदि के प्रवर्तक हुए थे। युबाल उन सब संगीतज्ञों का पिता (पहला शिक्षक) था (उत्पत्ति 4:21)।

2. उत्पत्ति 31:27 में लाबान याकूब को डाँटता है कि वह अपनी पत्नियों-बच्चों और धन-सम्पत्ति को चुपके से ले आया; नहीं तो वह आनन्द के साथ मृदंग और वीणा बजवाते, और गीत गवाते विदा करता।

3. अय्यूब 21:12 में. जो सम्भवत: बाइबल की सबसे पुरानी पुस्तक है, अय्यूब कहता है कि दुष्ट "डफ और वीणा बजाते हुए गाते, और बाँसुली के शब्द से आनन्दित होते हैं।" कंठ और यंत्रीय वाद्य साथ में जोड़े गए हैं।

4. मिस्री विशेषकर तारदार वाद्य के शौकीन थे। वे तालवाद्यों को कम महत्त्व देते थे। पुरातत्त्वज्ञ हमें सूचित करते हैं कि मिस्र में एक बड़ी संख्या में वीणाएँ, सितार, और बाँसुरियाँ मन्दिर की आराधना में और लोगों को युद्ध में ले जाने में प्रयोग किए जाते थे।

5. ऐसा जान पड़ता है कि कनानियों की आराधना सबसे घटिया प्रकार की होती थी। उत्सव, मूर्तिपूजा और अनैतिकता सबसे भद्दे प्रकार के संगीत के साथ की जाती थी। इस्राएल को कनानी धर्म और कामुक आराधना के साथ किसी भी प्रकार का सम्पर्क रखने से सख्त मना किया गया था।
निर्गमन 32:17-18 इसका एक उदाहरण है कि इस्राएल ने सोने के बैल की आराधना में क्या किया था। लोग गाने, नाचने और कामुक क्रियाओं में लग गए। यह मिस्र और दूसरे भ्रष्ट धर्मों का प्रभाव प्रकट करता है जिनसे इस्राएल को छुटकारा चाहिए था।

6. अश्शूरियों, बेबिलोनियों और फारसियों के संगीत वाद्य थे, जिनमें विशेषकर वीणा जैसे वाद्य थे। एक वीणा त्रिकोण आकार की थी। डलसीमर एक चौकोर लकड़ी के डिब्बे का बना था, जिसमें धातु के तार लगे थे और जिसे हथौड़े से पीटा जाता था। यह आधुनिक पियानो का परदादा है। दानिय्येल 3 बेबीलोन के राजा की आराधना के साथ संगीत के जुड़े होने का उदाहरण है। आय. 5 और 15 में, नरसिंगे, बाँसुली, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि संगीत वाद्य राजा नेबूकदनेस्सर की आराधना के उत्सव में प्रयोग किए गए थे। संगीत की शक्ति को इस पृथ्वी के राजा के सामने झुकने के लिए प्रयोग किया गया था।

7. यूनानी विशेषकर नली वाद्य प्रयोग करते थे। "पैन की मुरलियों" का यूनानी इतिहास में जिक्र किया गया है।

8. चीनी विशेषकर तालवाद्यों के शौकीन थे, जैसे कि ढोल, घंटियाँ, लकड़ी के मुँगरों से पत्थरों को बजाना, झाँझ, और लकड़ी की नलियों को अन्दर बाहर बजाना। उनके पास बाँस की नलियों के वाद्य होते थे। तारदार वाद्य बिरले होते थे। चीन के इतिहास में संगीत वाद्य 3000 ई.पू. पुराने हैं। एक चीनी पौराणिक कथा वर्णन करती है कि शहनशाह ने अपने संगीत के प्रमुख को प्रतिज्ञा के प्रदेश में भेजा। वहाँ उसने बाँस के पेड़ों को देखा जिनमें से उसने अमरपक्षी द्वारा गाए जाने वाले बारह सुरों से मेल खाने वाली बारह नलियों को बनाया।

9. जापानियों के भी चीनीयों के समान वाद्य थेः ढोल, घंटी लोलक, सकड़ी के लोलक, और कभी-कभी बाँसुलियाँ। एक वाद्य शंख का बना हुआ जिसमें एक नली घुसड़ी होती थी और इसे तुरही के समान प्रयोग किया जाता था।

10. भारत और अफ्रीका, और दूसरे देसों ने भी विभिन्न प्रकार के वाद्य बनाए गुए थे।

11. सुमोरी कहते हैं कि नीना देवी संगीत के कला की बनानेवाली और प्रवर्तक है।

12. यूनानी देवता हरमीस वाक्पटुता, व्याख्या और कला का देवता है। कहा जाता है कि वह एक कछुए के कर्पर से ठोकर खाया और उसने पहली वीणा बनाई। उसने इसे अपोलो को दे दिया जिसके सुन्दरता से बजाने के कारण उसे "संगीत का देवता" का नाम मिला।
यह चीजें दिखाती हैं कि सभ्यता की बहुत सारी पौराणिक कथाएँ संगीत की उत्पत्ति का श्रेय देवताओं को देती हैं जिन्होंने इन्हें मनुष्य को दे दिया। यह सब इस विचार की पुष्टि करने में सहायता करता है कि संगीत सच्चे परमेश्वर से आरम्भ हुआ है।

सारा संगीत ध्वनि, लय, और सुर का जोड़ है, चाहे यह प्रचीन है या आधुनिक। बेशक, कई वाद्य आकस्मिक थपथपाने या छड़ियों और पत्थरों, धातुओं आदि की आवाज से निकले हैं, जो मनुष्य के कान को रोचक लगे थे। इस प्रकार सबसे प्रचीन जनजाति से लेकर सबसे प्रगतिशील देश तक, मनुष्य ने विशेषकर आराधना में अपनी भावनाओं को कंठ या यंत्रीय संगीत द्वारा व्यक्त करने का प्रयास किया है। मूरतों की पूजा से लेकर दुष्टात्माओं, राजाओं या योद्धाओं की हीरो-पूजा तक, संगीत ने भक्ति के एक अंगभूत भाग निभाया है।

इ. इबानी देश का संगीत

पुराने नियम में संगीत के बहुत सारे संदर्भ इस्राएल देश से सम्बंधित हैं। ये सब संदर्भ उनकी सच्चे परमेश्वर, यहोवा की आराधना से सम्बंधित हैं। यह देखा जाएगा कि परमेश्वर ने आराधना में संगीत के प्रयोग की आज्ञा दी थी।
यदि प्रभु परमेश्वर संगीत के विरुद्ध होता, या यदि संगीत शैतान या अभक्त देशों से आरम्भ हुआ होता, तो प्रभु इस्राएल को इसके प्रयोग से मना करता और चेतावनी देता। परन्तु, इसका उलटा सच है। प्रभु इस्राएल को गाने, स्तुति करने, जयजयकार करने,

और सब प्रकार के संगीत वाद्यों के साथ उसकी आराधना करने की आज्ञा देता है। इब्रानी देश अपने सबसे ऊँचे आत्मिक महिमा में, एक गानेवाला देश, एक संगीत प्रिय लोग थे। सच्चे परमेश्वर से सम्बंधित इस देश में आराधना के गीत बने थे, जो अभक्तों के भ्रष्ट और कामुक गीतों के सामने अतुल्य हैं। कनानी देवताओं की आराधना दुष्ट, कामुक और ऐंद्रिय थी। जो संगीत इन अश्लील रंगरलियों में बजाया जाता था निश्चय ही शैतान द्वारा प्रेरित था और परमेश्वर के उद्धार पाए लोगों के लिए बिलकुल अनुचित था।
दूसरी ओर, इस्राएल का संगीत सबसे ऊँची, भरपूर, शुद्ध और उत्तम किस्म का था और इससे पवित्र संगीत का प्रवर्तक परमेश्वर प्रसन्न होता था

हम इस्राएली देश में वाणी और यंत्रीय संगीत के कुछ संदर्भों पर विचार करेंगे।

1. संगीत – वाणी का

परमेश्वर के लिए गाने - वाणी के संगीत के बहुत सारे संदर्भ हैं।

अ. निर्गमन 15:1-19, मिस्र की बँधुआई से महान छुटकारे के बार, मूसा और इस्राएल के लोगों का गीत यहाँ लिखा गया है। प्रकाशितवाक्य 15:3-4 में "मूसा और मेम्ने के गीत" पर भी ध्यान दो।
आ. निर्गमन में मूसा का गीत आदम के समय से पहला लिखा गया गीत है।
इ. निर्गमन 15:20-21, मरियम नामक नबिया ने अपने हाथ में डफ लिया और सब स्त्रियाँ उसके साथ लाल समुद्र के छुटकारे के बाद परमेश्वर के लिए नाचने के साथ गाने और स्तुति करने लगीं।
ई. गिनती 21:16-18, इस्राएल ने कुएँ के लिए एक गीत गाया। जब हाकियों और रईसों ने अपने सोंटों और लाठियों से कुएँ को खोदा, और लोगों ने गीत गाया और प्रभु ने पानी दिया।
उ. यहोशू 6, जब याजकों ने नरसिंगे फूँके और लोगों ने जयजयकार की, तब यरीहो की दीवारें ढह गईं। परमेश्वर ने उसके वचन की ओर विश्वास और आज्ञापालन की इस अभिव्यक्ति के साथ कार्य किया।
ऊ. न्यायियों 5, दबोरा और बाराक का गीत हमारे लिए अध्याय 1 में लिखा गया है। यह इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति का गीत है। आय. 1-3 विशेषकर पढ़ो।
ए. 1 इतिहास 15-16, दाऊद ने अपने तम्बू में गायकों की सेवकाई नियुक्त की। दाऊद के तम्बू में गायकों के चौबीस फेरे थे और वैसा ही सुलेमान के मन्दिर में भी थे (1 इतिहास 23:1-7; 1 इतिहास 25)।
ऐ. 2 इतिहास 5:11-14, सुलेमान के मन्दिर के समर्पण के समय गायकों ने प्रमुख भूमिका निभाई थी।
ओ. 2 इतिहास 20, भक्त राजा यहोशापात ने मोआबियों और अम्मोनियों के विरुद्ध युद्ध में गायकों की सेवकाई का प्रयोग किया था। परमेश्वर ने गायकों के साथ कार्य किया और शत्रुओं पर महान विजय दिलाई।
औ. 2 इतिहास 29:25-28, भक्त राजा हिजकिय्याह ने प्रभु के गीत के द्वारा इस्राएल के देश में एक बड़ी बेदारी लाई।
अं. एज्रा 3:1-3, याजक शास्त्री एज्रा ने मन्दिर की नींव रखने के समय गायकों को सेवा के लिए नियुक्त किया। लेवियों ने उनके वस्त्र पहने और गीत गाए और वाद्य बजाए। पुरुष गायक और स्त्री गायक वहाँ थे (एज्रा 2:65)।
अः. नहेम्याह 12:27-47, यहूदा के गवर्नर, नहेम्याह ने भी यरूशलेम की दीवारों के समर्पण के दिन गायकों की सेवकाई का प्रयोग किया था।
क. 1 राजा 4:29-32, दाऊद का पुत्र सुलेमान भी संगीत में निपुण था। उसने 1005 गीत लिखे। "श्रेष्ठ गीत" हमारे लिए लिखा गया है (श्रेष्ठ गीत 1:1)।
ख. 2 शमूएल 19:35; सभोपदेशक 2:8, राजा दाऊद और राजा सुलेमान के दरबार में "गवैय्ये और गायिकाएँ" थीं। शमूएल, दाऊद और सुलेमान का समय कविता और संगीत का इस्राएल का सुनहरा युग था (एज्रा 2:65; 1 इतिहास 13:8; 25:5-6)।
ग. यशायाह 16:10, फसल के समय, इस्राएल जब वे दाशरस के कुण्डों में दाख रौंदते थे, वे गीत गाते थे।
घ. भजन 136; भजन 24, इब्री देश का अधिकाँश गीत गाना प्रतिस्तव था यानि, एक दल दूसरे दल को प्रतिक्रिया देता है), और ये भजन उत्तरकारी वृन्दगान या भागों को चित्रित करते हैं जिसे गाना होता था। परन्तु अधिकाँश गाना स्वरमेल में होता था।

2. संगीत – यंत्रीय

हालाँकि कंठसंगीत के बहुत सारे संदर्भ हैं, और अधिक भी हैं जिनमें स्वर और यंत्रीय दोनों सम्मिलित हैं। दोनों सामान्यतः साथ में मिलकर प्रयोग होते हैं और आराधना में वे एक महत्त्वपूर्ण भाग निभाते हैं। इसमें परमेश्वर की आशीष और समर्थन प्राप्त है।

आराधना में संगीत के प्रयोग के विरुद्ध पुराने या नए नियम में परमेश्वर की एक भी आज्ञा नहीं है। उन विश्वासियों के लिए जो मसीही आराधना में संगीत वाद्यों के प्रयोग को मना करते हैं और केवल गाने की अनुमति देते हैं, उनके लिए नीचे दिए वचनों पर विचार करना लाभकारी होगा।

अ. निर्गमन 15:20-21, लाल समुद्र के किनारे मूसा, मरियम और इस्राएल के लोगों के अधीन उत्तरकारी गीत गाने के साथ तालवाले वाद्य (झाँझ) प्रयोग किए गए थे।
आ. यहोशू 6, यरीहो की दीवार के पास सुषिर वाद्य (मेम्ने के सींगों से बने नरसिंगे) और जयजयकार प्रयोग किए गए थे।
इ. 1 इतिहास 15-16, दाऊद ने अपने तम्बू में गायकों और याजकीय संगीतज्ञों के चौबीस फेरों का क्रम स्थापित किया था। लेवी के वंश के 4800 पुरुषों में से, 4000 दाऊद के बनाए वाद्यों के साथ प्रभु की स्तुति कर रहे थे। उनमें से 288 निपुण संगीतज्ञ थे जिन्हें चौबीस फेरों में बाँटा गया था। हर एक में बारह थे और उनके अगुवे हेमान, आसाप और यदूतून के बारह पुत्र थे। बाकी के 4000 "विशेषज्ञ" थे (1 इतिहास 23-25)। यह मन्दिर का वादक-दल था।
ई. 2 इतिहास 5:11-14, सुलेमान के मन्दिर के समर्पण के समय गायक और वादक इकट्ठे थे, जब परमेश्वर की महिमा से मन्दिर भर गया था।
उ. 2 इतिहास 29:25-29; 30:21, भक्त राजा हिजकिय्याह के शासन में मन्दिर के शुद्धिकरण के समय स्वर और यंत्रीय वाद्य दोनों इकट्ठे थे।
ऊ. 2 इतिहास 35:1-19, भक्त राजा योशिय्याह के अधीन स्वर और यंत्रीय वाद्य एक बार फिर सुने गए थे।
ए. एज्रा 3:1-13, एज्रा के अधीन बेबीलोन से यहूदा के पुनःस्थापना के समय, गायक और संगीतज्ञ मिलकर प्रभु की आराधना कर रहे थे।
ऐ. नहेम्याह 12:27-47, गवर्नर नहेम्यह के साथ बेबिलोन से लौटने पर, शहरपनाह के समर्पण पर में गायकों और संगीतज्ञों को प्रयोग किया गया था।
ओ. 1 शमूएल 10:5-6, शमूएल नबी के विभिन्न स्थानों पर नबियों के स्कूल थे। भविष्यद्वक्ता के पद पर जो आ रहे थे उन के आत्मिक प्रभाव पर संगीत ने एक बड़ी भूमिका निभाई थी। निश्चय ही, दाऊद भी इसके प्रभाव में आया होगा (1 शमूएल 19:19-20; 2 राजा 2:5-7)।
औ. 2 शमूएल 6:5, 12-16, अपने तम्बू में सन्दूक को लाने के समय दाऊद और सारे इस्राएल ने काफी संगीत बजाया था।
अं. 2 राजा 3:15-16, एलीशा के पास इस्राएल और यहूदा के राजाओं के लिए भविष्यद्वाणी का वचन देने के लिए एक चारण की सेवकाई थी।
अः. 1 शमूएल 16:16-23, जब एक दुष्टात्मा शाऊल को सताती थी दाऊद उसके सामने बजाता था। दुष्टात्मा कुछ समय के लिए छोड़कर चली जाती थी। यह एक दुष्टात्मा की सतानेवाली शक्ति के ऊपर अभिषिक्त संगीत के सामर्थ्य को दिखाता है।
क. गिनती 10:1-10, (2 इतिहास 13:12), इस्राएल में चाँदी की दो तुरहियाँ कई अवसरों पर प्रयोग की जाती थीं, विशेषकर पर्वों के समय, और युद्ध और तम्बुओं की आत्रा के समय।
ख. यशायाह 5:12, इस्राएल के भोजों के समय वाद्यों को बहुत प्रयोग किया जाता था।
ग. भजन 87:7; 68:25, सामान्यतः पहचाने जानेवाला क्रम इन वचनों में दिया गया है। पहले गायक, तब वादक, और उसके पीछे डफ बजाती हुई किशोरियाँ।
घ. 1 राजा 10:12, सुलेमान ने भी अपने समय में गायकों के लिए वीणाएँ और सारंगियाँ बनाई थीं।
इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि ये वाद्य परमेश्वर की आज्ञा, और दाऊद और सुलेमान की आज्ञाओं के अनुसार प्रयोग किए जाते थे (2 इतिहास 29:25-28)। वे स्पष्ट रूप से "परमेश्वर के वाद्य" कहलाते थे।

> "...परमेश्वर के गीत गाने के लिए बाजे दिए" (1 इतिहास 16:4, 5, [42])।
>
> "...चार हजार उन वाद्ययन्त्रों से यहोवा की स्तुति करने के लिए ठहराए गए जो दाऊद ने स्तुति करने के लिए बनाए थे" (1 इतिहास 23:5)।
>
> "...जो यहोवा का धन्यवाद और स्तुति कर करके नबूबत करता था..." (1 इतिहास 25:3)।
>
> "याजक अपना अपना कार्य करने को खड़े रहे, और लेवीय भी यहोवा के गीत गाने के लिए वाद्य-यन्त्र लिए हुए खड़े थे, जिन्हें दाऊद राजा ने यहोवा को सदा की करुणा के कारण उसका धन्यवाद करने को बनाकर उनके द्वारा स्तुति कराई थी; और इनके सामने याजक लोग तुरहियाँ बजाते रहे; और सब इस्राएली खड़े रहे" (2 इतिहास 7:6)।

बाइबल में परमेश्वर के लोग, इस्राएल देश से सम्बंधित ही संगीत के विषय में सबसे अधिक जानकारी दी गई है। परमेश्वर ने जब तक यह पाखण्डीपन की आराधना नहीं थी, कभी भी गीत गाने या संगीत वाद्य बजाने की निन्दा नहीं की है। आमोस 8:3 में, परमेश्वर ने इस्राएल के पाप के कारण राजमन्दिर के गीतों को "हाहाकार" में बदलने की धमकी दी थी।

<u>बाइबल के इब्रानी इतिहास में गीतों के संदर्भ भरपूर हैं। हम उन में से कुछ को यहाँ लिखते हैं:</u>

1. निर्गमन 15 में, मूसा का गीत, पहला लिखा गया गीत है।
2. नबिया मरियम का गीत (निर्गमन 15:20)।
3. मूसा का दूसरा गीत (व्यवस्था. 31:19-20; 32)।
4. कुएँ पर इस्राएल का गीत (गिनती 21:16-18)।
5. दाबोरा और बाराक का गीत (न्यायियों 5)।
6. दाऊद के गीत (2 शमूएल 23:1-2; 1 इतिहास 16:7)।
7. सुलेमान के 1005 गीत (1 राजा 4:29-34)।
8. सुलेमान का श्रेष्ठगीत (1:1)।
9. भोर के तारों का गीत (अय्यूब 38:4-7)।
10. यशायाह के गीत। नबी गीतों और गाने का कई बार उल्लेख करता है।
    यशायाह 5:1, अपने प्रिय और उसकी दाख की बारी का गीत।
    यशायाह 12, धन्यवाद का गीत।
    यशायाह 26:1-4, दृढ़ नगर का गीत।
    यशायाह 35, उद्धार पाए हुओं का गीत।
    यशायाह 42:20, नया गीत।
    यशायाह 44:23, सृष्टि का गीत।
    यशायाह, 54:1, बाँझ स्त्री का गीत।
11. राजा हिजकिय्याह के गीत (यशायाह 38:20; यात्रा के गीत, भजन 120-134)।
12. यिर्मयाह के गीत (यिर्मयाह 31:12-13)।
13. यहेजकेल का अस्वीकृत गीत (यहेजकेल 33:32)।
14. योना का गीत (योना 2:9)।
15. सपन्याह में प्रभु का गीत (सपन्याह 3:14-17)।
16. कलीसिया में मसीहा का गीत (भजन 22:22, 25; इब्रानियों 2:12)।
17. मूसा और मेम्ने के गीत (प्रकाशित. 15:3, 4)।
18. उद्धार पाए हुओं के गीत (प्रकाशित. 5:8-9; 14:2-3)।
19. गवैय्ये और गायिकाएँ (निर्गमन 15:20; 1 इतिहास 25:5-6; सभोपदेशक 2:8; एज्रा 2:65; नहेम्याह 7:67; 2 शमूएल 19:35; 2 इतिहास 35:25)।

इस्राएल में स्त्रियाँ डफ के साथ नाचने में, प्रतिस्तव गाने में, संगीत वाद्य बजाने और भविष्यद्वाणी करने में, मन्दिर की गायण-मण्डली में पुरुषों के साथ और स्त्रियों की मण्डली में गाने में अगुवाई करती थीं। इस्राएल में कोई भी संगीत न्याय का चिन्ह और देश में श्राप का चिन्ह नहीं था (यशायाह 24:8-9; यिर्मयाह 7:34; यहेजकेल 26:13)।

यहूदी इतिहास के पुराने नियम की अवधि के अन्त का समय मूर्तिपूजा, स्वधर्मत्याग, और अविश्वास का समय था। यहूदियों ने यहोवा की आराधना को बड़े रूढ़िवाद में भ्रष्ट होने दिया था। आराधनालय व्यवस्था के अक्षर से बँधे हुए थे। उनके गीतों में स्वधर्मत्याग दिखता था। देश के पहले के इतिहास के आनन्द के गीत गुम हो चुके थे। मूसा, मरियम, दाऊद, आसाप, सुलेमान के गीत अब सुनाई नहीं देते थे। आराधनालय की आराधना में संगीत वाद्य कम प्रयोग होते थे। देश का धार्मिक संगीत अधिक रूढ़िवाद और मातमी हो गया था। लोगों ने संगीत के साथ गाना छोड़ दिया था, और आराधनालय का गाना याजकों द्वारा आनुष्ठानिक गाना हो गया था।

फरीसियों के मन्दिर और आराधनालयों में संगीत से सम्बंधित कड़े विचार थे। सन् 70 के मन्दिर के विनाश के बाद, फरीसियों ने वाद्यों का उपयोग बन्द कर दिया। उनका कारण था कि शहनाई, झाँझ, घड़ियाल, और धोलक एशिया मायनर के लोगों द्वारा शैतान की उपासना में प्रयोग होते थे। परन्तु पौलुस ने संगीत की निन्दा कभी नहीं की; उसने भजनों, स्तुतिगानों और आत्मिक गीतों को

प्रोत्साहन दिया (इफिसियों 5:18-19; कुलुस्सियों 3:16)। इब्री देश की आध्यात्मिकता संगीत और गीत में प्रभु की उपासना के उठने और/या घटने से पता लगाई जा सकती है।

ई. **<u>नए नियम में संगीत</u>** (प्रेरितों का समय सन् 26-95)

स्वर और यंत्रीय दोनों संगीत नए नियम में भी ले जाए गए हैं। कलीसिया का इतिहास उस संघर्ष के विषय में लिखता है कि कलीसिया की आराधना में गाना होना चाहिए या नहीं, वाद्य उपयोग होने चाहिए या नहीं। कई सम्प्रदायों ने सदियों के संघर्ष के बाद ही मसीही आराधना में गाने और वाद्य बजाने की अनुमति दी है।
एक सबसे प्रमुख तर्क यह दिया गया था कि संगीत वाद्य पुराने नियम के इस्राएल की आराधना में ही उपयोग होने के लिए थे। क्योंकि वे व्यवस्था के अधीन थे, धर्मानुष्ठान का युग, और यह सबकुछ यीशु ने क्रूस पर पूरा किया और समाप्त कर दिया था। उनका कहना था कि केवल एक वाद्य जिसे नए नियम की आराधना में उपयोग किया जा सकता था वह था परमेश्वर के अनुरूप हृदय। आज भी मसीहियत में ऐसे हैं जो इस विचार को पकड़े हुए हैं।
यह सच है कि परमेश्वर चाहता है कि हृदय उसके अनुकूल हो; वरना सबकुछ पाखण्ड और उसे अस्वीकृत होगा। परन्तु हम देखते हैं कि नया नियम पुराने नियम का अर्थ निकालता है। हालाँकि धर्मानुष्ठान क्रूस पर समाप्त कर दिया गया था, आराधना और इससे सम्बंधित अभिव्यक्तियाँ समाप्त नहीं की गई थीं। यह कभी नहीं होंगी। आराधना अनन्तकाल में आरम्भ हुई है; यह उद्धार पाए हुओं के इतिहास में चलती रही है और यह अनन्तकाल में चलती रहेगी। आराधना अवधियों या विधानों तक सीमित नहीं हो सकती है। यह सब समय के लिए है।

यीशु ने अपने समय के रूढ़िवाद और पाखण्ड की निन्दा की थी। यीशु ने पशुओं के बलिदान और व्यवस्था के दूसरे सारे धर्मानुष्ठान की किस्मों को समाप्त कर दिया था, परन्तु उसने पुराने नियम के कंठ या यंत्रीय संगीत का कभी भी खण्डन नहीं किया।

<u>आओ हम संगीत की सेवकाई के नए नियम के संदर्भों का विचार करें:</u>

1. लूका 15:25, यीशु ने गुमराह पुत्र के पिता के घर लौटने पर हुए "संगीत और नाचने" की बात की थी। उसने बड़े भाई के रवैये की भी बात की। अधिकाँश मसीही मानते हैं कि यह कहानी एक घर लौट रहे पुत्र के विषय में पिता परमेश्वर के हृदय की एक तस्वीर की कहानी है। यह नहीं हो सकता है कि हम बाकी के दृष्टान्त को स्वीकार करें और "संगीत और नाचने" पर ध्यान नहीं दें जो उत्सव का एक भाग था।

2. मत्ती 26:30; मरकुस 14:26, यीशु ने प्रभु भोज के बाद एक भजन गाया (यूनानी "Humneo", यानि, "एक धार्मिक सम्बोध-रीति का गीत गाना; तात्पर्य है, गीत में परमेश्वर को मनाना; कोई एक भजन")।
यह सामान्यतः स्वीकार किया गया है कि यह महान हालेल या पास्चल भजन था जो यहूदियों द्वारा फसह के बाद गाया जाता था (भजन 113-118)।

3. 1 कुरिन्थियों 14:26, पौलुस कुरिन्थुस के अन्यजाति विश्वासियों को कलीसिया के नियम के विषय में लिखता है कि उनके पास एक भजन, और उसके अतिरिक्त उन्नति के दूसरे कार्य भी हों। भजन के लिए यूनानी शब्द "Psalmos" है और इसका अर्थ है "संगीत की एक नियत रचना", यानि, "एक पवित्र सम्बोध-रीति (स्वर, वीणा या दूसरे वाद्य के साथ)।"

4. इफिसियों 5:18-19, पौलुस इफिसियों के विश्वासियों को भजन, स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाने के लिए और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाने के लिए प्रोत्साहित करता है। ऐसा करना आत्मा से भरे जीवन का भाग है। इसका अर्थ, एक नियम संगीत की रचना, एक पवित्र सम्बोध-रीति, स्वर, वीणा या दूसरे वाद्य (यूनानी "Psalmos") के साथ गाना है। "गीत गाना" यूनानी शब्द "Psallo है जो याकूब 5:12 में प्रयोग किया गया है।

5. कुलुस्सियों 3:16, अपने-अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाने की वही आज्ञा पौलुस कुलुस्सियों के विश्वासियों को भी देता है। यह वही यूनानी शब्द है जो इफिसियों 5:19 में उपयोग किया गया है।

6. याकूब 5:13, याकूब भी विश्वासी को प्रोत्साहित करता है, "यदि आनन्दित है, तो वह स्तुति के भजन गाए।" यूनानी शब्द "Psallo" है और उसका अर्थः "सतह को रगड़ना या छूना; झटकना या झंकारना, यानि, एक तारदार वाद्य को बजाना।"

7. प्रेरितों 16:25, पौलुस और सीलास ने आधी रात के समय परमेश्वर की स्तुति के गीत (यूनानी "humneo" या भजन) गाए और परमेश्वर ने उनकी स्तुति के साथ कार्य किया। दारोगा और उसके परिवार ने उस रात उद्धार पाया।

8. इब्रानियों 2:12, यह वचन मसीह की भविष्यद्वाणी है जो भजन 22:22 से ली गई है। यह कहता है, "सभा के बीच में मैं तेरा भजन (यूनानी "Humneo") गाऊँगा।" इस प्रकार मसीह अपने आराधना कर रहे लोगों के बीच पिता की स्तुति के भजन गाता है।

9. रोमियों 15:9, भजन 18:49 के साथ, प्रभु यीशु कहता है, "इसलिए मैं जाति-जाति में तेरा धन्यवाद करूँगा, और तेरे नाम के भजन (यूनानी "Psallo", सतह को रगड़ना या छूना; झटकना या झंकारना, यानि, एक तारदार वाद्य को बजाना; संगीत और साथ के सम्बोध-रीति के साथ परमेश्वर की आराधना करना जैसे याकूब 5:13 में है) गाऊँगा।"

10. 1 कुरिन्थियों 14:15, पौलुस कहता है कि वह आत्मा से गाएगा (यूनानी "psallo" जैसे याकूब 5:13 में है) और बुद्धि से भी गाएगा।

11. प्रकाशितवाक्य 5:8-10, चार जीवित प्राणी और चौबीस प्राचीन प्रभु परमेश्वर और मेम्ने के सामने "एक नया गीत गाते हैं।" उनके पास वीणाएँ और संगीत वाद्य भी थे। इस प्रकार परमेश्वर के सिंहासन के पास स्वर और यंत्रीय संगीत पाया जाता है। यहाँ दाऊद के तम्बू के गायकों और वादकों के चौबीस फेरे भी देखने को मिलते हैं। गीत के लिए यूनानी शब्द "Odee" है जो इफिसियों 5:19 और कुलुस्सियों 3:16 में भी पाया जाता है।

12. प्रकाशितवाक्य 14:1-5, 1,44,000 ने परमेश्वर और मेम्ने के सामने वीणाएँ और संगीत वाद्य लिए नया गीत (यूनानी "Odee" या Ode) गाया। यहाँ आराधना में कंठीय और यंत्रीय संगीत साथ में था। एक बार फिर यहाँ दाऊद के तम्बू के चौबीस गायकों और वादकों का संकेत पाया जाता है।

13. प्रकाशितवाक्य 15:2-3, जो पशु के अंक पर जयवन्त होते हैं सिंहासन के सामने काँच के समुद्र पर अपने स्थान लेते हैं। उनके पास परमेश्वर के संगीत वाद्य, वीणाएँ हैं और वे मूसा और मेम्ने का गीत गाते हैं। यह हमें इस्राएल की लाल समुद्र के पास फिरौन (पशु) पर जय की और मूसा और मरियम के गीत और फसह के मेम्ने के छुटकारे के सामर्थ्य की याद दिलाता है (निर्गमन 12, 13, 14, 15)।

नए नियम से इन वचनों के प्रकाश में, प्रभु की ओर संगीत की सेवकाई को कम करना नामुमकिन है। न तो प्रभु ने और न ही प्रेरितों ने कलीसिया की आराधना में संगीत के उपयोग को कभी कम किया था। उन्होंने इसे समर्थन दिया और प्रोत्साहन दिया है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की आराधना का अनन्त क्रम इसकी पुष्टि करता है। नए नियम के विश्वासी अपने प्रचार और आराधना में भजनों की बाते करते रहे थे।

मसीही आराधना में भजनों को गाना बेशक आराधनालय की आराधना और यहूदी परम्परा से ले आया गया था। नए नियम में मसीही आराधना में संगीत के उपयोग के विरुद्ध कुछ नहीं कहा गया है। परमेश्वर और मेम्ने की आराधना में हृदय, हाथ, और मुँह उपयोग में लाया जाना चाहिए। प्रार्थना करना, गीत गाना, स्तुति करना, आराधना करना ये सब आराधना की अभिव्यक्तियाँ हैं; और उसी प्रकार संगीत वाद्य बजाना भी है।

आराधना में संगीत का उपयोग चौथी सदी से पहले कभी भी एक गम्भीर समस्या नहीं थी। प्रारंभिक कलीसियाओं में भजनों को गाना विभिन्न प्रकार का था।

अ. एक पूरा भजन, या भजन के कुछ वचन, उनमें बिना कुछ जोड़े या परिवर्तन किए गाना।

आ. यहूदी आराधनालय से लिया गया था, जिसमें एक व्यक्ति सारा भजन गाता है, और मण्डली या गायक-मण्डली एक संक्षिप्त स्वीकारात्मक विस्मयदिबोधक जैसे कि "आमीन" या "हाल्लेलुया" में प्रतिउत्तर देते थे।

आराधना में गायकों और संगीतज्ञों की व्यवस्था

दाऊद के समय में गायकों और संगीतज्ञों की सेवकाई को ऊँचा स्थान दिया गया था। कई तरीकों से और विशेषकर आराधना के क्षेत्र में यह इस्राएल के इतिहास का शिखर था।

रूपरेखा ढाँचे में हम दाऊद की व्यवस्था और दाऊद के तम्बू में गायकों और संगीतज्ञों के विशेषाधिकार, सेवकाई, और जिम्मेवारी पर विचार करेंगे।

1. गायक और संगीतज्ञ नियुक्त किए गए थे। (1 इतिहास 16:9, 23; 15:16-28)
2 इतिहास 20:21, "नियुक्त करना" शब्द का अर्थ है "खड़े करना।" उन्हें एक कार्य दिया गया था, और उसके लिए उन्हें अभिषेक और सज्जित किया गया था। यह मात्र निपुणता का उपयोग नहीं, बल्कि प्रभु की सेवा थी।

2. गायक और संगीतज्ञ अलग किए गए थे। (1 इतिहास 25:1)
"अलग किया" शब्द का अर्थ हैः उन्हें इस कार्य के लिए चुना गया और अलग किया गया था। गीत की सेवकाई के लिए अलग किए गए थे।

3. गायकों और संगीतज्ञों को शिक्षा दी गई थी। (1 इतिहास 25:1-7; 2 इतिहास 23:13)
गायकों और संगीतज्ञों को प्रभु के गीतों में शिक्षा दी गई थी। उन्हें परमेश्वर की स्तुति गाना सिखाया गया था। 288 गायकों को शिक्षा दी गई थी ताकि जो परमेश्वर ने उनके हृदय में रखा है उसे मुक्त किया जा सके।

4. गायकों और संगीतज्ञों का एक निर्देशक था। (1 इतिहास 15:22, 27)
कनन्याह जिसका अर्थ हैः "तैयारी, परमेशनर ने बनाया, परमेश्वर का अनुग्रह", गीत का अधिकारी होने के लिए चुना गया था। वह असल में गायक-मण्डली या आराधना का अगुवा और निर्देशक था। गायक और संगीतज्ञ उनके अधिकार में थे।

5. गायकों और संगीतज्ञों के विभिन्न पद थे। (1 इतिहास 15:16-18)
तीन प्रमुख गायक और संगीतज्ञ थे। तब "दूसरे पद" के भी थे, यानि, दूसरे दर्जे के। तो प्रभु के घर में संगीत की सेवकाई में विभिन्न निपुणता वाले लोग होते हैं।

6. गायकों और संगीतज्ञों को नाम से चुना गया था। (1 इतिहास 16:37-41)
दाऊद ने इन लेवियों को चुना और उनके नाम लिए गए थे। जिनकी गाने की सेवकाई थी उन्हें पहचाना गया था। उनके वरदान ने उनको स्थान दिया और उनके चरित्र ने उनको वहाँ रखा।

7. गायक और संगीतज्ञ निपुण थे। (1 इतिहास 15:22; 2 इतिहास 34:12; भजन 33:3)
निपुण शब्द उनकी बात करता है जिन्होंने अभ्यास किया हुआ था, जो विशेषज्ञ थे और प्रभु की सेवा में समझने, अनुभव करने और प्रदर्शित करने की योग्यता रखते थे। परमेश्वर की चीजों में अज्ञानता और निपुणता की कमी कोई सद्गुण नहीं पाते है। दाऊद जब राजा शाऊल के सामने बजाता था तो अच्छे से और निपुणता से बजाता था (1 शमूएल 16:16, 17, 23)। इसलिए जिनकी यह सेवकाई है वे प्रभु के सामने निपुण होने का प्रयास करें।

8. गायक और संगीतज्ञ उस काम में नियोजित थे। (1 इतिहास 9:22, 26-33; यहेजकेल 40:44)
विभिन्न याजकों की मन्दिर में उनकी विशेष सेवा थी। उनमें से कुछ मन्दिर में रात और दिन स्तुति की सेवा में नियोजित थे। बाइबल के समय में कई देशों में उनके राजमहलों में बहुत की निपुण संगीतज्ञ होते थे, और उन्हें ऐसा करने के लिए नौकरी पर रखा होता था।

9. गायकों और संगीतज्ञों को गीत की सेवा का अधिकार था। (1 इतिहास 6:31-32)

गीत की सेवा (या आराधना की सभा) का दाऊद के तम्बू में लेवियों को विशेष अधिकार दिया गया था, और बाद में सुलेमान के मन्दिर में मिला लिया गया था। कुछ ऐसे होते हैं जिन्हें प्रभु उसके घर में गीत की सेवा में अगुवाई का एक विशेष अधिकार देता है।

10. गायक और संगीतज्ञ उनके कार्य में खड़े रहते थे। (1 इतिहास 6:31-32; 2 इतिहास 7:6; 35:15)
जिनकी यह सेवकाई थी उन्हें उनके कार्य के लिए उनके क्रम के अनुसार उपस्थित रहना था। यह कोई हड़बड़ी की चीज नहीं थी बल्कि प्रभु के सामने जिम्मेवारी की भावना थी। जिस प्रकार आज मसीह की देह में लोगों को उनकी सेवकाई में उपस्थित रहना है, उसी प्रकार गायकों और संगीतज्ञों को उनकी सेवकाई में उपस्थित रहने की आवश्यकता है (रोमियों 12:7)।

11. गायकों और संगीतज्ञों को उनके भाग मिले थे। (नहेम्याह 7:1, 44, 73; 10:28, 39; 11:22-23; 12:28-47; 13:5, 10)
बेबिलोन के छुटकारे के बाद, गायकों और संगीतज्ञों को प्रभु के घर में उनका भाग मिलना था। नहेम्याह को दुख हुआ कि उन्हें उनके भाग नहीं दिए गए थे ताकि वे उनके गीत की सेवकाई में कार्य कर सकते। ऐसा ही आज कलीसिया में भी है। जो गीत और संगीत में प्रभु की सेवा करते हैं उन्हें प्रभु के भण्डार में से उनका भाग मिलना चाहिए। इस आत्मिक भाग के बिना, उनका कार्य बन्द हो जाएगा।

12. गायक और संगीतज्ञ उनकी फेरी में कार्य करते थे। (1 इतिहास 25:1-31)
गायकों को दाऊद ने चौबीस की फेरी में बाँटा हुआ था। दिन के चौबीसों घंटे कोई न कोई प्रभु की स्तुति करने के लिए उनकी फेरी में होता था (भजन 134)। जैसे लेवीय उनकी फेरी में उनका कार्य करते थे प्रभु की निरन्तर सेवा होती रहती थी। जीने के लिए कैसा यशस्वी वातावरण था। परमेश्वर उसके लोगों की स्तुति में विराजमान होता है (भजन 22:3)।

इस प्रकार आज कलीसिया में भी, प्रभु ने उन्हें निपुणता दी है जो गायक और संगीतज्ञ हैं। प्रभु और परमेश्वर के लोगों के लिए यह उनकी सेवा है। यह कोई प्रदर्शित करने के लिए निपुणता नहीं है परन्तु यह सेवा है जिसके लिए परमेश्वर ने उन्हें अभिषेक किया है। जिनकी यह सेवकाई है, उन्हें प्रभु को खोजने और उनका कार्य करने की जिम्मेवारी है, ताकि गीत की सेवकाई के द्वारा वे परमेश्वर के लोगों को आराधना के उस क्षेत्र में ले चलें जिसकी परमेश्वर चाह रखता है।

दाऊद के तम्बू की इस व्यवस्था को नए नियम में कलीसिया पूरा करती है। इस व्यवस्था का अन्तिम दर्शन प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पाया जाता है। वहाँ हम दाऊद की व्यवस्था को चौबीस प्राचीरों में देखते हैं जिनके पास वीणाएँ और धूप के कटोरे हैं जो सन्तों की स्तुतियाँ और प्रार्थनाएँ हैं। ये चौबीस प्राचीन उद्धार पाए हुओं को परमेश्वर और मेम्ने की "नए गीत" की आराधना में अगुवाई करते हैं, जैसे पुराने नियम के इस्राएल में चौबीस फेरे आराधना के अगुवे थे (प्रकाशितवाक्य 4:4; 5:1-14)। दाऊद के तम्बू के याजकों के चौबीस फेरों और 144,000 की भीड़ की एक समझ, जिसे बाद में मन्दिर में मिला लिया गया था, विश्वासी को प्रकाशितवाक्य की आराधना को समझने में सहायता करता है। वहाँ हम चौबीस प्राचीनों को आराधना के वाद्य लिए हुए, नया गीत गाते हुए देखते हैं, और उनके अतिरिक्त 144,000 हैं जो परमेश्वर के सच्चे इस्राएल में से चुने हुए हैं (प्रकाशितवाक्य 5:9-10; 14:1-3)।

संगीत का सामर्थ्य और मूल्याँकन

इस तथ्य के विषय में कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि संगीत एक सामर्थ्य है और मानवजाति पर भले या बुरे की एक सेवकाई हो सकती है। संगीत के अनेक लाभदायक या हानिकारक परिणाम हैं। दुरूस्त संगीत के प्रभाव में एक व्यक्ति बहुत ऊँचाइयों तक पहुँच सकता है और आत्मिक क्रियाओं के लिए शक्ति पा सकता है। भ्रष्ट संगीत के प्रभाव में एक व्यक्ति शैतान द्वारा प्रेरित, पापमय, और भ्रष्ट करनेवाली क्रियाओं तक गिर सकता है। इन दोनों क्रियाओं को इस्राएल के इतिहास और मनुष्यजाति के इतिहास में सामान्य रूप से देखा जा सकता है। यह आज के संगीत के संसार में भी प्रत्यक्ष है। इसलिए संगीत के सामर्थ्य, मूल्याँकन, और सेवकाई पर यहाँ विचार किया जाएगा।

अ. <u>संगीत का सामर्थ्य</u>

1. <u>संगीत का सकारात्मक प्रभाव</u>

अ. डॉक्टरों का कहना है कि अस्पतालों में अच्छे संगीत का एक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उत्तेजक तनाव शान्त हो जाता है। विशेषज्ञों का कहना है कि संगीत उपद्रवी पागल लोगों को शान्त करता पाया गया है और अच्छे संगीत द्वारा मिरगी के कुछ मामले रोके गए हैं। डॉक्टर और दन्तचिकित्सक दोनों संगीत को दर्द सहने में मरीजों की सहायता के लिए इस्तेमाल करते हैं। दाऊद द्वारा बजाए अच्छे संगीत के द्वारा राजा शाऊल दुष्टात्मा के प्रभाव से राहत पाता था (1 शमूएल 16:15-17, 23)।

आ. उद्योगपतियों ने पाया है कि कारखानों या बड़ी दुकानों में संगीत व्यवसाय में सहायता करता है, दोनों घबराहट कम करने और उत्पादन बढ़ाने के लिए।

इ. विज्ञानियों ने पाया है कि संगीत गायों को अधिक दूध और मुर्गियों को अधिक अंडे देने में सहायता करता है। पौधों की वृद्धि भी अच्छे या बुरे संगीत से प्रभावित होती है।

ई. संगीत को पृथ्वी के हर देश में देशभक्ति को प्रेरित करने के लिए निरन्तर इस्तेमाल किया जाता है। राष्ट्रीय गाणों को बलिदान और वफादारी के लिए भावनाओं और इच्छा-शक्ति को प्रेरित करने लिए इस्तेमाल किया जाता है।

2. <u>संगीत के नकारात्मक प्रभाव</u>

अ. आवृतीय सम्मोहक संगीत मन, भावनाओं, शरीर को युद्ध, कामना या नरभक्षी रहस्यानुष्ठानों में लगने के लिए एक आदिवासी प्रलोभन था। असाधारण प्रतिक्रियाएँ और अस्वाभाविक व्यवहार बुरे संगीत के परिणाम हैं।

आ. कुछ प्रकार के जाज़ और विशेषकर 'रॉक संगीत" ने पश्चिमी सभ्यता की आजकल की पीढ़ी में भ्रष्ट करनेवाले परिणाम लाए हैं। इस प्रकार के संगीत द्वारा उत्तेजित की गई अश्लील और कामुक क्रियाओं ने समाज में एक नैतिक विनाश फैलाया है।

इस प्रकार संगीत का अपना सामर्थ्य है। यह शान्त या निन्दक, शक्ति देनेवाला या भष्ट करनेवाला हो सकता है। यह अच्छे या बुरे कार्य के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

3. <u>संगीत और भावनाएँ</u>

संगीत इसके सामर्थ्य में भावनाओं से ओजस्वी रूप से जुड़ा हुआ है। एक विद्वान् ने संगीत के सामर्थ्य के विषय में बात करते हुए कहा कि संगीत मनुष्य की भावनाओं की एक अभिव्यक्ति है। मनुष्य के स्वभाव का एक मूल नियम यह है कि भावनाएँ अभिव्यक्ति खोजती हैं। परमेश्वर ने इसके लिए दो सामान्य माध्यम दिए हैं, लयक शारीरिक गति, और स्वर-ध्वनि।

अ. सब भावनाओं में सुख या दुख सम्मिलित होता है। शिशु ताली बजाकर या हाथ पीटकर अपनी खुशी व्यक्त करता है। अधिकाँश लोग पैर पटककर अधीरता प्रकट करते हैं। लोग कराहकर दुख प्रकट करते हैं। क्रोध या चिड़चिड़ापन किसी पर जोर से चिल्लाकर व्यक्त होता है। आनन्द और खुशी हँसी, या कभी-कभी आँसूओं के द्वारा व्यक्त होती है।

आ. सब मानवीय भावनाएँ एक मौखिक या शारीरिक अभिव्यक्ति खोजती हैं। इसलिए, भावना की शारीरिक अभिव्यक्ति लय की बुनियाद है। नाचना ऐसी ही एक अभिव्यक्ति है। और, यह कहता है कि भावना की मौखिक अभिव्यक्ति संगीत की बुनियाद है। इसलिए, ये दो, लय और संगीत सक्रिय रूप से सम्बंधित हैं, उनमें से दोनों भावना की अभिव्यक्ति के माध्यम हैं।

विद्वान् सुझाव देते हैं कि एक व्यक्ति की भावना के लिए व्यक्तिगत क्षमता संगीत उत्पन्न करने की उनकी योग्यता निर्धारित करती है। महान संगीतकार और संगीतज्ञ, वास्तव में बिना अपवाद, अत्यन्त तुनकमिजाज और भावात्मक होते हैं। भावना होने में कुछ भी गलत नहीं है; समस्या तब खड़ी होती है जब हमें भावनाओं को नियंत्रण में रखने के बजाय वे हमें नियंत्रण में करती हैं। उचित माध्यम में संचालित और उचित नियंत्रण के अधीन भावनाएँ मनुष्य के संघठन का भाग हैं जो परमेश्वर ने आरम्भ में उसके लिए ठहराया था।

इ. संगीत और भावात्मक प्रतिक्रियाएँ सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं। सारा संगीत, चाहे कंठसंगीत या यंत्रीय, इन तीन समूहों में वर्गीकरण किया जा सकता है:

1) संगीत जो भावनाओं को व्यक्त करता है।

कोई भी भावना संगीत द्वारा व्यक्त या उत्तेजित की जा सकती है। प्रेम या घृणा, क्रोध, डर या साहस, विश्वास या निराशा, हँसी या आँसू, चिल्लाना और मनुष्य के हृदय की गहराई में की हर दूसरी भावना संगीत की सामर्थ्य द्वारा व्यक्त की जा सकती है।

2) संगीत जो भावना को उत्तेजित करता है।

लोग उनकी भावनाओं द्वारा, अच्छे तरीके से या बुरे तरीके से, संगीत को प्रतिक्रिया दिखाते हैं। संगीत लोगों को भावात्मक रूप से, मनोवैज्ञानिक रूप से, और शारीरिक रूप से अच्छे या बुरे के लिए प्रभावित और उत्तेजित करता है।

3) संगीत जो वर्णनात्मक है।

कोई भी तस्वीर संगीत की ध्वनि से चित्रित की जा सकती है। आँधी, युद्ध और खतरा, खलबली या भरोसा और शान्ति की तस्वीरें। संगीत को सुन्दरता और मेल वर्णन करने, या भ्रष्ट करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इसलिए एक चीज जिसके द्वारा संगीत की परख की जा सकती है वह फल है जो यह भावनाओं के क्षेत्र में उत्पन्न करता है। क्या यह परमेश्वर के आत्मा का फल है, जो पवित्र भावनाएँ व्यक्त और उत्तेजित करना है, या क्या यह शरीर के फल हैं जो कामुकता और सब प्रकार के शरीर के काम व्यक्त और उत्तेजित करते हैं जो अन्धकार के राज्य के हैं।

आ. संगीत का मूल्याँकन

संगीत का मूल्याँकन करने के प्रयास में हमें इससे सम्बंधित कुछ निश्चित प्रश्न पूछने होंगे। यह संगीत क्या है? किस प्रकार के संगीत का परमेश्वर आनन्द लेता है? किस प्रकार के संगीत का विश्वासियों को आनन्द लेना चाहिए? क्या कोई निश्चित मार्गदर्शक हैं जिनके द्वारा संगीत का मूल्याँकन किया जा सके?

इन प्रश्नों के उत्तर यदि हमारे पास संगीत वास्तव में क्या है और इसके अंग क्या हैं की सामान्य समझ हो तो दिए जा सकते हैं। संगीत के कुछ अंगभूत अंश होते हैं जो निर्धारित करते हैं कि संगीत अच्छा है या बुरा। ये अंश संगीत के मूल्याँकन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं कि क्या इसे प्रभु के घर में या विश्वासी के घर में होना चाहिए। संगीत के तीन मूल अंश होते हैं जिन पर हम यहाँ विचार करेंगे, जो हैं: राग, सुरीलापन और लय।

1. राग

संगीत का मूलभूत अंश इसका राग होता है। यह संगीत का सबसे रचनात्मक अंश है इसलिए इसे सबसे शक्तिशाली होना चाहिए। राग आत्मिक या मनुष्य के आत्मा को अच्छा लगता है। एक अच्छा और उचित राग अपने आप गाया जाने योग्य होना चाहिए और आवश्यक नहीं कि इसके साथ एक वाद्य हो।

संगीत का पहला मूल परीक्षण और प्रमुख मूल्याँकन यह है कि क्या इसका राग अच्छा है या नहीं। बाइबल राग के विषय में तीन वचनों में बात करती है:

- यशायाह 23:16, "...वीणा लेकर..भली भाँति बजा, बहुत गीत गा...।"

- यशायाह 51:3, "...उसमें हर्ष और आनन्द और धन्यवाद और भजन गाने का शब्द सुनाई पड़ेगा।" (यानि, एक वाद्य के साथ गाया जानेवाला एक गीत)।

- आमोस 5:23, "अपने गीतों का कोलाहल मुझ से दूर करो...।"

- इफिसियों 5:19, "आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।"

हर राग तनाव और ढिलाई, या चढ़ाव और उतार में संतुलित होना चाहिए। संगीत में चढ़ाव इसका तनाव है (राग उठता है), और संगीत में गिराव इसका उतार (राग का उतार) है। यदि राग का उचित चढ़ाव और उतार नहीं होता है तब असंतुलन के प्रभाव दिखाई पड़ते हैं। बहुत अधिक तनाव कुण्ठा, पूर्ति की कमी का प्रभाव लाता है, या मनोभाव उत्पन्न करता है। बहुत अधिक उतार उदासी और निराशा उत्पन्न करता है। सुरीले संगीत में चढ़ाव और उतार मनुष्यजाति की इस सांसारिक यात्रा के विभिन्न अनुभवों में महत्त्वपूर्ण है।

संगीत में चढ़ाव और उतार की तुलना पहाड़ों और पहाड़ियों, और घाटियों और मैदानों से की जा सकती है। अच्छा राग देने के लिए सब आवश्यक हैं। यदि सब एक आवर्तन स्वर पर होते तब सब एक मैदान या निम्नभूमि के समान मन्द और एकसुरा बन जाते। यदि सब चढ़ाव या तनाव में होते तब सब पहाड़ी होते। यदि सब उतार में होते, तब सब घाटी का अनुभव होता। परन्तु राग, अच्छा राग, अपने में चढ़ाव और उतार, या पहाड़ और घाटियाँ, पहाड़ियाँ और मैदान सम्मिलित करेगा जो विविधता देगा और असल में राग बनाएगा।

2. <u>सुरीलापन</u>

संगीत का अगला महत्त्वपूर्ण अंश इसका सुरीलापन है। सुरीलापन क्या है? सुरीलापन केवल स्वरसंघातों की व्यवस्था है जिनका अर्थ राग को सहयोग देना है। शब्दकोष में संगीत से सम्बंधित सुरीलेपन की परिभाषा यह है: "अनुकूल ध्वनियाँ; एक स्वरसंघात में स्वरों का सुखद संयोग, व्यवस्था के विषय का ढाँचा, स्वरसंघातों की प्रगति।" समस्वर करने का अर्थ है "एक राग में स्वरसंघात जोड़ना जिससे एक सुरीलापन बन सके।"

एक वचन जो "स्वरसंघात के सिद्धान्त" को चित्रित करता है मत्ती 18:19-20 में पाया जाता है, "फिर मैं तुम से कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे माँगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए हो जाएगी। क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।"

जैसे राग मनुष्य की आत्मा को अच्छा लगता है, उसी प्रकार सुरीलापन मनोवैज्ञानिक या मन को अच्छा लगता है। सुरीलापन राग के बाद आना चाहिए। इसे राग पंक्ति पर प्रबल होना या अधीनस्त नहीं बनाना है। अक्सर संगीतज्ञों के पास संनादी ध्वनि की इतनी बड़ा अम्बार होता है कि कोई भी राग को सुन या पहचान नहीं सकता है। राग को सुरीलेपन पर प्रबल होना चाहिए, न कि इसका उलटा होना चाहिए। कोई व्यवस्था में इतना खो नहीं जाना चाहिए कि राग के संदेश को ही पा न सके।

पृथ्वी का कोई भी सुरीलापन सम्पूर्ण नहीं है; इसलिए, एक राग में स्वरसंघात जोड़ने में संगीत में सुरीलापन और बेसुरापन दोनों होता है। शब्दकोष संगीत में सुरीलेपन का अर्थ इस प्रकार बताता है: ध्वनियों का मेल या सहमति; एकसाथ उत्पन्न हुआ ध्वनियों का एक सुखद संयोग। सहमति, सामंजस्य, सुरीलापन उसी शब्द के समानार्थ हैं। शब्दकोष संगीत में बेसुरेपन का अर्थ इस प्रकार बताता है: ध्वनि में अरुचिकर; एक स्वरसंघात जो जब तक एक समस्वर स्वरसंघात में नहीं लाई जाती रूखी और अधूरी सुनाई देती है। बेसुरी या विस्वर ध्वनि या ध्वनियों का संयोग बेसुरेपन का वर्णन करता है।

इसके अतिरिक्त, सुरीलेपन में वह कुशल संतुलन होना चाहिए। बहुत अधिक सुरीलापन नाट्य-कला या भावुकता की ओर जाता है। बहुत अधिक बेसुरापन भावनाओं में उलझन और विद्रोह उत्पन्न करता है। सुरीलेपन में, बिना किसी मेजर (सुरीलापन) के परिवर्तित रूप के दीर्घ माइनर्स (बेसुरापन) से बचने में सावधानी बर्तनी चाहिए। परिवर्तित स्वरसंघातों के अधिक प्रयोग से भी बचना चाहिए।

सुरीलापन इसके मेजरों और माइनरों को थामे रखेगा। माइनर स्वरसंघात सामान्यतः उदासी, एकाकीपन, विषाद, और विपत्ति का सार्थक है। इसे मानवीय आत्मा की गहराई को व्यक्त करने के लिए उपयोग किया जाता है। युद्ध, औपचारिकता, दुख, महामारी, अकाल, आँसू, निराशा, और मृत्यु माइनर सुर की विशेषताएं हैं। दफन का संगीत अक्सर माइनर सुर में होता है। सांसारिक संगीत और विलाप अक्सर माइनर सुर में होते हैं। यह पाप था जिसने सृष्टि में माइनर सुर लाया था। एक सुर एक मेजर स्वरसंघात को माइनर स्वरसंघात में परिवर्तित कर सकता है (उदाहरणार्थ, C, E और G मेजर स्वरसंघात हैं। एक सुर, E को Eb में बदलने से माइनर स्वरसंघात बन जाता है)। जब पाप परमेश्वर के यशस्वी समस्वर संसार में आया, तब परमेश्वर की मुख्य स्वरसंगति ने बेसुरेपन का धक्का अनुभव किया। माइनर सुर भी आरम्भ हुआ था। जब आदम ने पाप किया तब सारी प्रकृति बेसुरी हो गई थी।

पक्षियों, पशुओं, सृष्टि और मनुष्य ने भी माइनर सुर को सुना और अनुभव किया। मेजर स्वरसंघात अक्सर आनन्द और खुशी, स्तुति, बड़ाई और जय व्यक्त करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह जयवन्त प्रयाण की रीति है। मसीहियत सामान्यतः मेजर के संगीत में प्रमुख है। यह पुनरुत्थान का सार्थक है। परन्तु इसका कहने का अर्थ यह नहीं है कि संगीत इसकी वर्तमान स्थिति में माइनर सुर का स्पर्श नहीं रखता है। सन्तों की परीक्षाएँ, पीड़ा, सताव, दबाव और दुख माइनर सुर में व्यक्त किए जाते हैं। कलवरी का दुख और मसीह की मृत्यु से सम्बंधित घटनाएँ माइनर का सार्थक थीं। परन्तु यह पुनरुत्थान था जिसने माइनर को मेजर में परिवर्तित कर दिया। जो माइनर में आरम्भ हुआ था मेजर में समाप्त हुआ। इसलिए जयवन्त विश्वासी मेजर में प्रमुखता प्राप्त करता है, हालाँकि कभी-कभार माइनर भी अनुभव होता है। माइनर जब मेजर में मिलाया जाता है तब जयवन्त हो जाता है।
चौबीस सुर होते हैं - बारह मेजर, बारह माइनर। सब संगीत इन चौबीस सुरों द्वारा हम तक पहुँचाया जाता है। जब पाप का अन्त होगा तब सबकुछ सम्पूर्ण समन्मय में लौट आएगा। मतभेद लुप्त हो जाएँगे क्योंकि परमेश्वर का राज्य परमेश्वर की अनन्त व्यवस्था के अनुसार राग, सुरीलेपन, और लय से भर जाएगा।

3. <u>लय</u>

संगीत का तीसरा भाग <u>लय है। यह शरीरिक, यानि, शरीर को अच्छा लगता है। और इस अंश पर राग प्रबल होना चाहिए। राग स्वाभाविक रूप से लय उत्पन्न करता है परन्तु लय राग और सुरीलेपन दोनों का वशवर्ती होना चाहिए।</u>
संगीत में, लय सामूहित मजबूत और कमजोर तालों का, या बहुत अधिक और हलके से स्वराघाती सुरों का नियमित (या, कभी-कभार कुछ अनियमित) आवर्तन है। यह संगीत का विशेष ताल है। जैसे राग और सुरीलेपन में है वैसा ही इसमें भी सन्तुलन होना चाहिए। यदि कोई ताल या लय नहीं होगा तो संगीत निर्जीव और मृत होगा। यह ऐसा है जैसा नब्ज़ न हो। यदि ताल धड़क रहा या फड़क रहा है तब संगीत बीमार है। यदि ताल सुरीलेपन में छिपा हुआ है और उसके साथ राग प्रबल है तब संगीत स्वस्थ्य है। तथाकथित "रॉक संगीत" ताल, तनाव और आवर्तन पर, या बेसुरेपन पर जोर देता है और राग को बिलकुल विकृत कर देता है। यह उसके कारण संगीत के उचित क्रम को पलट देता है जिसे यह अच्छा लग रहा है: शारीरिक आवेश और पतित स्वभाव की अभिलाषाएँ।
लय के साथ आवर्तन और परिवर्तन होंगे। परन्तु, यदि बहुत अधिक परिवर्तित ताल होता है तो यह कामुक होने लगता है; यदि बहुत अधिक परिवर्तन है तो बहुत अधिक ध्यान भंग होगा। और फिर उचित सन्तुलन भी होना चाहिए।

<u>संगीत का मूल्याँकन राग, सुरीलेपन और लय के इन तीन सिद्धान्तों द्वारा किया जा सकता है।</u> धड़कता ताल, विरोधी विसंगति, चित-भ्रष्ट ध्वनियाँ जो शारीरिक और कामुक प्रतिक्रियाएं उत्पन्न करती हैं, वैसा संगीत नहीं है जो परमेश्वर के लोगों में पाया जाना चाहिए। राग (आत्मा), सुरीलापन (प्राण), और लय (शरीर) को पलटना, भावनाओं की एक उचित स्वास्थ्यकर अभिव्यक्ति के रूप में मनुष्य के अस्तित्व और संगीत के विषय में परमेश्वर के अभिप्रेत क्रम को पलटना है (1 थिस्सलुनीकियों 5:23)।

नीचे दिया गया रेखाचित्र संगीत के मूल्याँकन पर इस अध्ययन की विषय-वस्तु का सारांश दिखाता है।

संगीत के मूल्याँकन के मूल सिद्धान्त

1 थिस्स. 5:23	संगीत के मूल अंश	संगीत में मूल प्रेरणाएँ	तनाव / शिथिलता	असंतुलन के मूल प्रभाव
आत्मा	राग प्रबल होना	आत्मिक प्रेरणा	चढ़ाव / उतार	तनाव, अपूर्ति, कुण्ठा, आवेश, उदासी, निराशा
प्राण	सुरीलापन राग को सहयोग देना	मनोवैज्ञानिक प्रेरणा	बेसुरापन / सुरीलापन	उलझन, विद्रोह, घमण्ड, भावुकता
शरीर	लय सुरीलेपन में छिपा होना है और राग के अधीन होना है	शारीरिक प्रेरणा	आवर्तन / परिवर्तन	कामुकता, ध्यान भंग

इ. <u>मूल्याँकन के लिए दूसरे मार्गदर्शक</u>

संगीत का मूल्याँकन करने के लिए कई और मार्गदर्शक यहाँ सहायक होंगे। इनका सम्बंध आरंभन, पहचान, और संचारण से है। इसके अन्त में संगीत की सकारात्मक सेवा पर भी संक्षिप्त विचार किया जाएगा।

1. <u>आरंभन</u>

यह पूछना सहायक होगा कि, "यह संगीत कहाँ आरंभ हुआ था: इसे किसने लिखा था?" "क्या यह एक सच्चे विश्वासी के हृदय में मसीही सिद्धान्तों में से या शरीर के सिद्धान्तों में से आरंभ हुआ था?"

यूहन्ना 3:6 कहता है, जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है। शरीर शरीर ही को उत्पन्न कर सकता है। संसार उसे ही उत्पन्न कर सकता है जो संसार के आत्मा और संसार की प्रणाली का है। जिस संगीत का आरंभ शरीर में है उसमें शरीर ही के गुण होंगे। यह पापी मनुष्य के पतित स्वभाव को ही अच्छा लगेगा। यह अन्धकार के व्यर्थ कामों को ही अच्छा लगेगा (इफिसियों 5:11)। यदि कोई शरीर में बोएगा तो वह भ्रष्टता की ही फसल काटेगा। व्यक्ति जो बोता है उसी की फसल काटेगा। जो संगीत शरीर में आरंभ होता है, शरीर की ही प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करेगा (रोमियों 8:5-8)। विश्वासी को अपने आप को संसार की आत्मा से निकलंक रखना है (याकूब 1:27; 4:4; इफिसियों 2:2; गलातियों 6:7-9)।

दूसरी ओर, हम पाते हैं कि परमेश्वर सब चीजों का महान आरंभक है। वह सन्तों के हृदय में स्वर्ग के संगीत की प्रेरणा दे सकता है। परमेश्वर में ईश्वरीय संगीत का एक क्षेत्र है जिसका मनुष्य ने न कभी सपना देखा है और न कभी सुना है परन्तु जो इन अन्तिम दिनों में और आनेवाले अनन्तकाल में कलीसिया के लिए उपलब्ध है। इस प्रकार, संगीत की जाँच इसके आरंभन के लिए की जानी चाहिए।

2. <u>पहचान</u>

न केवल संगीत की इसके आरंभन के बारे में जाँच की जानी चाहिए बल्कि इसकी पहचान का भी भेद पता लगाया जाना चाहिए। सुननेवाला, संगीत की जो विशेष शैली बजाई जा रही है उसकी पहचान किस से करेगा?

संगीत सामान्यत: किसी चीज या किसी व्यक्ति से पहचाना जाता है; या तो परमेश्वर, संसार, शरीर, या शैतान से। संगीत की कुछ शैलियाँ कामुकता और अन्धकार के दूसरे कामों से पहचानी जाती हैं।

इसलिए एक दूसरा मार्गदर्शक ऐसा संगीत है जो परमेश्वर की चीजों से पहचाना जाता है।

3. संचारण

अन्त में, संगीत मुख्य रूप से संगीत के लिए ही है। सब संगीत एक संदेश पहुँचाने और उसके लिए एक प्रतिक्रिया लाने के लिए है। व्यक्ति को पूछना चाहिए, "यह संगीत क्या बता रहा है? यह क्या प्रतिक्रिया ला रहा है? इसका परिणाम क्या है?" संगीत को वह संदेश पहुँचाना चाहिए जो परमेश्वर के वचन पर आधारित है। संगीत का एक धन्य उद्देश्य है, और वह उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना है।

सब भजनों, सुसमाचार गीतों, और गीतों की परख उनकी "वचन की विषय-वस्तु" है (कुलुस्सियों 3:16)। क्या यह बाइबल में से है? क्या यह परमेश्वर के वचन के स्तर के अनुसार शिक्षा देता, ताड़ना देता और उन्नति करता है? यदि नहीं, तो इसे परमेश्वर और उसके लोगों के अयोग्य होने के लिए ठुकरा देना चाहिए। यदि संगीत एक संदेश पहुँचाने में असफल होता है तब यह संचार के एक साधन के रूप में इसके अस्तित्व के उद्देश्य से चूक गया है। इसलिए, जो संदेश पहुँचाया जा रहा है संगीत के मूल्याँकन का एक निश्चित मार्गदर्शक बन जाता है।

ई. सेवा

संगीत के मूल्याँकन के लिए मार्गदर्शन से सम्बंधित हमारी टिप्पणियों की समाप्ति पर, हम संगीत को एक सकारात्मक सेवा के रूप में देखेंगे।

संगीत जो परमेश्वर से आरंभ होता है, जिससे विश्वासी पहचान कर सकता है, और जो एक संदेश लाता है, एक निश्चित सेवकाई है। उसी रूप में, यह तीन क्षेत्रों या स्तरों में पाया जाता है: प्रभु की सेवा, सन्तों/विश्वासियों की सेवा, पापियों की सेवा।

1. प्रभु की सेवा

संगीत की सबसे ऊँची सेवा आराधना, प्रार्थना और स्तुति में प्रभु की सेवा करना है। यह विश्वासी को कलीसिया में परमेश्वर का एक सेवक याजक बनाता है (1 पतरस 2:5, 9; मत्ती 18:20; इब्रानियों 13:15; इफिसियों 5:19-20; प्रेरितों 2:46-47; 2 इतिहास 29:11; 1 शमूएल 3:1; प्रेरितों 13:1-3)। ऐसे भजन, स्तुतिगान और आत्मिक गीत होते हैं जो सम्पूर्ण रूप से प्रभु की सेवा के लिए दे दिए गए हैं।

2. सन्तों / विश्वासियों की सेवा

सन्तों को एक दूसरे की सेवा, भजनों, स्तुतिगानों और आत्मिक गीतों में एक दूसरे को सिखाना, चिताना, और उन्नति करनी चाहिए। यह कलीसिया में याजकीय सेवकाई का एक भाग है (प्रेरितों 2:42-46; यूहन्ना 13:34-35; गलातियों 6:2; इफिसियों 5:19)। खुशी, जय, भरोसे, आश्वासन, और प्रोत्साहन के गीत विश्वासी की सेवा का भाग हैं (यशायाह 51:11)। सन्तों ने एक दूसरे से कितनी आत्मिक सेवा पाई है, केवल अनन्तकाल ही इसे प्रकट कर सकेगा।

3. पापी की सेवा

परमेश्वर पापी तक पहुँचने के लिए संगीत की सेवकाई इस्तेमाल करता है। असंख्य लोग गीत में सुसमाचार के द्वारा मसीह के पास लाए गए हैं। कभी-कभी जब एक उपदेश उन्हें नहीं ला सका है, गीत में सुसमाचार उन्हें मसीह के पास ले आया है। यह भी एक सेवकाई और गैर-मसीहियों को सुसमाचार सुनाने का एक तरीका है (मत्ती 5:14-16; मरकुस 16:16-20; लूका 10:17-20; प्रेरितों 2:43, 47; मत्ती 24-14)। यह याजकीय सेवा का एक भाग है जिसे प्रभु ने विश्वासी को मेल-मिलाप की सेवा के रूप में दिया है।

सब संगीत को इसकी सेवकाई के लिए परखना अच्छा होगा। क्या यह प्रभु की सेवा करेगा? क्या यह सन्त या पापी की सेवा करता है? यह क्या सेवा करता है? इसलिए, संगीत का इन मार्गदर्शकों द्वारा मूल्याँकन किया जा सकता है। संगीत एक यशस्वी सेवा है। इसका अपना एक सामर्थ्य है और जब यह पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरणा पाती है तो एक बड़ी आशीष का स्रोत बनती है। इन चीजों की उचित समझ हमें बुद्धि के साथ स्तुति गाने में सहायता करेगा (भजन 47:7)।

नाचना और बाइबल

आराधना का एक अधिक व्यंजक रूप नाचना है। मनुष्य के अस्तित्व की दूसरी अभिव्यक्तियों के समान, नाचना भी अच्छे या बुरे से जुड़ा हुआ है। नाचना आरम्भ में केवल आराधना में इस्तेमाल होता था। नाचना भावना की एक अभिव्यक्ति है, जैसा संगीत है, और मानवजाति अपनी आराधना की इच्छा व्यक्त करने के लिए संगीत और नाचना दोनों उपयोग करते रहे हैं। बाइबल के समय में और सारे इतिहास भर में हमारे आधुनिक समय तक, नाचना विभिन्न संस्कृतियों में अच्छे या बुरे से जुड़ी हुआ है।

अ. <u>अच्छाई से जुड़ नाचना</u>

1. निर्गमन 15:20, लाल समुद्र की विजय के बाद मरियम और इस्राएल की स्त्रियाँ हाथ में डफ लिए प्रभु के सामने नाचने और गानें लगीं थीं। यह प्रभु के लिए था, किसी मनुष्य या प्रदर्शन के लिए नहीं था। यह बाइबल में नाचने का सबसे पहला वर्णन है। कई सैकड़ों वर्ष गुलामी में रहने के बाद, परमेश्वर ने उन्हें छुटकारा दिया था। और इस छुटकारे के लिए वे प्रभु के सामने बड़ी खुशी से नाचे थे। इब्रानी शब्द "mekholaw" का अर्थ है: "एक गोल नाच, नाचनेवालों का एक दल।" विश्वासी ने भी यीशु मसीह के पवित्र लहू के द्वारा पाप की गुलामी से छुटकारा पाया है। इसलिए वह भी प्रभु के सामने नाच सकता है।

2. न्यायियों 11:34, अम्मोनियों के विरुद्ध युद्ध में प्रभु के जय देने के बाद, यिप्तह की बेटी डफ बजाती और नाचती हुई उससे भेंट करने निकली थी। यहाँ भी वही इब्रानी शब्द इस्तेमाल किया गया है जो निर्गमन 15:20 में था।

3. 1 शमूएल 18:6-7; 21:11; 29:5, जब दाऊद गोलियत को मारकर लौट रहा था तब इस्राएल की स्त्रियाँ डफ और तिकोने बाजे लिए हुए, आनन्द के साथ गाने और नाचते लगी थीं। प्रभु ने दाऊद को एक बड़ी जय दी थी। इब्रानी शब्द वही है जो पिछले दो वचनों में इस्तेमाल किया गया था, यानि, "एक गोल नाच, नाचनेवालों का एक दल।"

4. 2 शमूएल 6:14-16, दाऊद के तम्बू के समर्पण के दिन प्रभु के सन्दूक के लाने के समय दाऊद प्रभु के सामने नाचा था। इब्रानी शब्द "karar" का अर्थ है: "नाचना, घूमना।" इस प्रकार, दाऊद आराधना के एक कार्य के रूप में प्रभु के सामने नाचा या घूमा था। मिकाल ने आनन्द के इस प्रदर्शन को तुच्छ जाना था, परन्तु दाऊद ने कहा कि यह प्रभु के सामने किया गया था।

5. 1 इतिहास 15:29, यहाँ का विवरण भी ऊपर के जैसा ही है, और लिखता है कि कैसे दाऊद प्रभु के सामने नाचा था। लेखक यहाँ इब्रानी शब्द "raqad" इस्तेमाल करता है जिसका अर्थ है: "पैर पटकना, अन्धाधुन्ध या खुशी से उछलना" और इसे नाचना, कूदना, उछलना और फाँदना अनुवाद किया गया है। इस शब्द के दूसरे संदर्भ भजन 114:4, 6; 29:6 में पाए जाते हैं।

6. यिर्मयाह 31: (4), 12-13, यिर्मयाह सिय्योन में एक ऐसे समय की भविष्यद्वाणी करता है जब प्रभु जवान और बूढ़ों को एक बार फिर नाचने का कारण देगा। वे नाचते और गाते हुए प्रभु के सामने आनन्द मनाएँगे। कुमारियों, जवान और बूढ़ों का शोक आनन्द में बदल जाएगा और स्तुति करते हुए वे प्रभु के सामने नाचेंगे। यहाँ इस्तेमाल किया गया इब्रानी शब्द "chuwl" का व्युत्पन्न है और अर्थ है: "एक सर्पिल या गोल ढंग में घूमना।" इस इब्रानी शब्द को बहुत अधिक उपयोग किया गया है और बहुत अधिक दुख, दर्द, डर, थरथराना, और प्रसव-पीड़ा के लिए उपयोग होता है। शब्द को दुख या आनन्द की अभिव्यक्तियों का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यिर्मयाह की इस भविष्यद्वाणी में यह नाच में आनन्द का सूचक है। व्यवस्थाविवरण 2:25; मीका 4:10; भजन 10:5; 29:8-9; अय्यूब 15:20 भी पढ़ो।

7. विलापगीत 5:15, इस्राएल में नाच नहीं शोक का चिन्ह था। जब यहूदा को बेबिलोन की बँधुआई में ले जाया गया था, तब नाचना बन्द हो गया था। "हमारे मन का हर्ष जाता रहा, हमारा नाचना विलाप में बदल गया है।" जब एक व्यक्ति आत्मिक बन्धन में होता है तो आनन्द और नाचना खो जाता है।

8. भजन 30:11, दाऊद आनन्द मनाता है कि परमेश्वर ने उसके विलाप को शोक में बदल डाला था। इब्रानी शब्द "chuwl" एक बार फिर हमें बताता है कि दाऊद प्रभु के सामने घूम घूम कर नाच रहा था।

9. भजन 149:3, हमें नाचते हुए प्रभु के नाम की स्तुति करनी है।

10. भजन 150:4, हमें डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करनी है।

11. लूका 15:25, गुमराह पुत्र के पिता के घर लौटने पर, संगीत बज रहा था और नाच-गाना हो रहा था। बड़े भाई ने अन्दर आने से इन्कार किया। उसके पिता और उसके भाई की ओर उसके गलत रवैये ने उसे उत्सव के आनन्द में भाग लेने से वन्चित

रखा। यूनानी शब्द "choros" का अर्थ है: "एक घेरा, गोल नाच, नाचना।" जैसे पिता आज गुमराह पुत्रों को अपने घर में लौटा ला रहा है, संगीत और नाच उत्सव के आनन्द के भाग हैं। विश्वासियों में बड़े भाई की आत्मा या रवैया नहीं होना चाहिए और न ही वे उसे खो दें जो पहले से उनका है।

12. मत्ती 11:17; लूका 7:32, बच्चे बाजार में बीन बजाते और नाचते थे। यूनानी शब्द "orcheomai" का अर्थ है: "एक कतार या गोल में, एक नियमित गति से, नाचना"

इस प्रकार, परमेश्वर के लोगों, इस्राएल के इतिहास में नाचना आनन्द या स्तुति या आराधना की एक अभिव्यक्ति था।

आ. <u>बुराई से जुड़ा नाचना</u>

1. निर्गमन 32:19, इस्राएल सोने के बछड़े के सामने नाचने लगे थे। वही लोग जो लाल समुद्र पर प्रभु के सामने आनन्द से नाच रहे थे, अब एक सोने के बछड़े के सामने नाच रहे थे। जिस देवता की आराधना वे कर रहे थे और जो संगीत वे इसके साथ बजा रहे थे उसके कारण नाच भ्रष्ट था। इब्रानी शब्द वही है जो निर्गमन 15:20 में है।

2. न्यायियों 21:21-23, बिन्यामीन के पुरुषों ने उस पिछले श्राप के कारण जो उन के वंश पर इसके पाप के कारण पड़ा था, शिलोह के नाच को अपने लिए एक-एक पत्नि लेने के लिए इस्तेमाल किया।

3. अय्यूब 21:7-12, दुष्ट भी उनके नाच में डफ, वीणा और बाँसुरी इस्तेमाल करते हैं। वही शब्द जो 1 इतिहास 15:29 में इस्तेमाल किया गया है।

4. 1 शमूएल 30:16, अमालेकी बड़ी लूट के कारण खा, पी और नाच रहे थे। इब्रानी शब्द "chagag" का अर्थ है: एक दायरे में घूमना, एक पवित्र जलूस में जाना, एक पर्व मनाना" और तात्पर्य है "चकराने लगना।" इस प्रकार, अमालेकी दाऊद और उसकी सेना पर उनकी विजय के कारण, उत्सव मना रहे थे, नाच और प्रयाण में आगे-पीछे झूम रहे थे।

5. मत्ती 14:6; मरकुस 6:22, हेरोदेस की बेटी उसके सामने नाची। वह उसके नाच से इतना खुश हो गया कि उसने अपनी व्यर्थ शपथ के कारण यूहन्ना बपतिस्मादाता का सिर कटवा दिया। इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द "orchemai" है और वही शब्द है जो मत्ती 11:17 और लूका 7:32 में है।

इ. <u>दूसरे सम्बंधित अभिव्यंजक शब्द</u>

बाइबल में दूसरे इब्रानी और यूनानी शब्द हैं जो अच्छे या बुरे के लिए इस्तेमाल किए गए, एक भावात्मक या शारीरिक अभिव्यक्ती दिखाते हैं। इन शब्दों को यहाँ बताया गया है।

1. <u>पुराने नियम के शब्द</u>

अ. आनन्द मनाना, इब्रानी "geel" या "gool"।
इस शब्द का अर्थ है: "घूमना" से "एक क्रांति" (किसी उपद्रवी भावना के प्रभाव में), और इसका अनुवाद किया गया है "आनन्द मनाना", और "आनन्दित होना"। भजन 2:11; 32:11; 9:14; 13:4, 5; 14:7; 51:8; 53:6; 118:24; यशायाह 35:1-2; 65:18; योएल 2:21 देखो।

आ. उछलना, इब्रानी "dah-lag"।
इस शब्द का अर्थ है: "उछलना।" इसके कई उदाहरण इन वचनों में पाए जाते हैं: सपन्याह 1:9; 2 शमूएल 22:30; भजन 18:29; यशायाह 35:6; श्रेष्ठगीत 2:8।

2. <u>नए नियम के शब्द</u>

अ. आनन्द मनाना, यूनानी "agalliao"। "agan" (अधिक) और 'hallomai" (कूदना, फाँदना, उछलना)।
इसका अर्थ है: "खुशी से उछलना", और अनुवाद किया गया है "फूले न समाना", "बहुत खुश होना", "बहुत खुशी", "बहुत आनन्दित होना" (लूका 1:14, 44, 47; 10:21; मत्ती 5:12; यूहन्ना 5:35; 8:56; प्रेरितों 2:26, 46; 16:34; 1 पतरस 1:6, 8; प्रकाशितवाक्य 19:7)।

आ. उछलना, यूनानी "skirtao"।
इस शब्द का अर्थ है: "कूदना, चलना, उछलना (खुशी से)", या "कूदना"। यह लूका 1:41, 44; 6:23 में इस्तेमाल किया गया है।
इ. उछलना, यूनानी "hallomai"।
इस शब्द का अर्थ है: "कूदना, उछलना, उछलना"। (यूहन्ना 4:14; प्रेरितों 3:8; 14:10)। लंगड़ा व्यक्ति पतरस और यूहन्ना के साथ चलता, और कूदता और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ मन्दिर में गया।

बाइबल में नाचने के विषय पर हमारी टप्पिणियों के निष्कर्ष में हम देखते हैं कि किस प्रकार यह अभिव्यक्ति अच्छे या बुरे के लिए उपयोग की गई थी। पृथ्वी के सारे देशों में किसी न किसी प्रकार का नाचना होता है। संसार वालों के नाचने में, जैसा अफ्रीका के कई देशों में और दूसरे देशों में भी देखा गया है, शरीर को कई प्रकार से घूर्णन किया जाता है। ये घूर्णन कामुक प्रेरणाओं को जाग्रत करते हैं। आदिवासी नाच जंगल संगीत के साथ होते हैं और झूठे देवताओं की आराधना से जुड़े होते हैं। संगीत और नाच मिलकर दुष्टात्माओं को आने और अधिकार लेने का मार्ग खोलते हैं। ये नाच अक्सर सबसे अधिक बुरी रंगरलियों में समाप्त होते हैं। ये सांसारिक वूडू धार्मिक कृत्य, ये अश्लील शरीर की हरकतें, आजकल "रॉक उत्सवों" में पाए जाते हैं।
सदियों भर में, विभिन्न प्रकार के नाच आए और गए हैं। नाच को शैतान ने लेकर भ्रष्ट कर दिया है। उसने इस अभिव्यक्ति को लेकर शरीर की एक भाषा बोली है जो सांसारिक, कामुक और शैतानी है।
संगीत भी नाच को प्रभावित करता है। क्योंकि संगीत और नाच कामुकता और अश्लीलता से जुड़े हुए हैं इसलिए कलीसिया इस शब्द के जिक्र से ही पीछे हटती है। विशेषकर उस समय जब यह प्रभु की आराधना से जुड़ा है।
सच्चा आनन्द और खुशी प्रभु के उद्धार पाए लोगों का है। जब ये चीजें परमेश्वर की महिमा और स्तुति के लिए की जाती हैं, वे आराधना की अभिव्यक्तियाँ होती हैं। यदि प्रेरणा आत्म-प्रदर्शन है, या शरीर की कामुक गति-विधियों से जुड़ा है, तब नाच सांसारिक है और शैतान की महिमा करता है।

"आत्मा में नाचना" बाइबल में नहीं है, परन्तु "प्रभु के सामने नाचना" बाइबल की अभिव्यक्ति है। संगीत और नाच अक्सर आराधना से जुड़े हुए हैं। यदि संसार के लोग नाचकर उनके झूठे देवताओं की आराधना कर सकते हैं, और उनके हीरोज़ की नाचकर आराधना कर सकते हैं, तो विश्वासी भी, अकेले या दूसरों के साथ, सच्चे परमेश्वर की नाच कर आराधना कर सकता है। दिलचस्प बात है कि एलीशा का जन्म आबेलमहोला में हुआ था। कुछ बाइबल के शब्दकोष आबेलमहोला का यह अर्थ बताते हैं: "नाच की घासस्थली।" प्रकट है कि यह स्थान नाचने के लिए, चाहे शोक या आनन्द के लिए, अलग रखा गया था।

एक विश्वासी अकेले या दूसरे विश्वासियों के साथ, नाच कर प्रभु की आराधना कर सकता है। ऐसे समय होंगे जब प्रभु का आत्मा विश्वासी को आनन्द मनाने, अत्यन्त खुश होने, उछलने, कूदने और नाचने के लिए उत्तेजित करेगा और शक्ति देगा। ऐसे समय होंगे जब विश्वासियों का एक समूह इकट्ठे होकर आराधना करेंगे और नाचेंगे। यह किसी बुरी या कामुक प्रेरणा से नहीं होगा, बल्कि अपने सारे अस्तित्व से प्रभु की महिमा करने की इच्छा से होगा।

फिर भी, इस निषेधाज्ञा को याद रखना अच्छा होगा, "हर बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का एक समय है...नाचने का भी समय है" (सभोपदेशक 3:4)। जो आराधना की अगुवाई के लिए जिम्मेवार है, सभाओं को रूढ़िबद्ध नहीं बनाएगा परन्तु पवित्र आत्मा को आराधना में विभिन्न अभिव्यक्तियों के उपयोग का संचालन करने देगा। सब चीजों की परख यह है कि क्या विश्वासी के जीवनों में परिणाम जीवन और उन्नति हैं, और कि क्या परमेश्वर को महिमा मिलती है या नहीं।

यह कुल 16 पुस्तकों के एक सेट की पुस्तक क्र. 14 है
इसका अध्ययन मिनिस्ट्री और ट्रेनिंग कोर्स में होना है, जो "केवल एक बार" का कोर्स है - Project of M.L.T.C. Ministries.
(केवल निजि वितरण के लिए!! - बिक्री के लिए नहीं!! - "केवल एक बार" प्राजक्ट का एक अंश)

दॅ डायरेक्टर आफ एमएलटीसी, पी. ओ. बॉक्स 19106, वरली, मुम्बई - 400 030
+ या ईमेल करें : **mltc_ministries@yahoo.com**